।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

मैथिली कवि चन्दाझा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

सम्पादकीय निवेदन

एहि मैथिली-रामायण क प्रस्तुत गुटका संस्करण सँ पूर्व एकर तीन संस्करण प्रकाशित भय चुकल अछि जे सब क्रमानुसार शुद्धता में ह्रासता कें लाभ करैत गेल। अनेको वर्ष सँ तृतीयो संस्करण क एको प्रति जनता कें उपलब्ध नहिँ देखि ओ तदर्थ मैथिलीप्रेमी कें व्यग्र जानि दरभङ्गा-राजक दिश सँ एकर एक विशाल ओ विशुद्ध संस्करण पाठान्तरादि समन्वित राज-पण्डित वलदेव मिश्र ओ ०रमानाथ झा एम्. ए. काव्यतीर्थ, राजपुस्तकालयाध्यक्ष निरीक्षकता में सुन्दर ओ पैघ अक्षर में प्रकाशित भय रहल अछि। ज्ञात होइत अछि जे एहि संस्करण में पाण्डित्यपूर्ण भूमिका, रामायणक वैशिष्ट्य, ग्रन्थ में प्रयुक्त छन्द क लक्षण, कविवर श्री चन्दाझा क सर्वांगपूर्ण वृहत् जीवनचरित इत्यादि यावतो ज्ञातव्य विषय निवेशित रहत ओ एही कारणे पुस्तक कें पाठक क करकमलगत हैवा में किछु विलम्ब हैबा क आशंका अछि। एहि बीच में मैथिलीभाषी जनता, प्रवर्द्धमान मातृभाषा प्रेम क द्वारेँ, और विद्यार्थी वृन्द, पाठ्य पुस्तक में रामायण क कतिपयांश केर निर्धारित हैवाक द्वारेँ अत्यन्त उत्सुक भय रहल छथि।

विलम्बक अतिरिक्त, यन्त्रालयस्थ राजसंस्करण कें बृहन्मूल्यक ओ बृहदाकारक हैबाक सम्भव। एहि हेतु ग्राहक लोकनि क उत्कण्ठा ओ विद्यार्थी लोकनि क आग्रह देखि एहि कम्पनी क दिश सँ मैथिली रामायणक प्रस्तुत गुटका-संस्करण क आयोजन कैल गेल जकर फलस्वरूप ई ग्रन्थ अत्यन्त शीघ्रता मेँ मुद्रित भय पाठक लोकनिक हस्तगत भय रहल अछि। एहि संस्करण क आधार उक्त रामायणक सं० १९८४ क प्रकाशित तृतीय संस्करण थीक जकर उल्लेख पूर्व कयल गेल अछि। किछु तऽ तैं हेतु और किछु सम्पादनक शीघ्रता और सर्वाधिक माहश अल्पज्ञक सम्पादन भार ग्रहण करबाक चञ्चलता क द्वारेँ एहि संस्करण मेँ बहुत त्रुटि रहि गेल हैबाक सम्भव। काँटाक दोष, प्रूफरीडर क भ्रान्ति और मुद्रक क असावधानता (Printers' devil) क कारणहु किञ्चित् त्रुटि क सम्भव। परन्तु यावत धरि विशुद्ध ओ विशाल राज-संस्करण प्रकाशित नहि भेल अछि तावतो धरि एकर तत्कालीन उपयोगिता देखि, ग्रन्थस्थ त्रुटिसंघ कें क्षमा करैत सहृदय पाठकवृन्द एहि संस्करण कें अपनौताह—ई आशा करैत छी।

'तावत्कोकिल ! विरसान्
यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन्।
यावन्मिलदलिमालः कोपि
रसालः समुल्लसति ॥'

एहि प्रसंग मे पाठक लोकनिकेँ ई सूचना दैत हर्ष होइत अछि जे प्रथम संस्करणक प्रकाशन क पश्चात् क, कवीश्वर क स्वहस्त लिखित परिवर्द्धित और परिशोधित मैथिली रामायणक सम्पूर्ण पाण्डु लिपि उपलब्ध कयल जा रहल अछि। एहि ग्रन्थ क देखबा क हमरो सौभाग्य भेल अछि परन्तु एकर उपयोग विलम्बक और अन्यान्य कारणेँ ने प्रस्तुत गुटके संस्करण मेँ और ने राजसंस्करणे मेँ भेल अछि। प्रबन्ध भय रहल अछि जे उक्त हस्तलिखित ग्रन्थक आधार पर परम विशुद्ध एक सुन्दर संस्करण किछु कालान्तर प्रकाशित हो।

यदि एहि गुटका संस्करणसँ पाठक लोकनिकैं किञ्चितो उपकार वा मनोरञ्जनो मात्र हैतैन्ह त ई कम्पनी अपन प्रयास कें साथकल बुझत, इति।

विजया दशमी
सन १३५७ साल

श्री शशिनाथ झा
मैनेजर
दरभङ्गा प्रेस कं० लि० दरभङ्गा।
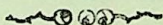
महाकवि श्रीचन्दा झा क संक्षिप्त जीवनचरित

दरभंगा सँ ३।४ कोश उत्तर पिण्डारुछ गाम मे महाकवि श्री चन्दाझाक जन्म सन १२३७ साल (१८३० ई०) मे भेलैन्ह। हिनक मूल मड़रए रजौरा और गोत्र काश्यप छलैन्ह। हिनक पिताक नाम महामहोपाध्याय भोला झा छलैन्ह जे महाविद्वान् ओ परमतपस्वी छलाह। अत्यल्प अवस्था मे अपन पिताक निरीक्षकता मे बालोचित शिक्षा प्राप्त कय कवीश्वर जी अपन मातृक भागलपुर जिलान्तर्गत बड़गाम मध्य उच्च संस्कृत शिक्षा प्राप्त करबा क हेतु चल गेलाह। ओतय यथासमय व्याकरण, न्याय दर्शनादि शास्त्र क तत्समयोचित समग्र अध्ययन ओ संगहि साहित्यक गम्भीर अनुशीलन कय अपन जन्मभूमि पिण्डारुछ अबैत भेलाह। एहि बीच मे चरितनायक ईश्वरप्रदत्त कवित्वशक्ति कें विकसित करैत एक परम प्रतिभाशाली कवि भेलाह। किछुए दिन मे हिनक पाण्डित्य और कवित्वशक्ति क सुयश देश देशान्तर मे व्याप्त भय गेल, जकर फलस्वरूप नरहन राज्यक तत्कालीन गुणग्राही स्वामी हिनका आदरपूर्वक बजाय

अपना दरबार क पण्डितमण्डली मे एक सम्मानास्पद स्थान देल-थीन्ह। ओतय रहैत सब प्रकारक सुविधा और कवित्वविकासो-चित अवसर पबैत कवीश्वरजी कविता करय लगलाह, जकर ख्याति समस्त मिथिला मे व्याप्त भय गेल। प्रायः १५ वर्ष तक नरहनि मे हिनका रहलाक अनन्तर स्वर्गीय मिथिलेश श्री लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर हिनका अपना दरबार मे बजाय सम्मान-धौत और कवीश्वरक पद दय अपन पण्डित मण्डलक भूषण बनौलन्हि। दरभंगा मे कवीश्वरजी आजीवन रहलाह, कोनो दोसर राजा अथवा आश्रय-दाताक अन्वेषण कहिओ नहि कयलन्हि।

कवीश्वरजी शिवभक्त छलाह, महादेवक भजन नित्य बनबैत और गबैत छलाह, हिनका यदि अपर विद्यापति कही तऽ अत्युक्ति नहिँ। हिनक भजनक सुन्दर संग्रह राज-पण्डित श्री बलदेव मिश्रजी सङ्कलित कयलन्हि अछि जे "चन्द्रपद्यावली" नाम सँ प्रकाशित भय चुकल अछि। हिनक "महेशवानी संग्रह" म० म० डा० श्री गङ्गानाथ झा प्रयाग सँ प्रकाशित करौने छथि। हिनक रचित निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध भेल छैन्ह :—

१. मैथिली रामायण
२. पुरुष परीक्षाक मैथिलीटीका

३. चन्द्र पद्यावली

४. महेशवानी संग्रह

५. गीतिसुधा

६. छन्दोग्रन्थ। ई प्रायः अमुद्रित ओ अप्राप्य अछि। प्रथम ५ ग्रन्थ मुद्रित भेल छैन्ह।

कवीश्वरजी जन्मभूमि पिण्डारुछ ग्रामकेँ, तत्रत्य कोनो कोनो दुष्ट लोक क अपन परिवारक प्रति दुर्व्यवहारक कारणे, छोड़ि ठाढ़ी ग्राम मध्य जाय बसलाह। बुझि पड़ै अछि एहि वास परिवर्त्तनसँ हुनका शान्ति भेटलैन्ह। लिखैत छथि—

भल भेल भल भेल त्यागल वास,
छुटि गेल मोर मन दुर्जन त्रास।
भल भल लोकक बैसब पास,
सपनहु सुनब न खल उपहास॥

......
....

बहुत दिवस पापि क संग बसलहुँ,
लिखल तेहन छल भाल।

ठाढ़ी ग्राम मे कवीश्वरक जीवन कोन तरहें बितलैन्ह तकर पता हुनक कोनो कविता सँ नहि लगैत अछि। ओ प्रायः अधिकतर

दरभंगे मे रहैत छलाह। परिवार मे लोक अधिक नहि छलैन्ह, हुनक एकमात्र बालक अपन जीवनकाले मे स्वर्गवासी भय चुकल छलथीन्ह—सम्प्रति कवीश्वरजी क कोनो सन्तान नहि छथीन्ह केवल डीहमात्र ठाढ़ी गाम मेँ देखाओल जाइत छैन्ह।

रामायण मेँ कवीश्वरजी लिखैत छथि—

वसुनभ वसुवसुधा मित शाके आश्विनशिति सम्प्राप्त।
तिथि शिवमित सित ई रामायण निर्मित कैल समाप्त॥

अर्थात् शाके १८०८ (सन १२९४ साल) आश्विन कृष्ण ११ शुक्र दिन ई रामायण समाप्त भेल। ओहि समय कवीश्वरक वयस प्रायः ५६ वर्षक छलैन्ह और मैथिली रामायण केँ निर्मित भेला एखन ६३ वर्ष भेल अछि। एकर प्रथम संस्करण सन १२९९ साल मे छपल छल और एतेक दिन क मध्य मेँ एकर केवल और दू संस्करण मात्र छपल, तीनू संस्करण मिला क केवल ६००० प्रति छपल अछि एकर उत्तरदायित्व की प्रकाशक क, की मैथिलीप्रेमी क, से नहि कहि। प्रस्तुत गुटका संस्करण २००० और राज संस्करण २००० छपि रहल अछि, आशा अछि जे वर्द्धमान मातृभाषा प्रेमक समय मेँ ई ४००० पुस्तक १।२ वर्ष मेँ समाप्त भय जायत और कवीश्वर क हस्तलिखित प्रति क आधार पर नवीन संस्करण क आवश्यकता पाठक केँ प्रतीत हैतैन्ह।

कवीश्वरजी अपन काव्यप्रणयन कार्य निरन्तर करैत छलाह। गीति–सुधाक एक पद्य मे लिखैत छथि—

वयः प्रमाण सप्तसप्ति वर्ष ई शरीर,

....

रचैछि हो प्रसिद्धि कीर्ति देश देश फीर।

एहि सँ बुझि पड़ैत अछि ७७ वर्षक अवस्था मेँ गीति सुधा सन विविध रसात्मक पुस्तिका लिखबा मेँ कवीश्वरजीक सहृदयता क्षीण नहि भेल छलैन्ह।

कवीश्वरजी प्रधानतः शैव छलाह। अतएव श्रीशिवप्रोक्त अध्यात्म रामायण कैं मुख्य आधार मानि मैथिली-रामायणक रचना कैलन्हि अछि। "नाना पुराण निगमागम" सँ अथवा "क्वचि-दन्यतोपि" विशेष सामग्री संचय नहि कैलन्हि अछि—यदि ई कही त अत्युक्ति नहि हैत। हँ, कतहु कतहु, परन्तु बहुत अल्पस्थान पर ग्रन्थान्तरक आश्रय लेलन्हि अछि। आधुनिक मैथिली-साहित्य क्षेत्रक पथप्रदर्शक वा पुनर्जन्मदाता कहैबाक श्रेय हिनकै छैन्ह। मैथिली-साहित्य मे विविध छन्दोबद्ध साहित्यकला पूर्ण एहन एक विशाल ग्रन्थ प्रायः क्यो नहिँ लिखलन्हि। स्फुट कविता क संग्रह वा मुक्तक-माला दोसरे प्रकार वस्तु थीक। अतएव यदि मैथिली साहित्याकाशक विद्यापति सूर्य थिकाह त "चन्द्रकवि" चन्द्र अवश्य

थिकाह। मैथिली-प्रेमी कें उचित थिकैन्ह जे विद्यापतिक जकाँ हिनको जयन्ती मनावथि और हिनक स्मरण कें चिरस्थायी रखबा क अन्यान्यो प्रयत्न करथि।

परम पवित्र मिथिला देशोचित सन्तोषमय धार्मिक विद्वज्जीवन व्यतीत करैत कवीश्वरजी सन १३१६ साल (१९०९ इ०) मे प्रायः ७९ वर्षक अवस्था मे काशी लाभ कैलैन्ह।

श्री शशिनाथ झा

मैनेजर,

दरभङ्गा प्रेस कं० लि०।

काशी निवासी ज्यौतिषाचार्य पं० श्रीबलदेव मिश्रजी मैथिली-रामायणक ओ कवीश्वर चन्दाझा क जीवन क विवेचनात्मक ग्रन्थ लिखि काशी सँ प्रकाशित कैलन्हि अछि। उक्त पण्डित जी "रामायण शिक्षा" नामक दोसर ग्रन्थ मे मैथिली रामायण क वैशिष्ट्य विस्तार रूपें देखौलन्हि अछि। मैथिली-रामायण प्रेमी पाठक कें दूनू ग्रन्थ देखने बहुत लाभ हैतैन्ह—ई आशा अछि।

—संपादक।

* श्री जनकनन्दिनी जयति *

* मैथिली रामायण *

॥ बालकाण्ड ॥

—*—

सरसमधुसुधातो गद्यपद्यैन्नवीनं
वचमजनिधरायाश्शारदाय। अधीनम् ।
सकलजननमस्यास्सन्नमस्यान्त यस्याः
पदयुगलमतास्यां नौमि नित्यं सुभक्त्या ॥ १॥
वन्दे वारणवदनं विघ्नध्वान्तप्रणाशने सूरम् ।
शाङ्करमतुलोदारं विधिगणशरणं गुणातीतम् ॥२॥

॥ चौपाई ॥

वन्दे गिरिपति – कन्याकान्तं * अप्रमेयमगणितगुणशान्तं
रजत - भूधर - द्युति - हर-भासं * श्रितकैलाशं जगन्निवासं
भुक्तिमुक्तिदं गणपति—तातं * परमोदारतया विख्यातं
आपत्तिरवनिभारसहर्त्ता * सेव्यो विभुः स्वतन्त्रः कर्त्ता
कर्त्तुरीप्सितं कर्म च येन * मखभवता प्रभुतातस्तेन
तस्मै नमो यतो निर्भीताः * मु[illegible]यो भुवन-शान्तये प्रीताः

भक्त्या तस्य च नामस्मरणे * मरणे भयमपि नान्तःकरणे
हे रघुनन्दन दुर्गति—खण्डन * पालय मां दिनकरकुलमण्डन

श्री मन्महीजनि मही जनि-जानि—गीतिम्
वैदेह-देश-वचसा रुचिरां सुरीतिम्
रामायणीय—चरितस्य सदर्थधारां
चन्द्रः प्रगृह्य वितनोति शुभैकसाराम् ॥३॥
जनुरिह मम जातं जानकी—जन्म - भूमौ
बुधसदसि निवासात्प्राप्तविद्यस्य सौख्यं ।
अनुभवत उदार- श्रीललक्ष्मीश्वरैश्शं
शृणुत शृणुत धीराः श्रीलचन्द्रस्य वाचम् ॥४॥
इह जगति यदस्ति स्थावरं जंगमं य—
त्तदतिशयनमस्यं ब्रह्मतो नापि भिन्नम् ।
भवति भवतु लोके सत्कथायाः प्रचारो
जनकनृपति—पुत्री—मातृभाषाश्चितायाः ॥५॥

॥ चौपाई ॥

शौनक पुछल कहल भल सूत * अति आनन्द मगन मन पूत
नारद योगी पर उपकार * करक हेतु सञ्चर संसार
सत्य लोक मुनि पहुँचल जखन * देखल विरञ्चिक वैभव तखन
जनिकर सिरिजल सब संसार * तनिक विभव के वरनय पार
वाल दिवाकर सन छवि भास * मार्कण्डेय प्रभृति तट वास
स्तुति करइत छलछथि छल हीन * ककरहु ततय देखल नहि दीन

ब्रह्मा संग शारदा दार * सकल अर्थ जानल व्यवहार
देव चतुर्मुख विश्वक नाथ * तनिका नारद जोड़ल हाथ
भक्ति दण्डवत् चरण प्रणाम * कयलनि स्तुति बचनै अभिराम।
तुष्ट कहल तनिका खग केतु * कहु नारद अयलहुँ की हेतु
कहलनि नारद देव समाज * अयलहुँ प्रभु अछि बड़ गोट काज
सकल शुभाशुभ जे किछु रहल * हमरा अपने पूर्व्वहि कहल

दोहा—कहू कृपा कय भय हरण, सम्प्रति अछि श्रोतव्य।
कमलासन मङ्गल करण, दुष्ट समय भवितव्य।

॥ चौपाई ॥

होयत कलियुग जखना घोर * सभ जन लम्पट सभ जन चोर
सत्य कथा ककरहु नहि नीक * दुराचार रत मन सबहीक
पर अपराध मध्य मन निरत * पर धनमें अभिलाषी फिरत
आनक बनितामे मन सटल * पर हिंसाक परायण पटल
आत्मा भिन्न देह नहि जान * नास्तिक गतिमति पशुक समान
माय बाप में द्वेष अलेख * अपने संसारी सुख देख
वनिता भ्रूभत देव समान * कामक किङ्कर कुत्सित ज्ञान
ब्राह्मणकाँ बाढ़त बड़ लोभ * वेदक विक्रय नहि मन क्षोभ
धनक उपार्ज्जने व्याकुल चित्त * विद्या पढ़ता मोह निमित्त
सभ जन त्यागत निज निज जाति * वञ्चक व्यवहारी दिन राति
क्षत्रिय वैश्य स्वधर्म्मक त्याग * करता कि कहब तनिक अभाग
नीचक उन्नति हयत अपार * शूद्र निरत ब्राह्मण आचार

बहुतो होइति धृष्टा नारि * पतिकाँ विपति देति कत गारि
श्वशुरक मन्द - कारिणी हयती * स्वेच्छा सुपथै कुपथमे जयती
तनिका सबहिक की गति हयत * जखना ई पर लोकमे जयत
कहल जाय की तकर उपाय * सभ ज्ञाता विधि नाम कहाय
सुनि मुनि कथा विरञ्चि उदार * ई भल कथा कयल सञ्चार
भल अहँ पूछल कहै छी नीक * शुभ गति कारक जे सबहीक
एक समय गिरिराज कुमारि * राम तत्व पूछल त्रिपुरारि
भक्ति वत्सला विनयक धाम * बूझल कथा चित्त विसराम
विश्वजननि नित पूजन करथि * लोचन मन आनन्दित धरथि
लोकक जखन होयत गय भाग * रामायणक बढ़त अनुराग
पढ़इत नर सदगतिमे जयत * जिबइत पूर्ण मनोरथ हयत
एकादशि तिथि कय उपवास * सभा रमायण करथि प्रकाश
वर्ण वर्ण गायत्री जेहन * पुरश्चरण फल पावथि तेहन
राम-नवमि दिन कर उपवास * रात्रि जागरण मन उल्लास
कुरुक्षेत्र तीर्थादि निवास * सूर्य्यग्रहण में पाप विनाश
आत्मतुल्य धन द्विजकाँ देथि * व्यासक सम द्विज दान से लेथि
तनिका से फल लाभ अनन्त * सत्य कहल छल गिरिजा कन्त
प्रति दिन रामायण कर गान * सुरपति आज्ञा तनिकर मान
रामायणक कथा बड़ गोटि * पढ़ने फल पाबी गुण कोटि
हनुमानक प्रतिमाक समीप * राम हृदय शिव मानस दीप
तीनि बेरि मौनी जे पढ़त * पूर्ण मनोरथ सुखचय बढ़त

॥ सवैया ॥

करथि प्रदक्षिण पीपर तुलसिक, राम हृदय पढ़इत जे भक्त ।
ब्रह्मघात पातक सभ छूटय, भक्ति भावना मन अनुरक्त ॥

॥ चौपाइ ॥

कहल महात्म रामगीताक * जानथि एक कान्त गिरिजाक
तकर आध गिरिजा पुम जान * तकर आध हमरा अछि ज्ञान
से हम किछु कहइत छी आज * सावधान सुनु सकल समाज
जनितहिँ मन निर्म्मल भय जाय * श्रीपति गीता देल पढ़ाय
उपनिषदुदधिक मन्थन कयल * गीता-सुधा राम से धयल
से लक्ष्मणकाँ कहि देल कान * अमर भेला से सुनि से ज्ञान

रूपमाला

धनुर्विद्या पढ़य कारण शैलजेश समीप ।
कार्त्तवीर्य्यक नाश-करण पूर्व्व भृगुकुल-दीप ॥
पार्व्वती ओ शम्भुकाँ से छल कथा संवाद ।
शुनल धारण कयल मनमे भेल अति आह्लाद ॥
ब्रह्महत्या आदि पातक शीघ्र होय विनास ।
राम-गीता पाठसौँ मन भक्तिसौँ एक मास ॥
दुः प्रतिग्रह निन्द्य भोजन असद्भाषण पाप ।
नाश हो एक मास पढ़लेँ रामचरित प्रताप ॥

नरेन्द्र दोबय हरिपद

शालग्राम तुलसि यति सन्निधि गीता पाठ जे करथि ।

वचन अगोचर से फल पाबथि भव जलनिधि से तरथि ।
निराहार एकादशि दिनमे द्वादशि संयम कारी ।
वृद्ध अगस्तिक निकट वासकर तनिकर फल बड़ भारी ॥
जानि लेब तनिकाँ रघुनन्दन सकल देव कर अर्च्चा ।
जीवन्मुक्त भक्तिसौँ संयम यम घर तनिक न चर्च्चा ॥
विना दान सौँ विना ध्यान सौँ विना तीर्थ मे गेलैँ ।
रामगीत अध्ययन मात्र मे फल अनन्त अछि धैले ॥
सुनु मुनि नारद बहुत कहव की श्रुतिस्मृति सकल पुराणे ।
रामायणक कथा तुलना नहि ई गति अछि किछु आने ।

हरिपद

कमलासन नारद सौँ कहलनि रामायण तहिठाम ।
श्रद्धा सौँ पढ़ि सुनि जन जायत सुर पूजित हरिधाम ॥

चौपाई

पृथिवी काँ बाढ़ल बड़ भार * चिन्मय पुरुष लेल अवतार
कयल प्रार्थना ई सुर-लोक * कहलनि धरणी काँ बड़ शोक
पृथिवी मे रघुकुल अवतार * धय प्रभु हरलनि पृथिवी भार
पुन ब्रह्मत्व पदहि चल गेल * पाप विनाशि वृहत् यश भेल
जानकि-नाथक करिय प्रणाम * भुक्ति-मुक्तिप्रद जनिकर नाम
कारण उत्पत्ति स्थिति नाश * माया - बाहर माया - वास
मूर्त्ति अचिन्त्य सान्द्र आनन्द * अमल सुबोध-रूप सुख-कन्द
विदित - तत्त्व सीतेश प्रणाम * हम करइत छी मन सुख काम

पढ़ शुन नित्य रामाय जैह * सकल पाप हर गुणमय सैह
नारायण पद सुख सौँ जयत * तनिकाँ कष्ट लेश नहि हयत
जौँ इच्छित भव बन्धन मुक्ति * पाठ रामायण अछि बड़ युक्ति
कोटि - कोटि जे कर गोदान * से फल सम जे पढ़ इ पुरान
पूर्व समय शिव विश्व - निवास * छल छथि बसइत गिरि कैलास
मणि सिंहासन बैसल ध्यान * यति - वर एहन दोसर के आन
सिद्ध संघ सौँ सेवित चरण * अभय त्रिनेत्र सकल अघ हरण
गिरजा प्रश्न कयल तहि ठाम * वास जनिक शंकर तन वाम–
हे परमेश्वर जगन्निवास * सकल चराचर अहँक विलास
कय प्रणाम हम पूछिअ सैह * परम इष्ट अपनैँ काँ जैह
भक्त छोड़ि अनका नहि कहथि * बुध विज्ञानि लोक जे रहथि
ईश्वर अपनैँक ईश्वर राम * जनिक जपैत रहैछी नाम
स्त्री स्वभाव सौँ पूछल फेरि * राम तत्त्व विभु कहु एक बेरि
मानुष रूपक धारण कयल * दशरथ नृपक पुत्र बनि अयल
तृण दिव्यास्त्र जयन्तक बेरि * शिव धनु तोड़ल तृण सम फेरि
गौतम - गेहिनि छलि पाषाण * तनिकर कयल राम कल्याण
अगम जलधि मे बाँधल सेतु * वानर योधा रावण हेतु
मानुष रूप अमानुष काज * एक कथा पुछइत हो लाज
निर्गुण ब्रह्म सगुण अवतरल * दुष्टभार धरणिक सभ हरल
जनिकाँ सुख दुख लेश न व्याप * सीता - कारण कयल विलाप

रोला छन्द

पुछल भक्ति सौँ जखन कथा ई गिरिवर - कन्या ।

अति प्रसन्न शिव कहल प्रिया अपनै अति धन्या ॥
जनु मयूर आनन्द मेघ-माला धुनि सुनि सुनि ।
रामचन्द्र काँ कय प्रणाम तनि तत्त्व कहल पुनि ॥
प्रकृतिहुँ सौँ पर छथि अनादि पुरुषोत्तम रामे ।
अद्वितीय आनन्द सकल कारण विश्रामे ॥
तनिके सभ चैतन्य दृश्य सकलावच्छिन्ने ।
लिप्त कतहु नहिँ होथि गगनवत पुन से भिन्ने ॥
सृष्टि सकल व्यवहार करथि जनिकर वर माया ।
मिथ्या सत्य प्रतीति यथा जल गगनक छाया ॥
विषयी जन काँ भास दोष सौँ दूषित दृष्टि ।
उत्तर दक्षिण कहथि विपर्य्यय भय गेल सृष्टि ॥
होइछ दिवा न रात्रि भानु काँ गिरिजा जहिना ।
नहि तम सम अज्ञान राम चिद्घन रवि तहिना ॥
जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति सकल साक्षी से निष्कल ।
तनिकर सेवा विना जन्म काँ मानव निष्फल ॥

चौपाई

कति बेरि राम लेल अवतार * कति बेरि हरलनि अवनी भार
ओ रामायण अछि शत कोटि * ब्रह्मलोक महिमा बड़ि गोटि
सबल सपुत्र दशानन मारि * धरणी भार सकल देल टारि
मारुत तनय प्रभृति महावीर * ज्ञान भक्ति शूरत्व गभीर
सीता लक्ष्मण कपि पति सहित * अयला निजपुर विधि शिव सहित
गुरु वसिष्ठ विधि सौँ अभिषेक * पाओल राज्य राम नृप एक

सिंहासन संस्थित महिपाल * कोटि सूर्य्यसम कान्ति विशाल
अञ्जनि-सुतकाँ भक्ति न थोड़ि * आगाँ ठाढ़ भेल कर जोड़ि
प्रभु जानथि हनुमानक मर्म * अतिशय अद्भुत हिनकर कर्म्म
लोभक रहित कयल सभ काज * ज्ञान चहै छथि से पुन आज
सुनु वैदेही कहिऔनि ज्ञान * अधिकारी सेवक हनुमान
हमरहि निकट सुचित भय रहिय * हमर तत्त्व हिनका अहँ कहिय
वैदेही प्रभु आज्ञा पाय * कथा कहल हनुमान बुझाय

सोरठा—जानब अहँ हनुमान, परब्रह्म श्रीराम काँ
ई निश्चय करु ज्ञान, मूल प्रकृति हमहीं थिकहुँ ॥
उद्भव पालन नाश, हमहिं स्वतन्त्रा कारिणी ।
हमरहु हुनके आश, तनिके सन्निधि मुख्य बल ॥

चौपाई

राम अयोध्या वर रघुवंश * जन्म लेल शिव मानस हंश
मुनि मख रक्षा भेलनि तखन * कौशिक मुनि संग गेला जखन
छली अहल्या पाथर भेलि * शाप छुटल उत्तम गति गेलि
जनक-पुरी मे शिव धनु भंग * कयलनि बहु विधि सज्जन संग
परिणय हमर भेल प्रभु संग * परशुराम अयला भल रंग
परिचय पाबि गेला तप भूमि * क्षत्रिय अरि नहि भेला घूमि
वास अयोध्या बारह वर्ष * नित नव नव अनुभव हिय हर्ष
केकयि कहल भेल वनवास * दशरथ छोड़ल जीवन आश
चित्रकूट सौँ दण्डक गहन * कयल निवास बहुत दुख सहन
निधन विराध तथा मारीच * यति बनि आयल रावण नीच

कयलक माया सीता हरण * युद्ध जटायुक भग्न गेल मरण
मोक्ष कबन्धहुकाँ भेल तेहन * मुनि लोकहुकाँ दुर्लभ जेहन
शबरी भक्ति सुपूजन कयल * तनिकाँ मुक्ति युक्ति छल धयल
सुग्रीवक संग मैत्रीकरण * तनिक हेतु बालिक भेल मरण
सीतान्वेषण कपि प्रस्थान * लंका दग्ध कयल हनुमान
रावण काँ रण मारण हेतु * बाँधल गेल समुद्रहुँ सेतु
लंका घेरल बजरल मारि * रावण मरण सुरण मे हारि
तनिकर पुत्र प्रभृति नहि रहल * बहुत अवज्ञा प्रभुवर सहल
देल विभीषण जनकाँ राज * प्रभुवर शरण धयल निर्व्याज
पुष्पक चढ़ि प्रभु हमरा सहित * जनपद अयला अरिसौँ रहित
राजा राम नाम अभिषेक * कहल कथा संक्षेप विवेक
सकल कयल हमहीँ सब कर्म्म * ज्ञानी जानथि एकर मर्म्म
निर्व्विकार अखिलात्मा राम * ई आरोप कि तनिकाँ ठाम

सोरठा—सुनि गिरिजा वृत्तान्त, महादेव कहलनि कथा ।
तखना सीताकान्त, मारुतनन्दन सौं कहल ॥

दोहा—यथा जलाशय त्रिविध नभ, देखि पड़ै अछि जेह ।
महाकाश हद मे तथा, प्रतिविम्बहु मे सेह ॥
एक पूर्ण चैतन्य मे, जीव भ्रम आरोप ।
त्रिगुण मायाकृति सकल, तत्त्वज्ञान सौँ लोप ॥
तत्त्वमसि प्रभृतिक श्रुतिक, महावाक्य सौँ ज्ञान ।
निश्चय मन भेलैँ तहाँ, ब्रह्म जीव नहि आन ॥
मननशील जे हमर जन, जानि जाथि मद्भाव ।

ज्ञान विना हो मोक्ष नहि, बहुत जन्म जौँ पाब ॥
ई रहस्य अहँ काँ कहल, हम अपनहि शुभ ज्ञान ।
भक्तिहीन काँ देब नहि, जौँ हो इन्द्र समान ॥

चौपाई

गिरिजा शंकर काँ संवाद * रघुपति हृदयक बड़ मर्य्याद
ई गोट पढ़लेँ रहए न पाप * गोपनीय थिक प्रबल प्रताप
पढ़थि भक्तियुत जे मन लाय * ब्रह्म – बधादिक पाप मेटाय
बहु जन्मार्जित पापक नाश * यमक यातना कृत नहि त्रास

घनाक्षरी

जाति पाति नष्ट भ्रष्ट पापी पर - धन – रत ब्रह्मघाती उतपाती मित्रजन नासी जे । कुल मे कलंकी ओ कुलघ्न हेमचोर चाढ़ योगिवृन्द-अपकारी धर्म्म मे उदासी जे ॥ रामचन्द्र पूजिकैँ करय जे हृदय-पाठ योगीन्द्र अलभ्य पदहीक होथि वासी से । 'चन्द्र'भन सर्व्व लोक विजयी विभूतिमान पड़थि न कदापि कठोर यम फाँसी से ॥

इति श्री मैथिल चन्द्र कवि विरचिते मैथिली रामायणे

प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

चौपाई

शिव शिव कहल शुनल हम कान * रामायण वर अमृत समान
पिबइब पिबइत तृप्ति न भेल * भव सन्ताप सकल चल गेल
धन्य भाग्य थिक मन मे गुणल * राम तत्त्व संक्षेपहि सुनल

कयल अनुग्रह संशय छुटल * अपनेसौँ सुनि रामक पटल
सुनव कथा सम्प्रति विस्तार * कहु कहु प्रियतम परम उदार
अति आनन्द शम्भु सुनि चित्त * राम - चरित दुखहरण निमित्त
पूर्व्व काल हमरा गुणधाम * कहलेँ छल छथि अपनहि राम
सम्प्रति हम कहइत छी सैह * दुख अज्ञान निवारक जैह
चिरजीवी सन्तति अति ऋद्धि * श्रोता हाथ सकल गोट सिद्धि

दोवय छन्द

एक समय भयदीना अवनी भारेँ व्याकुल भेली।
सुरभिरूप बनि कनइत कनइत धाम विरञ्चिक गेली॥
सकल देवगण तनिका संगे पुछलनि बिधि कहु धरणी।
सञ्च सञ्च से सबटा कहलनि दुष्ट दशानन करणी॥

चौपाइ

यजन सुजप मुनि तप जे करथि * तनिकर राक्षस प्राणे हरथि
हरि हरि अनइछ अनकर नारि * डरसौँ के कर हुनि सौँ मारि
थर थर काँपथि सब दिकपाल * रावण जनमल भल-जन-काल
धारण धर्म्म देल सुनझाय * भार अपार सहल नहि जाय
सकल दुःख हम देल जनाय * अपनहि बुड़लैँ युग बुड़ि जाय
जौँ अपने नहि टारव भार * होयत अकालहि लय संसार
कमलासन सुनि ध्यानावस्थ * सकल देवगण छला तटस्थ
कहलनि विधि चलु हमरा संग * अहँक दुःख सब होयत भंग
क्षीर समुद्र तीर मे जाय * ब्रह्मा बैसला ध्यान लगाय

स्तुति कयलनि पढ़ि श्रुति सिद्धान्त * जय नारायण लक्ष्मीकान्त
स्तोत्र पढ़ल जे पठित पुराण * गद गद वचन परम विज्ञान
हर्षक नोर बहल जलधार * प्रभु प्रसन्न भेल करुणागार
जोति प्रकाश भानु सम भेल * श्रीनारायण दर्शन देल
इन्द्रनीलमणि छबिमय अंग * स्मित-मुख लोचन पङ्कज रंग
हार किरीट तथा केयूर * कटकादिक शोभा भरिपूर
श्रीवत्सान्वित कौस्तुभ राज * सनकादिक स्तुति करथि समाज
पार्षद लोक सकल छल ततय * प्रकट भेला पुरुषोत्तम जतय
शंख रथाङ्ग गदा जलजात * कनक-जनौ कनकाम्बर गात
लक्ष्मीसहित गरुड़पर चढ़ल * देखितहि विधि मन आनन्द बढ़ल

वानिनी छन्द

शत शत शत नमस्कार देवदेव आजे।
दीना पृथिवीक दुष्टभारनाश काजे॥
अपनैक त्रिगुणात्म सृष्टि सर्व्वमान्य माया।
रचना-प्रतिपाल- नाश कारिणी अकाया॥
निर्गुण सगुणावतार भूमि-भार - हर्त्ता।
स्वेच्छासैँ एकसैँ अनेकरूप धर्त्ता॥
संसृति-जल-राशि-तरण नावकल्प भक्ति।
सकल - पदार्थदा अनन्तसारशक्ति॥ २॥

चौपाइ

स्तुति करइत विधिकाँ विभु कहल * अपनैँ सबहि दुःख बड़ सहल

विधि कहु की करु हम उपकार * सुनि विधि मन भेल हर्ष अपार
परमेश्वर सुनु रावण नाम * राक्षसेन्द्र बस लङ्का - धाम
ओो पौलस्त्यक तनय महान * संप्रति दुष्ट एहन नहि आन
हम वर देल भेल अन्याय * हमरहि सबकाँ भेल बलाय
के कह तनिका नीति बुझाय * उचित न विरनी—वृन्द जगाय
तीनि लोक मे से के लोक * जनिका रावण देल न शोक
एक गोट अछि तनि मे आशा * मानुष हाथैँ तनिक विनाश
राखल जाय देव संसार * अपनैँ धरु नर-वर अवतार
दुख सुनि तखन कहल भगवान * नीक नीक होयत कल्याण
हम सन्तुष्ट देल वरदान * तकरा मध्य कथा नहि आन
कश्यप बहुत तपस्या कयल * विष्णु होथु सुत ई मन धयल
संप्रति दशरथ से तप वेस * छथि से उत्तर कौशल देश
तनिकर पुत्र होयब हम जाय * कौशल्या सौँ शुभ दिन पाय
चारि रूप हम अपनहि हयब * केकयि सुमित्रा पुत्र कहयब
माया हमरे आज्ञा पाय * सीता नाम कहौतिह जाय
तनिकाँ संग हरब महि भार * माया लीला अति विस्तार
बहुत कयल विधि प्रभु-गुणगान * ई कहि भेला अन्तर्धान
होयत रघुकुल विभु - अवतार * माया मानव गुण - विस्तार
अपनहुँ सबहिँ एहन मति करब * वानर भालु रूप भल धरब
यावत प्रभु महि मण्डल रहथि * होयब सहाय.जतय जे कहथि
ई सब देव सकल सुनि लेल * दृढ़ भरोस धरणी काँ देल
धरणी धरु धरु धीर सुचित्त * विभु अवतरता अहँक निमि

मनवांछित अहँकाँ अछि जेह * सकल - शक्तियुत होयत सेह
सुख सौँ विधि गेला निज लोक * ई सुनि काश्यपीक कृश शोक

हरिपद

पर्व्वत वृक्ष अस्त्र वानरतन कयल अमर-गण धारण।
विभुक बाट तकइत नित सबजन रण सहायता कारण॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकविविरचिते मैथिलीरमायणे द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

चौपाई

राजा दशरथ बड़ श्रीमान * सत्य - पराक्रम एहन न आन
पुरी - अयोध्याधिप अति वीर * सकल - लोक - विश्रुत रणधीर
पुत्र - हीन चिन्तातुर चित्त * गुरु - समीप - गत तकर निमित्त
कयल सविधि गुरु-चरण प्रणाम * कहलनि पुत्र - हीन धिक धाम
गुरु अपनैँ सन राज्य पवित्र * पुत्रहीन की कर्म्म विचित्र
कयल जाय गुरु तेहन उपाय * श्री - परमेश्वर होथि सहाय
पुत्रहीन कैँ राज्यक भोग्य * लुप्त - पिण्ड - क्रिय पुत्र न योग्य
लक्षण - लक्षित पुत्र अनेक * हमरा होथि से करू विवेक
गुरु वशिष्ठ कहलनि तत्काल * चिन्ता मन जनु करु महिपाल
चारि पुत्र अहँकाँ नृप हयत * जनिक सुयश त्रिभुवन मे जयत
शान्ता - स्वामी मित्र जमाय * आनू तनिकाँ अपनहि जाय
काम-यज्ञ करु विधि सौँ भूप * हमरा सब मिलि कर्म्म अनूप
अङ्ग देश मे भाग्य विशाल * रोमपाद नामक महिपाल
पुत्र न तनिकहुँ गत कत वर्ष * चिन्तातुर मन रहल न हर्ष

तनिकाँ कहलनि सनत्कुमार * पुत्र होयत करु एहन विचार
शृङ्गीऋषि जौँ एहि थल आब * तनिका सौँ बाढ़य सद्भाव
शान्ता कन्या तनिकाँ देब * मनवांछित फल हुनि सौँ लेब
शृङ्गी रहता घरहिँ जमाय * साध्य कार्य्य पुत्रेष्टि कराय
मन्त्री सभ काँ पुछल नरेश * शृङ्गीऋषि आबथि एहि देश
मन्त्रीगण भण सुनु महराज * बड़ गड़बड़ सन लगइछ काज
ओ वनचर व्यवहार न जान * सभकाँ जानथि एक समान
वनिता पुरुष भेद नहि चित्त * जाएत के वन तनिक निमित्त
बड़ क्रोधी मुनि तनिकर बाप * अनुचित देखलेँ देथिनि शाप
सुमिरि-सुमिरि तनि पुण्य-प्रताप * हे महिपति जिव थर-थर काप
शृङ्गी पिता विभाण्ड स्वभाव * साध्य न मन्त्री देल जवाब

दोवय छन्द

भूपति तखन वार-वनिता केँ अपना निकट बजाओल।
अपन निमित्त शृङ्गिऋषि आबथि सब कहि काज सुनाओल॥
मुनि-मन-मोहिनि तोहरि सनि के जौँ ओ मुनि केँ लएबह।
हमर मनोरथ-सिद्धोत्सव मे कोटि कोटि धन पएबह॥
हाथ जोड़ि गणिकागण बाजलि साधक कार्य्य विधाता।
आनब हम ठानब प्रपञ्च बड़, स्वस्थ चित्त रहु दाता॥
तकइत तकइत सभ जनि पहुचलि पाओल तनिक ठेकाना।
रतिपति-वर्द्धन राग अलापय रतिचेष्टा कर नाना॥
सङ्ग सङ्ग शृङ्गी लग सभ जनि गणिका ओ सप्राप्ता।
तनिसौँ अतिथि-सपर्य्या पाओल तनिक जनक भय-व्याप्ता॥

गाबि गाबि नित गीत मनोहर मिलि मिलि मुनि तन जाथि ।
कन्द मूल फल प्रीति सौँ देथि जे मुनिहिक सोझाँ खाथि ।।
सो०—फल हमरो मुनि खाउ, लाइलि छी बड़ि दूर सौँ ।
कि कहब आश पुराउ, "उचित," कहल वेश्योक्ति सुनि ।।

हरिपद

मोदक मधुर मनोजविवर्द्धन सुधा - समान विलक्षण ।
गणिका देथि वनी नहि जानथि लगला करय सुभक्षण ।।
एक वर्ष सहवास नियत छल छल न बुझल दुर्लक्षण ।
रतिपति-गति संप्राप्त जानि मुनि लय गेली पुर तत्क्षण ।।
बड़ उत्सव महिपाल कयल तत शान्ता कन्या देलनि ।
शृङ्गी मुनि जमाय सौँ मख-विधि पूर्ण मनोरथ भेलनि ।।
रोमपाद पुत्रोत्सव पाओल ओ नृप अहँकाँ मित्रे ।
शान्ता सहित तनिक पति आबथि कार्य्य-सिद्धि की चित्रे ।।

चौपाइ

गेला रोमपाद नृप देश ❀ श्रीयुत दशरथ विदित नरेश
मित्र-भवन रहला किछु काल * कहल प्रयोजन निज महिपाल
शान्ता कन्या शृङ्गि जमाय * तनिकाँ दिऔन अयोध्या जाय
कयल लेआओन कन्या जानि * रोमपाद घर सब लेल मानि
जाथु अवश्य अपन घर थीक * हिनका गेलेँ निश्चय नीक
चलला कन्या - संग जमाय ❀ दशरथ हर्ष कहल नहि जाय
पहुँचलाह नृप अपना नगर * भेल हकार नगर मे सगर
वनिक चुमाओन उत्सव गीति * सुता जमाइक सन सब रीति

सभ रानी मन हर्ष अपार * नित नव कन्या वर व्यवहार
दशरथ यज्ञ कयल तत गोट * इन्द्रक विभव देखि पड़ छोट
महिमे जतेक महीप छलाह * दशरथ यज्ञ समय अयलाह
सभहिक कयल परम सम्मान * गुरु वसिष्ठ वसु मन्त्रि प्रधान
यज्ञारम्भ वसन्त विचारि * सहस्राक्ष मन मानल हारि

॥ हरिपद ॥

दशरथ नृपति विष्णु मति सौं तत शृङ्गी मुनिकैं अनलनि ।
मन्त्रीसहित नृपति अति शुचिसौं सविधि काम मख ठनलनि ॥
पापरहित चित मुनि श्रुति-पारग बहुत यज्ञ में अयला ।
होम अनलसौं दिव्य पुरुष एक स्वर्ण वर्ण बहरयला ॥
पायस पूर्ण पात्र कर लेलैं कहि गुण नृपकैं देले ।
थोड़हि दिनमें परमेश्वर सुत मन मानू अछि भेले ॥
पायस लेल नृपति आनन्दित मुनि गुरुपद कय वन्दन ॥
अन्तर्द्धान अग्नि कहि भेला आधि भेल सब खण्डन ॥
गुरु वसिष्ठ शृङ्गी ऋषि कहलनि रानी पायस खयती ।
की बिलम्ब शुभ अवसर नृप अछि पूर्ण मनोरथ हयती ॥
कौशल्या केकयी छली तँह दूइ भाग कय देलनि ।
ततय सुमित्रा पाछाँ अयली तनिका नहि किछु भेलनि ॥
अपन भाग सौं दुनु जनि रानी अर्द्ध भाग पुनि कयलनि ।
देल सुमित्रा काँ तीनू जनि पायस से तहँ खयलनि ॥
सभ जनि भेलि सगर्भा तनिकहि छवि सौं मन्दिर शोभित ।
जगन्निवास वास जत कयलनि कोटि भानु शशि द्योभित ॥

हंसगति छन्द

भक्तक वश भगवान एहन मति फुरलनि ।
दशम मास मधु मास आश प्रभु पुरलनि ॥
कौशल्या थिकि धन्य जनिक सुत भेलाह ।
ब्रह्मानन्दानन्दें दोष दुख गेलाह ॥
शुक्लपक्ष नवमी शुभ कर्क्क उदित हित ।
मध्य दिवस नक्षत्र पुनर्व्वसु अभिजित ॥
पञ्चग्रह उच्चस्थ मेषमें दिनकर ।
सृष्टि त्रिगुण उतपत्ति शक्ति कर जनिकर ॥

चौपाइ

वारिद वरिसल तखना फूल * जन्म लेल सब सम्पति मूल
नीलोत्पलदल श्यामल राज * चारि सुभुज कनकाम्बर भ्राज
अरुण जलज वर सुन्दर नयन * कुण्डल मण्डित शोभा अयन
सहस्र सूर सन सुछवि प्रकास * कुटिल अलक सुमुकुट भल भास
शंख रथाङ्ग गदा जल जात * वनमाली स्मितमुख अवदात
नयन करुणा रससौं परिपूर * इन्दीवर शोभा कर दूर
श्री श्रीवत्स हार रमणीय * केयुर नूपुर गण कमनीय

दो०—कौशल्या देखल सकल, अदभुत बालक भेल ।
कहलनि से करजोड़िकें, कनइत हर्षक लेल ॥

चौपाइ

वार वार हम करिय प्रणाम * हम अबला अज्ञानक धाम

वचन बुद्धि मन पहुँच न जतय * स्तुति हम कि करब फुरय न ततय
रचना पालन प्रलय स्वतन्त्र * विश्व चढ़ल भल माया यन्त्र
ब्रह्म अनामय हर्षक मूल * हमरा पर जे प्रभु अनुकूल
अँहक उदर वर बस संसार * हमर तनय बनलहुँ व्यवहार
कहइत छी प्रभु हम करजोड़ि * रूप अलौकिक ई दिव्य छोड़ि
एहि रूपक हमरा रह ध्यान * बनल रहय नित ई हित ज्ञान
सुन्दर शिशु सरूप अँह धरिय * दिन दिन देव कृतारथ करिय

रोला—तखने कहल श्रीनाथ अम्ब वांछित अछि जेहन।
किछु नहिँ करब बिलम्ब रूप करइत छी तेहन ॥
भूमि भार हरणार्थ विधि स्तुति बहुत सुनाओल।
अहँ दशरथ तप कयल तकर फल दर्शन पाओल ॥
हमर होथु श्रीनाथ पुत्र पूर्वहि मगलहुँ बर।
दुर्लभ दर्शन हमर लाभ अछि नहि संसृति डर ॥
ई संबाद जे पढ़त सुनत सारूप्य हमर से।
दुर्लभ हमर स्मरण अन्तमे पाओत नर से ॥

चौपाइ

ई कहि बनला सुन्दर बाल * इन्द्रनील छवि नयन विशाल
बाल अरुण वन दिव्य प्रकास * जनिकर माया विश्व विलास
पुत्र जन्म सुनि मुदित महीप * सत्वर गेला गुरुक समीप
सहित वसिष्ठ देखल नृपतनय * हर्षें किछु नहि कहइत बनय
जय जय शब्द सकल थल सोर * नृपति नयन वह हर्षक नोर
तखन कयल नृप जातक कर्म्म * उत्तम कुलक उचित जे धर्म्म

केकयि सौं उत्पति सुत भरत * कमल कि लोचन समता करत
पुत्र सुमित्राकाँ दुइ गोट * लक्ष्मण ओ शत्रुघ्न सुछोट
देल विप्र काँ गाम हजार * बड़ गोट उत्सव चारि कुमार
कनक रत्न पट ओ गोदान * करथि नृपति जैँ हो कल्यान

घनाक्षरी

मगन महीप मन देखि याचकक गन, देव देव करथि अनन्त रत्न बरषन।
कत रथ चढ़ि कतचढ़ि गजराज पीठ कत वाजिराजि न रहल चित्त धरषन।।
सोहर मनोहर सुगाब किन्नरी नरी क बनथि सुरूप एत जन केओ परख न।
देव-दुन्दुभीक धुनि गगन प्रसून बृष्टि रामचन्द्र जनम उत्सव की प्रहरषन।।

चौपाइ

रमित होय मुनि मन जेहि ठाम * तनिकर नाम धएल मुनि राम
कारक भरण भरत तैं नाम * लक्षण युत लक्ष्मण गुण धाम
करतागय शत्रुक संहार * नाम धयल शत्रुघ्न उदार
रामक सह लक्ष्मण रह सतत * शत्रुघ्नो भरतक संग निरत
दुइ दुइ जन पायस अनुसार * बाल सुलीला कर सञ्चार
बालक बचन सुधाक समान * राजा रानी सुनि सुनि कान
मन आनन्द कहल की जाय * वचन मनोहर चारू भाय
बाल बिभूषण शोभा वेश * से देखि रानी मुदित नरेश
नाचथि गावथि नाना रङ्ग * सम वय बालक लय लय सङ्ग
नृपति बजावथि भोजन वेरि * हँसि पड़ाथि लग जाथि न फेरि
कौशल्याकाँ कह तह भूप * पकड़ि लाउ बालककाँ चूप

हसइत कहुखन अपनहि आब * कादो माटि हाथ लपटाब
किछु किछु नृपतिक रुचिसौं खाथि * चञ्चल खेड़िक हेतु पड़ाथि
बालक कौतुक जे प्रभु कयल * से शिव गिरिजा मानस धयल
बरुआ भेला चारु कुमार * उपनयनक गुरु कयल बिचार
चारू जन विधि सौं उपनीत * सभ विद्या पढ़ि परम विनीत
धनुर्वेद विद्या निष्णात * शास्त्र न एक तनिक अज्ञात
राम संग लक्ष्मण नित रहथि * आज्ञा करथि राम जे कहथि
शत्रुघ्नो भरतक संग तेहन * लक्ष्मण राम रीति मति जेहन
अश्व चढ़ल कर धनुष सुबाण * नित्य शिकारक हेतु प्रयाण
मेध्य मेध्य मृग मारथि जाय * पिता निकट से देथि पठाय
उठि सबेरि स्नानादिक कर्म्म * करथि सनातन जे कुल-धर्म्म
राज काज कर आलस थोड़ * लागथि नित्य पिताकाँ गोड़
बन्धु सहित गुरु आज्ञा पाय * भोजन करथि तखन नित जाय
धर्मशास्त्र विधि सुनि व्याख्यान * करथि सतत मन उत्तम ज्ञान

दोहा—मानव-लीला करथि प्रभु, निर्गुण रहित विकार।
जानथि ब्रह्मा प्रभृति नहिँ, विभु माया विस्तार ॥

इति श्री चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाइ

कौशिक रामक दर्शन काज * गेला दशरथ नृपति समाज
दशरथ कयल तनिक सम्मान * मुनि वसिष्ठ सन गुरु मतिमान
अपनेक सदृश जाथि जन जतय * संपति सकल पहुँच सच ततय

बहुत कृतार्थ कएल मुनि आज * अभ्यागत सत हमर समाज
कोन हेतु गुरु मुनि संचार * कहल जाय करु तकर विचार
सुनि सुनि कहल सुनिय महिपाल * कार्य्य उपस्थित ई एहि काल
यज्ञारम्भ करी हम जखन * अबइत अछि राक्षस-गण तखन
नाम सुबाहु तथा मारीच * दुहु प्रधान अज्ञानी नीच
यज्ञ - विघ्न - कारक अवतार * मरत ककर सक कयल विचार
लक्ष्मण राम ततय जौं जाथि * हिनक त्रास सौं दुष्ट पड़ाथि
देल जाय होयत कल्याण * रक्षा करत कहू के आन
गुरु वसिष्ठ सौँ करू विचार * अनुमति सुयस होयत संसार
हँ की नहि नहि बजला भूप * हुनि मुनि आगाँ रहला चूप
नृप एकान्त कहल निज आधि * मुनि-कृत बाढ़ल बहुत उपाधि
गुरु कहु करब कि देब न तनय * क्रोधी मुनि मानता न विनय
राम विना नहि जीवन रहत * नहि जौँ देब लोक की कहत
बहुत सहस गत भै गेल वर्ष * चारि तनय विधि देल सहर्ष
सभ जन से छथि अमर समान * रामचन्द्र छथि हमरा प्रान
जौँ नहि देब देता मुनि शाप * हृदय हमर गुरु थर थर काँप
कहु कर्त्तव्य उचित हो कर्म्म * हम सपनहुँ नहि करब अधर्म्म
कहल वसिष्ठ सुनू महिपाल * कि कहब अपनैँक भाग्य विशाल
ई वृत्तान्त कतहु नहि कहब * पुछलहुं उत्तर मौने रहब
हरण हेतु भूमिक सभ भार * विधि - प्रार्थित नर - वर अवतार
नारायण छथि जानब राम * चिन्मय सकल विश्व - विश्राम
अँह कश्यप तप कयल अपार * अदिति थिकथि कौशल्या दार

भेला प्रसन्न देल वर - दान * पुत्र अहाँक भेला भगवान
तनिकर माया सीता भेलि * मान्य मही मिथिलामे गेलि
रामक होएत ततय विवाह * कौशिक तेहि कारण अयलाह
ई वक्तव्य कतहु नहिँ थीक * होयत नृपवर अहँइक नीक
कौशिक पूजन करु दयचित * आएल छथि मुनि जनिक निमित्त
लक्ष्मण सहित रामकाँ देब * सुयश विश्व भरि भूपति लेब
कहल वसिष्ठ शुनल महिपाल * कृत - सुकृत्य आनन्द विशाल
लषण राम काँ भूप बजाय * वार वार उर कण्ठ लगाय
सजल नयन नृप दूनू भाय * कौशिक मुनि केँ देल सुनभाय

रोला—आनन्दित मुनि भेल नृपतिकाँ आशिष देलनि
राम सुमित्रा - पुत्र दुनू जन संग कैँ लेलनि
धनुष बाण तूणीर जुगल भ्राता कर धयलनि
मुनि-मण्डलि-महि जाय सकल आनन्दित कयलनि

हरिपद

चलइत बाट ताड़का दौड़लि कौशिक देल चिन्हाय
रघुवर शर मारल एक तनिकाँ जे मुनि-जनक बलाय
बड़ पापनि मुनि-प्राणक सापिनि छलि करुणा सौँ रहिता
सिद्धाश्रमक सङ्कटा मुइलेँ मुनि-मंडलि सुख-सहिता

अनुष्टुप् छन्द

बला अतिबला विद्या देव - निर्मित देल से ।
क्षुधा - तृष्णादि-शान्त्यर्थ राम सानन्द लेल से ॥

मालिका—कण्ठ अङ्कमे लगाव । कौशिकादि सौख्य पाव ॥
धन्य धन्य भूप-बाल । दुष्ट राक्षसोंक काल ॥

पादाकुल दोहा

विश्वामित्र चरित्र राम-कृत देखल प्रमुदित चित्त ।
मन्त्र सहित सर्व्वास्त्र राम काँ देलनि समर निमित्त ॥]

चौपाई

मुनि - संकुल कामाश्रम राम * एक राति कयलनि विश्राम
उठि प्रभात गेला मुनि सङ्ग * सिद्धाश्रम देखल भल रंग
सब सौँ कहलनि विश्वामित्र * अतिथि एहन के आन पवित्र
हिनकर पूजन मन दय करिय * दुष्ट - निशाचर - भय सौँ तरिय
विश्वामित्र कहल मुनि जेहन * रामक कयल से पूजन तेहन
रामचन्द्र कौशिक आवेश * कहलनि दीक्षा करु प्रवेश
राक्षस दुइ काँ दिअओ देखाय * सावधान हम दुनू भाय
तेहन कयल तत मुनि-समुदाय * यज्ञारम्भ कयल मुनि जाय
काम - रूप राक्षस दुहु फेरि * खल आयल मध्यान्हे बेरि
तनिकाँ ज्ञात न दोसर सृष्टि * शोणित हाड़ कयल खल वृष्टि
रामचन्द्र दुइ शर सन्धानि * मारल दुष्ट निशाचर जानि

हरिपद

रामचन्द्र-कर-धनुष-मुक्त-शर-परवश खल मारीच ।
शत योजन घुमि मृतक सदृश डुमि खसला जलनिधि बीच ॥

ठामहि वीर सुबाहु भस्म भेल रघुवर सत्त रखवार।
अति अद्भुत नर-वर रण-लीला अविकल सकल निहार॥

बरवा—तदनुयायि अततायिकै हनिहनि तीर।
सभकें लछमण मारल बड़ रणधीर॥

रोला०—पुष्प-वृष्टि, सुर कयल देव दुन्दुभी बजाओल।
जय जय ध्वनि उच्चार सिद्ध-चारण गुण गाओल॥
हर्षित विश्वामित्र ततय पूजा विधि कयलनि।
सानुज श्रीरघुनाथ भक्ति सौँ हृदय लगओलनि॥

इति श्री चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

चौपाई

तिन दिन प्रभु रहला ओ देश * कन्द मूल फल भोजन बेश
कहलनि कौशिक कथा पुरान * पुरुष पुराण सहज सब जान
चारिम दिन कहलनि ओ राम * नव उत्सव मिथिलाधिप-धाम
तिरहुति सन नहि दोसर देश * विज्ञानी मानी मिथिलेश
थापित शंकर धनु तहि ठाम * अपनहु काँ देखक थिक राम
देखब तनि मर्य्यादा जाय * जनक नृपति सौँ पूजा पाय
सुनि सुनि संग चलि लछुमन राम * गंगा उतरि विदेहा नाम
दिव्य फूल फल भल तरु पाँति * खग मृग रहित भेल दिन राति
मुनि कें पुछलनि से देखि राम * एहि आश्रमक कहू की नाम
अति आह्लादित करइछ चित्त * पुण्याश्रम की एहन निमित्त
विश्वामित्र कहल से सूनि * आश्रम छल छथि गौतम मूनि

तप-बल सौँ तेजस्वी भेल * कन्या तनिकाँ ब्रह्मा देल
नाम अहल्या तेहनि न आन * कयलनि विधि वनिता निर्म्मान

रूपक दण्डक

न्याय सूत्र- कर्त्ता गौतम मुनि, ब्रह्मचर्य्य-व्रतधारी, बड़ भारी ।
कोनहु लोक एहनि के सुन्दरि, तनिक अहल्या नारी, सुकुमारी ॥
वासव काम-विवश रस-लम्पट, रूप तनिक मन धारी, छलकारी ।
गौतम आश्रम राति रहथि नहि, निय पातिव्रत टारी अघ भारी ॥

तीरभुक्ति-सङ्गीतानुसारेण स्मरसन्दीपन कोडार छन्दः

धाता लिखल जेहन भाल ।
से फल भेलैँ से पथ गेलैँ क्रमहि काले काल ॥
गमहि गमहि गौतम जखन गेहक निकट धाओल ।
परक कारन नरक परक तरक तेहन पाओल ॥
देखल चरित बुझल दुरित दारक मारक दोषे ।
शान्तिक पटल सकल हटल सटल अटल रोषे ॥

रूपक दण्डक

अति-अनर्थ-कर्ता कह के तो, शून्याश्रम - सञ्चारी, हठकारी ।
क्षणमे दुष्ट भस्म हम कय देब, हमर रूप की धारी, छल भारी ॥
कहल इन्द्र अपराध कयल हम, कामक भेलहुं दासे, मति नासे ।
विधिक पुत्र ! करु क्षमा इन्द्र हम, सकल लोकमे हासे, अति त्रासे ॥

हरिपद

इन्द्रक वचन सुनल जेहि खन मुनि कोप लाल बड़ आँखि ।

भग हजार टा तनमे होयतहु उठला गौतम भाखि ॥
आश्रम जाय अहल्या देखल कपड़त जोड़ल हाथ।
मिथ्यालाप शाप डर कयल न रहल उपाय न लाथ ॥

चौपाइ

गौतम कहल रहहगय जाय * पापिनि पाथर भितर समाय
जल जनु पीबह अन्न न खाह * आश्रम छोड़ि कतहु जनु जाह
जन्तु मात्र सौं आश्रम हीन * होयतहु यावत पातक क्षीन
दिवारात्र तप करह सहिष्णु * हृदय ध्यान परमेश्वर विष्णु
राम राम मन मनमे कहब * बहुत सहस वत्सर एत रहब
जखन होयत रामक अवतार * हरण हेतु अवनिक सभ भार
सानुज से एहि आश्रम अबि * तोर भल करता ई अछि भावि
पाथर परसहि रामक चरण * तोहरा अभय दुरितचय - हरण
तनिकर पूजन भक्ति प्रणाम * लोचन - गोचर प्रभुवर राम
सेवा हमर पूर्व्व सम करब * कोक समान संग सञ्चरब
ई कहि गेला मुनि हिमवान * आश्रम भै गेल आनक आन
गेलथिनि गौतम एतहि राखि * हिनका दोसर देखथि न आँखि
अपनैक चरण चाहथि धूरि * हिनकर दुःख निकर करु दूरि
कौशिक रामक धय लेल हाथ * करु उद्धार देव रघुनाथ
विधि-तनयाक विपति-तति हरण * परस भेल तेहि पाथर चरण
अपन रूप पाओल तहिठाम * तनिकर राम कयल परनाम
दशरथ - तनय राम थिक नाम * ब्रह्म - पुत्रि अयलहुँ अहिठाम

से देखल पीताम्बर वीर * लक्ष्मण सहित हाथ धनु तीर
स्मित मुख-पंकज पंकज-नयन * श्रीवत्संकित शोभा अयन
वर-माणिक्य-कान्ति श्रीराम * देखि अहल्या आनन्द - धाम
हर्ष लेल लोचन बड़ गोट * तन रोमाञ्च प्रपञ्च न छोट
मन पड़ि आयल गौतम कहल * कर लगली परमेश्वर टहल
कहइत बाढ़ विपुल स्वर भग * हर्ष न अटय अहल्या अंग

गीत

हमर गति अपनैँ सैँ के आन ।
करुणागार दीन - प्रति - पालक रामचन्द्र भगवान ॥
पिता विधाता घुरि नहि तकलनि पति मति भेलहु पषान ।
सुरपति कुमति विदित भेल कतए न हम अबला की ज्ञान ॥
जन्तु मात्र सैँ वर्जित आश्रम नहि भोजन जलपान ।
वरष हजार बहुत एत गत भेल रामचरण मे ध्यान ॥
सगुन ब्रह्म अपनैकाँ देखल निर्गुन मन अनुमान ।
चन्द सुकवि भन लाभ एहन सन त्रिभुवन सुनल न कान ॥

गीत

हमर सनि भाग्यवन्ति के नारि ।
निर्गुण ब्रह्म सगुण बनि अयलहुं अपनहि सैँ असुरारि ॥
अपनैक चरण सरोज सैँ सुरसरि उतपति पावन वारि ।
सकलो तीर्थक मूल चरण से देखल आँखि पसारि ॥
जे चरणक-धूली लय धन्धित रहथि देव त्रिपुरारि

से धूलीक प्रकट फल पाओल कर्म शुभाशुभ जारि ॥
रामचन्द्र कहलनि सुनु शुभमति अहँक हाथ फल चारि ।
हमर भक्ति अहँकाँ से होयत सकल सिद्धि देनि हारि ॥

सङ्गीते सूहव नाम छन्दः

श्रीमन्नारायण विष्णो ।
शापादुद्धर शापादुद्धर दुर्द्धर दनुज जिष्णो
विधेर्व्विधे दयानिधे विधेरहं कन्या ।
तपस्विनी मनस्विनी यशस्विनी धन्या ॥
आसं दैवाद्दुराचारा मारद्वारा जाता ।
कष्टस्थाने भवानेव प्रभो विभो त्राता ॥

इतिश्री मैथिलचन्द्र-कविविरचिते मैथिलीरामायणे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

चौपाइ

गौतम-धरणि सरणि भल गेलि * गौतम सङ्ग पूर्व सनि भेलि
कौशिक कहल कुशल-मति राम * गुण कि कहब अपनें गुणधाम
ज्ञान-समुद्र नृपति मिथिलेश * तिरहुति सन नहि दोसर देश
जीवन्मुक्त जतय बस लोक * ज्ञान प्रताप चित्त नहि शोक
सीता कन्या ततय कुमारि * धनुष-यज्ञ नृप कयल विचारि
शिवक धनुष तोड़त जे आय * एहि कन्या मे सैह जमाय
पत्र पठाओल तैँ सभ देश * एकहि ठाम देखि पड़त नरेश
जायत ततय अँहउ चलु संग * देखक योग्य सभा भल रङ्ग
गुरु आज्ञा सुनि चलला राम * देखइत शोभा पथ वन गाम

बरवा

आनन्दित मन चलला प्रभु दुहु भाय ।
जनकक जनपद मुनि पुनि देल देखाय ॥
सुनितहिँ छल छी लक्ष्मण तिरहुति राज ।
कहलनि रघुबर अयलहुँ देखल आज ॥

वसन्त-तिलका

की दिव्य भूमि मिथिला हम आवि गेलौँ ।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौँ ॥
की दिव्य फूल फल वृक्ष अनन्त धान ।
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान ॥

नाराच—प्रपूर्ण सत तडाग की सुधा समान वारिसौँ
विचित्र पद्मिनी-बनी विहङ्ग वारि-चारिसौँ ॥
द्विरेभ गुञ्जि गुञ्ज कैँ महा मदान्ध घूमि कैँ
सरोजिनीक अङ्ग सुप्त वार वार चूमिकैँ

चञ्चला—शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति रीति सूनि-सूनि ।
खेत शश्य खाथि ने कुरङ्ग आँखि मूनि मूनि ॥
सत्य तीरहुति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि ।
शास्त्र कैँ बजैत बेस कीर बैसि डारि डारि ॥

रूपमाला

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्य सौँ सम्पन्न ।
समय सिर पर होय वर्षा बहुत सञ्चित अन्न ॥

दयायुत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार ।
सकल-विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार ॥

षट्पद

कनक सुमणि सौँ खचित रचित नृप विमल अटारी ।
नन्दन-सोदर सुवन रती रम्भा सनि नारी ॥
मद्र भद्र पर्य्याय भद्र-कर करि ओ करिणी ।
सभ गुण नियत निवास कनक-रत्नाकर धरणी ॥
उत्तर हिम-गिरिवर निकट सुलभ रत्न औषधि सकल ।
पुरि महती मिथिला-पुरी कतहुँ नहिँ देखल विकल ॥१॥

शुभ लक्षण संयुक्त मनोगति सुन्दर सुन्दर ।
उच्चैःश्रवा समान अश्व नृप जेहन पुरन्दर ॥
राज-कुमार उदार सकल विद्या काँ जनइत ।
शौर्य्यशील सन्तोष धर्म्मवेत्ता स्मृति मनइत ॥
सकल प्रजा आनन्द-मन विहित गृहाश्रम धर्म्ममत ।
नृपतिक शुभ-चिन्तक सतत नीति-निपुण मन कर्म्मरत ॥२॥

पशु पक्षी सभ हृष्ट पुष्ट नहिँ दुष्ट कुलक्षण ।
कृष्णसार मृग बहुत नृपति कर सभहिक रक्षण ॥
अतिशय जन सौजन्य देश मुनिजन-मनरञ्जन ।
जे ताकी से भेट कतहुं नहि सृष्टि एहन सन ॥
नारि सुनयना शुभमती कुलदैवत लज्जावती ।
सकल रसज्ञा नतिमती मत्त-मतङ्गज-वर-गती ॥३॥

चौपाइ

कौशिक सङ्ग ततय दुहु भाय * धनुष-यज्ञ थल देखल जाय
जनकपुरी मे कयल प्रवेश * कौशिक अयला सुनल नरेश
उपाध्याय काँ सङ्ग लगाय * अवि आतिथ्य कयल नृप जाय
मुनि-पद-पङ्कज अतिशय प्रीति * कयल दण्डवत नृपति सुरीति
पुछलनि देखलनि युगल कुमार * नर नारायण जनु अवतार
श्यामल गौर मनोहर देह * चन्द्र सूर्य्य सन निस्सन्देह
सब दिश होय प्रकाशित आज * के ई थिकथि कुमर द्विजराज
मनमे होइछ प्रीति अपार * देखइत बालक परमोदार
मौन महिपति भेल ई भाखि * एक टक ताटक लागल आँखि
नृपतिक वचन विनयमय सूनि * प्रश्नोत्तर कहलनि मुनि पूनि
परिचय हिनकर अगम अपार * थिकथि दुहू जन विश्वाधार
राम श्याम - घन लक्ष्मण गौर * दशरथ नृपतिक युगल किशोर
आनल माँगि नृपति सौँ जाय * हमरा भेला बहुत सहाय
भेटलि ताटका अवितहिँ मात्र * राम हनल एक शर तनि गात्र
छटपटाय छन छोड़लक प्रान * हिनकर सन रन-सूर न आन
आश्रम आवि कयल विश्राम * कयल पराक्रम बड़ गोट राम
यज्ञारम्भ कयल मुनि-वृन्द * भेल उपस्थित राक्षस वृन्द
पौरुष हिनक देखल हम नयन * वैरि - विहीन विपिन भेल चयन
रावण अनुचर अति बलवान * सिंह समक्ष शृगाल समान
भेल सुबाहु प्रभृति भट नास * वहुत पड़ाएल बड़ मन त्रास
खसल समुद्र बीच मारीच * बड़ कठजीव मुइल नहिँ नीच

गौतम आश्रम गङ्गा-तीर * अयला जखन ततय रघुवीर
पति क शाप दुख कारागार * कैलनि रघुवर ततय उधार
अहल्याक प्रभु कयल प्रनाम * रघुवर कहल अपन वर नाम
प्रभु-पदधूलि पड़ल उड़ि अङ्ग * भेल अहल्या पूर्व्वक रङ्ग
महादेव धनु देखय काज * आयल छथि अपनैँक समाज

सोरठा—विश्वामित्रक उक्ति, मिथिलापति मन दय सुनल।
कार्य्य सिद्धि वर युक्ति, मानल मन सर्व्वज्ञ बुध॥

चौपाइ

बड़ बड़ नृपति गेल छथि आबि * टुटल न धनुष नीक फल भावि
जनक कहल पण हमर न व्यर्थ * मुनिवर अघटन घटन समर्थ
कयल कृपा अयलहुँ मुनि आज * सिद्ध भेल मानल मन काज
बहुत हर्ष नहिँ हृदय समाय * कहल सचिव सौँ जनक बुझाय
ई बालक महिमा के जान * आगत जेहन स्वयं भगवान
हिनकर करू वृहत सतकार * युगल बन्धु छथि परमोदार
बाढ़ल नृप मन बहुत सनेह * पूजा विधिवत कयल विदेह
कौशिक केँ दय उत्तम वास * समुचित उचिती कहल प्रकास
गेल जाओ नृपकाँ सुनि पूनि * कहलनि कार्य्य-भार मन गूनि
घर थिक अपन कहल नृप फेरि * हम आएब घुमि फिरि कय बेरि
कौशिक युगल बन्धुकेँ कहल * वत्स करक थिक एकटा टहल

वसन्ततिलका

राजा विदेहक वृहत फुलवाड़ि जाउ।
हे राम लक्ष्मण अहाँ फुल तोड़ि लाउ॥

देव प्रदोष शिव पूजन मुख्य काज।
राजन्य - बीज चरमाचल - मौलि राज॥

चौपाइ

गुरु आज्ञानुसार श्रीराम * चलला लक्ष्मण सँग घनश्याम
नन्दन - मद - गञ्जन वनवेश * शतमख शतगुण विभवि नरेश
लक्ष्मी जतय लेल अवतार * तनिक विभव के वरनय पार
देखल जखन जनक - वन जाय * बड़ मन हर्षित दूनू भाय
माली सौँ पुछलनि फुल लेब * पूजा हेतु गुरू केँ देब
मालि कहल फुलबाड़िक भाग * बड़ आश्चर्य्य एक गोट लाग
सभ ऋतु फूल फुलायल आज * प्रकट एतय सभ दिन ऋतुराज
कुमुदिनि कमलिनि गत-सङ्कोच * रवि-विधु बुधि अपनहिक कि रोच
अपने युगल मूर्त्ति गुणधाम * हमर भाग्य अयलहुँ एहि ठाम
दुहु जन गल देल सुमनक माल * अञ्जलि - बद्ध कहल नयपाल
रामचन्द्र सुनि पुनि बजलाह * निजगुणशालि मालि तोह जाह
अपन काज कर स्वामि निमित्त * हम वन देखब टहलि सुचित्त

कवित्त

उपवन मध्यमे तड़ाग हंस चक्रवाक जल-खग सरस सुरस कलगान।
देखि सुनइत मुनिहुक चित्तवित्त हर मानस समान जल एहन न आन॥
अमल कमल कमला निवास भासमान गुञ्जित मधुप-पुञ्ज मत्त मधुपान।
गान कान पड़य चामर चारु ढरइछ देवता-निवास मणिदीपक समान॥

चौपाइ

सीता चलली अवसर ताहि * युगल बन्धु छल छथि वन जाहि
गिरिजा देवी पूजि मनाउ * माय कहल जानकि अहँ जाउ
ततय सखी सङ्ग बहुत कुमारि * विधुर पूर-विधु सुमुख निहारि
कमल हरिण खञ्जन ओ मीन * तनि-लोचन-जित सोचहि दीन
मानस बासा कयल मरालि * उत्तम देखल जनि जनि चालि
जनिक बाहु-जित मञ्जु मृणाल * लज्जित लपटायल जलथाल
तुल्य न कनक कदलि कह काँपि * जघनक हम छी हिनक कदापि
अति कृश कटि करकश कुचभार * सुन्दरता सौँ जित संसार
कुटिल सुचिक्कन केश विशाल * अंग अलङ्कृत शोभित माल
जनिकर सुनल पिकी निक गान * गान - मानहत अङ्ग मलान
सुनि नूपुर हंसक धुनि सार * उपवन राम नयन सञ्चार
लक्ष्मण काँ पूछल छल-हीन * श्रुति मानस भेल धुनिक अधीन

हरिपद

बाल हंस कल श्रवण मनोहर एतय कतय सौँ आयल।
जनक-पुरी युवतीक गमन-जित मानस व्यथित नुकायल॥
सैह थिकथि जनु देवि अवनिजा अबइत छथि सखि सङ्गे।
नूपुर धुनि सुनलाँ जाइत अछि बुझलाँ जाइछ रङ्गे॥

बरवा०—अबइत छथि वैदेही सखि मिलि सङ्ग।
जित - जग - सेना जेना रचित अनङ्ग॥
फरकै अछि सुनु लक्ष्मण दहिना आँखि।

तन पुलकित प्रभु हरषित उठला भाखि ॥
गबइत अबइत छथि सब गौरी - गीति ।
सकल रागिनी तन धरु जेहन सुप्रीति ॥

हरिपद

धनुष यज्ञ जें कारण होइछ उत्सव सकल समाजे ।
दर्शनीय तनिका हम देखब एक पन्थ दुइ काजे ॥
लोचनमे घन-सार-शलाका सनि लगइत छथि आबी ।
सुधा रसैक छटा सनि तनमे के बुझ की अछि भावी ॥

चौपाइ

उपवन पहुँचलि सकल कुमारि * तोड़थि फूल नबाबथि डारि
तरु तरु छाया क्षण विसराम * देखथि चलि चलि भल आराम
सीता कहलनि हित-सखि कान * अहँकाँ अछि सभ सगुनक ज्ञान
नखनहि सौं अयलहुँ आराम * बेरि बेरि फरकै अँग वाम
सखि कहलनि शुभ-सूचक थीक * सगुनक गुन कहलनि मुनि नीक
मज्जन कयल तड़ाग मे जाय * गिरिजा काँ पूजल मन लाय
फुलहर थक शोभा भल राज * विष्णुरमा जत सहित समाज

सुन्दरी छन्दः कमला छन्दश्च

जय देव महेश - सुन्दरी । हम छी देवि अहाँक किङ्करी ॥
शिव - देह-निवास-कारिणी । गिरजा भक्त - समस्त - तारिणी ॥
हम गोड़ लगैत छी शिवे । जननी भूधरराज - सम्भवे ॥
जनता - मन-ताप-नाशिनी । जय कामेश्वरि शम्भुलासिनी ॥

भुजङ्ग-विजृम्भित छन्द

महादेव-रानी सती श्री मृड़ानी सदा सच्चिदानन्द-रूपा अहैं छी।
अहाँ शैल राजाधिराजाक पुत्री धरित्री सवित्रीक कर्त्री अहैं छी।
अहाँ योगमाया सदा निर्भया छी दया विश्व चैतन्य रूपे रहै छी।
सदा स्वामिनी सानुकूला जतै छी धनुर्भङ्ग-चिन्ता ततै की सहै छी।

उपजाति सुन्दरी छन्द

अपने कोँ हम गौरि की कहू। अनुकूला जनि मे सदा रहू॥
हमरा जे मन मध्य चिन्तना। सभटा पूरब ऐह प्रार्थना॥

चौपाई

देखलनि एक जनि युगल-कुमार * हरषहि रहल न देह संभार॥
गेल छल छथि से सखि सँग फूटि * तनिक भेल जनु मन धन लूटि
कहु की देखल कहू की भेल * पुछलहु तेँए नहिँ उतर देल
किछु न उपद्रव किछु नहि व्याधि * सहजहि लागल मदन समाधि
सभ उपचार करथि भरि पोष * चेतए कइल आन नहि दोष
विद्यमान एत युगल - कुमार * देखल तनि शोभा - विस्तार
रहितहुँ देवि सरस्वति शेष * कहि सकितहुँ सौन्दर्य्य विशेष
विश्व - मनोहर वयस किशोर * अति सुन्दर वर श्यामल गोर
जौँ गिरि-नन्दिनि होथि सहाय * देथि जनक - गृह योग्य जमाय
देखल न एहन सुनल नहि कान * नहि परतच्छ विषय परमाण
दर्शनीय छथि एहि आराम * जनिक कान्ति सौँ निर्जित काम
जे कहि गेला नारद मूनि * मन से पड़ल समय से सूनि

यदपि अपन सखि-जनिक समाज * तदपि जानकी मन भेल लाज
स्वेद स्तम्भ पुलक वर अङ्ग * भाव सरस धर गर स्वर-भङ्ग
देह काँप वैवर्ण्य शरीर * युगल जलज-लोचन भरु नीर
प्रलय भाव जागल भल आठ * मनसिज प्रथम पढ़ाओल पाठ
तनिक भाव बूझल सखि एक * जनि मनमे छल गूढ़ विवेक
चलु जानकि देखू आराम * नीलक कुरवक तरु जँहि ठाम
कहलनि से परिहरु परिहास * अहँक रहै अछि बड़ मन आश
सखि हँसि कहलनि सुनु सुकुमारि * वनछवि देखू आँखि पसारि
नव-घन-श्यामल छथि नहि दूर * घन विनु बजइछ मत्त मयूर
वन घन शोभा कहु की आज * सगुन सिद्धि मन-वाञ्छित काज
हंसी देखल विपिन समाज * चतुर सखीक उक्ति तनि बाज

शिखरिणी छन्द

अये हंसी चिन्ता चित परिहरू सुस्थिर रहू
वियोगेँ व्यग्रा की विरह दिन घोरा अहँ सहू।
विशालाक्षी देखू अछि न शिशुता अङ्ग धयले
सुशीला साध्वी छी निकट छथि प्राणेश अयले॥

बरवा०—नारद मुनि जे कहलनि से दिन आज।
आरामक परिशीलन करु तजु लाज॥
कहल राम काँ लक्ष्मण दुअ कर जोड़ि।
दर्शनीय नृप-उपवन लिअ फुल तोड़ि॥

वसन्त तलका

हे नाथ सार्थ नदिनाथक बालिका मे

श्रीनाथ - मानस - निवास - मरालिका मे।
राजा - बिदेह - दुहिता धरणीसुता मे
की भेद - बुद्धि वर - लक्षण - संयुता मे ॥

चौपाइ

राम जानकी मन नहि चयन * उत्कण्ठित दर्शन विनु नयन
लता ओट सौँ राम समक्ष * मनसिज - सुषमा - हारक दक्ष
सखी देखाओल अवसर जानि * नारद मुनिक वचन अनुमानि
तनि विनु एहन होएत के आन * राजकुमार विष्णु भगवान
चलि नहि सकथि थगित भेल देह * वाढ़ल ततय परस्पर नेह
सीता रामचन्द्र - मुख हेरि * अनिमिष आँखि निमिष नहि फेरि
प्रेम-विवश विसरल मन शोच * लोचन त्यागल पल संकोच
रामहु काँ नहि चित चैतन्य * साहस सञ्चर नरवर धन्य
रमा विष्णु ओ थिकथि सभाग * उचित निमेष न लोचन लाग
अग्रज श्याम गोर छोट भाय * शोभा जनिक कहल नहि जाय
नख शिख जनिकर देखल रूप * चित्र लिखित सनि सब जनि चूप
एक जनि सखि बड़ साहस कयल * सीता - कर - सरसीरुह धयल
अयि सखि सुमुखि स्वस्थ रहु चित्त * मुनिक कहल फल-प्राप्ति निमित्त
कत जन उपवन कर सञ्चार * सुचित कि उचित कहत व्यवहार
चलु बरु गिरिजा-मन्दिर जाउ * चलब भवन किछु समय जुड़ाउ
गिरिजा-चरण पूजलहिँ आस * पूरत हयत चित्त निस्त्रास
सखी-बचन हित तखना सूनि * युगल बन्धुकेँ देखल पूनि

प्रभु छवि देखि घयल मन ध्यान * तन्मय विश्व वस्तु नहि आन
देखि देखि सखि युगल-कुमार * आधि विषाद हृदय विस्तार
पण की नृप कएलनि मन जानि * बुझि सुझि लेल न हित ओ हानि

घनाक्षरी

महाराज जनक उचित पण कैल नहि
बुद्धिमान लोक बुद्धिमान कतै कहतैनि ।
महादेव धनुष मनुष बूत टूट कत
बल देवासुरक जतय ने निबहतैनि ॥
धनुष भञ्जन मन काम भूप वीर गन
एकहु जनक दाप चापमे न लहतैनि ।
घुरि वीर आगत नगर निज जयताह
घर मध्य कन्यका कुमारि कोना रहतैनि ॥
पुलकित तन घन आनन्द उदित मन
बेरि बेरि मिथिलेश आँगनमे अबितहुँ ।
कन्या वर मङ्गलदायक युवती-समूह
गणपति गिरिजा गिरीश गुन गबितहुँ ॥
'चन्द्र'भन रामचन्द्र पूर्णचन्द्र-मुख देखि
अनिमेष लोचन चकोरीकेँ बनबितहुँ
कोटि काम छवि अभिराम घनश्याम
राम जानकीक योग्य जौँ मनोज्ञ वर पबितहुँ ॥

मालिनी०—सभ जनि पुनि गौरी पूजवा काज ऐली ।

नव नव फुल-माला मालिनी गाँथि लैली ॥
सुविधि कयल पूजा जानकी विश्व-धन्या ।
तखन मन प्रसन्ना भेलि शैलेन्द्र-कन्या ॥

गीतिका०—कहि देल जे मुनि भेल से दिन इष्ट देवि कृपा करू ।
अभिलाष-पूरण-कारिणी जनकार्य्य मे मन दै परू ॥
सकलेष्ट-साधन-शक्ति-सकला भूधरेन्द्र-सुता अहाँ ।
कत किङ्करी शरणागता रहिता मनोरथ सौँ कहाँ ॥

चौपाइ

गौरि पूजि पद कयल प्रणाम * फरकल बेरि बेरि अँग वाम
तखन खसल भल फूलक माल * ओ प्रसाद लय राखल भाल
पुन प्रसाद से हृदय लगाव * मन कह वाञ्छित होयत आब
भूधर - नन्दिनि हर्षित चित * कहलनि वैदेहीक निमित्त
चिन्ता परिहरु अवनि—कुमारि * नयन सफल करु निकट निहारि
सुन्दर श्याम मही—पुरहूत * शिवक धनुष टुट हिनकहि बूत
जे वर नारद कहि गेलाह * लोचन—गोचर से भेलाह
गिरिजा—वचन शुनल से कान * सकल सखी करु तनि गुनगान

गीत

रहू देवि दासी—विषय सहाय ।
जय जय जगदीश्वर—वामाङ्गी जय जय गणपति—माय ॥
अतिशय चिन्ता मनमे छल अछि नृपति कठिन पण पाय ।
दरशन देल भेल मन - वाञ्छित चिन्ता गेलि मिटाय ॥

सकल सृष्टि-कारिणि जनतारिणि महिमा कहल न जाय।
जगदम्बा अनुकूला अपनहि हम की देब जनाय॥
रामचन्द्र सुन्दर वर जै विधि होथि महीप-जमाय।
जय जय जननि सनातनि सुन्दरि तेहन रचब उपाय॥

चौपाइ

गिरिजा-वचन सकल जन शूनि * हर्षित चललि भवन सभ पूनि
गुरुक निकट गेला पुन राम * लक्ष्मण-सहित देखि आराम
देखल उपवन हर्ष न थोड़ * लगला जाय गुरू कें गोड़
गुरु पुछलनि नृप उपवन केहन * कहल विदेहक होइन जेहन
गुरु पूजार्थ धयल भल फूल * नन्दन-वन न नृपक वन तूल
चरमाचल चुम्बन कर सूर * कुमुदिनि - कुलक मनोरथ पूर
सरसीरुह-मुह सम्पुट कयल * चटकालो गुरु - भूरुह धयल
समुदित विधु-मुख विधु-वदनाक * दिवस अन्ध खग सञ्चर ताक
सानुज सन्ध्या - वन्दन कयल * गुरुपद-कमल विमल उर धयल
कह रघुवर विधुबिम्ब निहारि * कत विधु कतय विदेह-कुमारि
तनि मुख समता शशि की पाव * प्रति तिथि व्यतित अतिथि बनि आब
तनि पदसमता वारिज कहब * असमञ्जस अपयश जन सहब
रजनि विकास न हिमसौँ हानि * जानकि उपमा देब कि जानि
कल्पारब प्रकट महि-फूल * उपमा विधि न रचल निधि-मूल
जतय जतय भय पड़इछ दृष्टि * ततय ततय सीतामयि सृष्टि
नहए न अछि एको प्रस्ताव * सीतास्मरण जतय नहिं आब

गुरुप्रसाद अयलहुँ एहि ठाम * शुनितहिँ छलछी तिरहुति नाम
छथि गुरु देव विधाता तूल * काज होइत अछि चित अनुकूल
टुटि छिड़िआएल तारा—हार * रजनीकाँ शशि सङ्ग विहार
बीतल रातिक दोसर याम * निद्रा सेवित लक्ष्मण राम
हृदय कमल मे रमा निवास * विद्रावित निद्रा तैँ त्रास
चललि रजनि जनि विधु तजि सङ्ग * अरुणित अम्बर कुसुमक रङ्ग
खग-कल भल भूषण-झणकार * समटि लेल तारावलि हार
पसरल छल जनु कच अंधकार * धूसर विधु विरही व्यवहार
कुमुदिनि मलिन कमल वन राज * उदय अस्त दिनकर द्विजराज
क्लेश कटित भेल कोकवधूक * दिवस - अंध मनधंधित घूक
कत प्रभात-सूचक खग कूज * मुनि मानस-विधि गुरु कैँ पूज
शिव शिव धुनि सुनि पड़ चहुं ओर * स्नान करथि संयमि जन भोर
घण्टा शंखनाद आनन्द * विकच कमल कैरव मुख बन्द
प्रेम-बद्ध अलि नलिनी—कोष * भ्रमित भ्रमर मधु पिबि भरि पोष
गणिका चललि नृत्य अवसान * नील नलिन दल नयन समान
बन्दी विरुद रटथि नृप- द्वार * भैरव राग सरस सञ्चार
वाद्य विविध धुनि मृदुल मृदङ्ग * शयित अवनिपति निद्रा भङ्ग
अगनित महिपति जनक—समाज * आगत शिव-धनु-भञ्जन काज
यथा यथा भूपति जन आब * तथा जनक सौँ आदर पाब
रथ तुरङ्ग गज पथ नहि सूझ * अर्थी दिन रजनी नहिँ बूझ
यज्ञभूमि मे थल निर्म्माण * कयल मनोहर जनक-प्रधान
प्रातःकृत्य स्नान कय राम * गुरु-पद—पङ्कज कयल प्रणाम

आशिष दय गुरु कहलनि आज * सत्वर चलु जत नृपति विराज
मञ्च अनेक बनल छल बेश * तेहि पर बैसथि जाय नरेश
सकल मञ्च में एक प्रधान * बैसल कौशिक सह भगवान
नृपति सुमति तति तत बैसलाह * जनक-प्रधान कहय लगलाह
शतानन्द मुनि गौतम - तनय * कहल सभा में जनकक विनय
कन्या रमा - समा मिथिलेश * तप-बल पाओल तिरहुति देश
धरणी-तनया अति सुकुमारि * छविमयि रती-विजयि अवतारि
त्रिभुवन देखल सुनल नहि कान * वनिताजन विरचल विधि आन
आगत नृपवर जनक—समाज * जनकक कहल सुनल हो काज
शिवक धनुष भञ्जन कर जैह * वैदेही वर होयता सैह
सुनि तनि कथा हर्ष नृप चित्त * आएल छी एत सैह निमित्त
तोड़व धनुष हमहि अगुआय * पाछाँ रहव मरब पछताय
बड़ बड़ वलगर गलगर जाथि * टूट न धनुष मनुष पछताथि
एहि गत कत कत नृप गत-गर्व्व * धनुष न टार हार मन सर्व्व
परिचित बलक हजार हजार * शङ्कर धनुष समुख मन हार
धनुष निकट माचल महाघोल * सभ जन पाओल माथक मोल

सोरठा—आब न रहल उपाय, वनिता-गण मन विकल कह ।
भूपति-पण अन्याय, कतय शम्भु-धनु मनुष कत ॥
कन्या रहलि कुमारि, अनुचित एहन न भेल छल ।
सभ बैसलि मन हारि, नृपति सकल बल बुझि पड़ल ॥
शतानन्द बजलाह, अहह आह निर्वीर महि ।
भल करइत अधलाह, होमय न बूझ विदेहकाँ ॥

घनाक्षरी

टुटल न धनुष विमुख तुष नृपगण,
साहस सौँ स:स सहस छल लटकल।
वीर सौँ विहीन भेलि अवनी से ज्ञात भेल,
गेल जाओ वीरवृन्द व्यर्थ छी कि अटकल ॥
विधिक लिखल कन्या रहली कुमारी मान्या,
जनकक उक्ति शतानन्द सभा फटकल।
लछुमन कुमर सकोप सुनि बजलाह,
आकृति जनिक देखि सभ जन सटकल ॥

झूलना छन्द

दे व-रघुनाथ-पद-वारिरुह-दास हम सर्व्वदा भ्रातृ - आज्ञानुसारी।
मेरु-उद्दण्ड भुजदण्ड तट गण्य नहि जीर्ण शिव-चाप कहु कोन भारी।
पाबि रुचि चाप धय देब कय खण्ड कय रहित भय सञ्चरब वीर मानी।
कोप मन बाढ़ जनकोक्ति कटु गाढ़ सुनि विश्व के ठाढ़ संग्राम प्राणी॥

बरवा—स्मित-मुख राम न बजला, अनुज निहारि।
चेष्टहि कयल निवारण, समय विचारि॥
कौशिक कहलनि रघुवर, धनुष उठाउ।
पूरिय जनक - मनोरथ, आधि मिटाउ॥

(धनुर्ब्बन्ध, २० पत्र कमलबन्ध, १० दल कमलबन्ध,
चामरबन्ध, करमुष्टिकबन्ध गो-मूत्रिका-बन्ध इत्यादि)

दोहा—राम राम छम काम—सम मसम मसम सम धाम।
रोम रोम भ्रम सोम हिम सुमम महिम सम नाम॥

मालाबन्ध-घनाक्षरी

कत कत जत तत जन मन मन भन
बड़ गड़बड़ पड़ गोपचाप भूपकाँ ।
गाम धाम धाम राम-गीति अतिप्रीति रीति
बर गरहार धर जप तप रूपकाँ ॥
सुर नर पुर दार सकलक एक टक आँखि
भाखि भाखि सखि भल भेल भलकाँ ।
भल फल भेल देल सिधि विधि निधि सुधि
गेल चल चल बल शाल भेल खलकाँ ॥

चौपाइ

जनक कयल कौशिक काँ विनय * खण्डन धनुष करथु नृपतनय
कौशिक कहल कहल नृप वेश * धनु भञ्जन नहि एक नरेश
अँहक मनोरथ पुरता राम * अयले छथि धनु-खण्डन-काम
रमानाथ पुरुषोत्तम शूर * करिय विदेह-मनोरथ पूर
गुरुक वचन शुनि कहि प्रभु नीक * कञ्जबन्धु-कुल कृति हित थीक
परिकर बाँधल दृढ़तर राम * राखल धनुष बाण तहिठाम
मञ्चक उपर सहज प्रभु ठाढ़ * अतिशय हरष जनक मन बाढ़
रानि मनाबथि देव बहूत * धनु भञ्जन हो दिनकहि बूत
जनिक दृष्टि पड़ युगल कुमार * विबुध विलोचन सम व्यवहार
घण्टाशत-युत मणि ओ वस्त्र * स्थापित छल त्रिपुरारिक अस्त्र
देव सकल छल भल नर वेष * रघुवर शोभा टक टक देख

इन्द्राणी–गण गायिनि सर्व्व * रमा–रमेशक परिणय पर्व्व
लक्ष्मण तत्क्षण रक्षण काज * कहल आबिकैँ धनुषसमाज
राम वामकर धनु धरताह * जन देखइत कौतुक करताह
श्रमकर नृपवर छल छथि व्यर्थ * देखथु रामक कर–सामर्थ्य
गुरु देथि आशिष पढ़ि शत बेरि * कौतुक ततय देखल जन ढेरि

अमृतध्वनि

आँह धरणी धीरा रहब सहब धरणि-धर भार।
दलन हेतु शङ्कर–धनुष उद्यत राम उदार॥
दार–सहित जयकार करथि सुर भार अवनि हर।
वर्ष सुमन मन हर्ष बहुत प्रभु कर्ष धनुष कर॥
भङ्ग धनुष रव चङ्ग भुवन सब रङ्ग अवनि पुनि।
चाप टुटल परिताप छुटल कह लोक अमृतधुनि॥

चौपाइ

प्रभु कर परस धनुष टुटि गेल * शब्द प्रचण्ड भुवन भरि गेल
फणिपति–फण फट फट कय फाट * कच्छप कछमछ मानस आँट
कलमलाय उठलाह वराह * कसमस कयल दशन निर्व्वाह
दिग्गजचय कयलन्हि चितकार * सहि नहि शक महि दुर्भर भार
डगमग अवनी अदभुत लाग * सात समुद्र रहित मर्य्याद
दिनकर–रथ–हय त्यागल बाट * जय जय कर मिथिलेश्वर–भाट
मैथिल मानव उठला भाखि * विधि मर्य्यादा लेलनि राखि
मनहुँक संशय–चय भेल दूर * कयल मनोरथ ईश्वर पूर

जनकक लोचन हरषक नोर * राम धनुष तोड़ल भेल सोर
अति चिन्ता चिन्तामणि पाय * जनक कनकमणि देथि लुटाय
जनकक पण निवहल भल हूब * रङ्क न एक महघ मणि छूब
राजा मिलल राम भरि अङ्क * वत्स छोड़ाओल हमर कलङ्क
रानी हर्ष कहल नहि जाय * अन्तःपुर धन रहलि लुटाय
कयल जानकिक दिव्य शिङ्गार * दक्षिण कर देलनि वर हार

गीत-कमल-छन्द

कुशल जगदम्बिका करथु घनश्याम काँ।
जनक-पण-पूर्तिमे प्रबल-बल-धाम काँ॥
कहथि तिरहुति मे सकल जन राम काँ।
कयल अहाँ विश्व मे अचल निज नाम काँ॥
कमल-वर-लोचना जनक-सुकुमारिका।
कहथि सखि लोक की हृदय-दुख-वारिका॥
कयल विधि सिद्धिओ मनक अभिलाष काँ।
अहँक वर देखि कँ नयन-सुख लाख काँ॥
दिवस-पति-वंश मे एहन सखि आन के।
त्रिपुर-हर-चाप काँ दलन भगवान के॥

लक्ष्मीधर स्रग्वणी छन्द

जानकी हाथमे माल लक्ष्मी धरू * श्रीघनश्यामकाँ देखि चिन्ता हरू
जे धनुर्भङ्गकर्ता तनै सञ्चरू * ऐ महानन्दसौँ स्वान्तकेँ सम्भरू

चौपाई

स्मितमुख सखि सङ्ग बाढ़ल लाज * बड़ उत्सव बड़ लोक समाज
रामक उपर देल से माल * त्रिदश-दुन्दुभी बाज विशाल
सकल नगर-जनि जनकक दार * वार वार वर कुमर निहार
जनक कहल कौशिक काँ न्याय * दशरथ ओतय निमन्त्रण जाय
रानी-सुत-युत नृप अग्रओताह * जाति बराति बहुत लओताह
पत्र सहित तत पहुँचल दूत * जतय अयोध्याधिप पुरहूत
दशरथ बुझल राम-कृत चरित * जेहन सुखायल तरु हो हरित
मिथिलेशक जे आयल दूत * तनिकाँ देलनि वित्त बहूत
हरषि हरषि अपनहिँ कर काज * बजबाओल सभ मन्त्रि समाज
बाँचि सुनाओल सभ काँ पत्र * जाँएब तत सुत सहित कलत्र
जनक समधि निरवधि सुख थीक * एहि सौँ कार्य्य होयत की नीक
गज तुरङ्ग - वर वर-रथ पत्ति * महती सेना बड़ सम्पत्ति
अग्नि सहित गुरु चलला अग्र * हमरा हर्षहिँ मन भेल व्यग्र
हुनि संग चलली रामक माय * हम रथ चढ़ि जाएब अगुआय
प्राप्त जनकपुर दशरथ भूप * अयला जनक समधि अनुरूप
आनल दूरहि सौँ अड़िआति * जे व्यवहार विहित छल जाति
शतानन्द गौतम-सुनि-बाल * अति सत्कार कयल तत्काल
उत्तम भवन देल नृप वास * सुरपति - सदन समान सुभास
लक्ष्मण सहित आबि तत राम * पिता - चरणमे कयल प्रणाम
उत्कण्ठित छल चित्त बहूत * युगल कमल - मुख देखल पूत

सोरठा:—गुरुक अनुग्रह तात, कार्य्य सकल सम्पन्न अछि ।

अपनें कुलकी कात, बालक प्रति-पालक सुमुनि ।।
दशरथ हृदय लगाब, लक्ष्मणयुत रघुनाथ काँ ।
अनिर्वचन सुख पाव, ब्रह्मानन्दक प्राप्ति जनु ॥

चौपाइ

बास अयोध्याधिप आगार * राजकुमर वर दशरथ-दार
जनक मुदित मन देल निवास * यथायोग्य काँ स्थल विन्यास
सामग्रीक बूझ के थाह * लक्ष्मी – नारायणक विवाह
विधि समान मुनि विश्वामित्र * विदित भुवन भरि जनिक चरित्र
दशरथ नृपति निकट अयलाह * घटना शतानन्द लयलाह
हे नृप वर एत नृपति विचार * राजकुमर सभ होथु सदार
जनकात्मजा उर्म्मिला नाम * लक्ष्मण परिणय विधि तहिठाम
जनक–भ्रातृ–कन्या दुइ गोटि * जेठि श्रुतिकीर्ति माण्डवी छोटि
भरत तथा शत्रुघ्न जमाय * यथासंख्य होमहि बुझ न्याय
से शुनि कहल अयोध्याधीश * अघटन घटना कर जगदीश
जे अनुमति रति नृपति विदेह * हमरो अनुमति निस्सन्देह
कहल पुरोहित नृपकाँ जाय * चारू कन्या वृत्त जमाय
शुभ सिद्धान्त नगर भेल ख्यात * हर्षयँ पड़य न पृथ्वी लात
आयल सुदिन सुलग्न सुयोग * हलचल सकल चलल उद्योग
जनि कर परिछनि गबइत गीति * विधि कर विधिकरि तिरहुति रीति
बहुत सुवासिनि नगर हकार * जनक कयल भल कुल–व्यवहार
भेरी दुन्दुभि घन निर्घोष * गीत नृत्य नृपपुर भरि पोष

मण्डप अतिशय शोभित देश * मुक्ता - पुष्प - फलान्वित वेश
रत्नस्तम्भ बहुत बड़ गोट * वर वितान तोरण नहि छोट
रत्नाञ्चित वर आसन कनक * बैसल देल राम काँ जनक
गुरु वसिष्ठ कौशिक सत्कार * शतानन्द कयलनि व्यवहार
रामक निकटहिँ बैसक देल * बहुत गीत हो हर्षक लेल
अग्निस्थापन विहित विवाह * मण्डप सीता काँ लयलाह
नाना - रत्न - विभूषित काय * सीता शोभा कहल न जाय
रानी - सहित जनक महराज * बैसला कन्या - दानक काज

दो०—पङ्कज-लोचन राम-पद, लेलनि जनक धोआय ।
विधिवत से जल भक्ति सौँ, माथा लेल चढ़ाय ॥

सो०—जे जल गौरीनाथ, मुनिजन-सहित विरञ्चिगण ।
मुदित चढ़ाओल माथ, हमरहु प्राप्त से भाग्यवश ॥

चौपाइ-मणिगण

नरवर-वर-सुतकर-जलरुह पर ॥ नरवर धरणि-सुजनि-कर-वर धर
अक्षत उदक धर श्रुति विधि अनुसर। तनि अर्पल भल वर रघुवर-कर

रूपक घनाक्षरी

जनक कहल न रहल अभिलाष मन
ज्ञान ध्यान मध्य देल दिवस गमाय ।
मन्दिर में इन्दिरा कहाय बालिका छलीह
आज भगवान विष्णु पाओल जमाय ॥
दशरथ समधि विदित निरवधि यश
जगतक जननीक जनक कहाय ।

कहु भगवान की ग्रहण करु मैथिलीक
हम भाग्यवान् तिरहुति राज्य पाय ॥

चौपाइ

सीता अरपल रामक हाथ * रमा जलधि जकँ जनक सनाथ
लक्ष्मणकाँ निज कन्या देल * नाम उर्मिला हर्षित भेल
विख्याता श्रुतिकीर्ति कुमारि * देल भरत काँ जनक विचारि
माण्डवि प्रस्थित कयल जमाय * श्रीशत्रुघ्न समय शुभ पाय
चारु कुमार दार - सम्पन्न * लोकपाल सन लोक प्रसन्न
जनक कहल हरषित तहिठाम * सीता लाभ जेना एहि धाम
सुनु वसिष्ठ मुनि विश्वामित्र * कहइत छी कन्याक चरित्र
भूमि - विशुद्धि यज्ञ करबाक * नृपतिहुँ काँ भेल हर धरबाक
देखल तत हम जोतइत भूमि * बहराइलि कन्या काँ घूमि
चारि वरष वयसक परमान * कन्या एहनि देखल नहि आन
के ई थिकथि कोना के जान * हृत भेल ज्ञान हिनक लेल ध्यान
आनल घरमे पुत्री भाव * उपमा हिनक आन के पाब
एक समय नारद सञ्चार * भ्रमइत अयला हमरा द्वार
करइत महती वीणा गान * अनुरत भगवानक गुणगान
पूजन कयल जे हौमय बूझ * पूछल अपने काँ सभ सूझ
उतपति कन्या धरणी फोड़ि * के थिकि कहु दिय संशय तोड़ि
सुनि मुनि कहलनि सुनु मिथिलेश * गोपनीय कहइत छी वेश
नारायण लेल नर अवतार * रावण मारि महिक हर भार
चारि रूप में दशरथ गेह * सम्प्रति छथि से निःसन्देह

रूपमाला

योगमाया थिकथि सीता राम विभु भगवान ।
देव तनिकहि हिनक पति ओ थिकथि सत्य न आन ॥
ई कथा ओ कन्यका गुण कहल नारद मूनि ।
ताहि दिन सँ रमा मानल भेल चरित जे पूनि ॥

चौपाइ

कोन परि हयता राम जमाय * दिन दिन चिन्ता बाढ़लि जाय
चिन्तातुर मन कयल विचार * सभ महिपति आबथि जैं द्वार
स्मरहर त्रिपुर समर में मारि * धनुष धयल की चित विचारि
हमर पितामह घर छल धयल * विद्यमान फल पण जे कयल
लयलहु पङ्कज - लोचन राम * अपनैं मुनिवर हमरा गाम
सुफलित हमर मनोरथ गोट * सुयश भुवन भरि भेल न छोट

गति तिरहुति-सत्रङ्गम छन्द

श्रीपति रविकुल - तिलक जानकीनाथ हे ।
लोचन शोच न एक चरण धय माथ हे ॥
कोन सुधन हम देव रमापति रामकाँ ।
की करु हम गुणगान सदानन्द धामकाँ ॥
के अपने ,सौँ आन अधिक संसार मे ।
भानु इन्दु वर नयन ज्ञानि अवतार मे ॥
श्रीनारायण देव देखि छवि लेब हे ।
विश्वम्भर विभु एक देव वर देव हे ॥

सो० —जौतुक देबक थीक, पुत्रिक उचित द्विरागमन।
सम्मति सभ मुनिहीक, विष्णु जमाय सुता रमा ॥

दो० —शत सहस्र देल अश्वरथ, अश्व नियुत पुन देल।
दश सहस्र गज राम काँ, देलनि हर्षक लेल ॥
दासी देलनि तीनि शय, एक लक्ष देल पत्ति।
दिव्याम्बर वरहार पुन, लक्ष्मी काँ सम्पत्ति ॥

चौपाइ

मणिचय परखि परखि नृप लेथि * शय शय प्रति गहना पुनि देथि
वसिष्ठादि मुनि जन सत्कार * जनक कयल उत्तम व्यवहार
लक्ष्मण भरत कुमर जे सर्व्व * तनिकहु धन देल खर्व्व निखर्व्व
सकल कन्यका कयल बिदाय * जनकक नयन नोर बढ़िआय

माधवीय बराड़ी छन्द

तुअ विनु आज भवन भेल रे, घन विपिन समान।
जनु ऋधि सिधिक गरुअ गेल रे मन होइछ भान ॥
परमेश्वरि महिमा तुअ रे, शिव विधि नहि जान।
मोर अपराध छमव सव रे, नहि याचव आन ॥
जगत जननि काँ जग कह रे, जन जानकि नाम।
नैहर नेह नियत नित रे रह मिथिला धाम ॥
शुभमयि शुभ शुभ सभ दिन रे, थिर पति अनुराग।
तुअ सेवि पुरल मनोरथ रे, हम सुखित सभाग ॥

चौपाइ

सजल-नयन जानकि मिलु माय * लोचन जल बह रहल न जाय
देखव कोन परि पुत्रि जमाय * कहुखन नोर न आँखि शुखाय
समदाउनि गायिनि-गण गाब * ककरा नयन नोर नहि आब
शाशु श्वशुर पद सेवन करब * पतिव्रत मे तन मन अहँ धरब
जानकि कें रानी करु चूप * कहि परबोध सुवचन अनूप
बरष दूइ छल अहँ सहवास * अहँ विनु जानकि भवन उदास
चलल सबारी डंका बाज * सहित बराति चलल महराज
उचिति विनति कति सहित सनेह * दशरथ समधि समान विदेह

सो०-- नाना बाजन बाज, नभ सुरराज-समाज मे।
जय जय जय महराज, बन्दी मागध लोक कह ।।

चौपाइ

मिथिलापुर सौं योजन तीन * पहुँचलाह उत्साह नवीन
कयल वसिष्ठक नृपति प्रणाम * घोर निमित्त देखि तहि ठाम
असकुन गुनि मन चिन्ता आब * कहु गुरु शान्ति अनिष्ट प्रभाव
अछि किछु भयक योग तत्काल * अचिरहि हो सुख हे महिपाल
हरिण अनेक प्रदक्षिण जाय * एहि सौं संकट विकट मेटाय
एहि विचार मे उठल बसात * सहित मूल तरु रहल न पात
धूरा उड़ ककरहु नहि सूझ * उतपातक गति के जन बूझ
देखल किछु दुरि आगाँ जाय * कोटि सूर्य सम भासित काय
नील जलद सन जटा विशाल * दशरथ आगु ठाढ की काल

दशरथ मन कह हे भगवान * धर्म्महि धाधर सुनल न कान
तनिकर पूजा बहुबिधि कयल * चिन्हल दण्डवत पद-युग धयल
त्राहि त्राहि कहि जोड़ल हाथ * अभय प्रदान करिय भृगुनाथ
राम हमर छथि प्राणाधार * मन नहि थिर कर देखि कुठार
धर्म्मक कथा कोप कत मान * नृप कह आन कहथि मुनि आन

घनाक्षरी

अस्त्र चोष कोष अछि मन महारोष अछि
बल भरि पोष अछि रीति अनुसरबे।
नाम भृगुराम अछि समर न साम अछि
गति सभ ठाम अछि अरि चोर धरबे॥
एहन के वीर अछि धनुष सतीर अछि
कुलिश शरीर अछि हरि अरि गरबे।
विदित संसार अछि क्षत्रिय संहार अछि
करमे कुठार अछि घोर मारि करबे॥

चौपाइ

सहजहु भृगुपति गरजथि घोर * प्रलयकाल घन कृत जनु सोर
कहु कहु कौशिक की थिक काज * नृपजन जनक महीप समाज
कहलनि कौशिक नृप मिथिलेश * धनुषयज्ञ ठानल छल बेश
सिद्धि काज टूटल शिव-चाप * रामचन्द्र तत कयल प्रताप
भृगुपति कहलनि बाहु उठाय * क्षत्रियजन सुन मन श्रुति लाय
अपराधिहि काँ करह फराक * नहि तौँ सब जन शिर पर डाक

क्षत्रिय-क्षय कय एकइश वार * कर मे जाग्रत कठिन कुठार
कातर नृप न उठाओल घाड़ * अजक गोलजक निकट हुराड़
जनकक चित चिन्ता नहि आव * धनुष भङ्ग कर विदित प्रभाव
मिथिलाधिप की चुक व्यवहार * भृगुनन्दनक कयल सत्कार
रामचन्द्र लक्ष्मण दुहु भाय * जनक अपन लेल सङ्ग लगाय
कयलनि सभ जन तनिक प्रणाम * जनक चिन्हाय कहल भल नाम
आशिष देल देखल छवि नयन * सुजन लोक मन हरषित चयन
शतानन्द अभिमान न थोड़ * भृगुनन्दन कें लगला मोड़
से पुछलनि मखविधि आरम्भ * कहल पुरोहित चित अतिदम्भ
चारि वर्ष वयसक एक गोटि * कोटि रती उपमा हो छोटि
कन्या-रत्न एहन के आन * लक्ष्मी थिकिथि सिद्ध अनुमान
हरक अग्रसौं उखड़लि जानि * सीता नाम अर्थ सौं मानि
बिज्ञानी मिथिला-महिपाल * कन्या बुद्धि कयल तत्काल
नारद मुनि तनि कहलनि आबि * कन्याकाँ वरगुण जे भावि
नारायण हिनकर वर सैह * भूमिक भार निकर हर जैह
तनि विनु धनुष दलन के आन * कयल जनक मन ई अनुमान
शिव धनु टुटत परीक्षा लेव * ई कन्या हम हुनकहि देव
जनक नृपति काँ होमहि बूझ * ब्रह्मज्ञाता काँ सभ सूझ
रघु-कुल-कमल-विकासक सूर * कयलनि राम मनोरथ पूर

बरवा—परशुराम से सुनतहिँ, हँसि उठलाह।
ब्राह्मण मर्कट काँ के, अछि चरबाह॥

चौपाइ

कम्म पुरोहिति अति स्वच्छन्द * पर घर नाचथि मूसर चन्द
शान्त जनक भूपक नहि त्रास * सभहिक गुरू गोवर्द्धनदास
जनकक सभा तोहर बड़ गाल * उगलक्षण ढोढ़ी धरि माल
शतानन्द तों छें बड़ भूच * ना बड़ ऊच कान दुहु बूच
शतानन्द कहलनि खिसिआय * उचिते कहलें संग बिधुआय
काटल कियक रेणुका-माथ * ई बकवाद वृथा भृगुनाथ
ब्राह्मण कां धिक क्षात्र प्रताप * तत्त्व विचार करी तें पाप
आनक दोष अणुक परमान * देखथि अपन न विल्व समान
परशुराम लोचन भेल लाल * जेहन रौद्र रस प्रकट विशाल
जनक कयल सभ कार्य अनर्थ * भावी तनिक मनोरथ व्यर्थ
हम क्षत्रिय अरि से नहि चेत * दशरथ मरता आटी खेत
अति सुन्दर छल युगल-कुमार * कि करब कयलक बड़ अपकार
हँसि हँसि लक्ष्मण कयल प्रणाम * कहलनि सुनितहिँ छल छी नाम
लक्ष्मण मन रण अति उत्साह * देखि भृगुपति भेल जेहन बताह
हास्य सदा थिक कलहक मूल * भृगुपति कथा कहल प्रतिकूल
देखलैँ छैँ को बाबू आँखि * मरय बेरि चिउटिहु कां पाँखि
कहलनि लक्ष्मण सुनि मुनि लेब * तखन दण्ड कक्करहु अहँ देब
अरनैँ भृगुपति कोप अगाध * एतगोट रोष कोन अपराध
भृगुपति कहलनि सुन रे बाल * एखनहि सैं तों बड़ वाचाल
हमरा चापाचार्य्य महेश * तनिक प्रताप विजय सभ देश
तनिकर धनुष मनुष देव तोड़ि * जिबइत तनिका देब की छोड़ि

लक्ष्मण कहलनि की अजगूत * क्षत्रिय क्षय कत अपनैं बूत
शिव-धनु टुटल देत के जोड़ि * की हो आब कपारे फोड़ि
अपनैं अबितहुँ एतय सबेरि * धनुष न छुबितथि एको बेरि
सड़ल पड़ल छल चाप पुरान * से धनु तोड़ल की छवि मान
धनुष-भङ्ग-धुनि कतय न गेल * शिव शिव शिवमन रोष न भेल
एक अपराध कहब कर जोड़ि * सीता लाभ धनुष कें तोड़ि

कुण्डलिया

बालक ई कालक सदन, जयता हमरहि हाथ।
अग्निकण्ठ पकठोस बड़, काटब हिनकर माथ॥
काटब हिनकर माथ, परशु सैँ देरि न करबे।
बालक बध अन्याय अयश माथा बरु धरबे॥
आबथु हमर समीप हिनक जे छथि प्रतिपालक।
त्याग करथु मन शोच भाग्य एतबहि दिन बालक।

दो०—कयल उपद्रव सभ जनक, देखला भलैं जमाय।
टेंगरा पोठी चाल दय, रोहुक शीर चिबाय॥
लक्ष्मण कहल सरोषमुनि, भृगुपति मति अति छोटि।
पर्वत रूध्ये ठेकलैं, भाँगिय घरक शिलौटि॥

धनाक्षरी

कालक न त्रास अछि अयोध्या निवास अछि,
अरिगण दास अछि शूर - गुण- धाम छी।
धनुष समक्ष अछि शर कर दक्ष अछि,
निज लोक पक्ष अछि लक्ष्मण नाम छी।

रामचन्द्र भक्ति अछि बाहु पूर्ण शक्ति अछि,
विप्र अनुरक्ति अछि स्वस्थ अष्टयाम छी।
वीर वर वेष अछि मन बड़ तेष अछि
कौशल विशेष अछि अपनैं की वाम छी।

सो०—हम नहि वचनहिँ शूर, मुनि महि-सुर-वर समरमे।
करिअ मनोरथ पूर, कर कुठार वृतकएठ इह॥

चौपाई

रामचन्द्र हँसि लेल हटाय * लक्ष्मण जनु करु गुरु अन्याय
धरा धरणिधर भार सहिष्णु * फण एक देश शयन कर विष्णु
कुल मर्य्यादा राखू वीर * द्विज पर धयल धनुष की तीर
राम कहल सभ हमरे दोष * बालक उपर करक नहि रोष
की कर्तव्य कोप की काज * कहल जाय सभ सुनथि समाज
अयलहुँ एतय अन्य परसंग * हमरहि छुते धनुष भेल भङ्ग
परशुराम मन नहि भेल साम * कुपित कहल सुन अभिनव राम
क्षत्रिय अधम कहाबह नाम * हम एक राम आन के राम
तोड़लइ शङ्कर धनुष पुरान * मनमें बाढ़ल बड़ अभिमान
हमरहि कर वर वैष्णव चाप * लैइ चढ़ाबह करह प्रताप
भ्रमइत छइ रघुवंशि कहाय * द्वन्द युद्ध कय दैइ हटाय
नहि तौं हमरा हाथहिँ सर्व * मारल जयबह रह नहि गर्व
पृथ्वी डोललि तम परि पूर * मन मन हर्षित लक्ष्मण शूर
रघुवर भृगुवर कर लय चाप * अक्रिय भृगुपति थर थर काँप
धनुष चढ़ाओल करमे आनि * रघुवर कहलन्हि शर सन्धानि

लक्ष्य देखाउ अहाँ भृगुराम * की निज पद-युग की पर धाम
परशुराम मन बाढ़ल भीति * भय बिनु कतहु सुनल नहि प्रीति
विकृत वदन सन क्षण भृगुराम * कोप लोप भेल ठामहि ठाम
स्मरण कयल पूर्व्वक वृत्तान्त * रहित रौद्र रस सञ्चरु शान्त
अनुचित कहल न ज्ञात प्रभाव * परमेश्वर परिचित चित आब
विष्णु महाप्रभु पुरुष पुराण * कयल जाय प्रभु संकट त्राण
कहइत छी हम अपन चरित्र * प्रभु दर्शन सौं चित्त पवित्र
बाल्य अवस्था में तप कयल * ध्यान निरन्तर विष्णुक धयल
चक्रतीर्थ में कयल निवास * अगणित वर्ष दिवस ओ मास
बहुत प्रसन्न विष्णु भगवान * कहलनि हमरा दयानिधान
हमर त्रिदंश अहाँकाँ प्राप्त * करबनि हैहय प्राण समाप्त
मारब क्षत्रिय एकइस बेरि * कश्यप काँ काश्यपि देब फेरि
हम त्रेतायुग दशरथ गेह * होयब पुत्र तपस्या स्नेह
ततय भेट मिथिला मे हयत * हमर तेज घुरि हमरहि अयत
दखन तपस्या कर अहँ जयब * राम रूप सौं निर्ज्जित हयब
ई कहि भेला अन्तर्द्धान * ओ आज्ञा हम कयल विधान
सैह थिकहुँ प्रभु परिचित आज * अनुचित कहल होइछ मन लाज
जनम सुफल भेल देखल चरण * छूटल क्षत्रिय प्राणक हरण

गीतिका संगीते रामकारी छन्द

जय भक्ति-भावन विश्व-पावन रामचन्द्र दयानिधे।
धृतचाप-सायक सर्व्वनायक जानकीश विधेर्विधे॥
जय पंचभूत - विभूतिकारण सर्वचारण सद्गते।

त्वयि सन्तु मन्नतयोथ मामिह पाहि पाहि जगत्पते ॥

सोरठा—ब्रह्मा विष्णु महेश, मन मानल अपनहि थिकहुँ।
अब प्रभु करिय निदेश, भरल तमोगुण सौँ छलहुँ ॥

चौपाई

परशुरामकृत स्तुतिन्तति शूनि * राम प्रसन्न कहल मन गूनि
सुनु भृगुपति हम से वर देव * मन वाञ्छित माँगू जे लेब
भार्गव कहल अनुग्रह थीक * गत दुर्दिन आगत दिन नीक
अपनैँ जनक सतत हो संग * अपनैँक पदमे प्रीति अभङ्ग
ई वर छोड़ि न माँगव आन * बाढल छल बड़ मन अभिमान
हमर कयल स्तुति नर जे पढ़त * अपनैँक भक्ति ज्ञान मन बढ़त
अन्त समय हो प्रभु पद स्मरण * अपनैँक विना आन नहि शरण
राम तथास्तु कहल शुनि लेल * प्रभुक प्रदक्षिण शत शत देल
गेला महेन्द्राचल भृगुराम * जय जयकार भेल एहि ठाम

विष्णुपद छन्द

भजेहं जितरामं रामम् ।
राजन्यालिशमनभृगुपतिना परिवृतसङ्ग्रामम् ॥
पङ्कजलोचनमतिकमनीयं कान्त्या जितकामम् ।
मुखतो विश्वेषामपि रुचिरं प्रलये विश्रामम् ॥
पालितमुनिमखमतुलमुदारन्नाशितदनुजकुलम् ।
हततारकमथ गौतमवनिता कृत जीवन सफलम् ॥
जनकपुरे श्रितसकलावनिपे किल भग्नाजगवम् ।
रामचन्द्रभगतीनां गतिमिह कृतचरिताभिनवम् ॥

हरिपद छन्द

सकल पुन बाजन बाजय लाग ।
भृगुनन्दनसौँ रघुनन्दन प्रभु बचला बड़ गोट भाग ॥
तोड़ल शङ्कर चाप जनकपुर एक दिन अद्भुत लाग ।
बैदेहीपति निकट परशुधर कयल प्रतापक त्याग ॥
देवार्चन फल आज फलित भेल कयल जे बहुविध याग ।
रामचन्द्र काँ हृदय लगाओल दशरथ मन अनुराग ॥

मणिगुण-सरभ नाम छन्द

अरिगण रहित सहित निजजनसौँ ।
निजपुर पहुँचलसभ सुखि मन सौँ ॥
कर सुख रघुवर सहज सुधन सौँ ।
युवति सहित बर अपन भवन सौँ ॥
वितरण कर कत मणि गुणयुत काँ ।
सुखर सम सुख दशरथ-सुत काँ ॥
सभ जन मन मन कह रघुवर काँ ।
थिकथि न मनुज सकल दुख हर काँ ॥

चौपाई

नाम युधाजित भरतक मान * भरत संग लय गेला गाम
दशरथ नृप आज्ञा अनुसार * शत्रुघ्नहुँ काँ सेह विचार
केकयि-भ्राता हर्षित चित्त * भेल सम्पन्न जे छलनि निमित्त
कौशल्यादिक रानी लोक * देवमातृ सनि रहथि अशोक

इन्द्र शची सह शोभित जेहन * वैदेही संग रघुवर तेहन
यशोगान रामक सभ ठाम * नित्यानन्द विमल सुखधाम
कहि न शकथि ब्रह्मादिक विबुध * कत प्रभु चरित कतै हम अबुध

गीत गौरी योगिया ।

जय सगुणे त्रिगुणातीते--जय जय जन-तारिणि सीते ।
जय जय योगिजनानां ध्येये गेये च श्रुतिगीते ।
परिपालय मां महामाये--जय जय परमेशसहाये ।
सकलशक्तिमयि मिथिलाभूमौ धृतकमनीयककाये ॥
कृतजनकयशोविस्तारे -- सेवकहितकरुणागारे ।
रघुनन्दननवघनसौदामिनि भगवति सकलाधारे ॥
जय भक्तगृहेर्प्पितवित्ते -- कारितजननिर्म्मलचित्ते ॥
प्रीतिरस्तु नो भवतीचरणे शरणे मुक्तिनिमित्ते ॥

इति श्रीमन्मैथिल-चन्द्रकविविरचिते मैथिली-रामायणे

षष्ठोऽध्यायः ॥६॥ बालकाण्डस्समाप्तः ॥१॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्दाझा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

अयोध्याकाण्ड

* मैथिली रामायण *

॥ अयोध्याकाण्ड ॥

—:*:—

श्लोक

शार्दूलविक्रीडित छन्दः

भाले बालकलाकरं गलगरं वामाङ्गवामाधरं
चञ्चन्मौलिसरिद्वरं वृषचरं सर्व्वेप्रदं निर्हरम् ।
वन्दे पिङ्गजटं मनोहरनटं विश्रान्तभूसद्वटं
श्रीमन्निष्कपटं सुकीर्त्तिपटं भ्राजद्विभूतिच्छटम ॥

मानिनी छन्दः

अवतु जलदनीलस्सद्गृही पुण्यशील-
स्त्रिभुवनखलजिष्णू रामचन्द्राख्यविष्णुः ।
रघुवरवरजाया सर्व्वसम्पन्निकाया
जनिरखिलसहायाः पातु मान्देवमाया ॥२॥

चौपाइ

बारह बरष अयोध्यावास * वैदेही संग विविध विलास
श्रीरघुनन्दन भूमिक भार * हरनिहार नरवर अवतार

कहलनि मुनि नारद विधि कान * विधिहुक सभा आन नहि जान
सुरधरणिक अहँ होउ सहाय * कहू सन्देश राम काँ जाय
जे कारण लेलहुँ अवतार * एखनहुँ धरि धरतो काँ भार
सीतासहित विपिन कय वास * कयल जाय सुर-अरिक विनाश
विधिक कहल सुनि मुनि मुदचित * चलला सुर-अवलोक निमित
वीणा सरस राग भल बाज * अति उत्साह देखब विभु आज
मुनि नारदक मनोरथ पूर्ण * अतिथि राम तट से भेल तूर्ण

दोहा

अभ्यागत नारद जतय, गृही जतय श्रीराम ।
की अपूर्व आतिथ्य - विधि, विधिसुत प्रभु गुणधाम ॥

चौपाई

रामचन्द्र उठि कयल प्रणाम * कयल वरासन मुनि विश्राम
लेल जानकी चरण धोआय * पूजन कयल विहित सन्याय
स्तुति मुनि कयलनि बहुत प्रकार * अपनैं प्रभु—वर जगदाधार
कहइतछी आगमनक काज * कहय कहल कमलासन आज
कहलनि बिधि संदेश समाद * राखधु आन वचन—मर्य्याद
राम कहल हम करब से काज * गेल जाय मुनि द्रुहिण समाज
बिसरल नहि महि किछु वृतान्त * हसि हसि कहलनि सीताकान्त
प्रातहि हम जायब वनवास * भावी दशवदनादि विनाश
चौदह वरष वनी बनि रहब * देखब चरित एखन को कहब

तीनि प्रदक्षिण दण्ड प्रणाम * कय नारद गेल विबुधसुधाम

इति श्रीमैथलचन्द्रकविविरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

चौपाइ

दशरथ नृप वर परम उदार * गुरु वसिष्ठ संग कयल विचार
विषय मनोरथ रथ आरूढ़ * उचित की आब भेलहुँ बड़ बूढ़
रामचन्द्र भ्रातामे ज्येष्ठ * सकल गुणोपेतहुँ से श्रेष्ठ
तनिक सुयश जन के नहि आज * रामचन्द्रकाँ करु युवराज
प्रावहि रह सभ वृत्त सुधाम * मन्त्रित करु गुणशाली राम
कहलनि तखन सुमन्त्रि बजाय * अहुँक अधीन कार्य्य समुदाय
श्रीगुरु जे जत कहथि सुकाज * करु सम्पन्न शीघ्रतर आज
सचिव पुछल कहि देल सभ मूनि * नृपति-तिलक-पद्धति पढ़ि गूनि

हरिपद छन्द

नानावर्ण पताका तोरण मणिमुक्तामय टाँगू।
स्मारकपत्र लिखल अछि जेहन राजपुरुषसौं माँगू॥
प्रातःकाल सकल भूषणायुत सत्कुल बहुत कुमारी।
मध्य कक्ष मे पूजन हेतुक पूर्णहि रहय तयारी॥
चतुर्दन्त ऐरावतवंशक कनक रत्न सौं भूषित।
सोढ़ह गोट महागज चाही शुभलक्षणनिर्दूषित॥
कनक-कलस नानातीर्थोदक-पूरित रहै हजारे।
दधि दूर्वाक्षत कुङ्कुम चाही मत्स्य,प्रशस्तक भारे॥

करब थापना तहँ अहँ नव नव तीन गोट बघछाला ।
रत्नदण्ड अवदात, छत्रमणि दिव्य दिव्य वरमाला ॥
दिव्यवस्त्र ओ दिव्य आभरण पूर्व्वहि राखू आनि ।
सत्कृत मुनि पुन रहथि बहुत मुनि वरणकाज कुशपाणि ॥
गायन वैदिक तथा नर्त्तकी लोक वृत्त भय आबथु ।
वाद्यकार नाना बाजन लय नृपतिक द्वार बजाबथु ॥
गज हय यान पदाति सज्जसौँ बाहर बहुत सिपाही ।
रहथु करथु मन्दिर मन्दिर द्विज देवीपूजन ताही ॥

पादाकुलक दोहा

नाना पूजा बलिविधि नाना, हसइत कहल वसिष्ठ ।
करु सम्पन्न सुमन्त्र सुमन्त्री, जे जत अछि अवशिष्ट ॥

चौपाइ

जे सब कहल वसिष्ठ विधान * वृत्त सकल भेल कहल प्रधान
कहि सुनि मुनि पुन कयलनि गमन * रथ चढ़ि रामचन्द्र वरभवन
तेसरहि खण्ड छोड़ि रथवेश * अन्तःपुर मुनि कयल प्रवेश
रोक टोक नहि बुझि अनिवार्य्य * द्वारपाल परिचित आचार्य्य
गुरु आगमन बुझल श्रीराम * कयल कृताञ्जलि दण्डप्रणाम
कनकालुका भरल भल वारि * वैदेही लेल चरण पखारि
कनकासन। पुन बैसक देल * से जल सीचि माथ बिच लेल
रामचन्द्र मुख सुनि मुनि वचन * उत्तर कहल उचिततर रचन
अपनैंक चरणोदक धय माथ * धन्य धन्य शिव गिरिजानाथ

कयल उचित जन हित उपदेश * अपनैं रामचन्द्र परमेश
सीता-राम सहित अवतार * हरण हेतु अवनिक दिक भार
हमरासौं प्रभु करु जनु लाथ * रावण मरता अपनैं क हाथ
हम गुरु अहाँ शिष्य आचार * करइत छी माया-व्यवहार
पितरक पितर गुरुक गुरु राम * देवदेव अपनहि सुखधाम
रहइत छी व्यवहारक व्याज * मर्म्म न बजइत छी सुरकाज
कहल विधाता हमरा कान * मर्म्म तकर ककरहु नहि ज्ञान
ई इक्ष्वाकुवंश गुणधाम * अपनहि अवतरता विभु राम
सत्वर दुरित विनाशन कार्य्य * हमर ख्याति अपनैं क आचार्य्य
याचक कर्म्म निन्दिताचार * एहि लोभें कयलहुँ स्वीकार
प्रभुवर विभु अपनैं मायेश * होयत नहि मायाक कलेश
एतय पठाओल अहकाँ बाप * काज रहल अछि नहि चुपचाप
आयल छी आमन्त्रण काज * प्रातः काल होउ युवराज
सीतासहित विहित उपवास * शुचिसंयम करु विश्व-निवास
धरणी-शयन जितेन्द्रिय कर्म्म * करु करु कहइक थिक गुरुधर्म्म
चललहुँ दशरथ नृप तट फेरि * अपने आयब भोर सबेरि
रथि चढि नृपतट गेला मुनि * राम कहल लक्ष्मणकाँ सुनि
हम प्रातहि होयब युवराज * नाम हमर अहँइक सभ काज
मुनि नृप काँ जे भेल विचार * सुनि एक जन मन हर्ष अपार
कौशल्या काँ वार्त्ता देल * बड़ गोट हर्ष रहल नहि गेल
सुनि आयल छी नृपति समाज * प्रातहि रामचन्द्र युवराज
सुनल सुमित्रा मन सन्तोष * धन दय बहुतक कर परितोष

दुहु जनि मिलि पुन राम निमित्त * लक्ष्मी – पूजा करथि सुचित्त
बरु शशि उष्ण शीतकर भानु * घनसारक सम शीत कृशानु
दशरथ कहल वितथ भय जाय * तौं अकाल मे उदधि शुखाय
कामुक नृप केकयी अधीन * ई गुनि गुनि मन होइछ दीन
दुर्गार्च्चना करथि मन लाय * कौशल्या केकयि-भय पाय

गीत तिरहुत माधवीय बराड़ी छन्द

से करु देवि दयामयि हे, थिर रह महराज ।
पूरिअ हमर मनोरथ हे, केकयि नहि बाज ॥
नृपतिक हृदय ककर वश हे, ककरो नहि मीत ।
सौतिनि सामरि सापनि हे, मन हो भयभीत ॥
तुअ शङ्करि हम किङ्करि हे, यावत रह देह ।
तुअ पद-कमल नियत रह हे, मोर अचल सिनेह ॥
रामचन्द्र सीतापति हे, होयता युवराज ।
त्रिभुवन आन एहन सन हे, नहि हित मोर काज ॥

सोरठा

लेअ जनम भरि नाम, रामचन्द्र बन जाथि जों ।
सुरमण्डलि एक ठाम कहल सरस्वतिसौं तहाँ ॥
बद्धाञ्जलि सभ ठाढ़, करु उपाय नहि काल अछि ।
संशय मन हो गाढ़, राज्य पाबिकें राजमद ॥

रूपक दण्डक छन्द

सुनु सुनु देवि शारदा सुन्दरि जाउ अयोध्या आजे करु व्याजे

जाय उपाय तेहन करु सत्वर, राम न पावथि राजे, सुर काजे
प्रथम मन्थरा काँ अँह मोहब, तखन केकयी रानी, ठकुरानी
दशरथ-नृपति-मनोरथ-पङ्कज,-कानन दलन-हिमानी, वनु वानी

चौपाइ

मिथिला संगीतानुसारेण पर्व्वतीयवराड़ीय छन्द

चललि शारदा सुर-हित-काज * दशरथ वनितागार समाज
कय प्रवेश दासी - गल - देश * पटु पण्डिता मन्थरा वेश
रानिहुँ काँ वानी नहि टेर * बाजवधू बुझ जेहन बटेर
नृपतिक उच्च भवन आरूढ़ि * पुर शोभैँ संक्षोभित मूढ़ि
अनमनि पुछलनि कहु कहु धाइ * बड़गोट उत्सव की थिक आइ
हर्षित धन कौशल्या देथि * याचक विप्र लोक से लेथि
कहल धाइ रामक अभिषेक * करता भूपति उचित विवेक
केकयि रानिक गेलि समीप * भेम्ह मन्थरा उत्सव दीप
दासी भाभट कहल कि जाय * छाती पिटि पिटि भूमि लोटाय
कहल केकयी कह की भेल * कनइत किछु नहि उत्तर देल
मिथ्या दुःखक स्वाङ्ग अनूप * डटलै सौँ हटि भेलि से चूप
कानव हम नहि कानत आन * सङ्कट ककर पड़ल अछि प्रान
पुछलनि केकयि कह हित काज * पड़ल कि कूबड़ि संकट आज
सुनु स्वामिनि विधिगति विपरीति * नृपकाँ छल अपनहि मे प्रीति
से छल सभ छल भेल परिणाम * युवराजक पद पओता राम
सकल वस्तु तिलकक भेल वृत्त * ककरो कुव नहि रहल निवृत्त

सुनु सुनु सुमुखि विमुखि विधि भेल * भरतो अपनेक नैहर गेल
नृपतिक अनुमति सौतिनि सङ्ग * दिन लग आयल देखब रङ्ग
अहँ गर्वित पलँगहि पर सूति * अनकर किछु नहि मानिअ जूति
गुण गौरव तामस विस्तार * डरसौँ कि कहब अपन कपार
सुखित सुमित्रा रहती वेश * लक्ष्मण रामक मतहि प्रवेश
अहँक अभाग्य कहल की जाय * सभ गुण गोवर अवसर पाय
नीति-निपुणता सुनल पुरान * सुनलहुँ नृपति मित्र कहुँ कान
चल-मति चढलहुँ स्वामिनि चाँचि * घर उपवास द्वारपर नाच
अन्तःपुर सम्प्रति अभिमान * बाहर घर घर आनक आन

हरिपद छन्द

[मिथिला संगीतानुसारेण श्रीछन्दोनामापि]

सुनि मन हर्ष केकयी रानी कहल माँग से पयबै ।
रामचन्द्र युवराज सत्य तौँ तोँ अशोचि भय जयबैँ ॥
अन्तः पुर मे कहल लोकके गीत समय शुभ गावै ।
कार्य्य-सिद्धि-कारण हर-गिरिजा-गणपति लगलि मनावै ॥
नव नव वस्त्र विभूषण ... नव रानी सौँ जन पावै ।
हर्षक नोर भरल रानी-... सरस सुराग सुनावै ।
महाविघ्नकारिणी मन्थरा ग्रहण न कर मणिमाला ।
उत्सव गीति प्रीतिसौँ सुनय न हृदय लागु जनि भाला ॥

चौपाइ

एक दोष नहि साधल मौन * वजला जाइछ खायल नोन

नृप-चिन्तित होयत जौं काज * क्षण मे स्वामिनि छुटत समाज
कत हम रहब कि ककर कहाय * शीरा बाँधल भाठ सुखाय
जनि वलसौँ चलइत छल गाल * तनिके नृप की करता हाल
हमहूँ कुबड़ि रहब कहु चूप * आगि लाग घर खनब न कूप
स्वामिनि चरण कहैछी छूबि * अवश मरब सरयूगे डूबि
केकयि कहल केहन तोर ज्ञान * मन अबइछ बजइछ ओ आन
बिन पढ़लय प्रतिभा अभ्यास * गण विशेष तन तोर निवास
कूबड़ि कहल कहर भेल काल *व्यभिचर कतहु कि विधि लिपि भाल
एखनहुँ धरि केकई काँ काट * ई विवाह सौँ चिन्हल ललाट
हमरा पर की पड़ उतपात * उचहि घर पर प्रबल बसात
केकयि सुनल कहल खिसिआय * बजइतछेँ अनुचित अन्याय
उत्सव समय कहैछेँ आन * कानी गायक भिन्न बथान
भरतहुसौँ प्रियकर मोर राम * कोशल्या छथि सौतिनि नाम
सभ कर हमर हृदय रुचि राखि * को होइत छौ अटपट भाखि
दुस्सह कान करैछेँ घोल * डोकाकाँ फूजल मुह बोल
एक किङ्करि काँ कहब बजाय * मारति तोरा कुबड़ तकाय
बड़ि भभटिनि कराटिनि दुरि गेलि * भवनमे रहय योग्य नहि भेलि
से शुनि कुबड़ी कहइछ कानि * हा हा हित करइत हो हानि
मारौ मरी हलाहल खाइ * धिक जीवन सौँ भल मरि जाइ
राजभवन नहि कारागार * बुझल राग बाजल भल तार
परइङ्गित जन जे नहि जान * तनिका जानब पशुक समान
छल भरोस अहँ किछु बुधिआरि * कहि सुनि स्वामिनि बैसलहुँ हारि

बरठ शुखाइछ पिउब न पानि * चट पट खसब अटासौँ फानि
भरतो हयता रामक दास * की वन जयता लक्ष्मण त्रास
सत्वर प्राण दैव लय लेथि * भल नहि सौतिनि स्वामिनि देथि
शुध मति अपनैँ काँ नहि चाड़ि * हम दैछी सभटा मन पाड़ि
दुइटा नृप वर दशरथ देल * अछिए न्यासित अहँ नहि लेल
सुरपति दशरथ केँ बजबाय * कहल धनुर्द्धर होउ सहाय
असुर भयङ्कर समर विरुद्ध * नृप दशरथ सौँ माचल युद्ध
दशरथ रथक अक्ष सौँ कील * समर खसल भय गेल छल ढील
कील स्थान हाथ अहँ धयल * स्वामिनि साहस अतिशय कयल
नृप समरोत्सव से नहि जान * राखल सति नृपतिक तहँ प्रान
असुरक प्राण नृपति रण हरल * तखन दृष्टि अपनै दिश पड़ल
कहि आश्चर्य्य लगाओल अङ्क * माँगु माँगु वर कहल निशङ्क
अहँ तहँ कहल कृपाकर नाह * सत्य - प्रतिज्ञ वचन निर्व्वाह
वर दुइगोट नाथ जौँ देब * अवसर पड़त तखन हम लेब
से लिय माँगि करय किछु त्रास * मन पड़ि आयल कयल प्रकास

हरिपद छन्द ।

[मिथिला-संगीतानुसारेण नेपालकराड़ीय छन्दोपि]

शङ्ख शङ्ख पुन देवि शारदा केकयि कण्ठ समइली ।
दया क्षमा मति नति उदारता गुणतति दूर पड़इली ॥
कोप - भवन मे केकयि, करुणाशून्या गहना त्यागल ।
त्रेतामे कलि फलित - मनोरथ राजभवन मे जागल ॥
अनृत - वचन - रचनाकर दासी निकट बजाओल रानी ।

कहलनि कह कह की कहाँ के कर के कर मोर हित हानी ॥
कि कहब सुमति मन्थरा हमरा आँखि दुहुक तोँ तारा ।
कर से उचित उपाय मन्त्रिणी सभ तोहरहि शिर भारा ॥
तोहर पहिल विचार सुनल नहि बहुत अनादर सहलेँ ।
जै जानहि से सान आब तोँ बहुत कथा की कहलेँ ॥
जौँ स्वामिनि विश्वास हमर अछि बुद्धि-साध्य अछि काजे ।
सावधान रहु हमर बुद्धि-बल देखि लेब सभ आजे ॥
ठामहि ठाम सकल रहि जायत जे अछि तिलकक साजे ।
शपथ करैछी दशरथ अपथैँ चलि शकता महराजे ॥

चौपाइ

[मिथिला-संगीतानुसरेण केदार केदारीयं छन्दोपि]

करु करु स्वामिनि अवनी शयन * भृकुटी कुटिल रौद्ररस नयन
मलिन वसन तन फूजल केश * हृदय कतहुं नहि करुणाक लेश
परिहरु मुख-पङ्कज मृदु हास * सामरि सापिनि सन निश्वास
बानीवश रानी मतिहिनि * भय गेलि दासी कुमति अधीनि

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे द्वितीयोध्यायः ॥२॥

चौपाइ

मिथिला संगीतानुरेण श्रीमालव छन्द

काज मन्त्रिकेँ कहि नृप देल * अपनैँ अन्तःपुर मे गेल
नृपति न देखल केकयि आँखि * की वृत्तान्त उठल नृप भाखि

अबइत हसइत नित जे आब * केकयि काँ छल सिद्ध स्वभाव
नृप चिन्तातुर चित नितान्त * पुछलनि दासी सौँ बृत्तान्त
स्वामिनि तोर कतय छथि आज * कोप - भवन मे जनु महराज
आह आह की कोप निदान * सापक चरण साप नृप जान
की भेल नृपतिक प्रबल प्रताप * कुबड़ि-कथा सुनि थरथर काँप
शङ्क शङ्क केकयि तट जाय * थर थर कर कर परसल काय
त्यागि पलंग की धरणी शयन * जिबइत हम देखइत छी नयन
असमय त्यागु कलापति कोप * करु जनु हमर मनोरथ लोप
चहु निज भावनकि भेलहुँ बताहि * बड़ उत्सव दिन दिअऽ निमाहि
मलिन वसन धारण विक ज्ञान * अलङ्करण तन प्रत्याख्यान
कहु निर्द्धन काँ बड़ धनि करिय * मानी धनी सकल धन हरिय
नारी पुरुष अहित जे हयत * दण्डबद्ध जीवनसौँ जयत
सुन्दरि सुमति क की आन * हेतु अहाँक त्यागि देब प्रान
रामक शपथ कहै छी खाय * करब न अहाँ विपय अन्याय
सत्य पराक्रम शोभाधाम * प्राणहुँसौँ प्रियतम छथि राम
कुबड़ी कल बल कहय इरोत * चोर सहथि की कहु इजोत
सुनि से नृपति देल अनठाय * बान्धल सिंह जकाँ पछताय
दासी चित भेल निर्भीक * कुकरक भागेँ टूटल सींक

षट्पद

राम शपथ नृप कयल कहल सुनि कयि रानी ।
शङ्क उघाड़ल आँखि सत्य बान्धल नृप जानी ॥
देवासुर - संग्राम मध्य वर अहँ दुइ देलहुँ ।

से अछि न्यासित हमर प्रयोजन विनु नहि लेलहुँ ॥
भरत होथु युवराज नृप राम जाथु दण्डक गहन ।
मुनिक वेष चौदह बरष हमर याचना अछि एहन ॥

चौपाइ

मिथिला सङ्गीतानुसारेण सरसासावरीयं छन्दः

हमर कहल नहि होयत भूप * डूबि मरब धसि पोखरि कूप
गरल अशन कय त्यागब प्रान * सङ्कल्पित जौँ होयत आन
केकयि कठिन वचन सुनि कान * नृप खसला मूर्छित अज्ञान
अशनि पतन तरुगण गति जेहन * केकयि कथा श्रवणसौँ तेहन
मूर्छित दशरथ नृप कोँ जानि * अन्तःपुर जनि उठली कानि
दशरथ मन मन करथि विचार * विषमय विषम विषय संसार
की दुःस्वप्न भ्रमाकुल चित्त * बूझि न पड़इछ एकर निमित्त
मन नृप कह निद्रा नहि गाढ़ि * बाघिनि सनि रानी बट ठाढ़ि
वचन न एहन सुनाबिय कान * चट पट दय उड़ि जायत प्रान
सुमति सुदति सति की मति आज * भोगब अहाँ अकण्टक राज
कौशल्या काँ नहि किछु काज * अहँइक राम अहँक सम्राज
भेल कुसङ्ग ज्ञान सभ नष्ट * हमरा शिर मरणाधिक कष्ट

मत्तगजेन्द्र छन्द

निर्दय चित्त हलाहल घोरि कहू हम की वरु आनि पिआऊ ।
श्याम भुजङ्गमसौँ अँग अंगमे केकयिनन्दिनि आनि डसाऊ ॥
कण्ठमे बाँधि शिला बड़ि गोटि समुद्रक मध्यमे जाय डुबाऊ ।

दुस्सह राम - वियोग - कथा हमरा जनु कामिनि कान सुनाऊ ॥

चामर छन्द—केकयी अहाँक दोष रामचन्द्र कैल की।
मन्थरा कुमन्त्रणा सुबुद्धि कान धैल की ॥
जीवनावलम्बसौँ अये वियोग भेल जौँ ।
लोकमे कलङ्क,देह छोड़ि जीव गेल तौँ ॥

चञ्चला छन्द—चञ्चला समान गौरि रामकाँ रहै दिऔनि।
राज पाट कोष ओ समस्त सैन्य लै लिऔनि ॥
नीक ई कहैत छी पतिव्रता – विचार – सार।
स्पष्ट कष्ट नष्ट हैत छूट लोक मे अभार ॥

चौपाइ

[मिथिला संगीतानुसारेणेदं द्राविण्यासावरीयं छन्दः]

नाराच छन्द—कहू कहू नृपेन्द्र की वरप्रदान देल जे।
वृथा कथा करैत छी कि आइ माँगि लेल से ॥
कनैत छी बजैत छी जनैत छी न की अहाँ।
बिना विचार काज मे प्रयत्न कैल की कहाँ ॥

चौपाइ

[मिथिला संगीतानुसारेणेदं शुद्ध मलारीयं छन्दः]

धरणी शयन चयन नहि चित्त * दुर्गति कामिनि प्रीति निमित्त
संज्ञाशून्य मृतक समतूल * केकयि कहथि वचन प्रतिकूल
विगत रात्रि जनु बरष समान * दशरथ आधि जान के आन

बाहर उत्सव हर्षित लोक * अन्तःपुर पसरल बड़ शोक
अरुणोदय भेल नृपति जगाब * वन्दी गायन गुणगण गाब
केकयि शासन सुनि भयभीत * विरुद पढ़ो जनु गाबी गीत
सम्प्रति स्वस्थ चित्त नहि भूप * की आयल छी घसकू चूप
तिलक निमित्त वस्तु सभ धयल * मन्त्रि सुमन्त्र वृत्त सभ कयल
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यक जाति * निद्रा तनिकाँ आँखि न राति
ऋषिकन्या - गण पाँतिक पाँति * बाल वृद्ध तिय भाँतिक भाँति
पीताम्बर सुन्दर श्रीराम * कखन देखब छवि शोभाधाम
कटक किरीटी सर्व्वाभरण * कोटि - मनोभव - शोभा-हरण
नव घनश्यामल शोभागार * कौस्तुभ — शोभित परमोदार
स्मितमुख गजवर-पीठ विराज * लोक कहत जय जय युवराज
श्वेतछत्र धर लक्ष्मण सङ्ग * देखब कखन तखन जे रङ्ग
उत्सुक चित्त सकल पुर लोक * द्वार दोसर धरि नहि छल रोक
जागल छला राति महिपाल * उठला अछि नहि एतबहु काल
अनुदित दिनकर उठथि सदाय * आइ सुतल छथि की अलसाय
भेल अबेरि शयन छथि भूप * मन्त्रि विचार कयल चुपचूप
चिन्तातुर नृपतिक घर जाय * शङ्खहि जय जय शब्द सुनाय
नृप अचेष्ट नहि सुन किछु सोर * मुद्रित नयन युगल बह नोर
धरणी शयन न नयन उघार * केकयि नयन !कोप विस्तार
करुण — रसार्दित दशरथ भूप * केकयि बनली रौद्र स्वरूप
मन्त्री मन व्याकुल अथऊत * विधि गति टारि न ककरो बूत
केकयिकेँ कहलनि कर जोड़ि * कहु की थिक तामसकेँ छोड़ि

निन्द न सगर राति नृप-नयन * विकल नृपति कीदहुँ छथि शयन
बुझि कत पड़इछ की थिक आधि * देखल सुनल नहि एहन समाधि
राम नाम रटइत भेल भोर * बहल बहल चल नयनक नोर
वारिज - नयन रामकाँ लाउ * सत्वर रामक वदन देखाउ
स्वामिनि लायब राम बजाय * नृप - आज्ञासौँ से थिक न्याय
देखब राम कहल नृप कानि * सत्वरतर तनिकाँ दिय आनि
शीघ्र सुमन्त्र कयल सुनि गमन * जाय अवारित रामक भवन
सरसीरुह - लोचन सुनु राम * चलु चलु सम्प्रति भूपति - धाम
शीघ्र बजाओल अछि किछु काज * गड़बड़ सन मन लगइछ आज
लक्ष्मण-सहित राम रथ हाँकि * नृप लग पहुँचल सभ दिश ताकि
कयल पिताक चरण परनाम * नृप जानल आएल छथि राम
हुनकाँ हृदय लगाबक बेरि * सम्भ्रम उठला खसला फेरि
रामचन्द्र बजला हा ! हाय * लेल पिता काँ अङ्क लगाय
राज - दार उच्चस्वर कान * नृप काँ की भय गेल अज्ञान
राजतिलक-संभृति भेल व्यर्थ * अन्तःपुर किछु भेल अनर्थ
राम पुछल नृप-आधि-निदान * केकयि कहतनि हमरा ज्ञान

दोबय छन्द

[राग-तरङ्गिणी-मतानुसारेण शुद्धकोडारीयं छन्दः]

सुनु सुनु राम काम-मद-मोचन, शोचहिँ भूपति मरता ।
काज-जहाज अधीन अहँक अछि, सङ्कट-जलनिधि तरता ॥
अहाँ सुपुत्र वंशमे भेलहुँ, पिता - धर्म सभ राखब ।

अहँक पिताकाँ कहइत लज्जा, हम मिथ्या नहि भाखब ॥
वर दुइ गोट धयल छल पूर्व्वक, नृप सुकृतीसौँ माँगल ।
अपना नीकक सभकाँ इच्छा, अयश-पताका टाँगल ॥
बापक जौँ सन्ताप हरब नहि, नरकक होएता भाजन ।
सत्य-प्रतिज्ञ कथा कत जाएत, अयशाक बाजत बाजन ॥
सुनि सुनि श्रवण-शूल सम वाणी, जननी जानि सहैछी ।
भाखिअ अनृत कथा न राम हम, शपथहिँ सत्य कहैछी ॥
पिता - काज जीवन काँ त्यागब, विष भक्षण कय मरबे ।
सीता ओ कौशल्या त्यागब, राज पाट की करबे ॥
विन कहलहुँ जे पिता कार्य्य कर, से थिक उत्तम बालक ।
मध्यम कहलेँ करथि, न कहलेहु, करथि अधम कुल-घालक ।
पिता कहल नहि करब अन्यथा, सत्य प्रतिज्ञा कयलहुँ ॥
तनिकर आज्ञा-पालन-कारण, कहु कि वृत्त भय अयलहुँ ।
करुणारहित कहल सुनि केकयि, धन्य धन्य हे राम ।
जनक-अभीष्ट शिष्ट जन करइछ, त्रिसुवन तनिके नाम ॥
अहँ युवराज - काज राजा जे, मंगबाओल सम्भार ।
भरत होथु युवराज ताहिसौँ, ई सिद्धान्त विचार ॥
सुनु गुणधाम राम कहइत छी, दण्डक वन अहँ जाउ ।
चौदह वर्ष वनी भय रहुगय, कन्द मूल फल खाउ ॥
स्मितमुख राम कहल केकयिसौँ, भरत होथु युवराजे ।
हम दण्डक-वन गमन करै छी, नृपव्रत – पालन काजे ॥
बड़ गोट शोच पिता हमरासौँ, नहि बजइत छथि आजे ।

प्रजा पालना भरत करथु भल, भोगथु सभ सम्राजे ॥

चौपाइ।

[मिथिला-सङ्गीतानुसारेण शंकरनाटीयं छन्दः]

देखलनि नृपति राम छथि ठाढ़ * कयल विलाप दुःख बड़ गाढ़
उतपथ वर्त्ति भ्रान्त मन जानू * हम स्त्रीजितक वचन नहि मानू
बलसौँ भोगिय समुचित राज * अनुचित कहत न एक समाज
एहि सौँ हमरहुँ होयत न पाप * हरु रघुनन्दन मन सन्ताप

रूपमाला छन्द।

[मिथिला-संगीतानुसारेण केदारमालवीयं छन्दः]

जगन्नाथ अनाथ हम छी प्राण - वल्लभ राम।
विपिन जायब त्यागि हमरा शून्य पापिनि-ग्राम ॥
कयल स्त्री-विश्वास जे हम तकर फल परिणाम।
हमर मन-अभिलाष सभटा रहल ठामहि ठाम।
नृपति ई कहि रामकाँ निज हृदय लेल लगाय ॥
उच्चस्वरसौँ करथि क्रन्दन दशा कहल कि जाय।
राम निजकर-कमल जलसँ नयन देल धोआय ॥
कयल जाय न पिता चिन्ता आब की पछताय ॥
हमहु पुनि घर घूरि आयब भरत छथि युवराज।
राजसौँ वन कोटि गुण सुख लाभ मुनिक समाज ॥
कहब चिन्ता जननि करु जनु करब चरण प्रणाम।
किछु विलम्ब न तखन जायब जनकतनया-धाम ॥

केकयी काँ आधि छूटल एतय आयब फेरि ।
पिता-चरण-सरोज पर शिर धरब हम कय बेरि ॥
कय प्रदक्षिण तखन गेला जननि दर्शन राम ।
होम पूजा ध्यान बहुविध दान हो तहि ठाम ॥

दो०—रामचन्द्र - आगमन किछु कौशल्या नहि जान ।
विभु विष्णुक कयले छली राम - हेतु से ध्यान ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
अयोध्याकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाइ ।

[मिथिला-संगीतानुसारेण मिथिला गौड़-मालव छन्दः]

जैँ कौशल्या जानथि शङ्क * तेहन सुमित्रा कयल प्रपञ्च
रामक छवि देखल भरि नयन * नील-कमल-निन्दक छवि अयन
लेल अङ्क भरि लगइत गोड़ * सुत - मुख देखि हर्ष नहि थोड़
कौशल्या उठि कहलनि आउ * देव-प्रसाद मधुर किछु खाउ
जननि न अवसर बड़ अगुताइ * चललहुँ अछि दण्डक-वन आइ
केकयि-वरक विवश महिपाल * विकल पड़ल छथि चिन्ताजाल
भरत एतय होयता युवराज * हमर कुटी मुनि वनी समाज
कन्द मूल फल भल आहार * चौदह वर्ष एहन व्यवहार
आयब अवश तदुत्तर फेरि * चिन्ता जननि न करु एहि बेरि
सुनि मूर्च्छित उठि कहलनि हाय * हमहूँ वन जायब से न्याय
अहँ विनु कोन गति जीवन रहत * विषम वियोग प्राण कद सहत

राज भरत नृप-अनुमति लेथु * अहँ काँ विपिन वास जनु देथु
केकयिक भूपक कयल न दोष * सुत सज्जन पर एतगोट रोष
नृप छथि पिता हमहुँ छी माय * हमहुँ देब नहि कानन जाय
वचन हमर जौँ धरब न कान * सुनु सुत त्यागब एखनहि प्राण
सुनि लक्ष्मण कौशल्या-करुण * भृकुटी कुटिल नयन अति अरुण
कहल शूरतासौँ से वाक * केकयि राजा देलनि डाक
सभ जन सुनु किछु हमर न दोष * प्रलय - करण मन जागल रोष
केकयि - वश उनमत्त बताह * बड़ अनुचित कर धरणी - नाह
नृपकाँ देब हरी मे ठोकि * भरतक हृदय बाण देब भोकि
एतटा दर्प केकयी - चित्त * रामचन्द्र वन वृथा निमित्त
चलु चलु नाथ होउ युवराज * तखन देखब संसारी काज
जनिकाँ अरुचि होयत मन आन * तनिक हृदय मे बेधब बाण
राम कहल सुनु लक्ष्मण वीर * असमय त्यागु धनुष ओ तीर
अहँक सत्त्व हमरा अछि ज्ञात * नहि कर्त्तव्य एखन उत्पात
देखइत छी जे ई संसार * सकल भरल विष विषय - विकार
विद्युत जेहन चमकि छपि जाय * जानब तेहन भोग्य - समुदाय
अनल - तप्त लौहक पर जेहन * वारि - विन्दु आयुक गति तेहन
भेक व्याल - गलमे पड़ि जाथि * टप टप तैओ माछी खाथि
काल-व्यालसौँ जन छथि ग्रस्त * तदपि न विषय - मनोरथ अस्त
माय बाप सुत भ्राता दार * प्रपा - मिलन सन सुख संसार
देह भोग लय पल पल खिन्न * ई शरीर पुरुषहु सौँ भिन्न
बन्धु - समूह-जनित सुख-भोग * जानब नदिया - नाव - संयोग

हरिपद

[मिथिला-संगीतानुसारेण देवराज-विजय छन्दः]

लक्ष्मी थिकि चपला छाया सनि तन - तारुण्य - तरङ्गे ।
स्वप्नोपम वनिता-सुख तेहन मन अभिमान अभङ्गे ।
दिनकर-देव-गतागत घटइछ आयु क्रमहि जन - तनसौँ ।
अनकर जरा मरणकाँ देखथि किछु नहि बूजथि मनसौँ ।
काँच-कलश-जल-उपमा आयुक जाइत छथि तनु तनसौँ ।
रोग प्रबल रिपु देह—हरण कर लपटायल मन धनसौँ ।।
व्याघ्री जरा धरय चाहै मृति सङ्गी समय तकै छथि ।
विश्रुत राजा अहं - भाव - वश देह समस्त कहै छथि ।।
त्वचा अस्थि रक्तादि भरल जे तनमे कह की निष्ठा ।
अन्त समय मे देह होइछथि कृमि की भस्म कि विष्ठा ।।
आत्मा देह थिकथि नहि अहँ काँ लोक दग्धकर इच्छा ।
सकल लोक अभिमानहि होइछ देल्ही लक्ष्मण शिक्षा ।।
हम छी देह एहन मतिकेँ अहाँ सदा अविद्या जानू ।
थिकहुँ चिदात्मा हम न देह छी ई मति विद्या मानू ।।
संसृति - हेतु अविद्या जानब विद्या संसृति हारिणि ।
विद्याभ्यास मुमुक्षु—काज थिक मननादिक कय कारण ।।
शत्रु काम क्रोधादि ततय छथि सभसौँ दुर्जय क्रोधे ।
जै वश जननि पिता भ्रातादिक जन मारैछ अबोधे ।।
मूल मनस्तापक कोपे थिक संसारक से बन्धन ।
धर्म्म - नाशकर कोपे मानव अनल बनल विनु इन्धन ।।

यम साक्षात कोप काँ जानब तृष्णानदि वैतरणी ।
नन्दन वन सन्तोष सदा थिक शान्ति कामगवि करणी ॥
शान्त-शील रहु कोप करिय जनु शत्रु केओ नहि हयता ।
शत्रु मित्र ओ उदासीन जन एक दिन सभ जन जयता ॥
देहेन्द्रिय मन प्राण बुद्धिसौँ आत्मा थिकथि विलक्षण ।
स्वयं-ज्योति आकार-रहित छथि ज्ञाता शुद्ध विचक्षण ॥
देहेन्द्रिय-प्राणादि-भिन्न जन आत्मा बुझथि न यावत ।
जन्म-मृत्यु-संसार-दुःखसौँ पीड़ित होइछथि तावत ॥
बुद्ध्यादिक सौँ बाहर आत्मा एहन भावना राखू ।
सुख दुख प्रारब्धक फल खेद न ज्ञानामृत केँ चाखू ॥
अन्तःशुद्ध-स्वभाव बनल रहु बाहर रहु व्यवहारी ।
कर्म्म-दोष किञ्चित नहि लागत बनल रहब संसारी ॥
कहल भावना जननी राखब दुःख न होयत मन मे ।
हमर आगमन करब प्रतीक्षा जाइत छी हम वन मे ॥
चौदह वर्ष अर्द्ध क्षण सन मन भासित होयत ज्ञाने ।
आज्ञा देल जाय वन जायक मानब नहि मन आने ॥

चौपाइ

[मिथिला संगीतानुसारेण धनछीशाम्भवी छन्दः]

वननिवास मन हर्षित करण * कयल प्रणाम जननि-युग चरण
कौशल्या पुनि अङ्क लगाय * आशिष देलनि देव मनाय
ब्रह्म विष्णु शिव सुर गन्धर्व्व * रक्षा अहँक करथु मिलि सर्व्व

रौदहि माँटि होअ जत भाम * तेहि वन चललहुँ अछि अहँ राम
स्थित चलइत करयित वन शयन * रवि शशि राखथु अहँ पर नयन
पुन पुन जननी हृदय लगाय * आशिष देल कहल वन जाय
रामक लक्ष्मण कयल प्रणाम * नीर भरल लोचन अभिराम
देव कयल मन संशय नाश * हमहु करब गय कानन वास
आज्ञा देल जाय प्रभु आज * अपनेक त्यागब हम न समाज
हम न रहब एत पापी धाम * नव नव रीति होयत संग्राम
अनुचित सहब न होयत मारि * क्रोधेँ धरब तीर तरुआरि
भरत सहित तनिकर हित जानि * मारब समर धरब निज बानि
त्यागि चलब तौँ त्यागब प्राण * हे रघुनन्दन करु दुख त्राण
चलु चलु लक्ष्मण कहलनि राम * गेला जनकनन्दिनी धाम
प्राणनाथ काँ अबइत जानि * सीता कनकपात्र लय पानि
पति-पद-पङ्कज लेल धोआय * सिंहासन पर बैसला जाय
नृपति किरीट आदि नहि अङ्ग * सेवा (ना) गज वाजी नहि सङ्ग
वाजन बाज न छत्र न श्वेत * कुसल सकल अछि नृपति-निकेत
पैरहिँ चलइत अयलहुँ कान्त * कहल जाय थिक की वृत्तान्त
सीताकाँ कहलनि हँसि राम * त्यागब हम एखनहि ई धाम
पिता कहल दण्डक बन जाउ * चौदह वर्ष व्यतीतहि आउ
सीता पुछल बहुत मन त्रास * कहु कहु नृप किय देल वनवास
कहल राम कारण नहि आन * केकयि पाओल दुइ वरदान
एक वर भरत होथि युवराज * दोसर हमर वन वासक काज
पिता धर्म्म व्रत राखब टेक * विघ्न करिय जनु गुणवति एक

सीता कहल चलब सङ्ग लागि * सहब न शोक विरह-जर-आगि
सुनि उत्तर कहलनि श्रीराम * हठक समय नहि थिक ई ठाम
साहस तजु मिथिलेश - कुमारि * उचित की हमर वचन दिय टारि
भल नहि थिक लय जायब सङ्ग * घोर विपिन अछि भूमि कुरङ्ग
भूख पियासैँ होयब आँट * गड़त पैर - पङ्कज मे काँट
दौड़त बाघ सिंह मुह बाय * कत जन काँ राक्षस धय खाय
गड़बड़ बड़ बड़ विषधर साप * स्मरण होइत जिब थरथर काँप
बहुत बुझाओल अपनहि राम * ठानल हठ सीता तहि ठाम

[मिथिला-संगीतानुसारेण कोड़ार-भेदे सूहबछन्द:]

प्रिये हम जाइत छी वनवास।
सत्य-प्रतिज्ञ पिता कहलनि अछि, केकयि कयल प्रयास ॥
कोशल्या सन सासु सदन से, राखब नियत निवास।
तनिकर सेवा उचित करक थिक, धैर्यहि विपतिक नाश ॥
ई संसार असार सर्व्वदा, माया सकल विलास।
सुख दुख मनमे सम कय मानब, मन जनु करब उदास ॥
कन्दमूल संय्योगहि भेटत, लागत भूष पियास।
रामचन्द्र कह कानन अति दुख, राक्षस लोकक त्रास ॥

वचन सुनि जिब मोर थरथर काँप।

हम नहि भवन रहब सुनु प्रियतम, देखब की सन्ताप ॥
सर्व्वसहा जननी धरणी थिकि, जनक नृपति थिका बाप।
शमता सहन तेहन अछि तनिकाँ, सम मणिमाला साप ॥

त्रिभुवन वली प्रभुक सन के अछि, तोड़ल शङ्कर-चाप ।
ई गोट आज्ञा हम नहि मानब धर्म्म होयत की पाप ।।
चन्द्र चन्द्रिका घन विनु दामिनि रहय न पृथक मिलाप ।
कनइत जनक-नन्दिनि कयलनि, कोटि विलाप-कलाप ।।

वचन प्रिय ई गोट मानल जाय ।
हम किङ्करी चलब कानन संग, अपने रहब सहाय ।।
नैहर मध्य सकल फल कहलनि, वृद्ध जोतिषी आवि ।
कानन पति संग जानकि जायब, भाल लिखल अछि भावि ।।
बहुत रामायण कथा शुनल अछि, शङ्कर-वचन प्रमाण ।
कतहु न लिखल त्यागि सीता गृह, कानन देव प्रयाण ।।
जौँ अन्यथा प्राण परित्यागब, अपनैँक आगाँ आज ।
चलु चलु विपिन सङ्ग वैदेही, हसि कहलनि रघुराज ।।

चौपाइ

[मिथिला-सङ्गीतानुसारेण देवकामोद छन्दः]

कि करब हार आभरण आब * विपिन बनब वनि मुनि शन भाव
अरुन्धती काँ गहना देब * नहि पाथेय एतय सौँ लेब
करब द्विजार्पण हम निज वित्त * राखब नहि किछु विपिन निमित्त
लक्ष्मण द्विजगण काँ बजवाय * बहुत देल धन बहुतो गाय
अपन सकल धन सीता देथि * गुरु-गृहिणीसौँ आशिष लेथि
कहल राम मन करु जनु शोक * जे जननिक अन्तःपुर लोक
हमर जतेक धन से लय जाउ * चौदह वर्ष सुखी रहि खाउ

कौशल्याक भरल भण्डार * माँगब सहब न पर उपकार
कौशल्या ओ सुमित्रा माय * तनिकर टहल करब मन लाय
सुनितहि तहाँ सुमित्रा सकल * वृद्धजननि मन अतिशय विकल
लक्ष्मण कहब रहल एक ठाम * सम्पति भरल सकल अछि धाम
निर्द्धन विषय करब नित दान * जनु करु दुओ जनि चित्त मलान
सेबक - जन नहि विलटय पाब * देखब कतहु न लोक हसाब
सुनल सुमित्रा आशिष देरि * वन सौं सुखसौं अयबे फेरि
करबे की, थिकि केकयि माय * भरत सेहो छथि अहँइक भाय
हमर तुल्य जानकि काँ जानि * रामचन्द्र काँ दशरथ मानि
विपिन अयोध्या मध्य कि भेद * सुखी जाउ वन वरस की खेद
कर धनु कोप न बाहर काढ़ * लक्ष्मण रामक आगाँ ठाढ़
की विलम्ब कहि चलिय गणेश * जतय पड़ल छथि विकल नरेश
नृपतिक भवन गमन प्रभु कयल * सीता लक्ष्मण प्रभु संग धयल

इतिश्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

चौपाइ

[राग-तरङ्गिणी-ग्रन्थानुसारेण मंगलराज-विजय छन्दः]

केकयि कयल कुठाठ कटोर * गुपचुप रहल न भय गेल सोर
केकयि कृत सुनि सुनि उतपात * कह पुरजन बड़ कयलक घात
देति राम काँ विपिन पठाय * देखल न एहन कसाइनि माय
कतहु कि केओ कहत भल लोक * सुनितहिँ सभकाँ होइछ शोक

ककरा नयन बहय नोर * धिक धिक जीवन केकयि तोर
मूढि मन्थरा कहलक जैह * महरानी भय मानल सैह
बसय योग्य नहि ई थिक देश * जतय रहल नहि नीतिक लेश
वनिता-कारण सुत वनवास * कतगोट दशरथ नृपकाँ हास
चलु चलु सभ जन रामक सङ्ग * राजा रानीक जानल रङ्ग
वर दुख गौरव रौरव जाइ * एहन समाज बसिय नहि भाइ
पयरहि चलती जनक - कुमारि * अति सुकुमारि स्वकीया नारि
अब रहल नहि ककरो शङ्क * केकयि, डाकिनि दशरथ ठक्क
की सुख मे भेल आनक आन * विधिगति अछि सबसौँ बलवान
पशु पच्छी तृण भक्ष्य न खाय * लता वृक्ष सभ गेल सुखाय
केकयिन्हृदय अशनि सन थीक * कयलक ककरो ई नहि नीक
यमराजा सौँ कहथि मनाय * एखनहि जौँ केकयि मरि जाय
पूजा करब लेब नित नाम * घर मे रहता सीता राम
साधुवृन्द भेल व्याकुल - चित्त * वामदेव मुनि कहल निमित्त
शोच न करिय धरिय मन धीर * विष्णु अनादि थिकथि रघुबीर
लक्ष्मी माया जानकि जानू * बासुकि लक्ष्मणकाँ जय मानू
विधि हरि हर छथि त्रिगुणसरूप * कि कहब हिनकर चरित अनूप
प्रलय मे धयल मत्स्य अवतार * वैवस्वत मनु पालन - हार
मथन समुद्र भेल जेहि बेरि * मन्दर गेल सुतलमे फेरि
कमठ-रूप बनि पर्व्वत धयल * उदधि सुरासुर मन्थन कयल
धरणी जखन रसातल जाय * शूकर - तन बनि लेल उठाय
फाड़ल कनकक शिपु हठ बक्ष * विधि प्रभृतिक दुखहरण मे दक्ष

नारसिंह - तनु नख अति चोष * दुष्ट सहत के तनिकर रोष
वामन—तन बलि-छलनक काज * अदितिक अनुमति सुरपति राज
परशुराम पुन एक अवतार * क्षत्रिय-क्षय-कर नर महि भार
रावणादि वध करता जेह * राम थिकथि परमेश्वर सैह
बड़ तप कयलनि दशरथ भूप * पुत्र - कामना देखल स्वरूप
सीता माया थिकि तनि सङ्ग * जे चाहथि से करथि तरङ्ग
लक्ष्मण रामक थिकथि सहाय * वन जयताह सङ्ग दुहु भाय
राजा - केकयि - कृत नहि दोष * कथिलय शोक हेतु की रोष
पूर्वहि दिन नारद कहि गेल * भूपहु काँ मति ईश्वर देल
रामचन्द्र कयलनि स्वीकार * चिन्ता त्यागिय करिय विचार
नित्य रामजप निर्म्मल चित्त * रवि-सुत-भय नहि तनिक निमित्त
सुनु पुन कलिमे आन न युक्ति * राम राम रटलहिँ हो मुक्ति
काल जनिक डर थर थर काँप * दुख शङ्का की तनिका व्याप
मुनि-गेल अनत बुझल सभ लोक * किछु किछु छूटल मानस शोक
भूपक निकट मुदित सुखधाम * अविकल कहल जाय श्रीराम

दोहा—लक्ष्मण सीता सहित हम, अयलहुँ केकयि माय।
नृप-आज्ञा सुनि लेब किछु, अपनैक साध्य उपाय ॥
पिता वृद्ध सोजन्यमय, सत्य – प्रतिज्ञ उदार।
वन-गमनेँ अयलहुँ निकट सह- लक्ष्मणसह-दार ॥

[गीतछन्दस्तु मिथिलासंगीतानुसारेण धनछीमालवीयम्]

(१)

पिता रहु हमरा उपर दयाल।

सीता लक्ष्मण सहित विपिन हम जाइत छी एहि काल ॥
परिहरु शोक शरीर वृद्ध अछि कर्म्म लिखल फल भाल ।
प्रजा-दुःख सभ भरत हरत नित कि कहत जन वाचाल ॥
कन्द मूल फल वन बसि खायब ओढ़ब हम मृगछाल ।
गुरु गारुड़िक मन्त्र जनइत छी बाधा करत न व्याल ॥
वन जायक हमरा भेल आज्ञा दुइ हठि आगत हाल ।
हाहा रामचन्द्र नृप कहलनि मनमे आधि विशाल ॥

(२)

चरणमे जानकि गेलि लपटाय ।
गुरु सङ्कोच शोच बड़ भारी, कहलनि किछु न लजाय ॥
कहलनि लक्ष्मण थिकथि जनकजा केकयि दुर्ग्रह पाय ।
बड़ हठ ठानल कहल न मानल कि करथु बड़का भाय ॥
नव - पल्लव पङ्कज-दल सन पद, शिरिस सुमन मृदु काय ।
से पुन पयरहि कानन जयती, कि कहव केकयि माय ॥
दशरथ कहलनि हम बड़ पापी कयल कठिन अन्याय ।
हाय सकल सुख नाशि बैसलहुँ शोक-समुद्र समाय ॥

चौपाइ

[मैथिललोचनशर्म्म-सङ्गीतानुसारेण धनश्री-पञ्चस्वरा छन्दः]

सुनि केकयि उठि सत्वर जाय * मुनिक चीर काँ लइलि उठाय
देलनि तिनुजनकाँ ओ चीर * प्रथमहि पहिरल श्रीरघुवीर
असन वसन कयलनि परित्याग * कइ केकयि हसि 'सुन्दर लाग

सीता काँ मन उपगत लाज * पहिर न जानथि गुरुक समाज
धयल दुहूटा रामक हाथ * मुख देखलनि बुझलनि रघुनाथ
वसन राम राखल लपटाय * राजदार देखि भूमि लोटाय
गुरु वसिष्ठ काँ देखि न भेल * धिक धिक केकयि कुमति कि लेल
कालकूट सौँ किछु नहि घट्टि * कि कहब भेलहुँ अहाँ निरहट्टि
एतय न भरत नृपक ई हाल * बाघिनि सनि अहाँ बनलहुँ काल
लक्ष्मण वीर ठाढ़ सन्नद्ध * डर नहि करता कचबाबद्ध
केकयि तखन कहल हसि फेरि * देल सनेहै चलइक बेरि
केकयीक की हृदय कठोर * कि हयत दुर्गति आगाँ तोर
एक वर रामचन्द्र वनवास * लक्ष्मण सीता काँ की त्रास
देल कि सीता काँ ई चीर * देखलय ककर जीव रह थीर
रामक सङ्ग पतिव्रत काज * जाइत छथि अहँकाँ नहि लाज
नैहर हिनकर तिरहुति थीक * कर्म्म हिनक सभटा अछि नीक
दिव्याम्बर वर गहना गात्र * पतिव्रता की दुःखक पात्र
नृप कह रथ सुमन्त लय आउ * रामचन्द्र काँ विपिन देखाउ
कसि रथ आयल कहलनि राम * चढ़बे रथ पर बाहर गाम
देखल तिनु जन काँ नृप नयन * शोक वृद्ध नहि मन मे चयन
कयल प्रदक्षिण बापक राम * लक्ष्मण तखन तेहन तहिठाम
भूप • कोट सौँ बाहर जाय * रथ छल ठाढ़ देखल दुओ भाय
सिरिस - सुमन सन तन सुकुमारि * पुरि-परिसर मे जनक - दुलारि
चलि नहि शकथि कहथि से घूरि * दण्डक-वन प्रिय अछि कत दूरि
से सुनि रहल न करुण संभार * नयन - नीर प्रथमहि अवतार

रथपर चढ़लिह जनक - कुमारि * श्रीरघुवर - मुख - कमल निहारि
सभ जन सौँ कहि मन उत्साह * रामचन्द्र रथ पर चढ़लाह
लक्ष्मण रथ पर चढ़ला फानि * नगर सगर जन उठला कानि
रथ धय धनुष तीर तरुआरि * रथ सुमन्त हाँकल ललकारि
भूपति कहथि सुमन्त रहु ठाढ़ * दुस्सह आधि बहुत मन बाढ़
चलु रथ हाँकि करिय जनु थीर * वारम्वार कहथि रघुवीर
ध्यान राम सुन्दर मुख चूमि * खसला दशरथ महि मे घूमि
सभ दिश बाहर अहँइक भास * हमर हृदयमे नियत निवास
वत्स विपिन जनु कयल पयान * सन्तापहि होइछ अनुमान
नृप कौँ छूटल जीवन - आशा * छन छन मूर्छा कान्ति हरास
भृत्य वृत्त छल लेलक उठाय * शोक वृद्ध कानथि शुश्रुआय
कष्टहि कहल नृपति सन्ताप * प्राण - पवन पिब शोकज-शाप
लै चल रामक जननी - धाम * मन कदाच पाओत विसराम
नहि चिर जीवन निश्चय भेल * मणिधर-फणि-मणि जनि छिनिलेल
तनि घर करइत नृपति प्रवेश * मुरछि खसल नहि संज्ञा - लेश
मूर्छा छुटलहुँ बाढ़ल आधि * नृप रहलाह मौन कौँ साधि
ओत रथ पहुचल तमसा - तीर * पड़ला उतरि ततय रघुवीर
ईश्वर - चरण - कमलमे ध्यान * निराहार जल-मात्रे पान
तरुतल सहित जानकी शयन * सुख सौँ कयलनि सरसिज-नयन
धृत-कर-शर-धनु ठाढ़ अनन्त * जागल पहरा देथि सुमन्त
दुखमन पुरजन सङ्गहि लागि * कह निज जनकौँ देल कि त्यागि
जत जायब तत पुरजन जोहि * लागल रहते नगर घरोहि

रघुनन्दन नहि छाड़ब चरण * अयलहुँ सभ मिलि अपनैक शरण
वन बसि रहब नगर नहि जयब * अपनै नृपतिक प्रजा कहयब
नगर अयोध्या सौँ की काज * सानुकूल संग सकल समाज
अन्न पानि परित्यागल लोक * डेरा कयलनि रोक न टोक
अर्द्धरात्रि मे मन्त्रि बजाय * कहल राम रथ आनु नुकाय
हठसौँ त्यागत लोक न संग * देखला जाइछ सभहिक रङ्ग
दौड़ितहि आयल छथि हठ टेक * कहलैँ फिरता नहि जन एक
भौको काटि चलू चुपचाप * दुख पओता सङ्ग होयत पाप
बालक सभ घर भुखले छैक * वृद्ध लोककेँ अन्न के दैक
सीता ओ सानुज रघुवीर * रातिहि त्यागल तमसा – तीर
हाहा रामचन्द्र कहि भोर * कानथि पुरजन कय कय सोर
हा रघुनन्दन कयल कि लाथ * सोचि देल ओहि पापिनि हाथ
घुरि पुर पुरजन शश्च गेलाह * शोकहिँ दुर्बल बहुत भेलाह
देखइत जनपद सुन्दर भूमि * रथ परसौँ तिनु जन घुमि घूमि
शृङ्गबेरपुर गङ्गातीर * रथ अटकाओल श्रीरघुवीर
ततय शिंशुपा तरु भेटि गेल * तेहितर सुखसौँ बासा देल
गङ्गा – अर्चन स्नान विधान * कयल तिनू जन धर्म्म - निधान
रामागमन तहाँ गुह शुनल * उत्सव भाग्य अपन वर गुनल
मधु फल पुष्प कन्द कय भार * प्रभुक उपायन कयल विचार
भार सकल देखल श्रीराम * उत्तम कहलनि प्रभु गुण–धाम
दुर बसि गुह कर दण्डप्रणाम * नयन सफल कर कह निज नाम
राम उठाय लेल भरि पाँज * हरष बहुत गुह किछु नहि बाज

राम कुशल पुछलनि कय बेरि * बद्धाञ्जलि गुह कहलनि फेरि
हम अति धन्य जन्म फल पाय * अपनै मिललहुँ अङ्क लगाय
किङ्कर - किङ्कर जाति निषाद * घर प्रभुहिक थिक न करु विषाद
करु पवित्र प्रभु एतहुक गेह * बहिआ पर राखक थिक नेह
बहिआ कहिआ आओत काज * भोगल जाय अपन थिक राज
ई फल मूल ग्रहण हो नाथ * लायल छी हम हयब सनाथ
कहल राम अहाँ भक्त पवित्र * अहँक राज्य हमरे थिक मित्र
चौदह वर्ष नगर नहि जाइ * आनक देल वस्तु नहि खाइ
बटक दुग्ध दुहि सत्वर लाउ * हम मुनि-जन सन जटा बनाउ
बटक्षीर लायल गुह - लोक * प्रभु - वर आज्ञा के जन रोक
लक्ष्मण राम कयल मुनि - वेष * गुह समूह तहँ टक टक देख
घास पात कुश शयन बनाय * निज गृह शय्या सन सुख पाय
ओहि रजनी जल - मात्रे पान * शयन कयल दुख लेश न जान
सीता-सहित भवन निज जेहन * अति प्रसन्न मन ओतहु तेहन
लक्ष्मण गुह निज परिजन सङ्ग * कर शर - धनुष वीर रस अङ्ग
यामिक कोटवार बल – पूर * सावधान लक्ष्मण रण - शूर

इति श्रीमैथिलचन्द्रकविरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

चौपाइ

[मिथिलासंगीतानुसारेण नामान्तरेण च योगिया-मालव-छन्द]

लक्ष्मण सौँ गुह कहल निषाद * राम - दशा देखि चित्त विषाद

देखिय रामचन्द्र गति भाय * सुख सुपुत कुश घास ओछाय
मणिपर्य्यङ्क भवन रमणीय * जेहन इन्द्र - सुखकर कमनीय
शुदिनि मन्थरा की अघलाहि * तकरे कहलें रानि बताहि
हाहा केकयि कयलनि पाप * देखतहिँ होय चित्त सन्ताप
सुनि लक्ष्मण कहलनि सुनु मित्र * कर्म्म कठिन-गति बहुत विचित्र
सुख दुख कारण होथि न आन * दुख-दावा पर लघु-मति बान
हम ई करब व्यर्थ अभिमान * कर्म्म - सूत्र - ग्रन्थित नहि ज्ञान
शत्रु मित्र दारा सुत भाय * सभटा कर्म्में देथि मिलाय
बड़ बड़ मुनि जन बैसला हारि * शक्य न कर्म्म शुभाशुभ टारि
पूर्व्वार्जित सुख दुख जे आब * भोग करी मन सहज स्वभाव
करब भोग रहबे विनु भोग * सभ होइछ कर्म्महिँ संयोग
कर्म्म कि मानव फलचय देत * केओ सुरपुर बस केओ वन प्रेत
व्यर्थ करिअ मन हर्ष विषाद * लाभ शुभाशुभ कर्म्म - प्रसाद
सकल सुरासुर विधिक विधान * वश छथि सभकाँ गति नहि आन
पाप पुण्य सौँ भेल शरीर * सुख दुख होय रहय नहि थीर
सुख दुख उपमा कहल कि जाय * जेहने जल कादब लपटाय
मायामय थिक मनसौँ मानि * इष्टानिष्ट मध्य नहि हानि
कहितहिँ शुनितहिँ भय गेल भोर * राम कयल लक्ष्मण काँ शोर
कृतनितकृत्य वृत्त भय आउ * दृढ़ नव सुललित नाव मँगाउ
दृढ़ नौका अपनहि गुह टेबि * लयला सत्वर अपनहि खेबि
चढ़ल जाय किछु विलम्ब न आब * हे रघुनन्दन निकटहि नाब
थिर भय बैसक कहल पठाय * सीता काँ प्रभु नाव चढ़ाय

मित्र हाथ धय चढ़ला राम * नावक उपर कयल विश्राम
लक्ष्मण आयुध सभ धय देल * फानि नाव पर अपनहुँ गेल
लय रथ सचिव घूरि घर जाउ * पिता वृद्ध कैं बहुत बुझाउ
कहब प्रणाम माय कैं जाय * विद्यमान सुख देब जनाय
कहब प्रणाम ततय शत मोर * कहइत सीता नयन सनोर
लक्ष्मण कोपहिँ निन्दा कयल * नीति धर्म्म अद्यावधि धयल
शोकहिँ तुरग न चल एक डेग * पवनहुँ सौँ जनिका अति वेग
गुह - परिजन कर धर करुआर * हे प्रभु नाव आब बिच धार
सुनि जानकि सुरसरिक प्रणाम * कयलओ औंगिरल पुर मन-काम
हे सुरसरि वन - दुख निस्तार * घुरब करब पूजा विस्तार
मदिरा मांस विविध उपचार * करब यथाविधि वारम्वार
झटितिहि पर-तट लागल नाव * सभ जन क्रमक्रम उतरिय आब
गुह कह चलइत हम वन जयब * सङ्गहि सङ्ग एतय पुन अयब
जौँ नहि लय जायब रघुवीर * अपनहि मरब बेधि हिय तीर
कहल राम सुनु मित्र निषाद * परिहरु परिहरु विषम विषाद
आयब चौदह वर्ष बिताय * लक्ष्मण सन हमरा अहँ भाय
मिलि मिलि देल बहुत आश्वास * सभ जन फिरला मन - विश्वास
ततय मेध्य मृग एकटा मारि * अग्नि पकाओल भूष विचारि
होम कयल तिनु जन किछु खाय * तरुवर - तर सुख सुतला जाय
सकल रजनि गेल सुखसौँ बीति * कहइत शुनइत धर्म्म सुनीति
भारद्वाजाश्रम लग जाय * पटु वटुकैं कहि देल पठाय
सीता लक्ष्मण राम समाज * बाहर छथि आयल छथि आज

एहन कहब वटु मुनि - तट जाय * ओ मुनिकाँ सभ कहल बुझाय
रमणी - सह सानुज रघुवीर * सुन्दर एहन न देखल शरीर
वार्त्ता एहन सुनल मुनि जखन * अति आनन्द मगन मन तखन
अर्घ पाद्य सभ लेलहिँ हाथ * गेलाह शीघ्र जतय रघुनाथ
समुचित पूजा मुनि पुनि कयल * आदरसौँ निज आश्रम लयल
तप जे कयल प्राप्त फल आज * अपने अयलहुँ राम समाज
माया मानुष धयल शरीर * चिन्हइतछी अहँ काँ रघुवीर
विधि अनुमति लेल अहँ अवतार * चललहुँ हरण होयत महि भार
कहइत छी हम नाथ यथार्थ * आजु भेलहुँ हम बहुत कृतार्थ
श्रीरघुनन्दन लक्ष्मण - सहित * अभिवादन कयलनि छल - रहित
अपने मुनि हम क्षत्रिय जाति * अनुग्राह्य हमही सब भाँति
हम छी धन्य अहाँ भगवान * ई कहइत रजनी अवसान
प्रात समय रघुनन्दन जागि * मुनि सुत-संग तिनू जन लागि
मुनि-सुत काँ से परिचित बाट * पार उतरता यमुना - घाट
काठक कौशल बेड़ बनाय * सुख सौँ पार देल पहुचाय

[हरिपदं मिथिलारंगीतानुसारेण प्रियतमा-मालव-छन्दः]

लक्ष्मण सीता रामचन्द्र गिरि, चित्रकूट चढ़ि गेला।
गिरि आश्रम शोभा काँ देखल, मन आनन्दित भेला॥
मृग पक्षीक विलक्षण शोभा, फल भल फूल अनेक।
मुनि वाल्मीकि धर्म्ममय आश्रम, ऋषि-सङ्कुल सुविवेक॥
आश्रममे वाल्मीकि महामुनि, तेजपुञ्जसौँ बैसल।
देखल जाय प्रणाम तिनू जन, कएलनि कौशल कौशल॥

सानुज श्री रघुकुल-सरसिज-रवि, जटा मुकुट शिर धारण।
अम्बुज-नयन मदन-मद मोचन, चिन्हलनि मुनि-जन-तारण॥
परमानन्द राम काँ सत्वर, उठिकेँ हृदय लगाओल।
हरषक नोर नयन बह अविरल, कहल जन्म-फल पाओल॥
पूजा विविध अतिथि परमेश्वर, शीतल जल भरबाओल।
अपने नरपति थिकहुँ वनी हम, उचिती बहुत सुनाओल॥
कि वहब रामचन्द्र एहि गिरिपर, आबि कष्ट अहँ पाओल।
बद्धाञ्जलि रघुनन्दन कहलनि, किछु दिन मुनि हम रहबे॥
पिता-वचन सौँ वनी-वेष बनि, जनितहि छी की कहबे।
स्थान देखाओल जाय से हमरा, करब जतय सुख-वासा॥
सीतालक्ष्मण सहित रहित-दुख, अपनेक सभ प्रत्याशा।
हँसि मुनि कहल सकल लोकक अहँ, निश्चय वासस्थाने॥
अथवा अहँ सर्व्वत्राहि व्यापक दोसर कि कहब आने।
द्वेष-रहित समदृष्टि शान्त मन, अपनैँ चरणक भक्त॥
तनिकर हृदय-कमल मे रघुवर, अपनैँक गृह अनुरक्त।
धर्म्माधर्म्म त्याग कय सभटा, अपनैँक भजनानन्द॥
अपनैँक मंत्र सदा मन दय जप, जे निस्पृह निर्द्वन्द।
निरहङ्कार राग सौँ वर्जित, अपनैँ मे मति चित्त॥
सुख दुख सम मायामय सभ थिक, जानथि विश्व अनित्य।
कनक जेहन इट माटि तेहन सन, लोभ-लेश नहि जानथि॥
षट विकार देहहि सभमे अछि, आत्मामे नहि मानथि।
जे संसार धर्म्मसौँ बाहर, चिद्घन सभ-गत देखथि॥

सीता लक्ष्मण रामचन्द्र अहँ, मन - मन्दिर में लेखथि।
अपनैँ क नाम सतत कीर्तन सैँ, पाप - लेश नहि रहते ॥
राम-नाम-महिमा रघुनन्दन, वर्णन के कय शकते।

चौपाइ

[मिथिला-संगीतानुसारेण कामोदनाट छन्दः]

हम ब्रह्मर्षि कहाओल नाम * कारण तकर कहै छी राम
द्विज - घर जन्म किरातक सङ्ग * बढ़लहुँ गहलहुँ तकरे रङ्ग
शूद्री - रति - कृत पुत्र बहुत * विगत विराग अमिय अवधूत
चोर कुसंगे बान्हल साटि * हमरा सैँ सभ तस्कर घाटि
धनुष - बाण - धर जंगल जाइ * जीव - घात कय सभ दिन खाइ
लूटि मारि ओ तस्कर कर्म्म * नीच कर्म्म बड़ मानल धर्म्म
छपकल छलहुँ कतहु वन कात * अबइत देखल हम मुनि सात
अनल दिवाकर दिव्य शरीर * तनिपर दौड़लहुँ लय धनु तीर
रहु रहु ठाढ़ कहल ललकारि * धन लेब लूटि देब जिब मारि
मुनि - जनकाँ नहि हरष विषाद * कहलनि सुन द्विज अधम निषाद
करइत छह कथिलय ई कर्म्म * करह न लाथ सत्य कह मर्म्म
मुनिकाँ हम उत्तर देल फेरि * स्त्री सुत नाति हमर घर ढेरि
वन बुलि चुलि तत्पालन काज * यथातथा हो कयल न व्याज
मुनि कहलनि अपना घर जाउ * सत्य कथा एकटा बुझि आउ
हम करइत छी हिंसा कर्म्म * हमरा वा सभकाँ इ अधर्म्म
तावत हम रहबे एहि ठाम * घुरि आयब जायब निज गाम

सुनि मुनि बचन गेलहुँ वनटोल * बुझि अयलहुँ हम माँथक मोल
हम आनिय धन कय अन्याय * हमर उपार्ज्जन सभ जन खाय
तोहरहु पाप कि हमरहि माँथ * कहह करह जनु एक जन लाथ
केवल फल - भागी हम तात * पाप - कर्म्म — फलसैँ हम कात
हम से शुनि घुरि मुनि लग आय * तीर धनुष काँ देल नड़ाय
हुनि मुनि आगाँ खसलहुँ जाय * नरक घोर सैँ लिअ्ओ बचाय
मुनि - दर्शन सैँ मन निर्व्वेद * ओ कृपालु किछु कहलनि भेद
उठ उठ सत - सङ्गति फल पावि * भल फल आव तोहर अछि भावि
शरणागत काँ करब न त्याग * उपदेशहुँ मे गड़बड़ लाग
मरा मरा जप मन एक ठाम * यावत हम आवी एहि गाम
मन एकाग्र सुजप हम कयल * विषय विराग दिव्य हठ धयल
हमरा उपर बढ़ल वल्मीक * हम नहि जानल की ई थीक
युग - हजार पर फिरला फेरि * बाहर होउ कहल कय बेरि
रवि सैँ हमर तेज नहि घाटि * जनु कुहेस रवि सैँ गेल फाटि
ई उतपति वल्मीक सैँ थीकि * संज्ञा हमर धयल वाल्मीकि
सुनु रघुनन्दन नाम - प्रभाव * हम ब्रह्मर्षि विदित जग आब
चलु चलु लक्ष्मण ठाम देखाउ * पर्ण - कुटी दुइ दिव्य बनाउ
गङ्गा - पर्व्वत - मध्य प्रदेश * मुनि कहलनि थल अछि ई बेश
पर्णकुटी बान्हल दुइ गोट * एक गोट बृहत गोट छोट

दो॰—सीता लक्ष्मण सहित प्रभु, वास कयल स्वच्छन्द ।
मनुष वेश बनि विबुध गण, देखथि परमानन्द ॥

चौपाइ

[मिथिला-संगीतानुसारेण पार्वतीयबराड़ी नाम छन्दः]

अोतय अयोध्या मन्त्रि सुमन्त्र * पहुचि सरथ भेल दिवसक अन्त
वसनहि सौँ मुह कय लेल अोट * राम - वियोग दुःख बड़ गोट
नोरक लेल गेल तन तीति * पुर - प्रवेश मे हो अति भीति
रथ छोड़ल बाहर नृप - द्वार * भूप देखि जय शब्द उचार
स्तुति कय कयलनि चरण-प्रणाम * के अहाँ पुछल कहल से नाम
अहह कहू कत सानुज राम * जनक-नन्दिनी छथि कोन ठाम
हम निर्दय त्यागल मर्य्याद * पापिहुँ काँ किछु कहल समाद
हाहा राम कहाँ अहँ आज * गुणनिधि त्यागल हमर समाज
प्रियवादिनि जानकि कत गेलि * दुख मे हमर केओ नहि भेलि
उबड़ुब होइ छी दुःख - पयोधि * निकट निधन सभटा सुख शोधि

[हरिपद-छन्दो मिथिलासंगीतानुसारेण त वसन्तनाम छन्दः]

कहल सुमन्त चढ़ाय लेल रथ, शृङ्गवेरपुर गेला ॥
गङ्गातीर उतरला जखना भय गेल बड़का मेला ॥
गुह नामक निषादपति सभ जन दौड़ि दण्डवत कयलनि ॥
कन्द मूल फल मधुर मधुर से रामक आगाँ धयलनि ।
कन्द मूल फल एक लेल नहि परशि देल प्रभु हाथै ॥
गुह कहलनि हम किङ्कर अपनेक आज्ञा कर हम माँथै ।
वनिका कहि कहि श्रीरघुनन्दन बड़क दूध मंगबाओल ॥
सानुज राम ताहिसौँ माथा जटा मुकुट निर्म्माओल ।

अविकल कहल राम जे हमरा से समाद सभ आजे ॥
कहितहु बहुत कठोरा होइछ मन तदपि कहब महराजे ॥
हमर निमित्त पिता नहि करिहथि ओ चिन्ता किछु मनमे।
निज घर सौँ शत गुण सुख सन्तत हमरा होयत वनमे ॥
राम कहल माता कां कहि देब पिता शोक सभ हरिहथि।
कहब प्रणाम धैर्य कय नृप लग चर्चा हमर न करिहथि ॥

सा०—सभकां कहब प्रणाम, गुरुजन जे छथि नगरमे।
चलयित कहलनि राम, गेल जाय पुर शून्य अछि ॥

नरेन्द्र छन्दः

सीता कहलनि प्रभु मुख देखइत गुरुजन जे छथि ग्राम।
कहिहथि मन दय शासु-शसुर-पद शत साष्टाङ्ग प्रणाम ॥
रथकां ओ हमरा दिश देखल भेलि अधोमुखि फेरि।
हमर प्रणाम कयल संज्ञहि सौँ कनइत चलती बेरि ॥
रोथैं लक्ष्मण किछु अनुचित सन कहक यत्नपर जखना ॥
सीताराम शपथ दय तनिकां स्वस्थ कयल कहि तखना ॥
चढ़ि से नाव उतारि गङ्गा सौँ टक टक तकितहि रहलहुँ।
कहुना कहुना अयलहुँ कनइत देखल से नृप कहलहुँ ॥

मत्तगजेन्द्र-छन्दः

से सुनि कानि कहै लगली तहाँ भूपति सौँ बड़की महारानी।
केकयि कां वर देलहुँ जे वर लेलनि राज्य की होइत हानी ॥

हा ! हमरे प्रिय पुतोहु वृथा वन देल कहाओल ज्ञानी।
शोच वृथा करणी अपने सभ आरि न बान्हल गेलहु पानी ॥

माधवीबराड़ी-छन्दः

बड़ निरदय विधि जानल रे ककरो नहि दोष।
राज न करत भरत एत रे केकयि सन्तोष ॥
बुझि पड़ राज - भवन वन रे के रह एहि ठाम।
नृपतिक की गति होयत रे विन लक्ष्मण राम ॥
तिनु जन वन वन सञ्चर रे सहि भूष पियास।
की होइत की कै देल रे विधि आश विनाश ॥
हा धिक हा धिक जीवन रे जग भरि उपहास।
नीति-तन्त्र लिख ककरो रे नहि करि विसबास ॥

वितत-सुहब छन्दः

राजा विकल कहल एहन।
अपन हानी कैलहुँ रानी विधिक शासन जेहन ॥
केकयि कारण मानल मरण हरण अपन ज्ञान।
अन्तष्करण आधि हि दरण होइछ आन कि जान ॥
मरण दिवस दैवक विवश क्षमा करिय दोषे।
पतिक हीना केकयि दीना भोगथु विभव रोषे ॥

मुदिरा छन्दः

पुत्र—पुतोहु—वियोग व्यथा ज्वरसौं हम आइ मरै परछी।
की दुख मे दुख दैछि अहाँ दुखसागर आइ तरै परछी ॥

अन्तरमे अनुभूत महानल बाहर मध्य जरै परछी ।
हा रघुनन्दन प्रीति-प्रतीति धरातल मध्य करै परछी ॥

सो०—कयल बहुत हम पाप, सुनु कौशल्या कुशल - मति ।
तकरे फल सन्ताप, शाप देल मुनि प्राप्त - दिन ॥
तरुण अवस्था भूप, गेलहुँ खेलाय शिकार हम ।
की कहु चूपहि चूप, एक समय शर - धनुष - कर ॥
दुइ पहर छल राति, नदी - तीर वन घोर मे ।
दुस्सह क्षत्रिय जाति, बाण चलाओल जानि गज ॥
गज पिबइत अछि पानि, शब्द - बेध सौँ बिद्ध से ।
व्याकुल उठला कानि, के मारल अपराध बिनु ॥
की गति पओतिहि माय, विकल बाप करताह की ।
के देत पानि पिआय, हाहा पुत्र कतय रहल ॥
शब्द शुनल हम कान, मुनि - मानुष - सूचक वचन ।
भेल आन सौँ आन, गमहि गेलहुँ भय त्रस्त हम ॥
मुनि हम दशरथ भूप, जल भरइत मारल वृथा ।
जानल नहि ई रूप, गज - भ्रम सौँ अपराध बड़ ॥
धयल पयर पर माथ, त्राहि त्राहि कय बेरि कहि ।
सब गति अपनेक हाथ, चोर न्याय सौँ नष्ट हो ॥
मुनि कहलनि तहि राति, ब्रह्म - वधक संशय तजिय ।
वैश्य हमर अछि जाति, भ्रम सौँ मारल कर्म्म-वश ॥
करू एकटा काज, जतय पिता जननी हमर ।
लय जल तनिक समाज जाय देब कृति अपन कहि ॥

मत्तगजेन्द्र छन्द

आंधर वृद्ध पिता जननी छथि जाय तहाँ नृप पानि पिआऊ।
बाणक वेदन देहमे होइछ खैँचि धरू मारिकै सुख पाऊ॥
जौँ नहि जायब भूप तहाँ कय भस्म देता जनु कोप बढ़ाऊ।
जे किछु कैल अहाँ करणी हमरो सब दुर्गति मृत्यु शुनाऊ॥

चौपाइ

जेहन कहल मुनि मरती बेरि * सभटा तेहन कयल हम फेरि
जल भरि कलस लेल से कन्ध * गेलहुँ हम जत आन्धरि अन्ध
पद आहट शुनि से बजलाह * पुत्र रातिमे कतय छलाह
भूख पियासेँ कण्ठ सुखाय * दिय दिय सत्वर पानि पिआय
शयन करू आनहुँ जल पीबि * मन चिन्ता छल अयलहुँ जीबि
पयर धयल हम कहि निज नाम * अहँक पुत्र नहि छथि एहि ठाम
सकल वित्तर्क कहल निज काज * तैँ आयलछी अहँक समाज
दया करिय मुनि बड़ अपराध * कनइत कहलनि हा विधि व्याध
हमरा कहल दैह पहुँचाय * शुनि दम्पति लेल काँध चढाय
धिक धिक जीवन हमरो आब * कहि शव सुतकाँ अङ्ग लगाब
हे नृप चिता करिय निर्म्माण * हमरो निश्चय चलला प्राण
बूढ बूढि कय विविध विलाप * मरण समय हमरहु देल शाप
हमर पुत्र - सुख कयलह हरण * पुत्र - वियोगहिँ तोहरो मरण
एकहि चिता तिनू जरि अमर * सुरपुर गेल पार दिन हमर
नहि विलम्ब दिन से सम्प्राप्त * मर्म्म मर्म्म दुख हमरा व्याप्त

हा रघुनन्दन हा सुत राम * हा जानकि लक्ष्मण गुण-धाम
केकयि कारण अहँक वियोग * मरण होइ अछि आन कि रोग
ई कहइत त्यागल नृप प्रान * विकलि सकलि रानी–जनि कान
गेला वसिष्ठ मन्त्रि लै सङ्ग * की भय गेल रङ्ग मे भङ्ग
दशरथ – देह तैलमे रहय * सत्वर, दूत भरत कें कहय
अश्वबार घोड़ा दौड़ाउ * भरतक मातृक सत्वर जाउ
छथि शत्रुघ्न भरत तहि ठाम * गुरु–आज्ञा चलु एखनहि गाम
कहबनि पहुँचलताकी आज * जननि जनक काँ देखय काज
नाम युधाजित भरतक मास * तनिकाँ कयल सबार प्रणाम
निज घर भरत चलथु दुहु भाइ * आयलहुँ गुरुक पठाओल आइ

सो०—त्वरित भरत दुहु भाय, चलला तुरग सबार सह।
की थिक बुझल न जाय, भय–चिन्तातुर मन अधिक ॥ ९॥

चौपाइ

नगर नगरमे पसरल शोक * उत्सव-रहित सकल पुरलोक
प्राणि मात्रकाँ नहि उतसाह * कनइत कनइत जेहन तताह
त्यागल कमला जेहन निवास * देखि भरत-मन अतिशय त्रास
की अनर्थ थिक मन मन गून * राज-भवन निज जन सौँ शून
केवल केकयि कैसलि देखि * मुदित मन्थरा दशा विशेषि
कयल प्रणाम मातृ पद छूबि * ओ आशिष देल मुख लेल चूमि
हरषित लेलनि हृदय लगाय * कुशल पिता छथि भ्राता माय
अहँ छी निकैँ देखल भरि नयन * देखला विनु मन छल नहिँ चयन

व्याकुल पुछल पिता छथि कतय * भरत कहल हम जायब ततय
एकसरि अहँ कहँ छथि महिपाल * अति व्याकुल मन हो एहि काल
अपने बिनु नहि रहथि एकान्त * हाय माय थिक की वृत्तान्त
शून्य भवन कत प्रबल प्रताप * बिनु देखलेँ जिव थरथर काँप

हरिमाला
[मिथिला-संगीतरीत्या केदार-छन्दः]

जेहन छल छथि नृपति सुकृती अश्वमेध जे कयल ।
भरत चिन्ता चित नहि करु दिव्य गति से धयल ॥
कुलिश-कठिन कठोर केकयि-वचन से सुनि कान ।
शोक - आकुल भरत खसला छिन्न वृक्ष समान ॥
हा पिता कत गेलहुँ अपने त्यागि दुखमे देल ।
राम काँ नहि सोपि गेलहुँ दुःख कोदहु भेल ॥
भरत व्याकुल देखि केकयि कहल की हो कानि ।
माय बाप न सदा जीबथि धैर्य्य करु मन मानि ॥

सो०—हा रघुनन्दन राम, हा वैदेही हा कहाँ ।
हा लक्ष्मण गुणधाम, ई कहि त्यागल प्राण नृप ॥
लक्ष्मण सीता राम, ई सभ छल छथि जननि कत ।
शून्य देखि पड़ धाम, अति व्याकुल मन भरत कह ॥

चौपाइ

सुनु सुत सम्प्रति अछि एकान्त * कहइतछी बड़ बड़ वृत्तान्त
मरण निकट नृप मन भेल व्याज * मन छल रामचन्द्र युवराज

चढ़ि बुधिआरि देखैत अधलाहि * देल मन्थरा काज निबाहि
देलक विपति समय मन पाड़ि * हम वर लेल देल नहि छाड़ि
वर धयले छल से लेल मांगि * नृपति हृदय जनु लागल साँगि
चौदह वर्ष राम वन जाथु * कन्द मूल फल वन बसि खाथु
भरत एतय होअथु युवराज * हमरा एहि दुइटा सौँ काज
सगर नगर भेल हाहाकार * त्यागल हम कि कठिन ब्यवहार
बड़ बड़ जन कहि गेला हारि * सुपुरुष मुरुख हमहि बुधियारि
महति मन्थरा समय सहाय * बुद्धि विलक्षण कूबड़ काय
सीता सती रहलि नहि गेह * लक्ष्मण रामक सत्य सनेह
तिनु जन वन वश गत साम्राज * पटल आन छल समटल काज
आर्त भरत की होयत हानि * काज सम्हारल हम हठ ठानि
गेल राज्य आयल अछि हाथ * कनलेँ पुत्र दुखायत माथ

सो०—जननी वचन कठोर, सुनलनि भरत अनर्थ कहि।
धिक धिक जीवन तोर, कहइत कण्ठ न कटि खसल ॥
खसला भरत तड़ाक, अशनि-पतन तरु - वर जेहन।
रहित श्वास ओ वाक, केकयि लेल उठाय पुन ॥
एहन करिय नहि ज्ञान, सुख सम्पति मे दुःख की।
राज्य देल भगवान, भाग्यवान बनि भोग्य करु॥
मुह नहि देखब तोर, असंभाष्य पतिघातिनी।
विषम हलाहल घोर, बरु मरि जाइ पिआय दे॥
तोहर पुत्र कहाय, बड़ पापी हम विश्वमे।
मरबे अग्नि समाय, की करवाल कराल सौँ॥

देल स्वामि – शिर डाक, दुष्ट मूर्त्ति के तोर सनि ।।
पड़बह कुम्भीपाक, सकल • लोक – सुख नाशिनी ।।
भरत भेला उठि ठाढ, मन विराम विसराम कत ।।
पर संकट की गाढ़, तनय संकटा सर्प्पिणी ।।

चौपाइ

कयलेँ पापिनि व्याधिनि काज * मुह न देखब नहि रहब समाज
उठि गेला कौसल्या गेह * तनिकाँ रामचन्द्र सम नेह
भरत देखि कनली कय शोर * अविरल युगल नयन बह नोर
कौसल्याक चरण लपटाय * भरतहु काँ नहि नोर शुखाय
अँह विनु भरत एहन भेल हाल * करु सुत सकल प्रजा प्रतिपाल
कहलहि होइतिह केकयि माय * तनिकर रंग देखल अँह जाय
हा रघुनन्दन हा रघुबीर * हा सीता लक्ष्मण रणधीर
दुख सागर मे पड़लहुँ हाय * अहँ बिनु के लेत जीव बचाय
चीराम्बर धर जटा कलाप * वन चल गेलहुँ दय सन्ताप
परमात्मा विभु से अछि ज्ञान * शोक अशोक दैव बलवान

सवैया छन्दः

रामचन्द्र राज्याभिषेकमे केकयि कयलनि जे अविचार ।
सम्मत हमर मनस्पथहूँ जौँ जननिक कठिन कपट व्यवहार ।।
ब्राह्मण शतहत्याक जनित पड़ पातक सभटा हमरहि माँथ ।।
गुरु वसिष्ठ ओ अरुन्धतीकाँ खड्गहिँ मारी करि जौँ लाथ ।।

चौपाइ

अड्गहि कटितहुँ केकयि माँथ * उचित न कहता श्रीरघुनाथ
कहि हा रघुनन्दन रघुनाथ * जननी चरण भरत धर माँथ
भरत शपथ कर बारम्बार * राम नृपति हम किंकर चार
कौशल्या कह सुनु सुत भरत * केओ ने अनुचित अहँकाँ कहत
अति सुशील भरतक सन भरत * अहाँक बराबरि के जन करत
हम जनइत छी अँहक स्वभाव * अहँक सुयश भलमानुष गाव
अयला भरत सुनल जन कान * गुरु प्रधान तत कयल प्रयाण
कहलनि गुरु जनु करु मनखेद * थिक कर्त्तव्य लिखल जे वेद
ज्ञानी सत्यपराक्रम वृद्ध * दशरथ छल छथि विश्व प्रसिद्ध
बहुत दक्षिणा दय कय बेर * अश्वमेध मख कयलनि ढेर
इत सुख भोग अमरपति संग * एकासन संस्थित सुर रंग
आत्मा नित्य एक छथि शुद्ध * जनन मरण व्यवहार विरुद्ध
जड़ अपवित्र विनश्वर देह * मृतक कहाबथि निस्सन्देह
पिता तनय मरणोत्तर लोक * मूढ मृषा कर मनमे शोक
जनिकर जनन मरण हो तनिक * मिलन सर्व्वदा मानक क्षणिक
नष्ट होइछ ब्रह्माण्डो कोटि * स्थितिक भावना थिकि अति छोटि
मेरु भस्म हो सिन्धु सुखाय * से की वस्तु काल नहि खाय
कालहिँ उतपति कालहिँ नाश * कालहिँ होइछ भोग विलास
चल दलपर जलकण चल जेहन * आयुक गति मानक थिक तेहन
दुख सुख हो कर्म्मक अनुसार * निश्चय ज्ञानी करथि विचार
नव पट पहिरथि त्यागि पुरान * देही देहक एहन विधान

आत्मा मरथि न जनमथि जाय * षट विकार नहि ततय समाय
भरत त्यागु मन बाढ़ल शोक * करु जैँ तृप्त पितर परलोक
तेल - द्रोणि सौँ शव बहराय * यथा-कृत्य चिति अनल लगाय
समुचित जेहन कहल गुरु लोक * कयल भरत तखना नहि शोक
ब्राह्मण वैदिक बहुत मँगाय * रुद्र - प्रमित दिन भोज्य कराय
नृपति निमित्त विप्र मे दान * गो - रत्नादि ग्राम सविधान
वस्त्र बहुत देल बापक नाम * चिन्तित आठ पहर निज धाम
राम राम हा गुणनिधि भाय * देलक बड़ दुख केकयि माय

मिथिला-संगीतरीत्या भैरव छन्दः

विधि हम सकल अनर्थक मूल ।
हमरहि कारण केकयि जननी कयल कर्म्म प्रतिकूल ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण शुभ लक्षण वैदेही वन हयती ।
नहि घर द्वार निवास नियत नहि कन्द मूल कोना खयती ॥
सदा प्रशंस वंश हंसक थिक केहनि केकयि अइली ।
चट पट प्राण लेल प्राणेशक रामक शोर विशइली ॥
सानुज हमहु रामवत् बनिकैँ ताहि विपिन मे जयबे ।
परमोदार जानकीजानिक चरणक भृत्य कहयबे ॥

इति श्री मैथिक चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

चौपाइ

मुनि वसिष्ठ मन्त्री गण सहित * नृपतिक सभा गेला नृप रहित

सुरपति - सभा समान विराज * अतिशय शोभित विबुध समाज
ब्रह्मा सन आसन — आसीन * धर्म्म कर्म्म रत धर्म्म धुरीण
भरतहु कॉं तत लेल बजाय * देश काल विधि कहल बुझाय
भरत सुमति सुनु कहल बसिष्ठ * कर्म्म शुभाशुभ काल बलिष्ठ
अहाँ महाशय महि सविवेक * करब अहाँक राज्य - अभिषेक
केकयि-कहल रहल सिद्धान्त * कहि गेला छल भूप नितान्त
राजा राज्य करिय स्वीकार * सभ लोकक अछि सत्य विचार
भरत कहल सुनु सुनु ई राज * हमरा नहि सपनहुँ मे काज
हम किङ्कर राजा श्रीराम * अनुचित नृपति बनब एहि ठाम
नृपवर किङ्कर नृपति भिखारि * सन्मार्गक जनु टूटल आरि
सत्य कहैछी भुजा उठाय * हम नहि करब राज्य अन्याय
केकयि-सुत बुझि जे जे कहब * हम अपराधी से से सहब
लय अनितहु सत्वर तरुआरि * मन हो केकयि दीतहुँ मारि
पतित मातृहा सुनि रघुनाथ * परश हमर नहि करता हाथ
आनब तिनु जनकाँ घर फेरि * जायब जङ्गल प्रात सबेरि
जटिल वेष धरणीमे शयन * व्रतविधि देखब पंकजनयन
जे विधि बनि वन बड़का भाय * गेला तेहि गत हमहूँ जाय
पयरहि चलब बनी व्यवहार * कन्द मूल फल प्राणाधार
वन शत्रुघ्न सेहो चलताह * भवन सविघ्न वृथा रहताह
चलु चलु गुरु तत होयब सहाय * अयबे करता बड़का भाय
कहि चुप रहला जखना भरत * सभ्य सकल कह एहन के करत
साधु कहल सज्जन - समुदाय * रघुनन्दन कॉं समुचित भाय

बड़ गोट मनमे छल अछि त्रास * भरत पुरत सबहिक मन आस

दोवय छन्दः

सगर नगरमे बाजल डङ्का, भरत न राजा हयता ।
आनय हेतु राम नृप—वरकाँ पयरहि सानुज जयता ॥
सेना सभ तैयार चलै सङ्ग साजल घोड़ा हाथी ।
गुरु वसिष्ट द्विज-गण महरानी, कौशल्यादिक जाथी ॥
चढ़लि लालको केकयि रानी, सुमरि सुमरि निज करणी ।
जाइ पताल तेहन हो लज्जा, फाटि जाथि जौँ धरणी ॥
हा विधि गुणनिधि पुत्र पुतोहुक कयल दुर्दशा भारी ।
रघुनन्दन लक्ष्मण की कहता, कि कहति जनक-दुलारी ॥

दो०—गजरथ गोरथ तुरगरथ, शिविका सैन्य - समूह ।
गुह सुनलनि भरतागमन, मन मन कर किछु ऊह ॥
जौँ हम देखब राज्य-मद, तौँ न उतारब पार ।
रामक कारण कण्ठ दय, समर करब अनिवार ॥

चौपाइ

शृङ्गवेरपुर दल विशराम * छल छथि जेहि थल लक्ष्मण राम
गुहजन यदपि निषादक जाति * साँठल भारहि भार उपाति
कन्द मूल फल लागल ढेर * अगाँ राखल भिलइक बेर
भरत स्वरूप देखल गुह जखन * संशय मनक मेटायल तखन
चीराम्बर धर श्याम-शरीर * जटा - मुकुट धर जनु रघुवीर
लेश न मन मे राजस रोच * राम राम रट मन बड़ शोच

सीता लक्ष्मण नाम उचार * अकपट निकट देखल व्यवहार
गुरु वसिष्ठ मन्त्री मिलि सङ्ग * रहथि सानुज रामक रङ्ग
कयल प्रणाम कहल गुह नाम * भरत हमर अछि निकटहि गाम
गुह अँह थिकहुँ कहैत उठि जाय * लेल भरत झट हृदय लगाय
कुशल क्षेम अछि पुछल अनेक * मित्र अहाँकाँ विसद विवेक
रामचन्द्र परमेश अनन्य * तनिसौँ मिललहुँ अहँ अतिधन्य
रघुनन्दन सौँ वार्तालाप * गुह अहँ नियत भेलहुँ निष्पाप
सीता सहित छला जत राम * मित्र शीघ्र चलु लय से ठाम
नयन सजल थल देखितहिं जाय * शयन कयल जत घास ओछाय
सीताभरणक कनकक विन्दु * कहुँ कहुँ खण्ड खसल जनु इन्दु
मन अति दुखित तखन भेल भरत * कह विधि विपति हमर कोना टरत
अति सुकुमारि कुशासन शयन * मन बड़ व्याकुल देखइत नयन
हमर निमित्त राम काँ कष्ट * केकयि-सुत बनि भेलहुँ नष्ट
धन्य सुमित्रा लक्ष्मण धन्य * जनि काँ अछि रामक सौजन्य
रामक सङ्ग सुयश सभ ठाम * भल के कहता केकयि नाम
हम रामक दासक जे दास * तनिको दास एक मन आश
छथि प्रभु कतय अहाँ काँ ज्ञात * मित्र कहू हम चलब प्रभात
हमरे कारण सभ किछु दोष * रघुनन्दन मन तदपि न रोष
घुरि घर चलता कहबनि कानि * होयत न हमर मनोरथ हानि
रघुपति-भक्त भरत अहँ धन्य * सकल – लोक – सम्मानित गण्य
रहन न भक्ति सुनल छल कान * अपनैँ काँ देखि भेल प्रमान

दो० – चित्रकूट मन्दाकिनी, निकट कुटी निर्म्माय।
सानुज सीताराम छथि, कहब देब पहुँचाय ॥

चौपाइ

भरत कहल सुरसरिता तरिय * मित्र उपाय तेहन अहँ करिय
गुह कह भरत विलम्ब न आब * कयलहुँ वृत्त पांच शय नाव
राज-नाव एक अपनहि खेबि * गुह आनल सभसौँ भल टेबि
कौशल्यादिक सानुज भरत * गुरु वसिष्ट एहिसौँ सन्तरत
सकल सैन्य गण उतरल पार * घोड़ा हाथी भरिया भार
उठइत चलइत पथ विश्राम * कहथि सकल जन सीताराम

दो० — भरद्वाज - आश्रम निकट, सभ कयलनि विश्राम।
गेला सानुज भरत तत, मुनि-पद कयल प्रणाम ॥

चौपाइ

मुनिकेँ केकयि - तनय चिन्हार * कुशल क्षेम पुछलनि व्यवहार
कहु कहु भरत अहाँ महराज * आयलछी की मुनिक समाज
की अहँ जटा बनाओल केश * हँसी करत जे देखत देश
रामक सन वल्कल की धयल * भूपति भय अति अनुचित कयल
कन्द मूल फल निःफल खाइ * जङ्गल जङ्गल जनु बौआइ
भरत अहाँ घुरिकेँ घर जाउ * बड़ गोट राज्यक सुखकेँ पाउ

सो० – सभ अपनैँ काँ ज्ञात, कृपा करिय कारुणिक मुनि।
कहि नहि होइछ तात, सजल-नयन कहलनि भरत।

चौपाइ

कयल राम - राज्यक अभिघात * केकयि से हमरा नहि ज्ञात
मुनि हम छल छी मामक ग्राम * वन अयला सानुज श्रीराम
कहइतछी छुबि अपनैँक चरण * हमरा नहि कलहक आचरण
ई कहि मुनिपद छुइलनि जाय * अपनैँ सौँ मन कि रह नुकाय
जनइत छी हम पाप अपाप * अनुचित कयलनि माता बाप
हमरा नहि राज्यक अधिकार * प्रभु–पद–किङ्कर एहन विचार
रामचन्द्र – पद मन आरोपि * राज्य-भार हुनकहि देब सोंपि
हमरा मनमे मुनि दृढ़ टेक * रामक करब एतहि अभिषेक
छथि गुरुजन पुरुजन समुदाय * सङ्ग नगर कर्त्तव्य सहाय
प्रभुकाँ अपन नगर लय जयब * तनि चरणक किङ्कर हम हयब
मुनि कह साधु साधु अहाँ भरत * अपथ कि अहँक हृदय सञ्चरत
रघुनन्दनक अहाँ महाभक्त * सौमित्रिहुँ सौँ मन अनुरक्त
हम आतिथ्य करब किछु आइ * बाबू भरत आइ जनु जाइ
ज्ञान–नयनसौँ सभ अछि ज्ञात * कयल अमर-गण सभ उतपात
स्मरण कयल मुनि भारद्वाज * कामधेनु करु समुचित काज
आयल छथि पाहुन बड़ गोट * भोज्य वस्तु वर्षण हो ओट
एकर मर्म्म आन नहि जान * दिव्य वस्तु भोजन विधि पान
कामधेनु – कृत सभ सम्पन्न * जनिकाँ जेहन तेहन तत अन्न
मुनिक पठाओल दिव्य उपाति * सुखसौँ सभ जन खयलनि राति
कयल वसिष्ठक मुनि सत्कार * तखन भरत - वर्गक व्यवहार
कयल भरत उठि मुनिक प्रणाम * सुखसौँ एतय कयल विशराम

भोर भेल आज्ञा देल जाय * सभ जन चलब महेश मनाय
भरद्वाज मुनि कहलनि जाउ * रघुनन्दन सौँ दर्शन पाउ

दोधय छन्दः

सानुज भरत सुमन्त सङ्ग मे, गुह निषाद अनुरागी
चित्रकूट पर्व्वत तट गेला, जतय बहुत मुनि त्यागी
सैन्य सकल गिरि नीचहि राखल, कयलनि भरत पुछारी
बासा कतय कयल रघुनन्दन, लक्ष्मण जनक – दुलारी
आम सफल भल भल फल कटहर, केरा घौड़िहि पाकल
कोविदार चम्पा बकुलादिक, बहुत जतय जे ताकल
मन्दाकिनि गङ्गासौँ उत्तर, गिरिसौँ पश्चिम आशा
सीता सहित सलक्ष्मण रामक, श्रीधर सुन्दर बासा

सा० – मुनिजन देल देखाय, श्रीरघुनन्दन - वन - भवन
भरत चलल अगुआय बहुत हर्ष उत्कर्ष मन
मुनिजन-सेवित धाम, तरु लटकल वलकल अजिन
राम - भवन अभिराम, सानुज देखल दूर सौँ

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
अयोध्याकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

चौपाइ

श्रीरघुनन्दन सुन्दर चरण * महि मे अङ्कित विधिगण-शरण
कुलिश कमल ध्वज धूलि मे रेख * अकलुष अदुख भरत से देख

आज धन्य भेल हमरो भाग * प्रभु-दर्शन - उत्कण्ठा लाग
शन्न शन्न प्रभु आश्रम जाय * हरष नोर सौँ भरत नहाय
दूर्व्वादल - श्यामलवर अङ्ग * सौदामिनि - छवि जानकि सङ्ग
जटा किरीटी वल्कल चीर * तरुण - अरुण - मुख श्रीरघुवीर
नयन विशाल भाल भल भ्राज * लक्ष्मण - सेवित चरण समाज
वैदेही सौँ वचन - विनोद * सदनसँ शत गुण परम प्रमोद
देखल भरत खसल प्रभु - चरण * दीनबन्धु कहि संकट - हरण
रामक नयन नोर बढ़िआय * दुहु भुज सौँ लेल हृदय लगाय
मिलिमिलि पुन मिल मन अति हर्ष * देखि मुनि नयन जेहन घनवर्ष
जननि न जानथि श्रम गिरि बाट * खसब पड़ब की गड़ पद काँट
कत छथि कहि कहि दौड़लि जाय * सरवर जेहनि पिआसलि गाय
रघुनन्दन सभ जननी जानि * कयल प्रणाम बहुत सन्मानि
गुरुपद कय साष्टाङ्ग प्रणाम * धन्य धन्य हम कहलनि राम
लक्ष्मण क्रमक्रम कयल प्रणाम * यथायोग्य गुरुजन जे नाम
शाशु पुतोहु अङ्क मे राखि * जिबइत मुह देखल ई भाखि
लाजहि केकयि रहल सशंक * विधि देल हमरहि माँथ कलंक
आगत जे पुरलोक छलाह * यथायोग्य सभ जन बैसलाह
कहु गुरु पिता-कुशल की रीति * हमरा सभ पर पुरुब पिरीति
राम - वचन सुनि कहल वशिष्ठ * कालक गति अछि बहुत बलिष्ठ
कहयक विषय रहय के चूप * सुरपुर गेला दशरथ भूप
राम राम कहि कहि सौमित्रि * अयि कत गेलहुँ विदेहक पुत्रि
कनइत एहिगत गत नृप-प्राण * सुनल राम श्रुति - शूल समान

मुइलहुँ ई कहि खसला कानि * लक्ष्मण राम करुण रस - सानि
हम अनाथ के करत दुलार * रहि गेल मनक मनोरथ भार
सीता सती होथि नहि चूर * कहि कहि गुणनिधि सकरुण सूर
अहँ वियोग - वश त्यागल प्राण * हमर हृदय भेल कुलिश समान
रामक कनइत सभ जन कान * तनि सौँ त्रिभुवन भिन्न न आन
कानय केयो नहि कहथि वसिष्ठ * कालपुरुष अनिवार्य्य बलिष्ठ
कनलय नृप नहि अओता घूरि * की हो कहू कपारे चूरि
मन्दाकिनि जल कयल स्नान * क्रम क्रम देल तिलाञ्जलि दान
फल इङ्गुदी तथा पिण्याक * पिण्डदानमे कहइत वाक
हम जे अन्न पितर से अन्न * पितर देव मन होउ प्रसन्न
गेला कुटी पुन कयल स्नान * क्रन्दन करुण बधिर जनु कान
तेहि दिन सभ कयलनि उपवास * गज - तुरगादि न खयलक घास
भेल अशौचक काण्ड समाप्त * दोसर दिवस जखन सम्प्राप्त
मन्दाकिनि जल सकल नहाय * बैसल राम सभाजन जाय
भरत तहाँ उठि जोड़ल हाथ * हम किछु कहब देव रघुनाथ
सभ जन अनुमति उचित विवेक * अपनैक होय एतहि अभिषेक
मुनिजन बहुत अपन गुरु सङ्ग * देखि पड़ितहि अछि पुरजन रङ्ग
जेहन पिता तेहन जेठ भाय * क्षत्रिय–धर्म्म सनातन न्याय
पिता – राज्य पालन करु देव * सकल प्रजामे यश बड़ लेब
वन – वासक नहि सम्प्रति बेरि * वन - विनोद - मन अयबे फेरि
बहुत यज्ञ विधिवत गोदान * करि उत्पन्न पुत्र गुणवान
ज्येष्ठ पुत्रकाँ दय लेब राज * पुन आयब वन वनी – समाज

केकयि-कृत मन नहि किछु धरिय * पालन हमर नाथ प्रभु करियर

दो०—श्रीरघुनन्दन-चरण पर, भरत धयल निज माँथ ।
कयल दण्डवत भक्ति सौँ, त्राहि त्राहि रघुनाथ ॥

चौपाइ

स्नेह सजल लोचन श्रीराम * सुनु सुनु भरत कहल गुणधाम
त्वरित उठाय लगाओल अङ्क * भक्ति-भाव अहँकाँ निश्शङ्क
भरत अहाँक वचन निर्व्याज * वनि बनलहुँ पितृ-वचनक काज
माय बाप आज्ञा अनुसार * पिता-वचन-प्रतिपाल विचार
चौदह वर्ष वनहि मे रहब * भ्रमहुँ भरत मिथ्या नहि कहब
अहँकाँ राज्य देले छथि बाप * थोड़बहि दिनमे की सन्ताप
दण्डक वन हमरा देल राज * जनितहि छथि गुरु सकल समाज
पिता-वचन हम माँथा धयल * अहँ की भरत अनादर कयल
मान न पिता वचन अज्ञान * से जिबितहि छथि मृतक समान
तनिका अन्त नरकमे वास * बापक जनिकाँ नहि मन त्रास
भेट भेल से भल भेल काज * अहँ छी विदित बनल महराज
करु गय राज्य वृथा निर्वेद * अहँइक चिन्ता सभकाँ खेद

दो०—भरत कहल स्त्री जित पिता, कामुक बुद्धि विहीन ।
मृत्यु निकट उन्मत्त मति, मन नहि अपन अधीन ॥

चौपाई

तेहन न पिता जेहन अहँ कहल * सत्य सन्ध नृप सभ किछु सहल
हृदय अधर्मक अतिशय त्रास * बरु मानथि वर नरक निवास

कहल देल वर सत्य विचारि * केकयि शकलि न नृपव्रत टारि
सत्य वचन नृप त्यागल प्राण * रहि गेल धर्म्माधार प्रमाण
तनिक बचन काँ कय देव त्याग * रामचन्द्र काँ अनुचित लाग
कि करति केकयि कहत की लोक * कर्म्म शुभाशुभ रह की रोक
कहलनि भरत देव रघुनाथ * सभ कृति प्रभुवर अपनैँक हाथ
हमहिँ रहब वन चौदह वर्ष * अपनैँ राज्य करू मन हर्ष
शुनु शुनु भरत कहल पुन राम * मन बड़ गड़बड़ करु थिर ठाम

षट्पद छन्द

सजल नयन कह भरत नाथ हम नहि घुरि जायब।
लक्ष्मण सन वन रहब संग दुख दिवस गमायब॥
नहि रखबे जौँ संग प्राण हम सत्वर त्यागब।
बड़ गोट अयश कपार राज झंझट नहि लागब॥
धयल कुशासन रौदमे पद्मासन पूर्व्वाभिमुख।
हठ भरतक दृढ देखिकैँ इन्द्रादिक मन बहुत दुख॥
रामचन्द्र मन बुझल भरत अविचल हठ ठानल।
कहलहु कथा बुझाय वचन एकगोट न मानल॥
गुरु वसिष्ठ काँ देल वामनेत्रान्त इसारा।
ई नहि ककरो शक्य देल अपनहि काँ भारा॥
कलहनि गुरु एकान्त मे भरत कठिन हठ परिहरिय।
हेतु कहैछी से शुनिय सत्य वचन श्रुति मे धरिय॥

चौपाइ

अज अव्यय नारायण जैह * रामचन्द्र काँ जानब सैह

ब्रह्मा बहुत प्रार्थना कयल * दशरथ भवन पुत्र बनि अयल
रावण वध कारण अवतार * पृथिविक हरण काज सभ भार
प्रभुवर माया सीता रूप * लक्ष्मण थिकथि अनन्त अनूप
केकयि कृत सौँ मन जे खेद * कहइत छी तकरो हम भेद
रामचन्द्र जौँ करता राज * बुझल देवता हयत न काज
विघ्न शारदा कयलनि जाय * केकयि रानिक कण्ठ समाय
निर्दय हृदय कहल निश्शङ्क * केकयि काँ छल लिखल कलङ्क
ई तीनू जन दण्डक जयत * धर्म्म विमुख दशमुख तत अयत
निज अपराध पाबि संहार * हयता रावण अवनिक भार
सकुल सबल रावण केँ जीति * घुरि अओता करताह सुनीति
आग्रह त्यागि भरत घुरि जाउ * अन्नपानि सुखसौँ अहँ खाउ
एतय वृथा सभ जन मन दैन्य * जाउ अयोध्या लयकेँ सैन्य

दो०—गुरुक वचन सुनलनि भरत, अति विस्मित मन भेल।
सजल – नयन – आनन्द घन, राम निकट पुनि गेल ॥

चौपाइ

चरणक खरओँ देव देल जाय * सेवा करब धरब मन लाय
दुहुटा खरओँ राम दय देल * भरत भक्ति माँथा धय लेल
जगमग जोति विभूषित रत्न * देव समान धयल बड़ यत्न
करथि प्रदक्षिण करथि प्रणाम * कहथि अवधि दिन आयब गाम
आयब अवधिक दिवस गमाय * भस्म होयब हम अनल समाय
नीक नीक कहलनि श्रीराम * डंका पड़ल चलल जन धाम

कनइत केकयि प्रभुसौं कहल * किछु कर्त्तव्य शिष्ट की रहल
रामचन्द्र बेटा मन आश * हमरे भेल विश्व उपहास
अहँक भरोश बहुत मन धयल * सभ जनरव हम कहबे कयल
केहन पिशाची देल लगाय * हमहूँ थिकहुँ मान्य सतमाय
अपनहि कयल सकल रघुनाथ * तदपि कहिय हम जोड़िय हाथ
करब क्षमा प्रभु सब अपराध * लोक विदित सुख कयलहुँ बाध
अहँ परमेश्वर विश्व स्वतन्त्र * हम की मानी वानी मन्त्र

सो०—हँसि कहलनि रघुनाथ, देवि सत्य अपनैँ कहल।
दर-नृप-आज्ञा लाथ, देव — कार्य्य कर्त्तव्य छल ॥
त्यागु देवि सन्ताप, होएब कर्म्म सौँ लिप्त नहि।
विगत त्रिविध तन - ताप, रहब हर्षिता निज भवन ॥
से शयबार प्रणाम, कयल धयल प्रभु - ध्यान मन।
धन्य धन्य श्रीराम, कहि चललौ केकयि पुरी ॥

चौपाइ

यथायोग्य मिलि मिलि सभ लोक * गेल अयोध्या परिहरि शोक
भरत मिलन सौँ मन सन्तोष * मन मन केकयि पर बड़ रोष
गुरु मन्त्री परिजन गण आन * भरतक सङ्गहि कयल प्रयाण
जय सीतापति जय रघुनाथ * कनइत कनइत कर गुण-गाथ
मिथिलेशक कन्या बुधिआरि * छल भल सङ्ग भाग्य दिन चारि
सकल पूर्व्ववत ठामहि ठाम * विरत भरत गेल नन्दिग्राम
राखल खरओँ सिंहासन थापि * पूजा - विधि नहि छूट कदापि

नित पूजन षोड़श उपचार * राज - भोग बन बहुत प्रकार
राज - काज जत जे जे आब * राम समर्पण सिद्ध स्वभाव
अवधिक दिन गणयित दिन जाय * मुनि-व्रत कन्द-मूल फल खाय
भूमि शयन सानुज नित करथि * अनुरत राम–चरण मन धरथि
राज - काज किछु रहय न बन्न * व्रती भरत सभ कर सम्पन्न
चित्रकूट गिरि पर श्रीराम * बुभ्फलक लोक घराघरि गाम
एक घुरि आबथि एक पुन जाथि * रामचन्द्र मन मन अगुताथि
ग्राम - जनक आगमने तोड़ि * दण्डक-वन गेला गिरि छोड़ि
जाय अत्रि काँ कयल प्रणाम * हम छी धन्य कहल श्रीराम
बनवासक छल अयलहुँ एतय * दुःखक लेश देश नहि जतय
रामक वचन मधुरतर सूनि * विधिवत पूजा कयलनि मूनि
बैसला राम मुनिक व्यवहार * भल फल वन्य आनि सत्कार
सीता लक्ष्मण बैसल जानि * मुनि कहलनि परमात्मा मानि

अनुष्टुप् छन्दः

अनसूया महावृद्धा गृहमध्य तपस्विनी ।
छथि राम ततै जाथु मैथिली श्रीयशस्विनी ॥
गेली सीता ततै साध्वी राम आज्ञानुसार सौँ ।
प्रणाम तनिकाँ कैल मैथिली सद्विचार सौँ ॥

दोवय छन्दः

कहलनि अनसूया हम वृद्धा पति सँग करी तपस्या ।
अहँ जानकि सभलोकक जननी शिव-विधि-प्रभृति-नमस्या ॥

ई कहि अङ्ग लगाओल तनिकाँ छवि देखल भरि आँखी।
हर्षहि हृदय भरल अछि होइछ दुहू आँखि मे राखी ॥

तोटक छन्दः

तन हो न मलान कदापि कहूँ।
अँगराग लगाओल अत्रि-बहू ॥
पहिरावल से पट जे नितहू।
नव भव्यद फाट न जे कतहू ॥

प्रज्झटिति छन्दः

घर जाथु कुशलसौँ अहँक संग, वनमे आयल छथि अछि प्रसङ्ग।
मुनि वन्य कन्द फल आनि देल, सानुज सीतापति तृप्त भेल ॥
मुनि कहल भुवन अपनैँ बनाय, प्रतिपाल करै छी विभु कहाय।
गुण-कृत न दोष अहँमे समाय, विभुसौँ माया मोहिनि डराय ॥

कवि-प्रार्थना

उक्त छन्द

जयजय रघुनन्दन देवदेव, हृत-धरणि-भार कृत-विपिन-सेव।
जय दलित-भवानीनाथ-चाप, दूरी-कृत-मिथिला-मनस्ताप ॥
जयजय पुरुषोत्तम गुणातीत, श्रित-भूमि-तनय मुनि-गण-विनीत।
जय दाशरथे नानावतार, मां पालय पालय दयागार ॥

इतिश्रीचन्द्रकविविरचिते मैथिलीरामायणे अयोध्याकाण्डे नवमोध्यायः॥६॥

अयोध्याकाण्डः समाप्तः ॥२॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्दाझा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

आरण्यकाण्ड

* मैथिली रामायण *

॥ आरण्यकाण्ड ॥

—:*:—

शिखरिणी छन्दः

भ्रमन्तौ कान्तारे क्षयितदनुजौ त्यक्तनगरौ
किशोरौ सद्वीरौ जनकतनया - रक्षणपरौ ।
जटावन्तौ दान्तौ करकमल – चाराशुगधरौ
सदापायास्तान्नो दशरथतनूजौ नरवरौ ॥१॥

चौपाइ

एकदिन रहि प्रभु पुन चललाह * अरिग्रातथ मुनि सङ्ग चललाह
राम कहल अपनैँ घुरि जाउ * कृपायुक्त वन-बाट देखाउ
सुनि मुनि कहलनि होमहि बूझ * अपनैँ काँ प्रभु कतय न सूझ
हमर शिष्य लौकिक व्यवहार * बाट देखौता उचित विचार
चलला एक कोश प्रभु भूमि * अत्रिशिष्यसौँ कहलनि घूमि
देखि पड़ै अछि नदी अथाहि * निर्जन भेट नाव की ताहि
शिष्य कहल प्रभु अछि भल नाव * देखब खेवि लबै छिय आब
नित जनकाँ लेल नाव चढ़ाय * क्षणमे देलनि पार लगाय

अपने लोक कयल बड़ काज * गेल जाय मुनि अत्रि–समाज
विपिन भयङ्कर सह सह साप * सिंह बाघ वन - जन्तु कलाप
झिल्ली करय घोर झंकार * राक्षस विकट विकट संचार
सुनु लक्ष्मण कहलनि रघुवीर * यतनहि चलिय सज्ज धनुतीर

दो०—आगाँ हम पाछाँ अहाँ, सीता माझहि ठाम ।
ब्रह्म जीव माया जेहनि, चलु दण्डक बन नाम ॥

चौपाइ

सभ दिश लक्ष्मण तकितहि रहब * आबय दुष्ट शीघ्र से कहब
कहइत योजन डेढ़ प्रमान * जाय देखल एक दिव्य स्थान
शोभासीम अनूप तड़ाग * सुन्दर वारि अमृत सम लाग
उत्पल कमल कुमुद कल्हार * जल-पक्षी कर विविध विहार
जाय समीप पीबि किछु पानि * बैसला तरुतर छाया जानि
अबइत देखल एक उतपात * वदन भयङ्कर भयकर गात
गर्ज प्रचण्ड मेघ समतूल * कत मानुष गाँथल छल शूल
महिष बाघ गज शूकर खाय * चटचट हाड़ समेत चिबाय
सुनु लक्ष्मण कहलनि रघुवीर * धनु कोदण्ड हाथ करु तीर
आबि गेल राक्षस बड़ गोट * दौड़ल अबइत अछि बड़ मोट
जानकि जनु मन मानब त्रास * हिनकर एहिखन करब विनाश
राम बाण धय अचल समान * ठाढ़ भेला ओकरे दिश ध्यान
ओ प्रभु निकट विकट हँसलाह * जयबह कतय आब फसलाह
मुनिसन वेष धनुष शर हाथ * अति निर्भय मन करह न लाथ

स्त्री - सहाय छह युगल कुमार * हे सुन्दर कें देल विचार
अयला वन नहि बचतौ प्राण * हमरा मुह तोंह ग्रास प्रमाण
कह कह बनमे छौ की काज * ई दण्डक - वन दनुजक राज
राम कहल सुन राक्षस घोर * कतय पड़यबह पकड़ल चोर
हमर नाम कहइछ जन राम * पिता - वचन सौँ छोड़ल धाम
लक्ष्मण भ्राता हमर कनिष्ठ * त्रिभुवन – विजयी वीर बलिष्ठ
प्राण – वल्लभा सीता नाम * काज सुनह अएलहुँ एहिठाम
तोर सन जन रण - शिक्षा देब * मुनिक मण्डली मे यश लेब
राम–वचन सुनि हँसल से घोर * देखब राम केहन बल तोर
शूल हाथ दौड़ल मुह बाय * देखतहिँ सभकाँ जयबहु खाय
जनयित नहि छह नाम विराध * मृग–मुनि - जनक वनक हम व्याध
कत कत मुनिकाँ गेलहुँ खाय * बाँचल से जे गेल पड़ाय
त्यागि अस्त्र दुनु बन्धु पड़ाह * सीता काँ हमरा दय जाह
जौँ जिवइक इच्छा संसार * सत्वर करह एहन व्यवहार
बल लेब जानकि दौड़ल डाँटि * शरसौँ राम तनिक भुज काटि
हँसइत मन नहि कोपक लेश * श्रीरघुनन्दन प्रबल नरेश
मुह बऔलैँ दौड़ल खल फेरि * पयर काटि लेलथिनि तहि बेरि
ससरल आबय करय प्रताप * मुह बऔलैँ जनु अजगर साप
अर्द्ध-चन्द्र-बाणैँ तनि माँथ * चटपट काटल श्रीरघुनाथ
पृथिवी–तल ककरहु नहि टेर * से खल खसल रुधिर भेल ढेर
प्रभु-महिमा किछु कहल न जाय * सीता प्रभु – तन गेलि लपटाय
दिवि दुन्दुभि निर्भीत बजाव * अप्सरादि नाचथि कय भाव

गाबथि किन्नर-गण गन्धर्व्व ❁ धन्य धन्य प्रभुकाँ कह सर्व्व

दो०—भेल विराधक देह सौँ, दिव्य पुरुष उत्पन्न।
दिव्य वसन भूषण कनक, रवि-रुचि गुण-सम्पन्न॥

चौपाइ

बद्धाञ्जलि रामक लग ठाढ़ * नाथ छोड़ाओल सङ्कट गाढ़
बेरि बेरि से करथि प्रणाम * कहि सानुज सीतापति राम
हम विद्याधर विमल-प्रकाश * देखल नयन भरि पूरल आश
दुर्व्वासा मुनि देल छल शाप * क्रोध-विवश थापल छल पाप
अपनैँक चरण मध्य स्मृति रहय * रसना रामनाम नित कहय
प्रभु-गुण-कीर्त्तन सुन नित कान * कर सेवा कर कर्म्म न आन
प्रभु-पद-पङ्कज पर पड़ माँथ * करुणागार देव रघुनाथ
देव-लोक माया नहि व्याप * से प्रभु अपनेक मुख्य प्रताप
रघुनन्दन कह सुखसौँ जाउ * अँह माया मे जनु लपटाउ
हमर दर्शनैँ अँह काँ मुक्ति * दुर्ल्लभ तेहन हमर दृढ़ भक्ति
शीघ्र जाउ आज्ञा शिर मानि * भक्ति भाव सम्पन्नैँ जानि

दो०—रामचन्द्र-करसौँ मरण, छूटल मुनि-कृत शाप।
चरित मुक्ति-वर-प्रद कहथि, सकल भुवन यश व्याप॥

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
आरण्यकाण्डे प्रथमोऽध्यायः॥१॥

चौपाइ

स्वर्गत भेला जखन विराध * तखन गगन सुरजन सम्बाध
प्रभु सानुज वैदेही सङ्ग * गेला तत्य जतय शभङ्ग
आयल छथि वन श्रीभगवान * मुनि जानल साधन विज्ञान
सत्वर विधि विष्टर देल नीक * पूजा कयल विहित जे थीक
प्रिय आतिथ्य कन्द फल मूल * कहल आइ दिन अति अनुकूल
एतय बहुत दिन तप जे कयल * पुण्यकर्म्म जे जे अछि धयल
अपनैं विषय समर्प्पण भेल * दुर्ल्लभ दर्शन अपनैं देल
फल - विरक्त हम पायब मुक्ति * एक कहक थिक वचन सुयुक्ति
सकल-हृदय-गृह नव घनश्याम * सरसिज - लोचन रघुवर राम
चीराम्बर धर जटा - कलाप * सानुज श्रीपति हरु सन्ताप
चिता चढ़ल योगीश्वर बाज * हे रघुनन्दन देखू आज
देह दग्ध कय हम ब्रह्मत्व * जाइत छी अपनैंक समक्ष

दो०—वाम अङ्गमे जानकी, घन चपला समतूल।
पुरी-अयोध्या-पति रहथु, हृदय सदा अनुकूल ॥
मुनि पुनि आगि पजारिकैं, कयलनि दग्ध शरीर।
दिव्य - देह लोकेश - पद, गेला कहि रघुवीर ॥

चौपाइ

कत मुनिवर आरल तहिठाम * सभकाँ तिनु जन कयल प्रणाम
आशिष दय कहलनि प्रभु वेश * अयलहुँ छूटल मुनिक कलेश
मुनि शरभङ्गक देखल प्रयाण * प्रभुसौं सबहिक हो कल्याण॥

टहलि घूमि वन देखल जाय * होयत ज्ञात घोर अन्याय
अस्थि कपाल पड़ल छल ढेर * राम पुछल की विषय अन्धेर
मुनि कह मृत मुनि लोकक हाड़ * हिनका खलयक राक्षस राड़
करुणासौँ परिपूरित आँखि * श्री रघुनन्दन उठला भाखि
कयल प्रतिज्ञा प्रभु विख्यात * कयलक अछि जे जे उतपात
सभ राक्षसक करब संहार * विजय सुयश त्रिभुवन विस्तार
मुनिजन चिन्ता करु जनु आब * कि कहब अड़रा लागल नाव
नाम सुतीक्ष्ण अगस्तिक शिष्य * शुचि संयम आहार हविष्य
रामक मन्त्रोपासक एक * भक्ति अनन्य धन्य सविवेक
तनिकर आश्रम गेला राम * सभ ऋतुकयल जतय विसराम
सुनल सुतीक्ष्ण अबै छथि राम * विधिवत पूजन कयल प्रणाम
मन्त्रोपासक भक्त सिनेह * अपनहि अयलहुँ हमरा गेह
विश्व – अगोचर देखल नयन * सकल लोक मानस–गृह शयन
अपनेक मन्त्र–विमुख-मति जैह * माया – मोहित होइछ सैह
जल-गत दिनकर - बिम्ब समान * मायामोहित जन - मन धाम
विभु अपूर्व्व देखल से रूप * माया - मानुष सुन्दर भूप
कोटि-काम-छवि अति कमनीय * चाप बाण धरइत रमणीय
दया-सरस सुन्दर मुख – हास * हरथु हमर रघुवर भव - त्रास
अमल अजिन पट सीतासङ्ग * सेवक लक्ष्मण प्रीति अभङ्ग
गुणानन्त नीलोत्पल – कान्ति * वीर - धुरन्धर मानस - शान्ति
ब्रह्म राम चिद्घन कह वेद * बसथि मुनिक मन अति निर्व्वेद
देखल जे हम रूप समक्ष * हृदय बसथु से प्रभु परतक्ष

मुनिक विनय सुनि कहलनि राम * वचन कहै छी हम अभिराम
हमरा मन्त्रोपासक भक्त * हमरहि विषय सतत अनुरक्त
हमरा दर्शन सौँ हो मुक्त * भक्ति - भावना सौँ संयुक्त
दर्शन हमर न दुर्लभ ताहि * दी तनिका हम सत्य निबाहि
कहलनि राम नयन - जलजाभ * होयत हमर सायुज्यक लाभ
गुरु अगस्ति मुनि नाथ अहाँक * शिष्य तपस्वी वृद्ध जहाँक
किछु दिन ततय रहब हम जाय * तकर बाट अँह देब देखाय
भेल बहुत दिन हमहूँ जयब * गुरुदर्शन कय पुनि एत अयब
प्रात भेल प्रभु कहि चललाह * सीता लक्ष्मण सङ्ग छलाह
मुनि अगस्ति कैँ छोटका भाय * मुनि सुतीक्ष्ण सभ देल देखाय

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामामायणे
अयोध्याकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

चौपाइ

मुनि सभकँ जानल व्यवहार * सत - स्वागत फलमूलाहार
प्रभु एक दिन तहि थल रहलाह * प्रात भेल कहि कहि चललाह
मुनि अगस्ति - मण्डली प्रवेश * सभ ऋतु फल फुल लागल बेश
मृग नानाविध कत तेहि थान * पक्षी करय विलक्षण गान
तहाँ देव ब्रह्मर्षि बहूत * आबि न शकथि जतय यमदूत
नन्दन - वन सन शोभा लाग * ब्रह्मलोक जनु दोसर भाग
सुनु सुतीक्ष्ण कहलनि रघुवीर * मुनिकैँ कहब देखि पड़ भीर
हम आयल छी दर्शन काज * कहू जाय अहाँ मुनिक समाज

सो०— विधिवत कयल प्रणाम, जाय सुतीक्ष्ण अगस्ति - पद ।
सीता लक्ष्मण राम, आश्रम बाहर ठाढ़ छथि ॥
कहयित शिष्यक कान, तन्मन्त्रार्थ विचार हम ।
कयलहि छल छी ध्यान, शीघ्र लाउ कहलनि गुरू ॥

चौपाइ

अपनहु चलला मुनि - गण सङ्ग * मुनिकेँ हर्ष समाय न अङ्ग
रामचन्द्र प्रभु आयल जाय * बड़ गोट अतिथिक नाम कहाय
कयल दण्डवत तिनु जन आबि * कहल सकल उत्तम फल भाबि
मुनि लेल प्रभुकाँ हृदय लगाय * हर्षक नोर हृदय बढ़ि आय
रामचन्द्र - कर करसौँ धयल * आश्रम आनि प्रियातिथि कयल
बड़ सेवा पूजा विस्तार * जेहन अकार तेहन व्यवहार
वन फल भोजन अपनहुँ ठाढ़ * उचिती मध्य हर्ष मन बाढ़
सुख एकान्त जखन बैसलाह * मुनि अगस्ति पुनि ततय गेलाह
कहल कृताञ्जलि सुनु मायेश * एतबहि लय बसलहुँ ई देश
क्षीर - समुद्र विधाता जाय * स्तुति कय कहलनि होउ सहाय
सहइत छथि नहि धरणी भार * लेल जाय अपने अवतार
सभ जीवक धरणी आधार * रावण - मरणक मुख्य विचार
कहल से कयल मनोरथ पूर * दर्शन देल कष्ट गेल दूर
प्रथम एकसौँ बाढ़लि सृष्टि * रविसौँ जेहन होइ अछि वृष्टि
अपनैँक माया - कृत संसार * शास्त्र बहुत कह बहुत विचार
स्तुति करयित करयित भेल बेर * धनुष ग्रहण करु कहलनि फेर
सुरपति एहि थल गेला राखि * देब रामकाँ ई सम्भाषि

अक्षय बाण तेहन तूणीर * अपनैँक योग्य वस्तु रघुवीर
रत्न - विभूषित वर तरुआरि * एहिसौँ करब भयङ्कर मारि
निज-माया - कृत नर - आकार * लेल यदर्थ देव अवतार
दुइ योजन एतसौँ से ठाम * पञ्चवटी कहइछ जन राम
गोदावरी विमल तट जाउ * कार्य्य हेतु किछु काल गमाउ

सो॰—जखना ई बजलाह, मुनि अगस्ति भगवान शुनि ।
तिनु जन प्रभु चललाह, पञ्चवटी उद्देश्य कय ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
आरण्यकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाइ

शैलश्रृङ्ग सन एकटा गृद्ध * देखलनि राम बाट पर वृद्ध
मुनि - भक्षक राक्षस सन लाग * असुआयल अछि तैँ नहि जाग
लक्ष्मण धनुष हाथ कय देब * चटपट प्राण हिनक हम लेब
सुनि भय-विकल कहल खगराज * कयल जाय प्रभु एहन न काज
हम दशरथ भूपालक मित्र * मुनिजन मे अछि हृदय पवित्र
नाम जटायु सकल जन जान * हम खग दुष्ट न सुनु भगवान
पञ्चवटी हम अपनैँक काज * रहब निरन्तर हे रघुराज
सभ दिश टकटक तकितहि रहब * अरि-आगमन प्रथम हम कहब
मृगयार्थी लक्ष्मण वन जयत * आश्रम शून्य तखन जौँ हयत
हम सीता काँ रहब अगोरि * दुष्ट हृदयकाँ मारब झोरि
सुनल जटायु - वचन रघुवीर * साधु कहल जानल अहाँ धीर

वृद्ध एक जन राखक सङ्ग * तैँ नहि होय मनोरथ भङ्ग
अङ्ग लगाय निमन्त्रित कयल * पञ्चवटी मे डेरा धयल
ततय कयल मन्दिर विस्तार * लक्ष्मण वीर महा बुधिआर
गङ्गा उत्तर थल भल जानि * निर्जन निरुपद्रव मन मानि
केरा कटहर बड़हर आम * फल अनेक वन कत कहु नाम
कन्द मूल फल लक्ष्मण आन * भोज्य वस्तु हो अमृत समान
सगर राति जागल बिति जाय * कोटवार धन्वी छोट भाय
तिनु जन सङ्गहि सङ्गहि जाथि * नदी गौतमी नीर नहाथि
लक्ष्मण आनथि भरि भरि वारि * रघुनन्दन आज्ञा नहिं टारि
तिनु जन सुखसौँ कयलनि वास * गृहसौँ शतगुण विपिन-विलास

सो०—श्रीप्रभु सौँ लक्ष्मण कहल, एकान्तहि कर जोड़ि।
ज्ञानसहित विज्ञान कहि, दिअ मन संशय तोड़ि॥
गोपनीय उपदेश सुनु, लखन कहल श्रीराम।
जे सुनला सौँ लोकक्काँ, भ्रमउस नहि तहि ठाम॥

रूपमाला

प्रथम माया - रूप कहि, हम ज्ञान - साधन कहब।
जानि ज्ञेय परात्मकाँ मन भयरहित नित रहब॥
आत्मबुद्धि शरीर आदिमे करथि जे व्यवहार।
सैह बुद्धिक नाम माया ताहि सौँ संसार॥

चौपाइ

देखल सुनल स्मरण हो भाव * से अनित्य मानक थिक आब

स्वप्न मनोरथ वितथ समान * ई शरीर मे आत्म – ज्ञान
तरु संसार मूल थिक गेह * मानि लेब मन निस्सन्देह
तकर मूल सुत - वनिता - बन्ध * सनयन जन मानिय मन अंध
नाम जनिक जानल ई गात्र * स्थूलभूत से पँचतन्मात्र
अहङ्कार मति इन्द्रिय सर्व्व * चिदाभास मन प्रकृतिक पर्व्व
हिनकर नाम क्षेत्र करु ज्ञान * जीव विलक्षण एहिसौँ आन
ओ परमात्मा आमय - रहित * ज्ञान तनिक सुनु साधन सहित
जीव परात्मा कौँ नहि भेद * निश्चय ज्ञात रहय नहि खेद
हिंसा - शून्य दया – संलीन * अहङ्कार - दम्भादि - विहीन
अकुटिल सकल अपन व्यवहार * सहथि परक आक्षेप प्रहार
गुरु - सेवन मन वचनेँ काय * भीतर बाहर शुद्ध बनाय
उत्तम कर्म्म मे थिरता वेश * मनमे हो न अधर्म्मक लेश
हम हम ई मति सत्वर छोड़ि * भ्रमसौँ सर्प होइ अछि जौँ
करयित करयित सज्जन संग * तखना हो ज्ञानोदय रंग
ज्ञानोदय सौँ संशय दूर * तिमिर रहय की उगलेँ सूर
स्वर्ग – वास ज्ञानामृत शर्म्म * सकल मूल थिक केवल धर्म्म
सदाचार जे जे सद्ग्रन्थ * मुक्ति युक्ति गुरु - सेवा पन्थ
श्रद्धा – हीन भक्ति नहि पाब * भक्ति–विमुख मे ज्ञान न आब
ज्ञान - रहित केँ दुर्ल्लभ मुक्ति * हमरे सेवा साधन युक्ति
विधिसन जौँ उपदेशक आब * सकल त्याग विनु मोक्ष न पाब
सुनल अनन्त शेष भगवान * रामचन्द्र सन वक्ता ज्ञान
प्राकृत जन की वर्णन करत * स्मृति पुराण अनुमति सञ्चरत

दोहा— कयल बहुत उपदेश प्रभु, लक्ष्मण मन आनन्द ।
किछु विषाद नहि चित्तमे, तुष्ट पुष्ट निर्द्वन्द ॥

इति श्रीमैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
आरण्यकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

चौपाइ

पञ्चवटी गोदावरि कात * आइलि सूर्पनखा उत्पात
कमल कुलिश अंकुश पद-रेख * अङ्कित अवनि रमनि से देख
जनु जगतीपति कयल निवास * सूर्पनखा मन काम विलास
गेलि कुटीतट गमयित भाँज * बन्द कि रहय भावि विधि-काज
काम-सदृश सुन्दर-छवि राम * सीता-लक्ष्मण-युत घन-श्याम
ओ पूछल राघवकाँ जाय * को दण्डक वन अयलहुँ हाय
के नृप थिकहुँ कहू की काज * मुनि सन वेष तेष नहि लाज
परिचय-निचय हमर सुनु कान * कवि-मुह काव्य कहत की आन
दशमुख-बहिनि थिकहुँ की लाथ * पतिक मरण रण रावण हाथ
खर दूषण छथि सतत सहाय * दल बल सहित समन्धिक भाय
भाय देल दण्डक-वन राज * रानी अयलहुँ अहँक समाज
सूर्पनखा भ्राताक दुलारि * आज्ञा हमर शकथि नहि टारि
कहलनि रावण वन निर्व्वाह * अभ्यागत मुनि मृगकैँ खाह
परिचय अपन कहल हम वेश * के तिनु जन पाहुन एहि देश
दशरथ-नृपति-तनय हम राम * हे वर-सुन्दरि जानिअ नाम
वैदेही थिकि वनिता मोर * अनुज हमर अनुरक्त किशोर

हमरा लोकसौँ अछि की काज * दण्डक - स्वामिनि कहु निर्व्याज
कामक किङ्कर कैँ कत लाज * लाजैँ अपन सिद्धि नहि काज
कामरूपिणी जानिय देव * स्वामिक सुख सम्बन्धैँ लेब
भाग्य परस्पर पुण्यहि पाव * समुचित भोग विरञ्चि मिलाब
काम-विवश मन किछु न सोहाय * करु विहार गिरि - गहवर जाय
कुसुमित वन वनप्रिय कल गान * सुख इन्द्राणी इन्द्र समान
उदित भाव तन मन नहि हाथ * धक धक छाती कर रघुनाथ
निज वन निज मन विहरब घूमि * सुधा सरस अधरासव चूमि
हृदयवेध कर कामक बाण * आलिङ्गन दय राखिय प्राण
भेल मात्र छल हमर विवाह * दशकन्धर - कर मृत मोर नाह
कि करब सुख हम दैवक घाड़ * अल्प वयस मे भेलहुँ राँड़
गओले गीत कहाँ धरि गाउ * राम काम-दुख हमर मेटाउ

सोरठा

कहलनि हँसि रघुनाथ, सुनु भुवनाधिक - सुन्दरी ।
करब हेतु की लाथ, सङ्गहि नारि पतिव्रता ॥
बाहर छथि छोट भाय, अभिप्राय तनिकहि कहब ।
ओ उठता खिसिआय, मानब नहि हठ करब तत ॥

चौपाइ

सूर्पनखा लक्ष्मण सौँ कहल * कत अपमान कामिनी सहल,
कुल विशुद्ध दशमुख मोर भाय * वनिता एहन भाग्य-फल पाय
ऋतुपति घटक काम पँजिआर * जेठ भाय पुन देल विचार

दण्डक-वनक विदित मलिकानि * हो सिद्धान्त भाग्य मन मानि
ई सुख समय रमय चलु नाथ * तन मन धन अर्पित अहँ हाथ
कहलनि लखन सुमित्रा - तनय * सुन्दरि सुमुखि विदुषि सुनु विनय
हम रघुनन्दन - चरणक दास * अहँकाँ यहि सम्बन्धसौँ हास
रानीसौँ चानी बनि जयब * पाछाँ अहाँ बहुत पछतयब

दो०—कहल राम सौँ फेरि, सूर्पनखा कामातुरा।
वञ्चक करह अँधेरि, हम कि अवज्ञा-योग्य जन ॥

चौपाइ

जनि बलसौँ जितइत छह काम * प्रथमहि तनिकहि खायब राम
एतगोट दर्प हमर वन वास * हमर न मन मे मानथि त्रास
सीतापर दौड़लि मुह बाय * धारण कयल भयङ्कर काय
चेष्टहि सूचित कर रघुनाथ * लक्ष्मण तीक्ष्ण खड्ग लेल हाथ
रह रह ठाढ़ि कोपसौँ डाँटि * नाक कान तनिकर लेल काटि
खन पड़ाइलि मन बड़ त्रास * घर थोकड़ी नहि भीखिक आस
खसयित पड़यित दौड़लि जाय * कनइत कनइत कह गेल भाय !
दौड़ दौड़ रे कटलक नाक * सूर्पनखा कानथि दय हाक
आयल काल हमर वन तीनि * नाक कानसौँ कयलक हीनि
खर दूषण त्रिशिरा नहि आनि * डुबि मर डुबि मर ठेहुनहि पानि
खर आगाँमे खसली जाय * छाती पिटि कह तोर बल छाय
मुनि वन मे हम छलहुँ निशङ्क * कत गोट लागल वंश कलङ्क
दशवदनक शमनहुँ कैँ त्रास * भेल भुवन भरि बड़ उपहास

शोणित लटपट सकल शरीर * गिरि गेरुक झरना गम्भीर
खर-दल हलचल देखि सुनि कान * रावणसौँ अतिबल के आन
क्षण वेदन सह कह की हाल * पुछथि कुपित खर लोचन लाल
के कयलक दुर्गति तोर आज * बुझि पड़ अपढ़ बताहक काज
चुप रह चुप रह की हो कानि * तनिकाँ मारि शीघ्र देब आनि
अछि कौन ठाम पता काँ पाय * हमरासौँ कत बचत पड़ाय
पुछता दशमुख होयत अवाक * सूर्पनखाक भेल की नाक
बड़ अपराध कयल मति हीन * मति-नहि रहय आयु जौँ छीन

षट्पद छन्दः

राम नाम थिक तनिक नारि वैदेही सङ्गहि।
लक्ष्मण भ्राता सहित अवनि-पति जानल रङ्गहि॥
बसथि गौतमी - तीर पञ्चवटि आश्रम सुन्दर।
सची सहित जनि आबि गेल छथि अवनि-पुरन्दर॥
लक्ष्मण रामक अनुज-कृत बड़ दुर्गति भेल की कहू।
विकट शपथ तोहरा थिकहु मारि आनि दय ओ दुहू॥

रोलाछन्दः

तनिक करब हम रुधिर पान कट कट कय खायब।
नहि तौँ छाड़ब प्राण हठहि यमपुर चलि जायब॥
सीताकाँ लय आनि दशानन काँ हम देबनि।
होयता भाय प्रसन्न बहुत धन सम्पति लेबनि॥
चौदह सहस सकोप चललि खर - दूषण - सेना।

प्रलय - काल जीमूत प्रबल मारुतयुत जेना ॥
एक कहय चल गमहि बाज नहि विजयक डङ्का ।
जायत दूर पड़ाय मानि मन मे मृति शङ्का ॥

चौपाइ

राम कहल लक्ष्मण शुनु शब्द * प्रलय - कालमे जेहन अब्द
अबइत अछि राक्षस - बल घोर * मार मार धर धर कर सोर
युद्ध भयङ्कर सम्प्रति हयत * खर-दल सकल विकल भय जयत
अहाँ सङ्ग मन मे न डरःथु * सीता गिरिगह्वर मे जाथु
चटपट सबहिक जयतनि प्राण * ई कहि राम धनुष लेल बाण
अक्षय भरल तीर तूणीर * सुप्रसन्न — मुख श्रीरघुवीर
गिरि - गह्वर पति - आज्ञा पाय * गेलि सीता सौमित्रि सहाय
पहुचलि सेना बजरल मारि * अस्त्र शस्त्र चल शर तरुआरि
केओ राक्षस कर धर पाषाण * गाछ उपारय केओ बलवान
रामचन्द्र पर से सभ फेक * प्रभु - कर - शर उपरहि से टेक
फेकलक अस्त्रसकल एक झोँक * रामचन्द्र शरसैँ सभ रोक
लीला सैँ सभ काटल राम * अस्त्र - विहीन कि कर संग्राम
राम चलाओल बाण हजार * विषधर सन के रोकय पार
जनिकाँ लागय रामक बाण * पलमे सङ्कल्पित लय प्राण
खर दूषण त्रिशिरा खिसिआय * आयल युद्ध करब सभ भाय
आध पहर धरि कयलक मारि * खसल समर-महि नयन निड़ारि
लक्ष्मण सीता देखल नयन * राक्षस विकट - युद्ध महि शयन

अति विस्मय मन हर्ष अपार * देखल पति - कृत रण-व्यवहार
जानकि रघुपति मिलि निज हाथ * रण-व्रण पोछथि कर गुण-गाथ
सूर्पनखा देखइत छलि मारि * विकल पड़ाइलि निज जन हारि
पाछाँ घुरि घुरि तकितहि जाथ * आतुरि लङ्का गेल समाय
दशमुख बैसल सभा लगाय * कह निज दुर्गति लाज न काय
लागलि चरणक निकट लोटाय * हमर एहन गति अपनैँ भाय
कह रावण उठ कह की काज * इन्द्र-वरुण-यम-कृत की काज
की कुवेर - कृत अनुचित कर्म्म * लेब खलबाय तनिक तन-चर्म्म
सूर्पनखा कह शुनु गुरु - भाय * से प्रताप गेल कतय मिझाय
कि कहब दुःख अपन हम आन * देखु विशलोचन नाक न कान
वनिता - विजित बहुत मद-पान * नृपति प्रकृति - पर रह कत ज्ञान
चारनयन सौँ नृपति विहीन * देखितहि दिन से कौड़ीक तीन
हरि आनह मन - इच्छित नारि * बल अभिमान करब के मारि
व्यसनाकुल राजा दशकण्ठ * सतत बनल सङ्ग दश विश लण्ठ
देखल हम रण रामक रङ्ग * सदल सकल खर - दूषण भङ्ग
राक्षस बहुत राम एक गोट * सभकाँ कय देलक लोट पोट
जनस्थानवासी मुनि लोक * मन प्रसन्न वन रोक न टोक
रावण कहल स्पष्ट कह बाक * कि कहब अनुनासिक नहि नाक
धयलह साप जानि जिब जौड़ि * छुटत कलङ्क कि खर्चहु कौड़ि
के थिक राम समर खर जीत * की बल दण्डक फिर कि निमित्त
की तोँ कयल तनिक अपराध * कहह अशुद्ध न अक्षर आध
सत्य कहै छी बड़का भाय * नदी गौतमी गेलहुँ नहाय

पञ्चवटी नामक मुनि - गाम * ततहि नियत वस सानुज राम
धनुष बाण कर धर श्रीमान * तेहन न सुन्दर त्रिभुवन आन
जटा सुवल्कल सुन्दर देह * पिता - वचन सौं त्यागल गेह
अपनै जेहन तेहन छोट भाय * सीता - रूप कहल नहि जाय
देखल न आँखि सुनल नहि कान * लक्ष्मी - रूप देल भगवान
रामचन्द्र कौं कहल बुझाय * काल देश क्रम सकल सुझाय
हम माँगल निज वनिता देह * धन सम्पत्ति यथेच्छित लेह
लङ्केश्वर छथि हमरा भाय * देव उपायन ततय पठाय
सीता बल सौं लेबय चहल * काल-विवश मन ज्ञान न रहल
लक्ष्मण रामक छोटका भाय * रामक अभिमत ओ खिसिआय
ओ काटल मोर नासा कान * क्षत्रिय जाति शूर मन मान
खर घर कहल गेलाहो जूमि * आयल एक न रणसौं घूमि
आँखि देखल हम युद्धक रीति * चाहथि लेथि त्रिलोककें जीति
करु जनु साहस दण्डक जाय * राम - शरानल शलभ समाय
कोटि रती छवि जीतनहारि * हुनि सङ्ग एक मनोहरि नारि
माया - छल - बल लाउ चोराय * प्रकट हयब तौं प्राणे जाय

सो०—सुनल वचन लङ्केश, दान मान सन्तोष दय।
निज गृह कयल प्रवेश, सूर्पनखा लङ्का रहलि ॥
निद्रा आँखि न राति, रावण - मन चिन्ता भरल।
राम मनुज एक जाति, खरदूषण - गण नाशकर ॥
थिकथि मनुष्य न राम, परमात्मा अव्यय अमल।
हमर विनाशक काम, विधि-प्रार्थित नररूप धर ॥

जौँ मृति तनिकहि हाथ राज्य करब बैकुण्ठ मे ।
नहि तैँ सहित समाज, लङ्कापति बनले रहब ॥
प्रभुसौँ करब विरोध, लड़ब भिड़ब रणमे मरब ।
से करता जौँ क्रोध, बनत काज सभटा हमर ॥

इति श्रीमैथिलचन्द्रकविरचिते मैथिलीरामायणे
अयोध्याकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

चौपाइ

रथमे जोड़ घोड़ बड़ जोर * चलल दशानन चिन्तित भोर
जत मारीच समुद्रक पार * पहुचलाह सत्वर अविचार
छल समाधि - गत ओ मारीच * से न जान जग ऊँच कि नीच
मुनि सन कयल सकल व्यवहार * निर्गुण ब्रह्म ध्यान विस्तार
छुटल समाधि देखल मारीच * रावण बैसल आँगन बीच
उठि मिलि कय पूजा उपचार * बैसला भेल कथा सञ्चार
अति चिन्ता मन कीथिक आज * एकसर अयलहुँ हमर समाज
काज हमर जे होयत हाथ * से कय देब करब नहि लाथ
न्याय कहब जे होय न पाप * बिनु बुझलैँ जिब थर थर काप
रावण कहल अहाँ हित भाय * कयलक शत्रु बहुत अन्याय
पुरी अयोध्या दशरथ नाम * तनिकर जेठ तनय छथि राम
बनवासक आज्ञा देल बाप * वन आयल छथि सत्य — प्रताप
वनिता सहित सुहित सङ्ग भाय * पञ्चवटी वन कुटी बनाय
खर दूषण त्रिशिरा बल गोल * सभकाँ मारल बसि मुनिटोल

कहइक पड़ल वचन लजाक * सूर्पनखा काँ कान न नाक
एहि सँ होयत की अपराध * समर - निहत भेल वीर विराध
मुनि निर्भय कर जयजयकार * कुल-लज्जा सबहिक शिर भार
तनिकर गृहिणी लेब चोराय * अहँ साधक बनि रहब सहाय
माया - हेम - हरिण बनि जाउ * चञ्चल सञ्चरि रुप देखाउ
आश्रम बाहर लक्ष्मण राम * साधब अपन काज ओहि ठाम

सो०—के देलक उपदेश, सर्व्वनाश कर वचन सौँ ।
सुनु सुनु नृप लङ्केश, अरि थिक से जन बध्य थिक ॥

चौपाइ

रामक कि कहब सहज स्वभाव * थर थर तन जौँ मन पड़ि आब
कौशिक लयला हिनका सङ्ग * हम देखल नेनहि मे रङ्ग
फेकल से शर तेहन तानि * शर-वश खसलहु जलनिधि-पानि
शत योजन पर अद्‌भुत बात * भय थरथर तन चलदल - पात
स्मरण मात्र सौँ हम गत - गर्व्व * रामाकार देखि पड़ सर्व्व
दण्डक वन गेलहुँ मन आनि * हरिण-स्वरूप बनल रिपु जानि
तन विचित्र अति तीव्र विषाण * परशहि रह नहि प्राणिक प्राण
देखितहि तिनु जनकाँ हम आँखि * मारय दौड़लहुँ मन किछु राखि
कपट चिन्हल ईश्वर रघुवीर * हृदयमध्य मोरा मारल तीर
मुह सौँ शोणित खसल भभाय * खसलहुँ उदधि मध्य हम आय
सतत बनल भय रामक रहय * अयला अयला जनि केओ कहय
सपनहुँ मे हम देखी राम * जगितहु ठाढ़ देखै छी ठाम

रामाकार भेल मन - वृत्ति * बाहर वृत्तिक गमन निवृत्ति
तनिसौँ आग्रह तजि घर जाउ * बलसौँ प्रबल न काल जगाउ
तजि विरोध बनु रघुपति - दास * लङ्केश्वर तौँ छूटत त्रास
मुनि-मुख सुनल विभुक अवतार * अन्तर बहुत विरञ्चि विचार
दशमुख जैँ विधि मारल जाय * निक थिक से कर्त्तव्य उपाय
मन नहि मानब मानब राम * नारायण अव्यय सुखधाम
जाउ बूझि घर परिहरु मारि * गेलहुँ वर्षा बाँधिक आरि

दो०—कहल जखन मारीच तहँ, रावण हित उपदेश
उत्तर कहलनि से तकर, कहइत छह तौँह वेश

चौपाइ

परमात्मा जौँ जन्मल राम * तनिकाँ हमर निधन मन—काम
ब्रह्महु काँ मन मे निक लाग * कि करब आयल हमर अभाग
संकल्पक तनिकाँ नहि हानि * सीता हरब मरब हठ ठानि
रण-महि-मरण अमर - पद जाइ * राक्षसेन्द्र रण - विमुख नुकाइ
रामक विजय होयत संग्राम * हमरो सुयश विदित सभ ठाम
दुइ मे एक सत्य शुनु हयत * सीता - लाभ जीव की जयत
मृग विचित्र बनु सत्वर तात * जैँ हो दुनु जन आश्रम कात
ठकयित आश्रम दूर लै ।जाह * इच्छा तोहर तखन पड़ाह
कहल हमर ९तबा टा करह * आश्रम सदा सुखित मन रहह
जौँ नहि करबह भय सौँ काज * घुरि नहि जयबह अपन समाज
देखह हाथ तीष तरुआरि * बड़ पाखण्ड देवहु हम मारि

सुनि मन कर मारीच विलाप * रावण-कर-मरणौँ अति पाप
रामक कर मरणौँ श्रुति - युक्ति * साधन विनु हम पायब मुक्ति
कह मारीच सुनिय लङ्केश * कहल करब चलु चलु ओ देश
रावण रथ मारीच चढ़ाय * रामाश्रम रथ गेल बढाय
मायामृगक कनक - वर रङ्ग * रजत - विन्दु सौँ शोभित अङ्ग
नील रत्न सन सुन्दर आँखि * चंल-चञ्चल जनु उड़ विनु पाँखि
रत्नशृङ्ग मणिमय सभ खूर * चपला वदन चमक परिपूर
आश्रम निकट टहल घुमि घूमि * गगन निहारि निहारय भूमि
मायामृग कर तेहन उपाय * सीता — मन मोहित भय जाय
क्षणमे निकट क्षणहिमे दूर * करथि दशानन - आज्ञा पूर

इति श्रीमैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
आरण्यकाण्डे षष्ठोध्यायः ॥६॥

चौपाइ

राम बुझल दशवदन - प्रपञ्च * वैदेहीकेँ कहलनि शञ्च
अहँ एक माया - देह बनाउ * कुटी-मध्य कल कौशल जाउ
एक वर्ष रहु अग्नि समाय * पुन आयब लेब सङ्ग लगाय
रावण-वधक निकट अछि काल * होयत माया - चरित विशाल
प्रभु - माया माया विस्तारि * मायामयि बनि गेली नारि
हेम - हरिण सुनलहुँ नहि कान * की रचना - कारक भागवान
माता हँसि कहलनि प्रभु आज * मृग एक आयल अपन समाज
हेमक हरिण रत्न तन विन्दु * पकड़ल जाय अवनि-गत इन्दु

पालब आश्रम राखब बाँधि * देब भक्त जल लेल से काँधि
धनुष बाण लय चलला हाथ * लक्ष्मण काँ कहलनि रघुनाथ
वैदेही — रक्षा अहाँ करब * नहि आश्रम बाहर सञ्चरब
अति मायावी राक्षस घोर * दण्डक बन मे बसइछ चोर

छन्द हरिपद-गीत काफी

कनक-मृग कतहु सुनल नहि कान ।
थिक मारीच कपट सौँ आयल सुनु भ्राता भगवान ॥
राम कहल तनिकहु हम मारब हयता जौँ मारीच ।
होयत हरिण हरषि हम आनब बाँधब आँगन बीच ॥
सीता - रक्षा मध्य दक्ष रहु ई कहि चलला राम ।
माया - मृगपर मायाधीश्वर जनिका रूप न नाम ॥
भक्त - काज लीला विस्तारथि पूर्णकाम परमेश ।
मृगसौँ ओ वनिता सौँ तनिका अछि नहि काजक लेश ॥
क्षण क्षण निकट दूर मृग दौड़य तखन चलाओल तीर ।
थिक राक्षस निश्चय मन मानल रामचन्द्र रघुवीर ॥

गीत

कपट-मृग खसल महीमे घूमि ।
रामचन्द्र - शर तनिकाँ लागल पल विलम्ब कहि जूमि ॥
हा हम मुइलहुँ लक्ष्मण दौड़ू कहि कहि मरती बेरि ।
से मारीच अपन तन धयलक जनन मरण नहि फेरि ॥
राम नाम उच्चारण हो जौँ जनकाँ मरणक काल ।

प्रभु-सायुज्य-प्राप्ति हो तनिकाँ कि कहब भाग्य विशाल ॥
तनिकाहि देखइत तनिकहि शरसौँ देल से प्राण गमाय ।
असुरदेह सौँ तेज - पुञ्ज बढ़ि प्रभु - तन गेल समाय ॥
अमर सकल विस्मय मन मानल मुनि हिसक छल चोर ।
रामाकार वृत्ति भेल तनिकाँ मुक्ति सुयश भेल शोर ॥

सो०—चिन्तातुर-मन राम, कयल हमर अनुकरण खल ।
सुनि सीता तहि ठाम, की करती हमरा विना ॥

हरिपद छन्द-गीत काफी

जनकजा सुनलनि अपनहि कान ।
हा लक्ष्मण दौड़ू हम मुइलहुँ रहल उपाय न आन ॥
अयि देवर असुरार्दित भ्राता छथि सुनु आतुर हाक ।
जाउ विलम्ब पलो भरि करु जनु पड़य चहै अछि डाक ॥
लक्ष्मण,कहल वृथा चिन्ता मन असुर मुइल बलवान ।
तीनि-लोक-नाशक बल जनिकाँ के अछि राम समान ॥
दीन वचन रघुनन्दन कहता हो नहि चित्त प्रतीति ।
परमेश्वर - दारा वैदेही जनु करु मन भय - भीति ॥

गीत मलार

सकल कपट हम जानल मन मे ।
स्त्रीहर्त्ता अहँकैँ रघुनन्दन नहि जनइत छल छथि हा सपनमे ॥
भेल मनोरथ लाभ अहाँकाँ भरत शिखाय पठाओल वनमे ।
भरत अहाँक अधीनि होयब नहि वरु हम प्राण त्यागि देब छनमे ॥

हा गुणनिधि विधि बड़ दुख देलहुँ मृतक मारि यशलाभ कि जनमे।।
झरि झरि पात खसय तरुलति सौं सकरुण सीता कोप - रोदनमे।
जाय मिलब हम सौदामिनि सनि रामचन्द्र नवसुन्दर घनमे।।
जनक जनक मिथिला - महि नैहर ज्ञानभूमि सभ लोक सुजनमे।

चौपाइ

शुनि लक्ष्मण मूनल दुहुँ कान * बड़ अनर्थ दुख देल भगवान
धिक धिक कोपमूर्त्ति कों आज * वितथ वचन बजयित नहिं लाज
आगत विपति सुमति गात भङ्ग * समय विनाशक बुझि पड़ रङ्ग
ई कहि वनदेवी सौं कहल * वचन बाण -- वैदेहिक सहल
हम कहइत छी दुहु कर जोड़ि * सीताकाँ जाइत छी छोड़ि
सोंपि देल अछि अपनैंक हाथ * हम चललहुँ जत छथि रघुनाथ
धनुष - रेख - बाहर जनि जाउ * वञ्चक वचन न किछु पतिआउ

सवया छन्दः

आश्रम शून्य जानिकैं रावण, अयला दण्डी बेष बनाय
शिखी उपानहि दिव्य कमण्डलु, पहिरल गेरुआ वस्त्र रंगाय
भिक्षुक जानि भक्तिसौं जानकि, कयलनि विनय - प्रणति कयवार
कन्द मूल फल भोजन देलनि, स्वागत पुछल अतिथि - व्यवहार
भोजन कयल जाय सुखसौं मुनि, अबितहिँ छथि हमरा प्राणेश
तनिकहुँ अपने आशिष देबनि, निकटहि छथि नहि देश विदेश
तनिकासौं प्रिय आदर होयत, ज्ञान - कथादिक विविध विचार
शमस्वभाव अपने काँ कि कहब, नारायणमय सभ संसार

दोबय छन्द

के अहँ थिकहुँ कमल-दल-लोचनि, थिकथि कहू के भर्त्ता ।
कानन की कारण सौँ अयलहुँ, कानन आबि कि कर्त्ता ॥
बड़ बड़ घोर निशाचर सञ्चर, पद पद आपद धयले ।
अपन देश कारण की त्यागल, सुमुखि उचित नहि कयले ॥
सीता कहल अयोध्याधिप नृप, छल छथि दशरथ - नामा ।
तनिकर तनय सर्व्ववर - लक्षण - लक्षित पति गुण - धामा ॥
राम नाम ओ तनि लघु भ्राता, लक्ष्मण सन के आने ।
पिता - वचन सौँ दण्डक अयला, चौदह वर्ष प्रमाणे ॥
हम पौलस्त्य अमर-अरि रावण, अहँक नाम सुनि अयलहुँ ।
राज्यपाट सौँ रहित राम छथि, तनिक सङ्ग की धयलहुँ ॥
रथ पर चढ़ू चलू अहँ जानकि, क्षणमे लङ्का जायब ।
लङ्का-विभव कहब की अहँकाँ, रानी मान्य कहायब ॥
सुनल वचन सीता भीता सनि, कहल दुष्ट रे मरबै ।
रघुनन्दन-शर-अनल-राशि मे, शलभ जकाँ पड़ि जरबै ॥
शश वश करथि सिंह-गृहिणी काँ, तेहन तोर मन आशा ।
रामक निकट ठाढ़ खल रहबह, देखत लोक तमाशा ॥

चौपाइ

रावण तखन उठल खिसिआय ❋ अपन भयङ्कर रूप देखाय
दश मुख विश भुज अति विस्तार ❋ प्रलय-काल-घन सन छवि-भार
वनदेवीगण गेलि पड़ाय ❋ लहुत त्रास ओ खाय न जाय

नख सौँ धरणि विदारण कयल * सीताधार महीरथ धयल
निज कल्याण - कल्पतरु काट * रथ लय उड़ल आकाशक बाट
हा रघुनन्दन सीता भाष * अहँ विनु प्राण हमर के राख
हा लक्ष्मण कहि कहि कत कानि * अवनि निहारथि भय मन आनि
सीता - क्रन्दन सुनि खगराज * कहल अनर्थ भेल विधि आज
पर्व्वत सौँ दौड़ल तिष - लोल * रह खल ठाढ़ कयल से घोल
लोकनाथ - गृहिणी काँ हरल * जयबह कतय दृष्टि जे पड़ल
आश्रम छथि नहि एको भाय * तस्कर सीता हरलय जाय
पुरोडाश श्वानक जनु भक्ष * उड़य पिपील गगन लय पक्ष
कोल चलाओल से घुरिघूरि * दशवदनक स्यन्दन देल चूरि
चरणहि सौँ मारल सभ घोड़ * चाप चुरल बल कयल न थोड़
सीता काँ रावण देल छाड़ि * दौड़ल खल तरुआरि उखाड़ि
पक्षहीन रावण - कृत गृद्ध * हुक हुक प्राण करथु की वृद्ध
सीता काँ दोसर रथ आनि * उड़ल चढ़ाय राम भय - मानि
हा रघुनन्दन मूनल आँखि * प्रभुता अपन देल कत राखि
जगन्नाथ हमरा प्राणेश * से हम जायब राक्षस - देश
हा लक्ष्मण किछु अहँक न दोष * भल कहइत हम कयलहुँ रोष
बीर चलाउ अहाँ रघुनाथ * पड़लहुँ आबि कसाइक हाथ
दशकन्धर खल हरलय जाय * मारू खलकेँ बाण चढ़ाय
अलङ्करण किछु अपन उतारि * बाँधल खण्ड उत्तरी फारि
सीता कनइत देल खसाय * चिन्ह सन्देश राम - तट जाय
छल पर्व्वत पर बानर पाँच * बालि-बन्धु-कृत मन अति आँच

से सुग्रीव देल रखबाय * ओ रथ उच्च गगन पथ - जाय
उतरल सागर लङ्का वास * मन मे त्रास उपर मुख हास

दोवय छन्द

जाय अशोकवाटिका रावण, राक्षसि लोकक पहरा।
सीता काँ सभ तकइत रहिहै, आबथि ओ नहि बहरा॥
मान्यबुद्धि मन मानि दशानन, गेल छोड़ि अनठाम।
कृशतनु शुष्कवदनि कह सीता, हा रघुनन्दन राम॥

इति श्री मैथिक चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
आरण्यकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

रूपमाला

कपट - मृग मारीच मारल, घुरल घर रघुराय।
देखल अनइत दूरसैँ मन - विकल लक्ष्मण भाय॥
कयल लीला सकल अपनहिँ, करथि अपनहिँ शोच।
ई मनुष्य - चरित्र विस्तृत, करथि लोकक रोच॥
त्यागि कैँ प्राणेशि अयलहुँ, वत्स कहु का काज।
दुष्ट खयलक जानकी कैँ, गेल लय की आज॥
देल सोपि विदेहजा काँ, दोष सकल अहीँक।
बहुत राक्षस भ्रमय वनमे, चोर अति निर्भीक॥
कहल दुहु कर जोड़ि लक्ष्मण, नाथ हमरे दोष।
कहल सीता हचन जे जे, तीर सैँ से चोष॥
प्रभुक आगाँ कहि न होइछ, सहल हम भरि पोष।

कानि कानि अनर्थ कहलनि, कयल दुस्सह रोष ॥
दौड़ु लक्ष्मण यहन राक्षस - वचन पड़ितहिँ कान।
की कहू से बताहि जेहन, कहथि आनक आन ॥
देवि चिन्ता कयल जाय न, बहुत कहल बुझाय।
कहथि सङ्कट नाथ पड़ला, जाय होउ सहाय॥
की कहब रघुनाथ हमरा, वचन भेल न शूनि।
चाप शर लय शीघ्र चललहुँ, कान आँगुर मूनि ॥
राम कहल तथापि लक्ष्मण, बहुत अनुचित भेल।
स्त्री-कथा की सत्य मानल, किछु विचारि न लेल ॥

सो०—चित चिन्तातुर राम, देखल आश्रम शून्य से।
हा जानकि यहिठाम, त्यागि कतय गेलहुँ विकल ॥

गीत—वाननी छन्द

हाय रे कतै गेली विदेह - भूप - बाला।
वन-दुख अनुभूत आइ शून्य पर्णशाला ॥
विधिओ नहि निधन देथि वृद्धि आधि-माला।
विपतिहु मे विपति घोर दुर्दशा विशाला ॥

गीत

हा हंसगती, विधि देल वन मे बड़ विपती।
हेम - हरिण पाछाँ हम दौड़लहुँ जानि पड़ल नहि एक रती ॥
पिता उचित कयलनि वन देलनि पुरी अयोध्या वर नृपती।
मृग पक्षी वनतरु वनदेवी कहु कहुँ सीता देखल लती ॥

जिव सनि धनि हा हमर हेड़ाइलि दैव हरल मोर सकल मती।
धिक धिक प्रभुता धिक धिक जीवन निज मति भय गेल ग्रहन छती।
रामचन्द्र कह हा प्रिय जानकि एत गोट दुःख कोना सहती ॥

चौपाइ

प्रभु सर्व्वज्ञ देखथि सभ नयन * परमानन्द वियोग अचयन
निरहङ्कार अखण्डानन्द * निर्म्मल अचल चलथि निर्द्वन्द
जाया हमर इ करथि विलाप * निज माया - विस्तार - प्रताप
वन वन फिरथि न मन विसराम * तकयित सीता विरही राम
देखल टूटल रथ पथ वेश * उजड़ल पजड़ल जत तत केश
लक्ष्मण देखु भेल छल 'मारि * नाना अस्त्र चलल तरुआरि
शोणित सौँ धरणी गेलि पाटि * काक श्रृगाल शकल नहि चाटि
टूटल धनुषक देखिय खण्ड * युद्ध भेल अछि एतय प्रचण्ड
सीता काँ जे हरलय जाय * तनि सौँ जनि लेल आन छोड़ाय
पर्व्वत सन शोणित भरि अंग * विकल पड़ल मूर्छित रण रंग
शुनु लक्ष्मण राक्षस ई सैह * सीताकेँ हरि खयलक जैह
तृत शयन कर निर्ज्जन आबि * देत दुःख पुन अवसर पाबि
धनुष बाण अहँ सत्वर लाउ * हिनकाँ यमपुर झटिति पठाउ
शुनि जटायु कहलनि हे राम * रावण सौँ हमरा संग्राम
थिकहुँ जटायु निकट प्रभु आउ * वर्त्तमान वार्त्ता बुझि जाउ
रावण हरलक सीता हाय * गगनक पथ रथ चलल उड़ाय
सीता-करुण - वचन शुनि कान * दौड़लहुँ हरब दशानन - प्राण

रथ देल चूरि मारि देल घोड़ * तोड़ल धनुष प्रताप न थोड़
सीता छिनि लेल हम नाथ * विकल भेलहुँ तरुआरिक हाथ
से विपन्न कयलक विनु - पक्ष * प्रभु सपक्ष विभु - धाम समक्ष
मन प्रभु-चरण-कमल अनुरागि * इच्छा होइछ तन दिअ त्यागि
हम छी गृद्ध वृद्ध भेल देह * समुचित त्यागी विश्व - सिनेह
मरण - समय प्रभु सोझाँ ठाढ़ * होयत मुक्त विपति छुट गाढ़
चरणैँ परश हमर करु नाथ * मरण शरण श्रीप्रभु गुणगाथ
हँसि परसन प्रभु परसल गात * वृद्ध मान्य जिमि दशरथ तात
वृद्ध गृद्ध तत त्यागल प्राण * यहन सभाग्य विश्व के आन
लक्ष्मण काष्ठ चिता निर्माय * अनल आनि पुन देल जलाय
स्नान कयल विधि दूनू भाय * कहयित छल छथि हमर सहाय
गुणगण कहि कहि कर प्रभु शोच * प्रभु काँ बड़ मन भक्तक रोच
खण्ड खण्ड कय हरिणक मांस * चत्वर बितरल पक्षिक ग्रास
बहुत पक्षि मिलि सुखसौँ खाथु * खगपति तृप्त परम — गति जाथु
विष्णुक सम खगपति तन पाबि * परमेश्वर - स्तुति कर से गाबि

हरिपद छन्दः । गीतम्

कमला - रमणम् नाभि - सरोरुह - विधि - शरणम् ।
नौमि महेन्द्रविबुधतस्सततं संसेवित - पङ्कज - चरणम् ॥
धरणी-भार—विनाश-हेतवे सङ्कलित - रावण - मरणम् ।
अप्रमेयमगणितगुणमीशं पितृवचनेन वनभ्रमणम् ॥
मायानिज — लीलाविस्तारं हतखरदूषण संहरणम् ।

अचलमगोचरमणुतोप्यणुमथ माया-हेम हरिण-हरणम् ।
त्वामिह राम जने किल मादृशि गुणनिधिमतुलकृपाकरणम् ॥

दो०——ब्रह्म - सुपूजित - पद तखन, खगपति से गेलाह ।
रामाज्ञा सौँ हर्ष मन, विस्मित सुर भेलाह ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
आरण्यकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

दोबय छन्दः

रामचन्द्र वैदेही — विरही प्राप्त वनान्तर जखना ।
घोर कबन्ध बाहु योजन भरि राक्षस देखल तखना ॥
पड़ला तकरा बाहुपाश मे सानुज देखल आँखि ।
की कर्त्तव्य कहू कहु लक्ष्मण प्रभु उठला ई भाखि ॥
चरण-मौलि सौँ रहित लोथ अछि, वक्ष - स्थलमे आनन ।
आन उपाय रहल नहि सम्प्रति, खाय चहै अछि कानन ॥
लक्ष्मण कहल खड्ग सौँ हिनकर, बाहु दुहूटा काटी ।
एहन निशाचर सुनल कान नहिँ, की विश्वक परिपाटी ॥
रामचन्द्र तनिकर दक्षिण भुज, लक्ष्मण काटल बामा ।
विस्मित दैत्य पुछल भुज-कर्त्तक, के दुहु जन गुणधामा ॥
पुरी अयोध्या दशरथनन्दन, राम लखन दुहु भ्राता ।
एतय विपिन सौँ प्राणवल्लभा हरलक खल दुखदाता ॥
तनिकहिँ तकइत तकइत यहिवन, तुअ भुज पञ्जर अयलहुँ ।
प्राण - त्राण हेतु भुज काटल, सङ्कट सौँ बहरयलहुँ ॥

विकट-रूप तौं के छह से कह, यहन देखल हम आजे।
श्रवणहुँ नहि छल तोहर रूप ई, देखल कानन - राजे ॥
हम गन्धर्व्व - राज शुनु हे प्रभु, यौवनदर्प्पित भेलहुँ ।
अष्टावक्र देखल हम जखना, तखना हम हँसि देलहुँ ॥
शाप देल तैं राक्षस भेलहुँ, तुष्ट कहल भल हयबह ।
त्रेता रामचन्द्र - दर्शन सौं अपन रूप काँ पयबह ॥
इन्द्रक हम अपराधी भेलहुँ, कयलनि अशनि - प्रहारे ।
माथ पयर सभ पेट समायल, बाहु रहल व्यवहारे ॥
हम अवध्य ब्रह्माक देल वर, मुइलहुँ नहि तत्काले ।
जठर मध्य मुह हयतौ तोहरा, कहलनि इन्द्र दयाले ॥

चौपाइ

मल; भेल भल भेल कटि गेल बाँहि * रामचन्द्र प्रभु देल निवाहि
मोर मुह काठैं भरि दिअ आब * ताहिमे अनलक सङ्गति पाब
जरि जायब हम पायब रूप * पूर्व्व जेहन छल हे विभु—भूप
लक्ष्मण तेहन कयल तत्काल * भेल पुरुष एक कान्ति विशाल
सर्व्वाभरण—विभूषित देह * मनसिज सन सुन्दर छवि - गेह
नत साष्टाङ्ग भक्ति - मति - धाम * रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम
स्तुति कत कयल हाथ दुहु जोड़ि * परमेश्वर देल बन्धन तोड़ि
धनुर्व्वाणधर श्यम शरीर * जटिल सुवल्कल भूषण वीर
जेहन देखि पड़ अविरल ध्यान * तेहन सतत रह लोभ न आन
प्रभु शवरी सिद्धा यहिठाम * कहइक छोटि जाति ई नाम

भक्तिस्वरूपा से बड़ बूढ़ि * प्रभु - सेवा मे अति आरूढ़ि
रामचन्द्र कइलनि अहँ जाउ * मुनिजन - गम्य धाम कँ पाउ
सुनि प्रभु-वचन चलल गन्धर्व * तनिकर पूर्ण मनोरथ सर्व

सोरठा

चढ़ि रथ भानु समान, राम राम रटयित वसन।
धन्य धन्य भगवान, जे तारल खल अधम कँ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
आरण्यकाण्डे नवमोऽध्याय समाप्तः ॥९॥

चौपाइ

ओ वन छोड़ि वनान्तर प्राप्त * सीता - विरह - अग्नि मन व्याप्त
शबरी देखल प्रभुक स्वरूप * आइलि आनन्दमयि चुप चूप
मन एकाग्र सनक सन केश * दिनकर - कान्ति तपस्विनि - वेश
राम-चरण पर धयलनि माथ * कह जय जय सानुज रघुनाथ
पुलक शरीर नयन बह नोर * कह जय जय जय श्यामल गोर
निकटहि कुटी देखक थिक ओह * नाथ परशमणि हम छी लोह
हम कुवस्तु जन जन विख्यात * प्रभु रवि-चन्द्र-किरण — संघात
शवरी - भक्ति विवश श्रीराम * हर्षित गेला तनिकर धाम
भल भल जल लय पयर धोआब * से जल लय लय माथ चढ़ाब
कन्द मूल फल भल भल आन * अतिशय प्रेम - मगन भगवान
खाथि कहथि अमृतक अभिमान * हरल यहन रसना रस जान

गीत दोवय छन्दः

कि कहब कारणी, हे प्रभु, हम शवरक घरणी ।
चारू पन हम वनहि गमाओल, विषय - व्याध हम जनु हरिणी ॥
ई संसार — समुद्र तरब हम, पाओल प्रभुक चरण तरणी ।
माया - मानुष भूप - शिरोमणि, श्याम गोर छवि की वरणी ॥
निर्गुण ब्रह्म सगुण बनि अयलहुँ, मन आनन्द अमर धरणी ।
योग - अनल जरि तत्पद पायब, जतय न फेरि जनन मरणी ॥
जय जय रामचन्द्र जय लक्ष्मण, माया पन्नगि हम भरणी ॥

चौपाइ

गुरु महर्षि छल छथि यहि ठाम * से सब गेला ब्रह्मक धाम ॥
चलयति तनिकाँ कयल प्रणाम * ओ कइलनि थिर रह यहि ठाम ॥
राक्षस लोकक मारण काम * अओता रघुनन्दन यहिठाम ॥
सम्प्रति चित्रकूट गिरि वास * भक्तिमती तोर पूरत आस ॥
यावत आवथि विभु रघुवीर * तावत राखह अपन शरीर ॥
तनिकर दर्शन जे छन प्राप्त * जयवह तत्पद देह समाप्त ॥
जेहन कहल छल सुगुरु महान * तेहन कयल छल अपनॅक ध्यान ॥
पुरल मनोरथ देखल आँखि * हम कृत्यकृत्य वृथा की भाखि ॥
नहि दासीत्व विषय अधिकार * तदपि कयल प्रभु हमर उधार
यावत योग - अनल हम जरब * प्रभु रहु निकट विकट तम तरब

सोरठा

प्रभु पम्पासर जाउ, किष्किन्धा सुग्रीव छथि।
सीता - वार्ता पाउ, करु चरित्र माया - रचित ॥
प्रभुपद-कमल निहारि, महाभक्ति सम्प्राप्त से।
योग-अग्नि तन जारि, भक्तिमती कयलनि तथा ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकविविरचिते मैथिली रामायणे
आरण्यकाण्डे दशमोऽध्यायः ॥१०॥
आरण्यकाण्डः समाप्तः ॥३॥
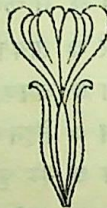
श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्दा झा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

किष्किन्धाकाण्ड

किष्किन्धाकाण्ड ।
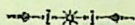
पृथ्वीछन्दः

भ्रमन्निविड़काननम्बहुलभोगिपञ्चाननं
सतीजनशिरोमणिञ्जनकजां हि पृथ्वीजनिम् ।
स्मरन्नतुलविक्रमः श्रितकनिष्ठबन्धूत्तमो
ददातु कुशलं सदा जगति दत्तमायाभ्रमः ॥१॥
सुग्रीवबान्धवभयोत्थितघोरदुखः
पाथोधिशोषणमहाबलकुम्भयोनिः ।
श्रीमद्रघूत्तमविलोकनदुःखशोषः
पायात्स मारुतसुतो धृतविप्रवेषः ॥२॥

चौपाइ

लक्ष्मण - सहित राम रणधीर * गेला पम्पा - सरवर — तीर
मन विस्मययुत भेल तहिठाम * सानुज प्रभु कयलनि विश्राम
एक कोश परिपूरित वारि * हंसप्रभृति खग वस जलचारि
नित्यकृत्य कय कृत - जलपान * पुन उठि दुइजन कयल प्रयाण
ऋष्यमूक पर्व्वत लग गेल * कपि सुग्रीव से देखयित भेल
गिरि–शिखरस्थ बहुत भय पाय * के ई थिकथि बुझल नहि जाय

वल्कल वसन जटा शिर राज * तकयित तरुवन की अछि काज
धनुष बाण कर वीर महान * की वृत्तान्त न हो अनुमान
मन्त्री चारि विचारिय मन्त्र * अवयित छथि दुओ वीर स्वतंत्र
की जनु वैरि पठाओल बालि * जयता हमर जीव की घालि
जाउ निकट वटु बनि हनुमान * साधु असाधु करू मन ज्ञान
जौं अनिष्ट बुझला सौं आब * युगुतिहि तेहन जनायब भाव
गमहि पठायब राखब प्राण * से शुनि ततय गेला हनुमान
ब्राह्मण वेष सुलेख बनाय * विनय सदय गुणमय सन्न्याय
पुछल अमल के पुरुष पुराण * अहँ कहु विश्ववीज भगवान
ईश्वर - लक्षण - लक्षित वेष * माया - मानुष रूप विशेष
भूमि - भार - हारक अवतार * दुहु जन मुहसँ परम उदार
जगन्नाथ क्षत्रिय तन धयल * भ्रमयित वन आनन्दित कयल
अपनैँ नारायण नहि आन * हमरा यहन होइछ अनुमान
प्रतिपालक प्रभु धर्म्मक सेतु * एत आगमन क बुझल न हेतु
से शुनि प्रभु लक्ष्मण सौँ कहल * तखनुक उचित समय जे रहल
ई वटु पटु पण्डित बुधि वेश * सुवचन - रचन अशुद्ध न लेश
ई कहिकै तनिकाँ दिश ताक * सुनु वटु उत्तर दैछि अहाँक
दथरथ नृपक पुत्र हम राम * अनुज हमर ई लक्ष्मण नाम
अयलहुँ दण्डक कहलनि तात * सङ्ग सती सीता विख्यात
तनिका छलसौँ हरलक चोर * प्राणाधिक प्रेयसि से मोर
हुनका तकइत अयलहुँ आज * के अहँ ककर कहू की काज
से शुनि विहित वचन कह फेरि * श्याम गौर मुख - नीरज हेरि

ई गिरि पर छथि से कपिराज * चारि मन्त्रवर तनिक समाज
बालिक भाय नाम सुग्रीव * देह दूइ एके जनु जीव
काम कालगति कहल न जाय * सोदर कयल अकथ अन्याय
जेठ भाय लेल सम्पति नारि * विकल पड़ल छथि बालिसौं हारि
ऋष्यमूक गिरि शापक भीति * एतय न तैं कय शकथि अनीति
पवनक तनय नाम हनुमान * हम सुग्रीवक मन्त्रि प्रधान
तनिक सङ्ग प्रभु मैत्री करिय * मित्र मित्र मिलि आपद तरिय
प्रभु हम सत्वर चललहुँ ततय * रुचि हो तैं चलु ओ छथि जतय
कहल राम हम मैत्री करब * तनिकर कष्ट विकट झट हरब
अकपट प्रकट रूप सभ कहल * सुग्रीवक वृत्तान्त जे रहल
हमरा काँध चढ़िय दुहु भाय * कपिपति निकट देब पहुँचाय
प्रभु सौं जेहन कहल हनुमान * सानुज तेहन कयल भगवान
पर्व्वत - शिखर उपर श्रीराम * जाय कयल तरुतर विसराम

दो०—मुदित मनोरथ सिद्धि सन, अति हर्षित मन आज ।
महावीर कहु कहु कुशल, पुछल चकित कपिराज ॥

चौपाइ

हाथ जोड़ि कहलनि हनुमान * छथि अनुकूल विष्णु भगवान
आधिक अवधि अन्त दिन आज * से प्रभु अयला अहक समाज
करु करु मैत्री कपिपति जाय * आनल हम निज काँध चढ़ाय
साक्षी अनल बनल रहु मित्र * सकल अमानुष राम चरित्र
संक्षेपहि कहलनि हनुमान * सानुज राम थिकथि भगवान

निर्भय चलू मित्रता करिय * बालिक गर्व्व सर्व्व अहँ हरिय
मन अति हर्षित ततय कपीश * गेला जतय राम जगदीश
तरु-वर - शाखा लय कँहु हाथ * देल ताहि बैसला रघुनाथ
कुशल सकल दुझि बैसला दान्त * लक्ष्मण कहल सकल वृत्तान्त
सूनि सुग्रीव राम कैँ कहल * सब विधि करब सकल हम टहल
वैदेही जैँ विधि जे देश * अति सत्वर बुझि कहब सन्देस
सतत सहाय महा रण काज * अपनैँ सौँ सपनहुँ नहि व्याज

शार्दूलविक्रीड़ित छन्दः

रे रे चोर कठोर छोड़ हमरा कानैत भीता छली ।
हा आकाशक पन्थ राक्षस बली से दुष्ट - नीता छली ॥
हा नै जानल गेल दुष्ट धरितौँ श्री विश्वमाता छली ।
मन्त्री सङ्ग यथार्थ देखल रमा सौन्दर्य्य सीता छली ॥

वसन्ततिलका छन्दः

हा रामचन्द्र रघुनाथ अनन्त बेरी
कानैत बाजक अधीनि जना बटेरी ।
दिव्योत्तरी पट विभूषण फेकि देल
से कन्दरा - मध सुयत्न सौँ राखि लेल ॥

चौपाइ

से शुनितहि माँगल रघुवीर * लयला अपनहि कपिपति चीर
प्रभु चिन्हितहि लेल हृदय मे राखि * हा हा जानकि जानकि भाखि

कयल विलाप कहय के पार * करुणामय करुणा विस्तार
से द्वितीय पट पाश्रोल श्राज * दुःख कहै छी परिहरि लाज
जुश्रा एकान्त धरथि जे काँति * कण्ठपाश क्रीडारस राति
क्रीडा - श्रम हर व्यजन रतान्त * शय्या प्रणयक कलह नितान्त
लक्ष्मण कहल धैर्य्य धरु नाथ * उत्पति स्थिति लय प्रभु हाथ
वानरेन्द्र बलवान सहाय * सुख दुख भोग देहकाँ पाय
भेटतिहि सीता थोड़हि काल * श्ररिगण मरता गर्व्व विशाल
प्रभु - विलाप शुनि कहल कपीश * मन करु थिरतर प्रभु जगदीश
हम मारब दशकन्धर जाय * सीता श्रानब श्रवसर पाय
श्रग्नि साक्षि मारुत सुत श्रान * युगल सख्य भेल जीव समान
कपट-रहित मिलि मिलि एकठाम * बैसला कपिवर रघुबर राम
करब मित्र हम यत्न बहूत * महि सभठाम पठायब दूत
रघुवर पुछलनि कहु कहु मित्र * दैव देल की विपति चरित्र
कहयित छी हम बन्धु कुचालि * हमरा जेठ भाइ छथि बालि
एक समय उपगत उतपात * मयसुत मायावी विख्यात
किष्किन्धा श्रायल श्रधराति * ललकारल निभय खल जाति
शुनल बालि रावण - श्ररि कान * कोप विवश चलला बलवान
मारल एक मुका तहँ गाढ़ * राक्षस विकल रहल नहि ठाढ़
बालिक बल बुझि खल भय पाय * भूधर - विवर समायल जाय
विवरहुमे श्रो कयल प्रवेश * हमरा देलनि यहन निदेश
श्रंह यहिठाम रहू भरि पक्ष * रण - रिपु-मारण मे हम दक्ष
श्रवधिक श्रधिक दिवस बिति जाय * तौँ जानब रण हारल भाय

स्नेह - विवश रहलहुँ भरेमास * बिथरै रुधिर बहल भेल त्रास
शिलाखण्ड सौँ मूनल द्वार * गमहि गेलहुँ पुर भय बिस्तार
मन्त्री - गण मिलि से मति धयल * कपि राजा हमरा एत कयल
किछु दिन बितला अयला गाम * के कह के शुन के कर साम
विकट विकट निकटहिँ पढ़ि गारि * मारल बिनु बुझलहि बड़ मारि
से सर्व्वस्व नारि लेल छीनि * हम भय रहलहुँ कौड़िक तीनि
के रक्षा कर के दे बास * सभकाँ मनमे बालिक त्रास
केवल यहि गिरिपर नहि आब * मुनि मातङ्ग क शाप प्रभाव

सो०—बालिक बुझि अन्याय, सुग्रीव क बुझि साधुता ।
अछि लघु सहज उपाय, श्रीरघुनन्दन कहल तहँ ॥

चौपाइ

अति अनुचित कर अहँ काँ भाय * कत दिन निबहत ई अन्याय
खलबल बालि बीर हम मारि * अहँ कपिपति भोगब सुख नारि
कह सुग्रीव बालि - रण - रङ्ग * रावण जनि तट कीट पतङ्ग
जनि भुजबल अनुभव शुनु राम * त्रिभुवन के कर जन संग्राम
दुन्दभि नामक राक्षस घोर * महामहिष उनमत अति जोर
रात्रि - समर—प्रिय वचन कठोर * दुर्ब्बल बालि वधिक हम तोर
किष्किन्धा आयल भेल मारि * बालिक कतहुँ समर नहि हारि
सत्वर जाय भाय खल धयल * हे प्रभु अकथ पराक्रम कयल
सिंह पकड़ि हरि धरणि पछारि * तनिक लेल तहँ मौलि उखारि
चरणैँ दाबि तनिक लेल काय * फेकल तनिकर माथ घुमाय

योजन पर भय खसल से जाय * मातङ्गाश्रम बुझल न भाय

सो०—जानल मुनि मातङ्ग, बालि कुचालिक कर्म्म थिक।
देलनि शाप अभङ्ग, मुनि आश्रम दुर्वृत्ति कर॥

चौपाइ

रुधिर महिष शिर देखल जाय * कहल बालि कैँ मुनि खिसिआय
जौँ यहि गिरि पर अयबह पूनि * रहतौ माथ न जनवह मूनि
यहि गिरिपर तैँ निर्भय वास * बहरयलैँ बालिक बड़ त्रास
कयल प्रतिज्ञा अहँ रघुनाथ * बालिक बध नहि कालहु हाथ
दुन्दभि अस्थि देखाओल जाय * हिनका मारल हमरा भाय
प्रभु हसि चरण अंगुष्ठ लगाय * फेकल खसल दश योजन जाय
बल आश्चर्य बुझल सुग्रीव * ई सामान्य थिकथि नहि जीव
तखन देखाओल साँो तार * रामक बाण बेधि भेल पार
कपिपति हर्षित शम - मति भाष * हे प्रभु मन नहि किछु अभिलाष
केवल भक्ति भजन नित करब * भव - समुद्र सुखसौँ सन्तरब
हे प्रभु कहइत हो मन लाज * नहि विभूति वनिता-सुख काज
कतय ज्ञान-सुख कत सुख - काज * सुत वित बन्धन सकल समाज
कपिवर रघुवर - पद अनुरागि * विषय - वासना देलनि त्यागि
मन विराग सुख दुःख समान * कपिपति पाओल उत्तम ज्ञान

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

चौपाइ

कहलनि रघुवर शुनु कपिनाथ * वालिक वध अछि हमरा हाथ
माया – मय थिक ई संसार * अति अगम्य विधि ज्ञान विचार
ठामहि ठाम बालि जौँ रहत * हमर अकीर्ति विश्व भरि कहत
रघुपति जौँ सुग्रीवक मित्र * विदित न वसुधा वीर चरित्र
रामक वाली काँ नहि त्रास * वृथा प्रतिज्ञा सुयश हरास
हसता वानर निकर समाज * ज्ञान कृपाकर कातर काज
करु करु युद्ध बालि सौँ आज * निर्भय भय चलु भाय समाज
बालिक मरण करण एक वाण * अहँका अनायास कल्याण

सो०— कपिपति विनत विचार, ज्ञान कतय बलवान विधि ।
अकथनीय संसार, भावि न भेलैँ विनु रहय ॥

चौपाइ

निर्भय सौँ रघुपति बल पाय * किष्किन्धा उपवन मे जाय
कयलनि ततय शब्द बड़ घोर * शुनितहि दौड़ल बालि कठोर
बालिक हृदय मुष्टिका हनल * बन्धु विरुद्ध वैरिता बनल
चलल परस्पर मुष्टामुष्टि * विधि विपरीत विपर्य्यय सृष्टि
युगल बन्धु से रूप समान * रघुपति तैँ न चलाओल वाण
सहि नहि शकला मुष्टिक मारि * पुन सुग्रीव पड़यला हारि
भभकि भभकि शोणित हो वान्ति * भेल विवर्ण सकल तन कान्ति
बालि विजयि गेल अपना धाम * कपिपति कहल विपति शुनु राम
बन्धु न बालि काल जनु थीक * ततय पठाओल गेलहुँ अहीँक

वृथा कराओल दुस्सह बात * एहि सौं अयश लोक विख्यात
अपनहि शर मारू रघुनाथ * करु न समर्पण कालक हाथ
सुग्रीवक देल देह हसोथि * अशनि-कठोर जोर जैं होथि
एक वार सत्वर अहँ जाउ * निष्कण्टक भय निर्भय आउ
शपथ वालिकाँ निश्चय मारि * अहँक सकल सङ्कट देब टारि
लक्ष्मण - प्रभु आज्ञा काँ पाय * फुलमाला देल गल पहिराय
लक्ष्मण अति आदर सौं फेरि * जाउ जाउ कहलनि कय बेरि
पुन सुग्रीव जाय तहि ठाम * आबह कहल करह संग्राम
से सुनि मन मन वालि विचार * की कनिष्ट हमरा ललकार
धयल हाथ तारा तहि ठाम * उचित न चललहुँ हठ संग्राम
मृत छल छथि अयला घुरि फेरि * अभ्यन्तर अति बल एहि बेरि
कहल वालि उत्तर अति रुष्ट * की पुन आयल सत्वर पुष्ट
तनिक सहाय समर के शूर * त्तण रण हमर मनोरथ पूर
घर अरि हमर समर निश्शंक * घर घुसि की शिर लेब कलंक
अल्प कालमे अरि रण जीति * तखन करब गृह-सम्पति प्रीति
तहँ तारा कह शुनु प्राणेश * अवसर मानक हित उपदेश
अंगद गेला खेलाय सिकार * निश्चय शुनलनि हुनक विचार
दशरथ वचन मानि दुइ बन्धु * वन भ्रमइत छथि छथि बल सिंधु
कौशलेश - सुत अयला गाम * तनिक शुनल हम बड़ गोट नाम
कालहुँ काँ विजयक सामर्थ्य * रण कारण जायब थिक व्यर्थ
के जानय प्रभु अन्तष्करण * दण्डक वन वैदेही-हरण
बनि अन्वेषण मानस लीन * माया - मानव विरहित दीन

अचल सख्य सुग्रीवक सङ्ग * ओ समर्थ संकल्प अभङ्ग
बजला बालि मारि देब राज * जे कहलनि से करता काज
भीरु बन्धु पुर निकट न आब * आब प्रबल रण राम प्रभाव
प्रेमहि बन्धु बौंसि घर लाउ * अवसर चुकलें जनु पछताउ
अपन अनुज कैं करु युवराज * शीघ्र जाउ सीतेश-समाज

मिथिला-संगीतानुसारेण योगियाछन्दः

तारा चरण धवल नाथक ।
कलपि कलपि कानथि कहथि, सिन्दुर राखू माँथक ॥
बान्धव फूटल वैरी लूटल, छूटल सुखक आशा ।
होयता अङ्गद कुमर टूगर, नगर विपति वासा ॥
यहन पाहुन भाग्यहि पाबिय, लाबिय गरिम गेहे ।
अनुज – सहित विपति - रहित, रहब सुचित नेहे ॥
त्रासहि भरल लंका परल, वैरी से बिश – बाहू ।
रावण मुदित उदित होयत, दशहु वदन राहू ॥

दो०—हे तारे तारेश–मुखि; स्त्रीस्वभाव की त्रास ।
हृदय लगाय लगाय कह, बाली समर–विलास ॥

रोला छन्दः (लावण्या)

कहल कलावति कुशल, करुण – कृश – कोमल-काये ।
नारायणसौं नेह – निबह, निबहय से न्याये ॥
भावी भेले चाह, अभय घर भयकर भाये ।
प्रबल दैववश विबुध, अबुध नहि बुद्धि सहाये ॥

सोदर सौँ सदभाव, आब करितौँ युवराजे।
रघुवर इरसौँ सन्धि, सिद्धि हसि कहत समाजे॥
समदर्शी श्रीराम, धाम अनितहुँ नहि हानी।
विद्यमान विद्वेपि, बन्धु - बध करितौँ फानी॥
सकल लोक मे सूर, सुयश की करब मलाने।
प्रेयसि धसि संग्राम, राम — रण अर्पब प्राणे॥
अङ्गद अङ्गज हमर, समर हरि - अरि करि दारण।
विधिक विधेय बलिष्ठ, विश्वबुध के कर वारण॥
फरक नयन मोर वाम, वाम विधि कि करत काजे।
तारे महि — विस्तार - भार - हारक रघुराजे॥
बध जौँ हमर विधि देथि. बन्धु सुग्रीवक बूतैँ।
बान्धिय तौँ मातङ्ग, कमल - नालक कुश सूतैँ॥

चौपाइ

सुग्रीवक बध मानस धयल * बलसौँ बालि गमन रण कयल
अबइत तनिकाँ देखि कपीरा * फनला निर्भय भाइक दीश
बालिक उपर दु मुष्टि प्रहार * मारि परस्पर एक न हार
युगल बन्धु बल रण घनघोर * मारा - मारि सुमुख नहि मोर
प्रभु तरु ओत धनुष ओ बाण * अशनि समान कयल सन्धान
बालिक वक्ष प्रवेशल बाण * से खसला महि मे अज्ञान
चेतल छूटल मूर्छा गाढ़ * देखल आगु राम प्रभु ठाढ़
जटा मुकुट शोभा विस्तार * कमल - नयन सुन्दर सुकुमार

धनुष वाम कर दक्षिण तीर * नव दुर्व्वादल रुचिर शरीर
कपिवर लक्ष्मण पार्श्व समाज * शोभा - घर रघुवर छविराज
बालि कहल शुनु विभु अवतार * हम न कदापि कयल अपकार
वृक्षखण्ड सौं की चुपचाप * मारल जानल सुयश प्रताप
मनुक वंश क्षत्रिय दयाद * तस्कर - सम सभ गत - मर्याद
लड़ि नहि सकलहुँ समर समक्ष * समदर्शी सुग्रीवक पक्ष
से की कयल अहँक उपकार * हम की कयल शत्रु — व्यवहार
दण्डक वनसौं हे भगवान * सीता - हरण शुनल हम कान
की कर हमर भीरु ई भाय * जनिकर हेतु एहन अन्याय
अबइत दशमुख बाँधल आज * पबितहुँ प्रभु मनवांछित काज
हमरो बल किछु देखितहुँ राम * प्राण चलल नहि पल संग्राम
शोच प्राण ई जाइछ छूटि * लवयित देखल न लङ्का लूटि
वानर मारि गेल सद्धर्म्म * मांस अभक्ष्य कयल की कर्म्म
कहल बहुत प्राणक अवसान * चरण निरीक्षण सौं भेल ज्ञान
किछु नहि मन मध हर्ष विषाद * राम कहल शुनु गतमर्याद
बहिनि कन्यका अनुजक नारि * पुत्र - वधू नहि लेथि विचारि
कामातुर कर रति अन्याय * अततायी जानक समुदाय
से प्राणी जानब चण्डाल * विषम दिवगे इन्द्रिय प्रतिपाल
बलसौं देल हम तोहरा मारि * तों भोगह निज अनुजक नारि
परमेश्वर साक्षी सर्वज्ञ * बालि न बुझलह वानर अज्ञ

छन्द रोला (लावण्या)

बालि कहल हम कहल वहल, अनुचित अज्ञाने ।

क्षमा करिय क्षिति-भार-हरण कारक भगवाने ॥
तीर्थ - मूल-कर तीर-विद्ध ई त्याग शरीरे ।
निरखि निरखि नव - नीरदाभ अभयद रघुवीरे ॥
हम चललहुँ प्रभु - धाम तनय अङ्गद हित मानव ।
हमर तुल्य बल बुद्धि दनुज - गहनानल जानव ॥
हृदय उपर धरु हाथ तीर बाहर करु उरसौँ ।
चिरञ्जीव सुग्रीव जीव जाइछ सुखपुर सौँ ॥
तथा कयल रघुनाथ हाथ शीतल देल छाती ।
जयजय धुनि कर गगन सगन सुरपति सुर-पाँती ॥
बालिसौँ बनि विबुधेश - रूप चलला विभु-धामे ।
मुनि दुर्ल्लभ - गति - देनिहार सीतापति रामे ॥
इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
किष्किन्धाकाण्डे द्वितीयोध्यायः ॥२॥

दोबय छन्द

वानरवृन्द बालि - वध देखल विकल कहल शुनु रानी ।
रामक बाण विधुन्तुद विघसित बालि पूर्ण विधु जानी ।
कोट - कपाट द्वार ठिक ठोकब वानर रोकब बाटे ॥
वानरेन्द्र अङ्गदकाँ मानब सुग्रीयक कुल कँटे ॥
सचिव सकल सह रहस विचारिय सोदर - द्रोही मारू ।
वीरवधू प्रिय - विरहिनि विकले विश्व अनित्य विचारू ॥
सकल कला लय काल क्रूर जौँ करता कलह कठोरे ।
वानरेन्द्र विश्लेषित वानर समर नाम नहि थोरे ॥

सो०—बालि-मरण शुनि कान, विपतलि निपतित क्षिति मुरुछि ।
तारा तारा भान, प्रात जहन अरुणित गगन ॥

चौपाई

मुरुछि मुरुछि क्षण मन विनु ज्ञान * कह विधि बुधि सुधि आनक आन
दुहुँ कर पीटथि छाती माँथ * धिक धिक जीवन आज अनाथ
वानरेन्द्र कत गेला त्यागि * हमहू जायब तनि संग लागि
फूजल केश नयन जलधार * चललि विकलि प्रिय-शव अभिसार
शोणित धूलि अङ्ग परिपूर * देखल मृतक स्वामि - तन शूर
हा हा नाथ नाथ कहि चरण * धयल कयल पूरण रस करुण
तारा तदय राम दिशि ताक * करुणाकर किछु अछि कहबाक
बालि – वक्ष बेधल जे बाण * ताहि सौँ लय लिय पापिनि प्राण
तकयित हयता तारा - बाट * वल्लभ - विप्रवियोग हिय फाट
विनु दारा दुख जे परिणाम * अनुभव लव अपनहुँ का राम
बालिक वदन विलोकब जाय * रघुनन्दन – शर शरण उपाय
अहँ सुग्रीव कयल भल काज * रुमा – सहित सुख भोगू राज

दोधव छन्द

हरि हरि से हरि-केहरि किय हरि, हरल सकल सुख-सारा
किष्किन्धाक कलाकर - कामिनि, हम प्रदोष—तुष—तारा ॥
विबुध - वैरि - रावण—मद-वारण विद्रावण मृगराजे ।
शिव शिव शयित समर से उर शर - शल्लित श्रीहत आजे ॥

वामिनी छन्द

कहल रघुवीर धीर शोक रोक तारा।
दृश्य काँ अनित्य जान बालि के बेचारा ॥
पूर्व्व जन्म बलिबधू पूर्ण भक्ति तोरा।
दरशन तें हमर भेल सुयश लोक सोरा ॥

छौबय चन्द

बलाराति-बालक तोर वल्लभ वानरेन्द्र छल बाली।
वासव-रूप बनल रणविजयी सुरपुर बस बलशाली॥
आत्मा अव्यय निर्भय सुखमय देहक दुर्गति खाली।
देख विचार तत्त्व सौँ तारा के तोँ कह दुख-वाली॥
सों० -- ज्ञान - ज्ञेय रमेश, उपदेष्टा रघुवीर जहँ।
तारा विगत-कलेश, उदित शान्त करुणान्तरस ॥

हंसगती छन्द

जगत जनन पालन प्रचण्ड लय कर्त्ता
धयल मनुज - अवतार दनुज - संहर्त्ता।
अबला काँ की ज्ञान वियोगिनि आर्त्ता॥
त्राहि त्राहि जगदीश जलधिजा - भर्त्ता॥
फरकल मोर दृग दत्त नाथ दृग-वामा
देवर दृग दुहु गोट शकुन सिधि ठामा।
देल जाय प्रभु चरण-भक्ति अभिरामा
माँगव आन कि वीर-वधू निष्कामा ॥

श्री रघुवर घन - कान्ति शान्ति उपदेशैँ
तारा तखन निराश मृतक प्राणेशैँ ।
शुनल सकल सुग्रीव रहित से क्लेशैँ
घनधुनि मुदित मयूरि श्रवन - परवेशैँ ॥

रूपक चौपाइ

कहल राम हे धीर कपीश * किछु देखक थिक लौकिक दीश
बालिक हो दाहादिक काज * अङ्गद आबथु सहित समाज
पुष्पक ततय विचित्र बनाय * वानरेन्द्र कोँ शयन कराय
नाना तरहक बाजन बाज * सभ विधि जे भूपति साम्राज
सेनापति मन्त्री परिवार * अङ्गद तारा सैन्य अपार
यथाविहित दाहादिक कर्म्म * कयल सकल मिलि जैँ हो शर्म्म
स्नानोत्तर मिलि सभ्य समाज * रघुपति - चरण धयल कपिराज
राज्य प्रभुक सुखसौँ करि भोग्य * हम चरणक दासत्वक योग्य

सो०— कहल ततय श्रीराम, सुग्रीवक शुनि प्रार्थना ।
समुचित जे एहि ठाम, से कर्त्तव्य विचार थिक ॥

चौपाइ रूपक

अहँ राजा अङ्गद युवराज * थिक विचार निक कहत समाज
जाउ झटिति राजा बनि आउ * दिन दिन नव नव कीर्ति बढ़ाउ
हम न करब व्रत नगर प्रवेश * कयल प्रतिज्ञा पिता - निदेश
लक्ष्मण जयता नहि सन्देह * मित्र अपन प्रिय परिजन गेह
किछु दिन सुखपुर करब निवास * आयब मन नहि करब उदास

सीता - अन्वेषण मे रहब * विषय बहुत अहँ काँ की कहब
एहि गिरिपर हम वासा करब * गिरि कानन सुखसौँ सञ्चरब
लक्ष्मण काँ लेल सङ्ग लगाय * आज्ञा पाबि अपन घर जाय
कयल सकल आज्ञा अनुसार * लक्ष्मण - पूजन विविध प्रकार
राम निकट लक्ष्मण अयलाह * किष्किन्धा वार्त्ता लयलाह
रामचन्द्र - पद कयल प्रणाम * राम कहल कयलनि विशराम
कयल प्रवर्षण–गिरि पर वास * ततय बितावथि चातुर्म्मास
रहला गह्वर सुन्दर जानि * न पड़ पराभव रौदेँ पानि
लग लग मिल भल कन्द सुमूल * पल्वल - जल मोती समतूल

श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
किष्किन्धाकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

रूपक चौपाइ

योगारूढ़ समाधि विराम * सँय्यमशील निरन्तर राम
लक्ष्मण पूछल पूजा – रीति * कहल राम बुझि अनुज सप्रीति
वेद तन्त्र पूजाक प्रकार * संक्षिप्ताक्षर विधि विस्तार
पुन प्राकृत बनि विरही राम * विलप कलप लय सीता नाम
सभरि रजनि निद्रा नहि आब * मानस - वनक वियोगज - दाव
किष्किन्धा मन्त्री हनुमान * ओतय कहल सुग्रीवक कान
राम अहाँक कयल उपकार * पाओल सम्पति सुख प्रिय दार
अहँ कृतघ्न बिसरल वृत्तान्त * होयत कि कल्याण नितान्त
भुवन–विदित बाली जे वीर * से मरि गेला एकहि तीर

राज्य अकण्टक तारा पाय * दिन अज्ञात राति बिति जाय
से पर्व्वत पर अहँ घर सूति * व्यर्थ करी जनु तेसर जूति
ओ तकयित नित मित्रक बाट * अहँ कि सुन्चित घर ठोकि कपाट
कमातुर वानर अज्ञान * त्यागू राज्य-विषय अभिमान
कुपथ गमन सौँ मुइला बालि * अहँउ धयल भल प्रबल कुचालि
ई शुनि भय-विह्वल कपिराज * वचन कहल मन मे भेल लाज
दश हजार चर वानर जाय * आनय वानर भालु बजाय
सातहु द्वीपक वानर विकट * पनरह दिन मे अ बथु निकट
जे करताह व्यवस्था - हानि * तनिकाँ हम मारब अरि जानि
कहि सुग्रीव गेला घर घूरि * मारुत - सुत देल आज्ञा पूरि
अतुलित-गुण बल दश दिश गेल * कयल विलम्ब न त्रासक लेल

श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

एक समय तहि गिरिमणि-सानु * विरही राम चरम-गिरि भानु
असह विरह लक्ष्मण काँ कहल * सीता हरलक राक्षस रहल
छथि वा नहि जिबयित के जान * हृदय हमर थिक कुलिश समान
छथि जिबयित केओ कहि जाय * तखन करब हम उचित उपाय
हठ सौँ हम हुनकाँ छीनि लेब * सुधा-पयोनिधि मथि जनु देब
अरि बल पुत्र सकल देब मारि * हरलक जे सीता सति नारि
महामत्त - गज घन - विस्तार * विरहिनि वधय भ्रमय संसार
चपला - कसा सुरेश्वर मार * अम्बरमे घन शब्द उचार
बड़ जलभार बलाका सङ्ग * अग अग अटकथि वाहिक रङ्ग

निद्रा केशव - तन लपटाथि * सरित सकल सुख सागर जाथि
विशद बलाका गगन समाथि * विरही जन मन मन अकुलाथि
चिन्ता - खेद विरहि - मन व्याप * शिखरि २ शिखि ऋषभ अलाप
बर्द्धित रस नहि रहल संभार * चललि नदी नदिपति अभिसार
गगन न देखिय घन परिपूर * तारा तारापति नहि सूर
पङ्कज मुद्रित खग नीड़स्थ * विलसित मालति दिनपति अस्त
दिन रजनिक मन हो अनुमान * कोक अशोक शोकसौँ भान
नृप नृपकाँ घन कलह घटाय * बर्षा सेना देल अटकाय
भेक अनेक वचन उच्चार * जनु पटु बटु रटु श्रुतिस्वर-सार
अन सुख सुग्रीवहि कैँ प्राप्त * दार - सहित अरि शूर समाप्त

हंसगति छन्दः

जाज

हमर विना वैदेहि विषम दुख सहती।
राक्षस-घरमे जाय हाय की रहती ॥
प्राणेश्वरी कहाय हाय की कहती।
शय शय संशय आब दुर्दशा महती ॥

रोला [लावण्या]

सीता - चरण - सरोज - परश - शीतलता तोरा।
रे शशि बनु जनु भानु दहन करु जनु तनु मोरा ॥
हरि हरि हरि हरु हृदय-ताप तुय हृदय कठोरा।
वैदेही-मुख पूर्णचन्द्र मोर नयन चकोरा ॥

बाला छन्दः

राखि नहिँ भेल की अपन नारी ।
वंश मे लद्दम हा पड़ल भारी ॥
राक्षसागारमे जनक–बाला ।
हाय रे आँखि की जलदमाला ॥

तरल–नयन–छन्दः

हमरहिँ पड़ल विपति-तति, कत छथि जनक-कुमरि सति ।
अविरल नयन वहय जल, पल भरि पड़य न मन कल ॥
शशि नहि थिकथि विषम मणि, उडु-तति थिक तनि फण मणि
लह लह रसन किरण-गण, अतिशय मलिन गरल घन ॥
डसयित विरहि गलित तन, अछि बचि रहल धवल फन ।
फणपति कुलक धवल छथि, विषधर गणक प्रबल छथि ॥
छथि कत रमणि जौँ शुनितहुँ, शमनहुँ|हनि तनि अनितहुँ ॥

चौपाइ

हम हतदार भोग्य नहि राज * सीता विनु जीवन की काज
कतय बलाहक कतय बलाक * हर्ष मयूरक गति चपलाक
इन्द्र छोड़ाओल पृथिवि पियास * जीवन - दायक जनिकर दास
घन वारण प्रस्रवण मयूर * सभहिक नाद गेल चल दूर
वन वन सम्प्रति काश फुलाय * घन ऋतु क्रम क्रम गेल बुढ़ाय
मूक मयूर हंस स्वन शूनि * गलित - पक्ष अरि-परिभव गूनि

दो०—शरद - सरित सुन्दर पुलिन, थोड़ थोड़ दरशाव ।
नव सङ्गम - लज्जावतिक, जघनक उपमा पाव ॥

चौपाइ

तारा भूषण विधु मुख थीक * तिमिर तनिक अलकावलि नीक
सन्ध्यारुण पट कुसुमक रंग * हो परतत्त न संशय अंग
देखि पड़ अम्बर — दर्पण माँझ * राति कि सीता - छाया साँझ
गगन न थिकथि उदधि मन मान * तारा — तति नव फेन समान
शशि न कुण्डलित थिकथि फणीश * अङ्क न शयित विष्णु जगदीश
पावस विगत शरद अवतार * नहि चर हमर कतहु सञ्चार
की थिति सीता छथि कोन देश * के हित आनत तनिक सन्देस
कपिपति कृपा कयल परित्याग * पाछिल दिन मन पड़ि के जाग
कामी राज्य–मदैँ की सूझ * आनक सुख दुख कतहु कि बूझ
आब होइछ मन बालिक शोच * मारल तनिका हिनके रोच
आमिष भक्षण मदिरा पान * कतय ततय रह सदसत ज्ञान
अधिक निन्दवश राति-अवसान * जगलहुँ जलपथि आनक आन
ओ कपटी छथि मारय योग्य * बालिक बसथौँ ई आरोग्य
बुझला जाइछ तेहन कुठाठ * धयल चरण जनु बाली - बाट
से शुनि लक्ष्मण मन अति कोप * अनुमति हो करि कपि-पति-लोप
हमरा हो जौँ आज्ञा नाथ * सुग्रीवक थिवि हमरा हाथ
ई कहि लेल धनुष कर बाण * प्रभु-रुचि पाबथि करथि प्रयाण

तोटक छन्दः

शुनु लक्ष्मण सत्वर जाउ अहाँ
भयभीत करू कपिनाथ तहाँ।
परित्यागथि बालि-कुचालि जना
नहि मारब मित्र करैछी मना॥

स्फुरित अधर लोचन अति लाल * चलल रौद्र रस जेहन विशाल
ई प्रभु माया अपन पसार * निर्गुण सगुण सुगुण अवतार
नगरक निकट धनुष टङ्कार * कयलनि लक्ष्मण कोप अपार
से शुनि प्राकृत कीश सगर्व्व * पाथर तरु कर दौड़ल सर्व्व
लक्ष्मण देखल वानर रंग * बाढ़य लागल कोप अभङ्ग
अङ्गद दौड़ला करयित घोल * कहि अवाच्य रोकल कपि गोल
वानर बल हठि दूर पड़ाह * कोपक विकट निकट नहि जाह
अंगद आबि प्रार्थना कयल * लक्ष्मण चरण शरण कहि धयल
अङ्गद काँ लेल हृदय लगाय * कहलनि कहू पितीकेँ जाय
रघुनाथक आज्ञा अनुसार * हे युवराज करब व्यवहार
एतय पठाओल रौद्रक मूर्त्ति * कयल व्यवस्था कयल न पूर्ति
शुनि से सत्वर अङ्गद जाय * सभय पितीकेँ कहल बुझाय
पुरी द्वार लक्ष्मण छथि ठाढ़ * उचित क्रोध हुनका मन बाढ़
शुनितहि कपिपति बहुत डराय * हनूमान काँ कहल बजाय
हनूमान संगे युवराज * लक्ष्मण करिय कोप कृश आज
शस्त्र शस्त्र निज भवनहि लाउ * कोप रहितसोँ भेट कराउ

तारकाँ कहलनि कपिराज * अहँउ जाउ सौमित्रि समाज
कोमल वचनें करु परितोष * मिलब हमहुँ जखना नहिँ रोष
तारा पहुँचलि मध्यम कक्ष * यहि पथ अग्रोता हयब समक्ष
अङ्गद विनय-युक्त हनुमान * कयल प्रणाम कहल कल्याण
हे सौमित्रि अपन थिक गेह * चलल जाय मन निस्सन्देह
देखब राजदार कपिराज * अपनैं सौँ के जनि कर लाज
लखन जेहन आज्ञा से करब * अपनहुँ दीर्घ रोष परिहरब
लक्ष्मण कर धय कह हनुमान * चलु अन्तःपुर बुद्धि निधान
क्रम क्रम गेला मध्यम कक्ष * तारा चन्द्रानना समक्ष
मद-अरुणित दृग भूषण-राजि * नमस्कार कयलनि हसि बाजि
रक्षा करिय अपन जन जानि * कपिपतिसौँ नहिँ हो हित-हानि
अपनहि कयल विषय आरोप * भृत्य भक्त कपिवर पर कोप
दुर्दश छला दशा भल पावि * भोग-विवश इच्छित सुख भावि
छथि उद्योगहि मध्य कपीश * अन्तर्यामी प्रभु जगदीश
बहुतो दूत पठाओल दूरि * बहुत शीघ्र अबयित अछि घूरि
जौँ दशकन्धर-कृत अन्याय * विद्यमान बल बालिक भाय
तारा-विनय-वचन शुनि कान * अन्तःपुर पुनि कयल प्रयाण

सो०—रुमा-अङ्क निश्शङ्क, मदावस्थ मातङ्ग सम।
बैसल मणिपर्य्यङ्क, देखल लक्ष्मणकेँ ततय ॥
सत्वर उठल डराय, लज्जित मद-घूर्णित नयन।
रामानुज खिसिआय, कहल बहुत निन्दित कथा ॥

रे वानर दुर्वृत्त, विस्मृत श्रीरघुनाथ क्रिय।
भावी यहन निमित्त, बालि सदृश मरणोच्छ की॥
प्रभुतादिक मद पाब, धन - मद गुण–तारुण्य-मद।
मद मद महिला आब, विधिहुक बुत नहि से बुझथि॥
समय कहल हनुमान, लक्ष्मण योग्य न वचन थिक।
कपिपति भक्ति समान, अपनहुँ नहिँ रघुनाथ मे॥
करथि प्रभुक हित काज, वानरेश रघुनाथ - प्रिय।
वानर सैन्य समाज, आबि गेल देखू अहाँ॥
सकल सैन्य लय संग, सीतन्वेषण मे निरत।
करता शत्रुक भङ्ग, नहि विलम्ब सन्नद्ध बल॥
निज अनुचित मन मानि, लज्जित रामानुज तहाँ।
अर्घ्यादिक सन्मानि, कपि - राजा मिललाह तहाँ॥
हम श्रीरामक दास, ओ रक्षा कयलनि हमर।
तनिकहु अनकर आश, हम सहाय नामक प्रभु व॥
क्षमा करब अपराध, कहल प्रणय सौँ कटु वचन।
अहँ प्रिय गुणक अगाध, लक्ष्मण ततक्षण कहल पुन॥
सीता - विरही राम, एकाकी कानन बसथि।
हम न करब विश्राम, सेव्य निकट सेवक सुखी॥

चौपाइ

भल विचार चलला कपिराज * रथ चढ़ि लक्ष्मणसह प्रभु-काज
नीलाङ्गद हनुमान प्रधान * सेना सङ्गहि कयल प्रयाण
बाजन नाना तरहक बाज * राज – चिन्ह छत्रादि विराज

प्रभुक निकट सब सज्जित जाय * मुदित राम देखल समुदाय

इतिश्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डे पंचमोऽध्यायः ॥५॥

रूपक घनाक्षरी

तीरभुक्तिसङ्गीत रीत्या कानरा-राजविजय छन्दः

अजिन - वसन शुचि नवघन - सम रुचि,
कमल - नयन हसयित सुख परसन ।
रघुवर गिरिगुहा पुर थित छला मन,
वैदेही - विरह - जर जनु जरजर सन ॥
लक्ष्मण कपिवर चरण प्रणति कर,
वानर - निकर प्रमुदित शुभ - दरशन ।
जटिल सुभग - तन - रुचि रवि - शशिसन
खग मृग प्रमुदित प्रभु रघुवर सन ॥१॥

रूपमाला

चरण पड़ल निहारि कपि - पति हृदय लेल लगाय ।
कुशल पुछलनि राम प्रभु, बैसलाह आज्ञा पाय ॥
तखन पुन रघुनाथ काँ से, कहल दुहु कर जोड़ि ।
चमू आइलि वानरी रघुनाथ अछि नहि थोड़ि ॥
काम-रूपी द्वीप द्वीपक, विकट मर्कट लोक ।
पर्व्वतोपम युद्धमे, अरि कय सकथि नहि रोक ॥

देव-सम्भव अमित-बल सभ, अभय नानाकार
युद्ध करथाँ सतत उद्यत, सहि न सकु महि भार।
प्रभुक आज्ञा पाल फल दल, मूल समकाँ भक्ष्य
दैत्य दानव प्रभृति हिनका, युद्धमे नहि लक्ष्य
जाम्बवान सुबुद्धि ऋक्षक, अधिप मन्त्रि महान
कोटिशः भल्लूक वशमे, आन कहल कि मान।
वायु-पुत्र पवित्र मन्त्री, हिनक अद्भुत कार्य्य
वायु-बलक समान-बल छथि, समर मे अनिवार्य्य।
नील नल गवयादि अङ्गद, मादनादि सुवीर
शरभ मैन्दव गज पनस ओ, वली दधिमुख धीर।
तार नाम सुषेण केसरि, विश्व के नहि जान
महाबल जनिके कहल छल, पुत्र छथि हनुमान।
एक एकक कोटि सेना, कहल यूथप नाम
ई प्रधानैँ कहल अछि छथि, अति कुशल संग्राम ॥
वालिपुत्र महाबलो छथि, हिनक समुचित चालि
थिकथि राक्षस कुलक अन्तक, सोपि गेला वालि।
सकल सेना सहित प्रज्ञा, करथि आज्ञा नाथ
हमर नाम निमित्त मात्रक, विजय प्रभुवर हाथ ॥
राम शुनि हर्षाश्रुलोचन, कहल हृदय लगाय
मित्र सभटा अहँ जनैछी, करक तकर उपाय।
तखन शुनि सुग्रीव दश दिश, कपि पठावल वीर
कहल दक्षिण दिश विशेषैँ, जाथि सभ रणधीर ॥

बालि - सुत - युत मरुत सुत ओ, जाम्बवान महान
नल सुषेण ओ शरभ मैन्दव, द्विविद करथु प्रयाण ।
यत्नसौँ सभ जानकी कैँ, ताकि कैँ भरि मास
अन्यथा दिन एक जीवत, प्राणकाँ बुझु त्रास ॥

चौपाइ

बानर - वीर कपीश पठाय * बैसला बिनत राम लग जाय
मारुत - सुत काँ कहलनि राम * ई मुद्रा अछि अङ्कित नाम
यतनैँ सैँ लिय सङ्ग लगाय * देब जनकजाकाँ अहँ जाय
अहँ का सतत रहत कल्याण * अहँक समान सूझ नहि आन
अपन नीक जानब से करब * कालहुँ सैँ संग्राम न डरब
प्रभु-आशिष मारुति फल पाब * विश्व-विजय बल पाओल आब
अङ्गद आदि चलल मिलि सङ्ग * कोटि कोटि गुण बल बढ़ अङ्ग
फिरइत वन राक्षस जे भेट * तनिक प्राण हर मार चपेट
श्रमसैँ क्षुधा - तृषातुर भाख * आब प्राण परमेश्वर राख
देखल सभ गह्वर बड़ बेश * लता गुल्म तृण आवृत देश
क्रौञ्च हंसगण तीतल पाँखि * देखल सभ जन निज निज आँखि
तेहि अभ्यन्तर जल अनुमान * पैशल विवर आगु हनुमान
बहुत दूर छल निविड़ अन्धार * हाथैँ हाथ धयल गेल पार
देखल जलाशय मणि-सम नीर * कल्प वृक्ष सम तरुवर तीर
फल सैँ नमित भरल मधुभार * कपि सेनागन हर्ष अपार
सभ गुण भरल देखल एक गाम * एक गोट नहि लोकक नाम
कनकासन बैसलि एक नारि * अपन कान्ति सैँ ज्योति पसारि

ध्यानावस्थ योगिनी जानि * की थिक विषय कि बुझ अनुमानि
भक्ति भीति सौं कयल प्रणाम * के अहाँ थिकहुँ कहू निज नाम
त्यागि समाधि सुबुद्धि विचारि * सभकाँ देखल पलक उघारि
देखितहि कहल दिव्य अवतारि * आश्रम करु जनु हमर उजारि
कतसौँ ककर पठावल दूत * लोचन - गोचर वीर बहूत
शुनि कहलनि उत्तर हनुमान * पुरी अयोध्याधिप श्रीमान
दशरथ नृपक जेठ सुत राम * शुनितहि होयब हुनकर नाम
पिता - वचन वन नारि - समेत * अयला सानुज सत्य - निकेत
रावण हरलक तनिकर नारि * किछु दिन बितलय होएत मारि
सुग्रीवक सँग मैत्री बेश * सभ चललहुँ सीताक उदेश
धन्यतमा अपनैँ केँ जानि * आश्रम अयलहुँ पीवय पानि
के अपनैँ देवि कारण कोन * कहू तखन बरु साधब मौन
कहल यथेच्छित फल भल खाउ * कहय स्वस्थ जल पिबि पिबि आउ
फलाहारकैँ पिउलनि पानि * अयलहुँ सभ जन योगिनि जानि
सभ जन नम्र जोड़ि दुहु हाथ * देवि सत्य कहु करु जनु लाथ
विश्वकर्म्म काँ हेमा नाम * पुत्री जानथि उत्तम साम
नृत्य - तुष्ट शङ्कर वृषकेतु * ई पुर देलनि हेमा हेतु
दश अयुतायुत बसयित मेलि * तदुपरि ब्रह्मपुरी चलि गेलि
चलयित हमरा से सन्मानि * विष्णु-भक्ति-रति सहचरि जानि
कहलनि सखि तप करु एहिठाम * लाभ तपस्या - फल परिणाम
त्रेतायुग रामक अवतार * हरता से प्रभु पृथिवी - भार
सीतान्वेषक वानर जखन * देखब पूर्ण मनोरथ तखन

योगि - गम्य श्रीविष्णुक गेह * जायब अयि सखि निस्सन्देह
एकसरि रहलहुँ सखि - उपदेश * अपनहुँ अयलहुँ कयलहुँ वेश
स्वयम्प्रभा थिक हमरो नाम * देखब जाय आइ श्रीराम
मुद्रित करु कपि सभ जन आँखि * तप-बल हम देव बाहर राखि
यहि गत सभ जन से वन देख * हेमा-कर्म्म अलौकिक लेख
से पहुंचलि सानुज जत राम * भक्ति प्रदक्षिण कयल प्रणाम

मौक्तिकदाम छन्दः

हरे रघुनन्दन सानुज राम, विभो कमनीयतनो जितकाम ।
अनन्यवदान्यतयावितभक्त, स्वयन्न जगत्स्वनुरक्तविरक्त ।।

दो०—भक्ति - योग - लाभैँ बसलि, बदरीवन तप लागि ।
गेलि दिव्य गति योगनी, अन्त देह परित्यागि ।।

इति श्रीमैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
किष्किन्धाकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

सो०—चिन्ता - दुर्ब्बल देह, सीतान्वेषण मे भ्रमित ।
छूटल निज निज गेह, वन-तरु-शाखा-स्थित सकल ।।

चौपाइ

अङ्गद कहल अपन मन-ताप * मरि गेलाह बालिक सन बाप
पिती करै छथि निन्दित काज * माइक अनुचित कहइत लाज
हुनका नहि पुन मारथि राम * दूइ रीति अछि एकहि गाम
कामी मलिन चलथि की नीति * हमरा विप्रय कतय हो प्रीति

गहुर घुमयित गत भेल मास * रामक रच्छित हम निस्रास
यहि जीवन सौँ मरणो नीक * अयश श्रवण नित वाप पितीक
कनयित तनिकाँ देल सन्तोष * एतहि रहु सभ जन निर्दोष
से शुनि कहल वीर हनुमान * एहन न करिय बालि-सुत ज्ञान
अहँ कपीश कैँ प्राण समान * अङ्गद जनु करु संशय आन
लक्ष्मण सौँ अहँ मे अतिप्रीति * राखथि रघुवर धर्म्म सुनीति
मानुष मानल अहँ मन राम * देखल पराक्रम अपनहि ठाम
नारायण मानुष अवतार * छल-बल हरता अवनी भार
सत्य कहैछी निश्चय मानि * सीता विष्णुक माया जानि
लक्ष्मण थिकथि शेष-अवतार * नर - लीला कर लोकाचार
हमरहु सबहि लेल अवतार * थिकहुं देवता चरित उदार
अङ्गद काँ कयलनि सन्तुष्ट * करु संहार दनुज जे दुष्ट
क्रम क्रम जाय महोदधि-तीर * से देखि ककरो मन नहि थीर
कतहु देखि पड़ नहि किछु लक्ष * कि करब विधि जलनिधिक समक्ष
गुहा भ्रमित बीतल ई मास * अतिशय अछि सुग्रीवक त्रास
देखितहुँ कतहुँ दशानन नयन * अवश करवितहुँ अवनी शयन
सीताकाँ देखितहुँ कहुँ आँखि * कहितहुँ थिवि रघुपति संभाखि
बिनु देखले जायब घर घूरि * कपि पति देता चरणहि चूरि
ई कहि कहि कुश घास ओछाय * वानर सभ बैसल पछताय

सवैया छन्दः

तखन महेन्द्राचलक गुहासौं शब्द शब्द बहरायल गृद्ध ।
पर्व्वत सम से सभ वानर काँ कहलनि मांसप्रिय अतिवृद्ध ॥

दिन दिन एक एक काँ खायब से सुनि वानर सकल डराय।
कहल जटायु धन्य खग छलछथि पाओल मुक्ति गृद्धतनु पाय ॥
सुनि सम्पाति जटायुक चर्चा कर्णामृत सन मनमन मानि।
कहल कहू निर्भय भय कपिकुल करब न ककरो जीवन हानि ॥
जाय समीप कहल अङ्गद सभ सुनु हम कहइतछी वृतान्त।
पृथ्वी भार हरण कारण विभु अवतरला महि लक्ष्मीकान्त ॥

चौपाइ

सीता सह सानुज रघुनाथ * अयला वन पितृ आज्ञा लाथ
रावण छलसौँ सीता हरण * कयलक ध्रुव तनिकर लग मरण
सुनितहि वैदेहीक विलाप * कयल जटायु गतायु प्रताप
युद्ध विरुद्ध कयल से घोर * कहि कहि दुष्ट दशानन चोर
रावण तनिकाँ मारल वाण * मूर्छित खसला तन गत — प्राण
तनिक दशा देखल रघुनाथ * अन्त क्रिया भेल रामक हाथ
मोक्ष जटायुक अन्त चरित्र * रामचन्द्र काँ कपिपति मित्र
बालि निधन सुग्रीवक राज * अयलहुँ सभहुँ तनिक हितकाज
सीता तकइत तकइत आज * अयलहुँ एहि गह्वरक समाज
बहुत विलम्ब वितल एक मास * सुग्रीवक हो अतिशय त्रास
लवणोदधिक आविकैँ तीर * जायत प्राण कि रहत शरीर
वृद्ध गृद्ध अँह काँ दुर सूझ * हमरा सबहिक आधि के बुझ
जनक नन्दिनी छथि जे गाम * कहू दयामय मन दय ठाम
अङ्गद वचन सुनल से गृद्ध * कहलनि भ्राता छल छथि वृद्ध ;

कति सहस्र बीतल अछि वर्ष * वार्त्ता सुनि मन बाढ़ल हर्ष
कहब जतय छथि वचन सहाय * जलक समीप दिअओ प्रहुँचाय
पहुँचाओल समुद्रक कात * देल तिलाञ्जलि कहि सह भ्रात
पुनि पहुँचाओल पहिलहि ठाम * कहल तखन किछु समय विराम
गिरि त्रिकूट पर लंका नाम * पुरी अशंक दशानन धाम
छथि वैदेही विपिन अशोक * कोटवार अछि राक्षसि लोक
योजन शत तक जलनिधि पानि * से समुद्र जे जयता फानि
से सीता काँ देखथि जाय * सत्य कथा हम देल जनाय
रावण वध करबा हम दक्ष * कि करब सम्प्रति नहि गति पक्ष
गृद्ध लोक काँ सूझय दूर * करु उपाय उत्तम जे फूर

सवैया छन्दः

शतयोजन जलनिधि सुख फानथि, लंकापुरी अशंकित जाय।
वैदेहीक कुशल सभ जानथि, समाचार सन्तोष सुनाय॥
फानथि पुन निर्भयसौँ जलनिधि, छथि के यहि मैं करू विचार।
होयत कर्य्य सिद्धि निश्चय अछि, श्री नारायण कृपा अपार॥

इति श्रीमैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
किष्किन्धाकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

चौपाइ

उड़लहुँ हम जटायु दुहुँ भाय * रविरथ रोकब सत्वर जाय
भ्राता युगल अतुल बल मानि * तरुण अवस्था गुणक न हानि
घुरला बन्धु असह्य विचारि * हम नहि मानल मन मैं हारि

दिनकर निकट जरल दुहु पच्छ * दिनकरदेव देव परतच्छ
खसलहुँ विन्ध्यगिरिकपाषाण * तीनि दिवस धरि छल अज्ञान
खसलैँ लागल छल बड़ चोट * पच्छ विहीन भेल मन छोट
बचत जीव शिव कोन प्रकार * विकल सतत मन शोच अपार
सदय महान चन्द्रमा नाम * दुर्गति से मुनि देखल ठाम
ओ परिचित पुछलनि की भेल * पच्छ अहाँक कतय जरि गेल
अपन कहल छल जे अज्ञान * दुःख मूल केवल अभिमान
बहुत प्रकार देल सन्तोष * ज्ञान शिखाओल से भरिपोष

षटपद

देह मूल थिक दुःख, देह कर्म्महि सौँ उदभव।
अहं-बुद्धि सौँ कर्म्म, पुरुष देहस्थित अनुभव॥
अहंकार जड़ अति अनादि, माया परकासल।
चिच्छायासंयुक्त तप्त लोहक सन भासल॥
तनिका सौँ ई देह कोँ, भेल एकता देह हम।
एहन बुद्धि लय चेतना सहित देहकाँ विविध भ्रम॥

सो०—तनिक मूल संसार, साधक सुख दुख उभय सब।
आत्मा रहित विकार, मिथ्यातादात्मैं सदा॥१॥
हम शरीर कर नर्म्म, कर्म्मक कर्त्ता हमहि सभ।
जीव करथि सभ कर्म्म, तत्फल बाँधल से विवश॥२॥
पाप पुण्ययुत भेल, भ्रमित होथि उद्वांध नित।
यज्ञ कयल धन देल, सुख भोक्ता हम स्वर्ग मे॥३॥

ई संकल्पाध्यास, भोग कयल चिर स्वर्ग सुख।
क्षीण पुण्य सन्त्रास, मर्त्यलोक मे पुन वसथि ॥४॥
विधुमण्डल काँ पावि, शीत सङ्ग वृक्षादि मे।
तखन पुरुष तन आवि, रेतरुप स्त्री योनि गत ॥५॥
योनि रक्त संयुक्त, वेष्टित भेल जरायु सौं॥
एक दिवस भेल भुक्त, कलल भेल आरूढ़ पुन ॥६॥
भेल वुद्वुदाकार, पाँच रातिमैं सेह पुन।
सात राति सञ्चार, धयल पेशिताकार काँ ॥७॥
पनरह दिन चितिजाय, से पेशी शोणित युत
राति पचीश वितात्र, पेशीसों अंकुर वनय ॥८॥

चौपाइ

ग्रीवा माथ काँध ओ पीठि * वंश उदर एक मासे सृष्टि
पाणि चरण पाँजर कटि जानु * दूइ माँस मैं उतपति मानु
अङ्ग सन्धि वितला तिनि माँस * चारि माँस अंगुली प्रकास
नाँक कान लोचन वनिजाय * माँस पाँच काँ समय विताय
दन्त पाँति नह गुह्याधार * पचमे माँसैं होय प्रचार
नाँक कान मैं छिद्र प्रकास * वीति जाय जखना षट मास

पादाकुलक दोहा।

नाभि उपस्थ लिङ्ग ओपायुक उतपति मासैं सात।
सकलावयव रोम शिरमे कच अष्टमाँस विख्यात ॥१॥

स्त्रीक जठर मे गर्भे बाढथि पाँच माँस चैतन्य ।
जीव पबैछथि ई अद्भुत गति कर्त्ता प्रभु से धन्य ॥२॥

चौपाइ

मातृभुक्त अन्नादिक खाथि * वर्द्धित गर्भ ।विकल पछताथि
पूर्व्व जन्म मन पड़लय ताप * देखल विविध माय ओ बाप
विविध भक्ष्य नाना स्तन पान * कयल ततहु नहिं पावल ज्ञान
कति वेरि विधि कृत धारण देह * प्रज्ञा हरल विषय मे नेह
मिलि कुटुम्ब मे भेलहुँ प्रचण्ड * गर्भवास मे कर्म्मक दण्ड
कयल सकल हम अनुचित काज * विषयि कुटुम्बक सङ्ग समाज
नानायोनि विविध व्यवहार * कयल न भल मन कतहु विचार
अनुभव कत दुख योनि कुयन्त्र * करिय यहन हम सम्प्रति मन्त्र
सांख्य योग सौं करब न आन * जौं करता बाहर भगवान
गर्भ्भवास सौँ बाहर भेल * स्मरण ज्ञान माया हरि लेल
आत्मा सभ तन सौँ छथि आन * से जानथि जनिकाँ दृढ़ ज्ञान
होथि चिदात्मा जौँ परिज्ञात * मोह तिमिर हर भानु प्रताप
सुख दुख ज्ञानी सम मतिमान * देह स्थिति प्रारब्ध प्रमाण
देह थिकहुँ हम ई अध्यास * दुखदायक कर नरक निवास
कञ्चुक कञ्चुकि बुझ निजकाय * कञ्चुक रहित न ततय समाय
रहू अहाँ प्रारब्ध विचार * मिथ्या मानू ई संसार

सवैया

दण्डकवन रावण बध कारण, जनकनन्दिनी लक्ष्मण संग ।

औता करता माया मानुष, लीला मारीचक तन भंग ॥
रावण तस्कर बनि सीताकाँ, हरता तनि अन्वेषण काज ।
सुग्रीवक प्रेषित बानर सभ, औता जखना अँहक समाज ॥
तनिका सभकाँ अहाँ कहब सब, सीता छथि लङ्का जेहि देश ।
नबनव कोमल पक्ष अहाँकाँ, अनायास होयतगय वेश ॥
भेल सत्य जे कहल चन्द्रमा, देखू सभ जन जनमल पाँखि ।
हम जाइतछी दश दिन वितलै, दशमुख दुर्गति देखब आँखि ॥

रूपमाला

नाम जपिजपि जनिक जन, भवजलधि उतरथि पार ।
तनिक दूत अहाँ सबहि काँ, सिन्धु कति विस्तार ॥
यत्न कय जलराशि सन्तरु, देखि सीता आउ ।
कहल जे सन्देश प्रभु से, सकल सुचित सुनाउ ॥

इति श्री मैथिलचन्द्रकविविरचिते मैथिलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

चौपाइ

सम्पातिक सभ जनमल पाँखि * सभजन वानर देखल आँखि
ओ खग मुदित गगन पथ गेल * वानर सभ मन हर्षित भेल
दुर्ग जलधि सन्तरण विचार * अछि अगम्य के जायत पार
अङ्गद कहल अहाँ सभ गोट * प्रवल शूर सभ सुयश न छोट
राज काज मनदय के करत * ई जलनिधि कहु कहु के तरत
रघुपति कपिपति पालक हयत * निर्भय लङ्का पुर जे जयत

सुनल सर्व्वजन रहल अवाक * सभक परस्पर मुह सभ ताक
उचित न एहि अवसर चुपचाप * कहक अपन वल करक प्रताप
वानर सकल अपन वल कहल * अभ्यन्तर किछु गड़बड़ रहल
तखन कहल अङ्गद युवराज * लङ्का जाय करब प्रभु काज
शतयोजन जलनिधि कोँ फानि * जायब मनमे होइछ हानि
किछु गड़बड़ सन बुरती बेरि * आयब शीघ्र कि लागत देरि
जाम्ववान बजला बड़बृद्ध * नहि युवराज दूत परसिद्ध
हम अति वृद्ध करव की जाय * हम मँगितहुं नहि एक सहाय
बलि बञ्चन वामन अवतार * भेल तखन हम छलहुं कुमार
बढ़इत देल प्रदक्षिण सात * अगणित योजन प्रवल वसात
कि करव काज जरासौँ ग्रस्त * करितहुं नहि ककरो मन व्यस्त
अङ्गद शोच करू जनु चित्त * से छथि सङ्गहिं कार्य्य निमित्त
कहलनि तखन सुनू हनुमान * यहन काज के करता आन
हरता रघुवर धरणी भार * तनिक सहाय अहँक अवतार
जहि लय उतपति से दिन आज * की विलम्ब सत्वर करु काज
जन्म मात्र दिनकर फल जानि * गगन गेलहुँ शतयोजन फानि
खसलहुं भूमि अतुल वल वीर * व्यथा लेश नहि भेल शरीर
उठु उठु करु रघुनन्दन काज * हमरा सभहिक राखू लाज
सुनि हर्षित वर्द्धित हनुमान * नाद कयल घन सिंह समान
सकल सृष्टि फोड़क भ्रम कयल * पर्व्वत सन तन वामन धयल

कड़खा छन्दः

जानकी-जानि-पद हृदय मैं ध्यान करि,

सुरभिपद तुल्य जल राशिकैँ फानवे।
रोकि सकताह के बाट हम वायुसुत,
प्रवह सौँ अधिक जव दर्प्प मन मानवे॥
प्रभुक सन्देश कहि स्वामिनी देखिकैँ,
शत्रु दशमौलिकैँ बाँधि हम आनवे।
जारि लङ्कापुरी मारि वैरीन्द्र दल,
सकलजन तखन बल हमर किछु जानवे॥

घनाक्षरी

देखादेखी मध्य हम वारिनिधि फानि फेरि,
सदल सकुल दशवदन कैँ मारि कैँ॥
समर समक्ष प्रतिपक्ष लक्ष कोन अछि,
पवन प्रतक्ष बल लङ्कापुर जारि कैँ॥
चन्द्र भन रामचन्द्र परसन हेतु आगाँ,
भूधर सहित लङ्का धरब उखारि कैँ॥
जाम्बवान युवराज कहु की करब काज,
आनिदेव विनु श्रम जनक कुमारि कैँ॥

चौपाइ

जाम्बवान अङ्गद मन हर्ष * कि कहब वीरक मन उत्कर्ष
अँहइ पुरब रघुपति मन आस * हमरा सभकाँ दृढ़ विश्वास
जिवइत सीता छथि देखिलेब * से रघुनन्दन काँ कहिदेब
राम सहित रण पौरुष करब * समुचित जेहन तेहन अनुसरब

सतत करथु अँहाँकाँ कल्याण * व्योम विहार पता पवमान
आशिर्व्वचन कहल पढि मन्त्र * उड़ि चलला हनुमान स्वतन्त्र
सो०—स्वर्णवर्ण मुखलाल, महाफणीन्द्राकारभुज ।
महानगेन्द्र विशाल, प्राप्त महेन्द्राचल उपर ॥

इति श्री मैथिलचन्द्रकविविरचिते मैथिलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥९॥
किष्किन्धाकाण्डः समाप्तः ॥४॥

कवि प्रार्थना

झंझोटी

श्रीमत्करुणावतारमिन्दुखण्डभालं ।
वन्दे घनसारगौरमाश्रितैणवालम् ॥
परशुवराभीतिकरं व्यालराजमालम् ।
सर्व्वदा प्रसन्नमुखं कालकालकालम् ॥
व्याघ्रचर्म्मवाससं समस्तविश्वसारं ।
निर्ज्जरनिवहैः स्तुतं दृशा विनष्टमारम् ॥
पञ्चाननमादिदेवमाधिहं त्रिनयनम् ।
प्रलये जगतां ध्रुवं दयालुतासदनम् ॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्दा झा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

सुन्दरकाण्ड

* मैथिली रामायण *

॥ सुन्दरकाण्ड ॥

—ः—

द्रुतविलम्बित छन्दः

धुतनगेऽम्बरगे परसौत्सवे चकित भानुगणे जितमन्मथे ॥
जनकजाधिविनाशिमनोगतौ प्रणतिरस्तु हनूमतिमारुतौ ॥१॥

चौपाइ

जयजय राम नवल घनश्याम * सकललोक लोचन अभिराम
मनमे तनिक ध्यान दृढ राखि * मारुतनन्दन उठला भाखि
शतयोजन वारिधि विस्तार * लाँघव हम मन हर्ष अपार
रघुनायक कर जनु शर मुक्त * तथा हमहुँ जायव मुदयुक्त
देखथु कपिगण जाइत गगन * शोभित जेहन प्रवहमैं भगण
वैदेही हम देखव आज * दोसर एहन आन की आज
रघुनन्दन काँ वार्त्ता कहब * सत्वर घुरब अनत नहि रहब
नामस्मरण अन्त एकबार * जनिकर भवजलनिधिसौँ करपार
प्रभुक मुद्रिका हमरा सङ्ग * होयत न हमर मनोरथ भङ्ग
जायव लंका दनुज समाज * प्रभुप्रताप साधव सब काज

सो०—उड़ि चलला हनुमान, ध्यान राम पद मे सतत।
प्रबल प्रलय पवमान, रौद्र मूर्त्ति लंकाभिमुख ॥१॥

चौपाइ

लंका जाइत छथि हनुमान * की बल की मति से के जान
सुरसा काँ सुर सत्वर कहल * सर्पजननि करु सुरहित टहल
बहुत दिवस धरि मानव गून * जाउ शीघ्र घुरि आयब पून
रोकब बाट कहब नहि मर्म्म * बूझब की करइत छथि कर्म्म
कहल कयल से नभ पथ रोकि * चललहुँ कतय ततय देल टोकि
हमरा आनन सत्वर आउ * विहित भक्ष्य अन्यत्र न जाउ

सवैया छन्द

मारुत सुत कहलनि सुनु माता, राम काज कय आयब घूरि ॥
सीता विषय कहब श्रीप्रभु काँ, अँहक देब प्रत्याशा पूरि ॥
सुरसा देवि होइ अछि अइसा, कत जोड़ैछी छाड़ू वाट ॥
अभिनत मारुति कहल न मानल, नमस्कार कय भेलहु आँट
सुरसा कहल सून रे बाबू, नहि छोड़ब विनु खयलैँ ॥
एखनहुँ धरि जीवन प्रत्याशा, हमरा मुहमे अयलैँ ॥
बहुत दिनासौँ हम भूखलि छी, विनु आहारैँ मरबे ॥
हाथक मुसरी वियरे मे दयकैँ, कड़े कड़े नहि करबे ॥

चौपाइ

मारुति कहल देवि मुह बाऊ * खाय सकी तौँ हमरा खाऊ
योजन भरि विस्तर कर काय * सुरसा मुह दश कोश बनाय,

तकर द्विगुण हनुमानो कयल * विश योजन मुख सुरसा धयल
योजन तीस वदन हनुमान * योजन हुनक पचास प्रमान
अति लघु बनि मुँह बाहर जाय * नमस्कार हँसि कहल सुनाय
बहरयलहुँ देवि आनन पैसि * हम जाइत छी रहब न बैसि

दो०—सुरसा सन्तुष्टा कहल, सत्वर लंका जाय।
राम कार्य्य साधन करू, हम छी सर्पक माय॥
देव पठावल बुझल बल, सीता देखू जाय।
कुशल फिरब सीता कुशल, रघुवर देब सुनाय॥
तखन चलल हनुमान पुन, गरुड़ गमन आकाश।
जलधि तहाँ मैनाक सौँ, कयलनि बचन प्रकाश॥

चौपाइ

कयल सगर कुल बड़ उपकार * तनिक बढ़ाओल भेलहुँ अपार
तनिकहि वंश राम अवतार * हुनक दूत जाइत छथि पार
जलनिधि कहल जेहन हित वाक * जलसौँ उच्च भेला मैनाक
काञ्चन मणिमय शृङ्ग अनूप * ततय पुरुष एक दिव्य स्वरूप
हे कपि हमर नाम मैनाक * जलधि भितर डर मन मघवाक
मारुत नन्दन करु विसराम * खाउ अमृत सन फल एहिठाम
पथ विशराम न भोजन आज * अछि कर्त्तव्य राम प्रियकाज
शिखरक परश हाथ सौं कयल * गगन मार्ग पक्षी जकाँ धयल

दो०—धयलक छाया ग्राहिणी, कयलक गमनक रोध।
हनुमानक मनमे तखन बाढल अतिशय क्रोध॥

घोरस्वरूपा सिंहिका छाया धय धय खाय
नभचरकाँ ओ राक्षसो गगनगमन जे जाय ।२॥
देखल तनिकाँ मरुतसुत मारल झटदय लात ।
पुनि उड़ि कै चललाह से, शान्त भेल उतपात ॥२॥

हरिपद, पादाकुल दोहा वा

गिरि त्रिकूट पर लंका नगरी नाना तरु फल वेश ।
नाना खग मृगगण सौँ शोभित पुष्पलताबृतदेश ॥
दुर्ग दुर्ग मैं रोकत टोकत चिन्तित मन हनुमान ।
करब प्रवेश राति कय तहिपुर दिवा युक्ति नहि आन ॥

चौपाइ

राम चरण सरसिज कय ध्यान * सूक्ष्मरूप भेला हनुमान
पुरी प्रवेश कयल निशि जखन * बुझलक लंका नगरी तखन
कहलक गमहि चलल छी चोर * हम करइत छी गञ्जन तोर
बुझल न अछि दशकण्ठ प्रताप * चललँहु कतय आँहाँ चुपचाप
चुप रह कहलैँ पढ़लक गारि * चटदय लात चलौलक मारि
वाम मुष्टि हरि हनल सुतारि * खसली अवनीमे ओ हारि
शोणित वान्ति करय कय वेरि * करति कि एहन उपद्रव फेरि
लंका देवी बिकला कान * वरिया काँ नहि लागय वान
पूर्व्व विरंचि कहल छल जैह * अनुभव होइछ भेल कि सैह

षटपद

नारायण अवतार राम त्रेतामे हयता ।

पिता वचन सहबन्धु जानकी सङ्गहि जयता ॥
माया सीता ततय मूढ दशकन्धर हरता ।
वालि मारि सुग्रीव सङ्ग प्रभु मैत्री करता ॥
अहँकाँ तनिकर दूत कपि मारि मुका विकला करत ।
कहलनि विधि सुनु लंकिनी तखन बुझ‌ब रावण मरत ॥

चौपाइ

वनिता उपवन अरुण अशोक * महा भयंकरि राक्षसि लोक
जनक नन्दिनी छथि तहिठाम * शोभित वृक्ष शिंशपा नाम
कि कहब शोभा देखब जाय * हमहू धन्या दर्शन पाय
विजय वनल अछि यश अवदात * हमरा हानि कि महि आघात
देखब राम नवल घनश्याम * औता शीघ्र रहब एहि ठाम
सुनि हरि हँसल चलल उत्साह * घरहिक भेदिया लंका डाह
जखन पवनसुत रघुपति चार * दुर्ग महोदधि उतरल पार
दशमुख वाम अङ्ग भुज नयन * फरकय लाग अभागक अयन
भल मन्द सगुन सकल फल जान * कालक त्रास न दशमुख मान

षटपद

मारुत नन्दन तखन, सूक्ष्मतन निशि मे धय कँहुँ ।
लंका कयल प्रवेश, भ्रमित अतिगुप्त भयकँहुँ ॥
सीता तकयित ततय, दशानन मन्दिर गेला ।
देखि विभव विन्यास, वहुत मन विस्मित भेला ॥
देखल लंका सकल थल, नहिँ प्रदेश बाँकी रहल ।

देखलनि नहि सीता कतहु, स्मरण भेल लंकिनि कहल ॥

दोवय छन्दः

अरुण अशोक देव द्रुम सोदर, तरुतति आनत फल सौं ।
उत्तम मणिसोपान वापिका, पूरित निर्म्मल जलसौं ॥
कञ्चन महल कहल नहिँ जाइछ, चुम्बित जलधर माला ।
मणिस्तम्भ शतसौं अतिशोभित, खगमृग परिबृतशाला ॥

चौपाइ

विस्मित मन सन मारुत पूत * देखयित जाथि रघूत्तमदूत
कनकविहङ्गम जतय अनेक * बृक्ष शिंशपा देखल एक
अतिरमणीय निविड़ तरुछाह * मारुतनन्दन ततय गेलाह
तेहि तरु ऊपर बैसला जखन * सीता काँ देखल से तखन
भूतल देवी आवि की गेलि * राक्षसपुरी विकल मनभेलि
वेणी अति मलीन एक चीर * दीना दुर्व्वलि मृदुल शरीर
लङ्काविषय एहनि के आन * सीता थिकि निश्चय अनुमान
राम राम मुख करथि उचार * भूमि लुठित मन दुःख अपार
तहितरु मूल जानकी जानि * अपन भाग्य काँ उत्तम मानि
अति कृतार्थ भेलहुँ देखि आज * हम साधल रघुनायक काज

दो॰ ८—अन्तःपुर बाहरक सुनि, कल कल शब्द महान ।
वृक्षखण्ड संलीन तन, कर विचार हनुमान ॥

चौपाइ

दशमुख वनिता वृन्दक सङ्ग * आयल कज्जल गिरिवर रङ्ग

किकिनि नूपुर शिञ्जित सूनि * दुष्ट निशाचर आगम गूनि
विशभुज लोचन दशगोट मुण्ड * सह सह सङ्ग राक्षसी भुण्ड
अतिविस्मत मन कह हनुमान * देखल सुनइत छलहुँ जे कान
रहला द्रुम दल दबकि नुकाय * अछि आँगाँ कर्त्तव्य उपाय
कर विचार रावण मन अपन * पूर्व रात्रि जे देखल सपन
राम पठाओल वानर दूत * कामरूप बलबुद्धि बहूत
टक टक ताकय तरुपर बैशि * बुझलक घाट बाट पुरपैशि
कयल बहुत हम रामक दोष * एखनहुँ धरि हुनका नहिँ रोष
कहिया मरण राम कर हयत * माया पापकाय छुटि जयत
एखनहुँ धरि नहिँ आबथि राम * कहिआ होयत दिव्य संग्राम
मनमैं ज्ञान उपर अभिमान * चकमक भीतर आगि समान
वचनवाण तेहन अनुसरब * सीतामन अतिकलुषित करब
स्वप्न सत्यतौँ कपि देखि लेत * रामचन्द्र काँ सभ कहि देत
जौं कपि होयता कहता जाय * लौता सानुज राम बजाय
ई मन गुनिकैं सीता निकट * पहुँचल दशमुख दुर्म्मद विकट
सीता दशा कहल नहिँ जाय * आत्ममध्य जनु रहलि समाय

दो०—रावण सीता काँ कहल, सुमुखि सत्य वृत्तान्त।
राम न औता काज किछु, मनमैं करु सिद्धान्त॥

चौपाइ

वैदेही परिहरु सन्ताप * उचित कयल नहिँ अहँकाँ वाप
रामक हाथ देलकी जानि * काननवास अकारण हानि

हेम हरिण देखयित भेल लोभ * लंका देखि त्यागु मन छोभ
शिवशिव आब कि रामक आश * लंका छोट हाथ उनचास
जौं नहिँ निर्गुण रहितथि राम * तौं बसितथि नृपदशरथ धाम
राम बसथि वनचरगण सङ्ग * हमहुँ सुनल छल कथा प्रसङ्ग
बहुत तकाओल लोक पठाय * नहिँ भेटला रहलाह नुकाय
जौं हुनकाँ अहँ मे किछु प्रीति * अबितथि लय जइतथि रण जीति
पामर रामक त्यागू आश * विद्यमान लंकेश्वर दास
हरि आनल अहँकाँ कतदूरि * एको बेरि की तकलनि घूरि
वड़ कपटी छथि ज्ञान धमण्ड * दैवो देलथिन समुचित दण्ड
सकल सुरासुरनारिसमाज * सभक स्वामिनी होयब आज
सीता मन जनु करु किछु छोट * भाग्य अहाँक भेल बड़ गोट
तृण अन्तरित अधोमुखि रुष्ट * रावण वचनक उत्तर पुष्ट
जे शिर शिवकाँ अर्पण कयल * प्रबल पाप चरणों तत धयल
धिक धिक रावण तोहर ज्ञान * काल निकट अनुचित हित मान
जनिक त्रास बनि भिक्षुक रूप * हरि हरि हरिलयला की चूप
कुक्कुर जनु मखघृत लयजाय * मरबह खल पाछाँ पछताय
मानुष मानह श्री रघुवीर * परिचय भन तन लगलय तीर
औता सानुज प्रभु रघुनाथ * खिचलत गर्व्व तोर दश माथ
वाणक तेज समुद्र सुखाय * सायक सेतु उदधि बन्धवाय
औता निश्चय होयत मारि * निश्चय तोहर रणमे हारि
मरबह पुत्रनिकर बल सहित * आयल निकट तेहन दिन अहित

दो० - सीता वचन कठोर सुनि, रावण लय तरुआरि ।
एहन कथा हमरा कहति, सद्यः हस देव मारि ॥

चौपाइ

मन्दोदरी कहल सुनु नाथ * अवलावध की अपनैं हाथ
विदित वीर अपनैं ई नारि * अपयश पाप देव जौं मारि
अवला ऊपर एतटा रोष * कड़रिक तरुपर शितुआ चोप
कृपणा मलिना दुर्व्वल देह * हिनका जीबहु मे सन्देह
अन्नपानि कयलाने अछि त्याग * नहिँ करती परजन अनुराग
अँहँकाँ कोन कमी प्राणेश * जीतल भुजबल सकलो देश
सुरगन्धर्व्व सकल जन नाग * कन्या लेलैँ मानथि भाग
कन्या जन मद घूर्णित नयन * अपनहिँ सुखसौं अउती शयन

दो०—रावण राक्षसि सौं कहब, उत्कट त्रास देखाय ।
अनुकूला सीता करह, जे बल बुद्धि उपाय ॥
दूइ मासमे करति ई, जौं हमरासौँ प्रेम ।
सकल राज्य रानी हयति, हिनकाँ सभ सुख छेम ॥
बहुत बुझौलैँ नहिँ बुझथि, बीति जाय दुइ मास ।
हम आज्ञा दयदेल अछि, हिनकर करब विनाश ॥

चौपाइ

अन्तःपुर गेला दशभाल * वनिता परिवृत गर्व्व विशाल
विकटादिक सीता तट, जाय * भय भीता कर स्वाङ्ग बनाय
व्यर्थ तोर तन यौवन आस * भेल न दशमुख सौँ सहवास

केओ कह हिनक अङ्ग सभ काट * केओ कह जीह सँ शोणित चाट
अपने हठ अपने सुख खाय * होयत की पाछाँ पछताय
केओ तरुआरि तेज लय हाथ * काटि लिअ हम हिनकर माथ
केओ दौड़ल बड़ गोट मुह बाय * की विलम्ब हम जाइ छी खाय
त्रिजटा कहल करह अन्याय * सीता नहिँ जानह असहाय
हिनकर निकट भ्रमहुँ जनु जाह * अपने अपने तन वरु खाह
यहिखन हम देखल अछि सपन * होयत सत्य बुझल मन अपन

रूपमाला

चढ़ल ऐरावतक ऊपर, राम लक्ष्मण सङ्ग ।
दग्ध लङ्कापुरी भय गेल, समर रावण भङ्ग ॥
राम सेवा कर विभीषण, राज्य लङ्का पाय ।
जानकी ई राम अङ्कस्थिता भेली जाय ॥

चौपाइ

दशमुख नग्न सकल परिवार * तेल लगौलैँ भरल विकार
गोवर डावर मध्य नहाथि * खर पर चढ़ल याम्य दिश जाथि
रावण मरता सहित समाज * प्राप्त विभीषण काँ भेल राज
राम जानकी मिलि घर जयत * दुखमय लङ्का सत्वर हयत
करत अनर्थ अखण्डित नोर * धन्य धन्य सीता हिय तोर
करु करु धैरज कहव की आन * मुठि एक धूर न चान मलान

कवित्त घनाक्षरी गीत

त्रिजटा कहल सुनु जानकी नवीन कथा,

वानर विशेष वरवाटिका उजारलक ॥
रक्षक प्रवल रण - दक्ष लक्ष लक्ष खेत,
मुइल मुर्च्छित कतो रावण पुकारलक ।
चन्द्र भन यहन न देखल सुनल छल,
अक्षय कुमार काँ पटकि झट मारलक ॥
कतहुँ न हारलक वीरता प्रचारलक,
रावण पालित हाय लङ्कापुर जारलक ॥१॥

सवैया छन्दः

स्वप्न कथा राक्षसि गण सुनि कैँ,
त्यागि उपद्रव गेलि डराय ।
मद मातलि छलि जागलि थाकलि,
निन्द विवश भेलि जहँ तहँ जाय ॥
सीता तखन विकल मन भीता,
दुःख मुर्छिता रहित उपाय ।
कनइत कलपि कहथि की करु विधि,
प्रातहि राक्षसि जाइवि खाय ॥

गीत काफी १

सपन हम देखल अचिन्तित राति ।
विद्रुमरक्त वदन तेजोमय, अद्भुत वानर जाति ॥
प्रभु प्रेषित पाथोनिधि सन्तरि, लङ्कापरिचय पावि ।
हम विधिहवा सुनल शुभ वार्ता, इष्ट अनिष्ट कि भावि ॥

जे दिन लंका प्रलय होइछ नहिँ से दिन पापिक भाग ।
ई अन्याय घोर लङ्कामें, पानिसौँ आगि न लाग ॥
सुरपति सुतक पराभव दायक, कौशल कोशल भूप।
से शर से कर से श्रीरघुवर, कत वैसल छथि चूप ॥

गीत

से दिन कोना होयत मनोरथ पूर ।
रघुनन्दन बल प्रलय पवन सम, अधम निशाचर तूर ॥
देवर तीर जेहन प्रलयानल, रावण गण वन भूर ।
के हम थिकहुँ ककर हमर कामिनि, परिचय पओोता क्रूर ॥
सकल तमीचर तामश तमसम, श्रीरघुनन्दन शूर ।
हमर यहन गति दैव देखै छथि, नहिं उपाय किछु फूर ॥
तीरक तेज समुद्र सुखायत, जलथल ऊड़त धूर ।
कोटि शनैश्चर सहित संकटा, लङ्का घर घर घूर ॥

गीत

केहन विधि लिखल विपति तति भाल ।
कुल पवित्र कुलकामिनि हमरहि कठिन विपति जंजाल ॥
रघुनन्दन पति देवर लक्ष्मण जनि डर काँपय काल ।
चोर दशानन त्रास देखावय, अनुचित कह बाचाल ॥
दनुज वधू कह मारब काटब, चाटब शोणित लाल ।
यहि अवसर जौं ओ प्रभु आवथि, देखथि समटा हाल ॥
काल दूत जनि हेम हरिण छल, छल न बुझल ततकाल ।

कालहि सिंहधरणि तट निर्भय, गरवित सरभ शृगाल ॥

गीत

हमर विधि प्राण अपन भेल भार ।
की सुख बुझि छथि ओ ई देहमे कतहु कि नहिँ आधार ॥
जौँ आवथि रघुनन्दन सानुज लीला सागर पार ।
गृद्ध झुण्ड दशमुण्ड मुण्डपर कर खर नखर प्रहार ॥
ककरा कहब केओ नहिँ मानुष नहिं कारुणिक चिन्हार ।
रक्षा करथि अरक्षित जनकाँ केवल धर्म्म उदार ॥
कठिन विषय विष तिप नहिँ भेटय खड़्ग लग्न तिषधार ।
शिव शिव जीव-घात वर मानल धिक जीवन संसार ॥
रामचन्द्र चन्द्रिका थिकहुँ हम सपन न मन व्यभिचार ।
विधिबुधि विरहिणि व्याकुलि एकसरि चित चिन्ता विस्तार ॥

सवैया मुदिरा

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ दशकण्ठपुरी हम आइलि छी ।
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी ॥
चन्द्रचकोरि अहैँक सदा हम शोकसमुद्र समाइलि छी ।
देवर दोष कहू हम की अपना अपराधसँ काइलि छी ॥

दोहा

जनक जनक जननी अवनि रघुनन्दन प्राणेश ।
देवर लक्ष्मण हमर छथि नैहर मिथिला देश ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
सुन्दरकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

चौपाइ

सीता सुनथि सुनय नहिँ आन * शङ्ख शङ्ख कह तहँ हनुमान
राजा दशरथ काँ सुत चारि * जेठ राम काँ सीता नारि
शिवधनु तोड़ल मिथिला जाय * जनक देल कन्या से न्याय
परशुराम अयला कय कोप * तनिकर भयगेल गर्व्वक लोप
भूमिभार संहारक काज * विघ्न कयल बड़ देव समाज
बारह वर्ष राम वनवास * केकयि परवश कयल प्रयास
हरल शारदा केकयि ज्ञान * ककरो कहल कि रानी मान
वर न्यासित दशरथ सौं लेल * दशरथ प्राण रहित भै गेल
लक्ष्मण सीता संगैँ राम * पंचवटी मैं कैलनि धाम
भिक्षुक बनि रावण संचरल * सून्याश्रम सौँ सीता हरल
दश भालक संग लड़ल जटायु * दृष्ट कथा हम कते सुनाउ
कानन कथा सकल से कहल * विरही विकल राम दुख सहल
किष्किन्धा मैं यहन चरित्र * वालि घालि सुग्रीव सुमित्र
सुग्रीवक हम मन्त्रि प्रधान * नाम हमर कह जन हनुमान
वानर दूत फिरय सभ देश * सीतान्वेषण मुख्य निदेश
तहि मैं हमहुँ पयोनिधि फानि * अयलहुँ लङ्का जानकि जानि
बृद्ध गृद्ध कहलन्हि सम्पाति * घुरि फिरि देखल लङ्का राति
दबकल दबकल एहि तरु कात * देखल सुनल गंजन उतपात
हम कृतार्थ भेलहुँ अछि आज * हमहिं कयल रघुनन्दन काज
जनक नन्दिनी देखल आँखि * अयलहुँ सङ्गी पारहिं राखि

षटवट छन्द

नहिं अछि आज्ञा तेहन, जेहन हम कौतुक करितहुँ।
लङ्कापुरी उखाड़ि प्रभुक, पदलग लय धरितहुँ॥
दशमुख सौं कय बेरि अपन दुहुँ पैर धरबितहुँ।
नाँगड़ि मैं लपटाय बांधि सभ लोक फिरबितहुँ॥
जननि थोर दिन विपति अछि, सकुल सदल रावण मरत।
गृद्ध काकगण मगन मन, लङ्कापुर डेरा करत॥

चौपाइ

धयलैँ छली अशोकक डारि * सुनल सकल मन रहलि विचारि
कहयित के अछि कथा चिन्हार * देखितहुँ लोचन वह जलधार
दुःख अपार निन्द नहिं आब * गगन वचन हित हमर सुनाब
मरइत राखि लेल जे प्राण * वचन सुनाओल अमृत समान
दया करथु से दर्शन देथु * सुकृत समाज सहज यश लेथु
शंच शंच से कयल प्रणाम * हृदय राखि रघुनन्दन राम
सीता वचन सुनल हनुमान * प्रकट भेल कलविंक प्रमाण
पीतवर्ण मुख अतिशय लाल * वद्धाञ्जलि मन हर्ष विशाल
आगाँ आबि प्रणत कपि रहल * देखइत सीता मनमें कहल
वानर रूप धयल दशकण्ठ * हमरा मोहय कारण चण्ठ
रहलि अधोमुखि विकलि अवाक * रावण भ्रम सँ कतहु न ताक
मानिय हमरा जननि न आन * हम रघुपतिक दास हनुमान
पवनक तनय विनययुत जानि * सज्जन थिकथि हृदय अनुमानि

दो०—शाखामृग निश्चय अहाँ, हमरा मन विश्वास।
नर वानर संघटन विधि, कारण करू प्रकाश ॥

चौपाइ

दूरस्थित कहलनि हनुमान * जननि कहब हम वचन प्रमाण
लक्ष्मण सहित राम घनश्याम * धनुर्बाणधर छवि अभिराम
ऋष्यमूक लग अयला जखन * दृष्टि पड़ल सुग्रीवक तखन
हमरा तत्य पठौलनि विकल * इष्ट अनिष्ट बुझू विधि सकल
इष्ट मानि मन दुनू भाय * लय गेलहुँ हम कांध चढ़ाय
अचल सख्य सुग्रीवक सङ्ग * थोड़बहि दिन में सङ्कट भङ्ग
रामक करशर वालिक मरण * भवजलनिधि वाली सन्तरण
से सुग्रीव पठाओल दूत * दश दिश वानर वीर बहूत
चलयित कहलनि श्रीरघुनाथ * कार्य्य सिद्धि कपि अँहँइक हाथ
सानुज हमर कुशल सम्भाषि * देव मुद्रिका आगां राखि
रामक चर प्रभु मुद्रा सङ्ग * रावण गण मन कीट पतङ्ग
एहि मैं तनिक लिखल अछि नाम * देल चिन्हारय कारण राम

षट्पद

निर्धन करथि कुबेर, कुबेर करथि प्रभु निर्द्धन।
जे चाहथि से करथि, देव कौशल्या नन्दन ॥
हम आयलछी सिन्धु, फानि देखल लङ्का भट।
हमरहु ई सामर्थ्य, दशानन मारी चटपट ॥
लेलजाय प्रभु मुद्रिका, मानी जनु किछु आन मन।
प्रणत ठाढ़ दय मुद्रिका, हाथ जोड़ि रहला तखन ॥

चौपाइ

चिन्हल मुद्रिका माँथा भयल * कत विलाप कनइत तत कयल
कियक कयल रघुवर कर त्याग * हमरे सन की भेल अभाग
रमा भवन वन हम अहँ बाट * सभ जनि स्नान कयल एक घाट
के कर वनिता जन विश्वास * कहु कहु मुद्रा वचन प्रकाश
प्राण दान कांप कयलहुं आय * मरितहुँ एहिखन सङ्कट पाय
प्रभुकाँ अहँक सदृश नहिँ आन * हमरहुँ भेल विदित अनुमान
हमरा निकट पठाओल नाथ * देल मुद्रिका अहँइक हाथ
गञ्जन दुःख देखल प्रत्यक्ष * कहबनि सानुज प्रभुक समक्ष
दया करथु आबथु रघुनाथ * यमघर पहुँच शीघ्र दशमाथ
दूइ मास जखना विति जयत * नहि जौं औता राक्षस खयत
कपिपति सहित सैन्य समुदाय * लय आबथु सङ्कट छुटि जाय
यावत नहिँ रावण संहार * तावत हमरा कारागार
तेहन उपाय करब हनुमान * सत्वर रावण त्यागय प्राण
मारुत सुत कह सुनु जगदम्ब * हमरा जय धरिक विलम्ब
ककरा रावण कयल न आंट * हुनका यमघर गेलहिँ बाट
सायुध औता लक्ष्मण राम * अहँ काँ लय जयता निज धाम
पुछल जानकी कहु कहु कीश * कुशल करथु अहँ काँ जगदीश

चरणाकुल दोहा

लाँघि समुद्र सहित कपिसेना, सानुज करुणागेह ।
औता कोन उपाय कहू कपि, हमरा मन सन्देह ॥

चौपाइ

हमरा काँध चढल दुहु बन्धु * आता लाँघि अगम्य कि सिन्धु
सैन्य सहित कपि वालिक भाय * सभके लओता गगन उड़ाय
से कर रावण सगण विनाश * हुनका नहिँ रण कालक त्रास
आज्ञा देल जाय हम जाउ * रावणारि के सत्वर लाउ
देल मुद्रिका परिचय काज * प्रत्यय पात्र हमहुँ तेँ आज
परिचायक किछु भेटय तेहन * कहल सुनल देखल अछि जेहन
चूड़ामणि देल सहित बिचार * दीना दीनदयालुक दार
कागत मसि नहिँ अछि एहिठाम * कोटि कोटि कहि देव प्रणाम
जिबइत छथि जानकि तहि देश * दशमुख विशभुज वस असुरेश
चित्रकूट गिरि जखन निवास * गुप्त कथा कहि देव प्रकाश
शयित छला प्रभु हमरा अङ्क * सुख सुषुप्त प्रियकाँ निश्शंक
इन्द्रक बालक कालक फेरि * काक बनल आयल ओहि वेरि
चरणाङ्गुष्ठ में चञ्चु प्रहार * अवतहिँ कयलक रहित विचार
के दुख देलक अहँकाँ दुष्ट * जगला लगला पूछय रुष्ट
अपनहुँ देखल तखनहुँ काक * उड़ि उड़ि आवय निर्भय ताक
चहलक पुन हम मारब लोल * उठल निवारण कारण घोल
तृणका लय दिव्यास्त्र बनाय * तनिकाँ ऊपर देल चलाय
देखलनि ज्वलित अवै अछि वाण * कि कहव उड़ला लैके प्राण
इन्द्रादिक नहिं रक्षा कयल * फिरि घुरि पुन प्रभु शरणे धयल
त्राहि त्राहि राखू एहि वेरि * करब उपद्रव हम्म नहिं फेरि
चरण न छोड़ गेल लपटाय * अस्त्र अमोघ वृथा नहिँ जाय

इन्द्रक बालक कौआ जाह * एक आँखि कय देबहु कनाह
काक स्वरूप ज्ञात संसार * आकृत जेहन तेहन व्यवहार
से पौरुख से ओ रघुनाथ * अजगुत जिवतहिं अछि दशमाथ
ई सुनि तखन कहल हनुमान * अओता शीघ्र राम भगवान
लङ्का नगरी सकल उजारि * जयता घर धुरि रावण मारि

दो०—कहल जानकी अहिँक सन, कपिदल सूक्ष्म शरीर ।
युद्ध असम्भव असुर सौँ, नहिँ होइछ मन थीर ॥

कुण्डलिया

सुनइत सीता वचन कपि, पूर्व्व रूप बनि गेल ।
कनक शैल सङ्काश तन, मन अति हर्षित भेल ॥
मन अति हर्षित भेल, कहल सभ गुण अँह आगर ।
मेरु सदृश अँह मथिअ, करब रावण बल सागर ॥
देखति राक्षसि लोक, एखन धरि नहिँ अछि जनइत ।
कुशल प्रभुक तट जाउ, कहब जे छल छी सुनइत ॥

कवित्त रूपक घनाक्षरी

बड़ हम भुखल चलल नहि जाइ अछि,
आज्ञा देल जाय जाय फल किछु खाय लेब ।
चन्द्रभन रामचन्द्र चरण भरोश मन,
अपनैक पदधूरि माँथ मे लगाय लेब ॥
चलल प्रबल पवमान हनुमान वीर,
मनमे कहल फल खाय कैँ अघाय लेब ।

प्रभुक विमुख दश मुखक सम्मुख जाय,
शूरता देखाय मान अपन बचाय लेव ॥१॥
तड़पि तड़पि तत तरु तड़ तड़ तोड़ि,
रोक के अशोक वर वाटिका उजाड़ि देल ।
रहल न चैत्यतरु महल ढहल कत,
सीताक निवास शिंशपाक तरु छाड़ि देल ॥
पकड़ पकड़ कपि जाय न पड़ाय कहूँ,
कहल तनिका मारि पृथिवी मे पाड़ि देल ।
लङ्कापुर जाय जहाँ सङ्गी न सहाय,
तहाँ मारुत नन्दन रौद्र वीरता उघाड़ि देल ॥

चौपाइ

विकटा गण मन गेलि डराय * कल कौशल सीता लग जाय
कहु कहु जानकि कपि निर्भीक * बुझना जाइछ थिकथि अहींक
वजइत छलँहुँ कलपि किछु शङ्क * चुप चुप कयल कि अहाँ प्रपञ्च
हमरा त्रास अहाँ निस्त्रास * मन मे जनु दृढ़ भयगेल आश
कनइत छलहुँ भेलहुँ अछि चूप * देखिपड़ आने हर्षक रूप
जानकि कहू करी जनु लाथ * कहिया अओता पति रघुनाथ
सभजनि सुनु विपतलि की बाज * थिक प्रपञ्च किछु राक्षस राज
अपनहिं सभहिं कहू की थीक * राक्षस माया जान अधीक
राक्षसि दशा कहल की जाय * गमहि गमहि सभ गेलि पड़ाय

दो०—सीता कारागार में, यामिक दनुजी जानि ।
दशमुख पुछलनि कह कुशल, भयभीता अनुमानि ॥

दोवय छन्द

त्रास देखाय कर शशा सीता, कहल भेल की अयलहुँ।
सीता काँ एकसरि की त्यागल, एको जनि उचित न कयलहुँ॥
दशमुख वचन सुनल से कहलनि, सेवा कयल अघयलहुँ।
मर्कट एहन विकट नहिं देखल, लयलय प्राण पड़यलहुँ॥
रक्षक मध्य एको जन नहिँ छथि, तनिके वार्ता लयलहुँ।
सकल अशोक वाटिका उजड़ल, सीता निकट नुकयलहुँ॥
राजकीय पन्थेँ के सञ्चर, उनटे पथ धय अयलहुँ।
सीता त्रास देखावय गेलहुँ, अपनहिँ त्रासित भेलहुँ॥

पदाकुल दोहा

सीता मन आनन्दित देखल, पुछलैं कयलनि लाथ।
हुनकर रङ्ग तेहन सन देखल, लङ्काजय जनु हाथ॥
निर्भय कपि की सहजहिँ जायत, भिड़ता से मरताह।
कालरूप कपि सञ्चर भेलैं, नहिँ घर केओ घुरताह॥

घनाक्षरी

जानकी निकट हम जायब कि घूरि पुन,
कनक भूधर सन वानर विशाल से।
काँच वो पाकल फल एको न बचल हाय,
खाय सभ गेल.कत गोट मुह गाल से।
आयल कहाँ सैँ कहाँ छल हम देखल न,
वालदिनकर सन वड़ मुह लाल से।

देखू दशभाल की अशोक वन हाल भेल,
मरि गेल रक्षक वेहट्ट कपि काल से।

दोवय छन्दः

सुनितहिँ शीघ्र पठाओल सेना, बहुत विकट भट गेला।
लोहदण्ड धर जँह उदण्ड कपि, तनिकर सन्मुख भेला॥
सिंहनाद कय सभकाँ मारल, नहिं रण में कपि हारल।
अर्द्ध मरण सम भेल कतो जन, रावण निकट पुकारल॥
महाकाल बानर तन धयलनि, लङ्का नाशक कारण।
क्षणमे विपिन अशोक उजारल, फल चय कयलनि पारण॥
साहस लङ्का निर्भय आयल, के करताह निवारण।
लङ्कापति अपनहुँ चलि देखू, की थिक करु निर्द्धारण॥

रूपमाला।

गेल छल संग्राम किंकर, निहत सुनि दशभाल।
कोप सौँ सत्वर पठाओल, पाँच सेना पाल॥
स्तम्भ लौहक हाथ लयकैं, तनिक तेहन हाल।
कयल मारुत तनय विजयी, समर मे तत्काल॥
तखन मन्त्रिक सात बालक, युद्ध उद्यत भेल।
क्रोध सौँ रावण पठाओल, गेल ईर्ष्या लेल॥
सकल जन कैं मारि मारुत-तनय पुन तहि ठाम।
स्तम्भ लौहक अस्त्र एकटा, जितल भल संग्राम॥

चौपाइ

अगुआ चलला अक्षकुमार * कयल बहुत सेना सहिआर
ततय बाट तकितहिँ हनुमान * के पुन अओता जयतनि प्राण
अबइत देखल अक्षकुमार * मनमन मानल हर्ष अपार
मुदगर कर लय उड़ल अकाश * सत्वर हिनकर करब विनाश
मुदगर लय कर लगले घूरि * रावण सुतक माथ देल चूरि
रणमे मॉंचल हाहाकार * मुइला मुइला अक्षकुमार
कन्नारोहट उठ बड़ घोल * लड़त कहाँ के भभरल गोल
सेना लड़ि लेलक भरि पोष * के सह मारुत नन्दन रोष
वार्त्ता विदित भेल दरबार * नहिँ छथि जिबइत अक्षकुमार
सुनि रावण मन पैसल शोक * बाहर हलचल बुझय न लोक
छलछथि अतिबल प्रबलप्रताप * रावण सन जनिकाँ छथि बाप
मेघनाद सन जनिकाँ भाय * वानर हाथ मरण अन्याय
लंकापति मन कोप अपार * मेघनाद सौँ कयल विचार
कय बेरि वजला भेल अन्धेरि * हम अपनहिँ जायब एहि बेरि
अक्षय कुमारक और जहि ठाम * ततय जाय जीतब संग्राम
मारब अथवा बाँधब जाय * अहँइक लगहम देव पहुँचाय
मेघनाद कहलनि सुनु तात * वानर कयलक अछि उतपात
शोक वचन जनु बाजल जाय * हम जिबइत छी अक्षक भाय
आनब अपनेक निकट !बझाय * हमर पराक्रम देखल जाय

चरणाकुल दोहा

ई कहि रथ चढ़ि राक्षस भट लय, मेघनाद चललाह ।
मारुत नन्दन शत्रु निकन्दन, कपिवर जतय छलाह ॥

चौपाइ

की रावण रावण सन आन * अयइछ होइछ मन अनुमान
गरजल गरुड़ जकाँ नभ जाय * स्तम्भ महागोट हाथ उठाय
घुमइत गगन छला हनुमान * रावण पुत्र चलौलक वाण
आठ हृदय मे माँथा पाँच * युगल चरण मे छौ नाराच
पुच्छ मध्य मारल एक वाण * मारि कयल धुनि सिंह समान
कोप विवश मारुत सुत घूरि * रथ घोड़ा सारथि देल चूरि
नहिं जीतब मन बूझल जखन * ब्रह्मास्त्रैं कपि बान्हल तखन
ब्रह्मास्त्रक कपि राखल मान * अपनहिँ बझला मन किछु आन
बाँधल बाँधल भय गेल सोर * एहन विश्व नहिँ घाती चोर
बाँधल अछि लय चलु दरबार * करब तेहन जे दशक विचार
जीवनशक्ति थिकथि हनुमान * कि करत तनिका बन्धन आन
रामचरणपङ्कज मन धयल * मारुत सुत बड़ लीला कयल

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
सुन्दरकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाइ

बाँधल कॉ पुरजन मिलि मार * कौतुक पहुँचल दशमुख द्वार
त्रास हीन हर्षित हनुमान * केवल कौशलेश पद ध्यान

मारि गारि सबहिक सहि लेथि * पाँमर काँ नहिँ उत्तर देथि
मेघनाद कहलनि सुनु तात * कयलक ई वानर उतपात
ब्रह्मास्त्रें हम जीतल जखन * वानर वशमे आयल तखन
कहल जाय की समुचित मन्त्र * वानर काँ नहिं करब स्वतन्त्र
लौकिक वानर सन नहिं कर्म्म * अपनहिँ जानब हिनकर मर्म्म
ताकि प्रहस्त सचिव सौँ कहल * विषय विचार करक जे रहल
पुछु वानर कै मन्त्रि प्रहस्त * ओ आयल कपि कालक ग्रस्त
की आयल अछि की अछि काज * वानर सौँ बजइत हो लाज
कथि लै कयलक उपवन नाश * राक्षस वध करइत नहिं त्रास
कहलनि मन्त्रि प्रहस्त प्रकाश * कपि मनमे नहिं मानब त्रास
प्रेषित ककर कहब से साँच * प्राण अहाँक अवश्ये बाँच
कहलनि हरि बड़ गोट मोर,भाग * दूरक ढोल सोहाओन लाग

छोवय छन्द

भूषल छलहुँ सङ्ग नहिं खर्चा, तोड़ि तोड़ि फल खयलहुँ ।
रक्षक लण्ठ प्राण लेबा पर, बहुत नेहोरा कयलहुँ ॥
कान कपार एक नहिं बूझल, पातैँ पात नुकयलहुँ ।
अपन स्वरूप धयल हम सभकाँ, कालक धाम पठयलहुँ ॥
पहिलय माँरि बहुत हम सहलहुँ पाछाँ अनुचित कयलहुँ ।
दशमस्तक लङ्कापति राजा, की अपने खिसिअयलहुँ ॥
एक गोट वानर पर एते, सेना व्यर्थ पठयलहुँ ।
धर्म्म शास्त्र वेत्ता अपनैँ सन न्याय करू अगुतयलहुँ ॥

रावणोक्ति वसन्त तिलका छन्द

के तों थिकैं कतय सौं एत आविगेलैं ।
की नाम तोहर निशाचर भक्ष्य भेलैं ॥
आज्ञा विहीन फल तोड़ि बहूत खैलैं ।
निहेंतु रक्षक तहां किय मारि देलैं ॥

हनूमानक उक्ति

रे दुष्ट लागल क्षुधा फल तोड़ि खैलौं ।
कैलैं उपद्रव ततै तरु तोड़ि देलौं ॥
हैतौ बहूत नहि सम्प्रति विघ्न भेलौं ।
अस्त्र प्रहार कयलैं हम प्राण लेलौं ॥२॥

मालिनी छन्द

रघुपतिक पठौलैं लांघि कैं सिन्धु ऐलौं ।
तनिक कुशल वार्ता जानकी कैं सुनौलौं ॥
क्षुधित बहुत भेलौं तैं फलाहार कैलौं ।
मारुत सुत हनूमान्नाम की बाँधि लैलौं ॥
किछु दिन रहि लङ्का सिन्धु कैं फानि जैवे ।
जनक नृपति पुत्री दुःख वार्ता सुनैवे ॥
प्रबल सकल सेना सङ्ग लै फेरि ऐवे ॥
तखन बुझब जे छी से अहाँकाँ बुझैवे ॥

भुजङ्गप्रयातछन्द ।

चिन्हारे अहाँ छी बिरञ्चि प्रपौत्रे,

कुकर्मी अहाँ स्त्री करै छी की सौत्रें ।
गिरीशार्च्चना छोड़ि ई की करै छी,
परस्त्री अहाँ छद्म सौं की हरै छी ॥

चौपाइ

लङ्कापति हम छी निर्भीत * फेरि गबैछी गओले गीत
ब्रह्म बिष्णु रामक अबतार * के गुण कहत हुनक बिस्तार
बेद न पावथि कहयित पार * जनिकर सिरजल थिक संसार
तनिकर माया सीता रूप * हरि आनल बन सौं चुप चूप
गञ्जन बन्धन कर्म्मक भोग * अयलहुँ नदिया नाव संयोग
तनिकर दूत चार हम अयल * करब उपाय एखन की कयल
अनुभव बाली बल बिस्तार * तनिक राम कयलनि संहार
दानव जेर देखल दरबार * अयलहुँ दबि-छपि सागर पार
राम सख्य सुग्रीवक संग * किछु दिन बितलय देखब रङ्ग
कपिपति सचिव थिकहुँ हनुमान * अञ्जनि जननि जनक पवमान
बानर चर फिरइछ सभ ठाम * हम लंका अयलहुँ सुनि नाम
नीति धर्म्म हम देल सुनाय * सत्य कहय से मारल जाय
हृदय अहाँक अधिक अछि मैल * झिटुकी सँ फुटि जाइछ बैल
प्रभुक कुशल सीता सँ भाषि * लोभ भेल एक फल कैँ चाषि
लोभहिँ पतन कहय संसार * हमरा अपनहि पड़ल कपार
बडगोट बंश ओ विस्तर राज * अयशक नहि किछु मनमे लाज
करब न अँहँ सौँ किछु हम लाथ * अहँक नीक रघुनन्दन हाथ

पण्डित वेश कुपथ की धयल * हाथी सौं हथि वेसन कयल
हमरा मारल बाँधल वेश * बुद्धि बृद्धि हो लगलैं ठेस
हसि बजला तखना दश कण्ठ * ई वानर अछि बड़का लण्ठ
मृतसम बाँधल मन अभिमान * हमरहु निकट छटै अछि ज्ञान
मानुष राम गहन मे वास * हमरा तकर देखावै त्रास
तनिका मारब दनुज पठाय * वानर विलटत रहित सहाय
सीता कारण अछि उतपात * करब तनिक हम प्राणक घात
सनकल अछि कपि वड़ वाचाल * हिनका माथ नचै अछि काल
मारुत नन्दन उत्तर कहल * रावण कुवचन एक न सहल

द्वितीय त्रिभंगी छन्द

दशमुख वचन सुनल कपि कहलनि, चुपरहरे अभिमानी, करतौ हानी, कटुवानी । प्रभुकर शरक निकर विषधर सन, लगलैं के वच प्रानी, शठ अज्ञानी, वकध्यानी ।। अपनहि मन नृप वनल सनल छह, कहतौ के गुरु तोरा, सुनु स्त्री-चोरा, कुलबोरा । हित अनहित अनहित हित कयलह, प्रभुक न कयल निहोरा, मति घोरा, शुभ थोरा ॥१॥

घनाक्षरी

सत्य हनुमान तोँ प्रमाण ई वचन जान मर्क्कट विकट भालु भटवश परबैँ
प्रभुदल प्रवल जखन उतरत इत दशमुख तखन उपाय कोन करबैँ
मुष्टिका अघात लातघात सन्निपातवश शोचवश शरण त्राहित्राहि कैँ कहरबैँ
चन्द्रभन रामचन्द्र सर्व्वनाथ हाथतीर लगतहु जखन तखन मूढ़ मरबैँ

चपाइ

मारुति वचन· सुनल लंकेश * कोप विवश जन देल निदेश
हम कटुवचन सुनैछी कान * वानर वजइछ आनक आन
हिनका मारय लय कय खण्ड * हिनकर सभ छूटय पाखण्ड
कपिकाँ मारय दौड़ल जखन * अयला सभा विभीषण तखन
कहलनि नीतिशास्त्र अनुसार * चारक वध नहिँ अछि व्यवहार
दूत वेचारा मारल जयत * रामचन्द्र सौं युद्ध न हयत
अंकित हयता कहता जाय * राखक नहिँ थिक दूत वझाय
नीति विभीषण कहलहुँ नीक * माँनल वचन सदर्थ अहींक
शण मन बहुत वस्त्र घृत तेल * ढेर भेल नृप आज्ञा देल
कपिवालधि मे सभ लपटाय * कौतुक करइत नृपति हसाय
किछु तहि ऊपर आगि लगाव * के बुझ भावी काल स्वभाव
मारथि गारि देथि कयवेरि * योगी सौँ कयलनि धुरखेरि
नाना तरहक वाजन बाज * प्रवल चोर काँ पकड़ल आज
पश्चिम द्वार पवन सुत जाय * बन्धन लेलनि सहज छोड़ाय
सूक्ष्मरूप सौं गेल वहराय * सभ राक्षस मन देल सुखाय
सभजन हृदय कदलि सन काँप * जनु कपि भेल चोटाओल साप
कपिकाँ मन मे अछि बड़ रोष * करत उपद्रव पुन भरि पोष
रावण सभा उटल घमलौड़ि * ऐठन जरल न जरि गेल जौड़ि
के थिक केहन न कयल विचार * मूर्खक लाठी माँझ कपार
के कह काँप कपिरूपी काल * नहिं बुझ लंकापति दशभाल

घनाक्षरी

अग्निमान त्रिकुट अचल अनुमान भेल, धूम धार नभ घन प्रलय समान रे। आगि आगि पानि भेल, घह घह छानि भेल कपि मन आनि भेल सङ्ग पवमान रे॥ वानर न जानि भेल हँसयित हानि भेल हास्य राजधानि भेल रावण मलान रे। आनही सौं आन भेल सर्व्व सावधान भेल रावण प्रताप हर हरि हनुमान रे।१।

चौपाइ

वहल वहल तत प्रलय विहाड़ि * जनु पर्व्वत कॉ देत उखाड़ि
कपिक पूछ मै धधकल आगि * विकल पड़ायल सभ घर त्यागि
गोपुर ऊपर कपि चढि फानि * सभ जन छूटल मारिक वानि
गरजि गरजि कपि ठोकल ताल * राड़क असँघे जिबक जंजाल

रूपक घनाक्षरी

गगन अनिल जो अनल जल महि विश्व,
सिरजल जनिक तनिक दूत जरबहु।
कोटि कोटि रावण समान गण लड़बह,
मृग गण मारक मृगेन्द्र जकाँ पड़बहु॥
देखल प्रचण्ड रण हमर उदण्ड बल,
भेल आब कोप अभिमान लोप करबहु॥
कालहुक काल विकराल सौं न भीति अछि,
तोहरा लोकनि बुतै हम कतै मरबहु॥

चौपाइ

जरय न कपि जरइत अछि गाम * कह जन भेल विधाता वाम
लोहस्तम्भ कपिक अछि हाथ * जे लग भिड़थिन फोड़थिन माँथ
सगर नगर अनल क सञ्चार * विना विभीषण घर ओ द्वार
धर घर कहथि निकट नहि जाथि * हाथी कुक्कुर रीति डराथि
पीटथि छाती वनिता कानि * कपि उतपात भेल सभ हानि
जरल कनक मणिमय वर गेह * सम्पति रह की पापसनेह
दूत पराक्रम कहल न जाय * भाग्यवान काँ भूत कमाय
कपि कह लङ्का करब विनाश * बैल काँच के मुँगरक आस
धिक रावण आनन न मलान * चोरक मुँह जनु चमकय चान
दशकन्धर की रहवह चैन * भल घर मध देलह अछि बैन
हनुमानक लग क्यो नहिं जाय * मारिक डरसैं भूत पड़ाय

घनाक्षरी

अनुचित भेल न विचार दृढ़ कय लेल,
छोड़िदेल वानर विकट अवध कै ॥
दिन भेल वक्र आव ककरो न शक्क अछि,
एकछानि आगि तौं हजार घर धधकै ॥
प्रलयकृशानु सन तखनुक भानुसन,
वीर हनुमान सन मुख जित युधकै ।
ताल घहराय के वारण करय जाय,
जत कैल अन्याय फल रावण अवुध कै ॥१॥

शिखरिणी छन्द

अरे बावा दावानल सदृश लङ्का जरैए।
अधर्म्मी लङ्केशे तनिक सभ पापे करैए॥
पड़ा रे रे बाबू किछु न मन काबू परैए
विना पानी लंका नृपति पटरानी मरैए॥१॥

नाराच

पड़ा पड़ा बड़ा बड़ा गृहाट्ट जारि देलकौ।
विदेहकन्यका विपत्ति जानि कानि लेलकौ॥
बहूत छोट वानरे सभैक हाल कैलकौ।
प्रचण्ड दण्ड देनिहार दूत चोर धैलकौ॥१॥

समानिका

मेघनाद की कहू, बुद्धि हीन छी अँहूँ।
वाप, पाप कैल की, मृत्यु मार्ग धैल की॥

दोबय छन्द

हरिपद विमुख कतहु सुख पावथि, धिक थिक दशमुख ज्ञाने।
दुर्गति कय कपि लंका जारय, धयलहिँ छथि अभिमाने॥
एहि सौं आव कि गञ्जन देखता, मरणाधिक अपमाने।
के कपि पकड़ लड़य के काल सौं, नहिं कपिवीर समाने॥

चौपाइ

लंका नगर सगर कपि डाहि • स्वामिकार्य्य शूरत्व निवाहि

कुदि खसला सागर मैं जाय * पूछल बाँधल आगि मिझाय
स्वस्थ चित्त भेला हनुमान * एहन पराक्रम कर के आन
सीता आशिषबल नहिं जरल * लंकापतिक गर्व्व सभ हरल
अग्नि वायु दुनु थिकथि इयार * जरल न सखिसम्बन्ध विचार
जनिक नाम जपि छुट तिन ताप * भवकृत दोष लेश नहिँ व्याप
तनि रघुवरक दूतवर जानि * प्राकृत अनल कयल नहिँ हानि
हनुमान क डर क्यौ नहिं बाज * जनु कपि पाओल रामक राज
जनकनन्दिनी छलि जेहि ठाम * घुरि पुन तनिकर कयल प्रणाम
सानुज प्रभुवर औता तखन * जननि ततय पहुँचब हम जखन
तीनि प्रदक्षिण ई कहि देल * आगाँ ठाढ़ जोड़ि कर भेल
जेकिछु बनल कयल हम काज * दशकन्धर निर्लज कि बाज
कहल जानकी सुनु कपिधीर * सकल नियन्ता श्रीरघुवीर
तनिकर इच्छा होयत जेहन * कार्य्य सिद्धि होयत शुभ तेहन

पादाकुलक दोहा।

(श्री सीताक प्रति हनुमानक वचन गीत तिरहुति ।)

ओरे से दिन बीतल, नयनक नोर तोर बसन तितल।
आबि एकगोट कपि रावण जितल, करमक लिखल कतहु नहिं बिचल॥१॥
करु करु जानकीजी हृदय शितल, लंकापुर जरइछ प्रलय अनल।
सुखपाख सभजन रावण महीतल, चन्द्र भन ठाढ़ जनु प्रतिमा लिखल ॥

षटपद

हम किंकर हनुमान, देवि चिन्ता चित परिहरु।
हमरा काँधा चढ़लि, घोर सागर काँ सन्तरु ॥

क्षण मैं श्रीरघुनाथ, निकट कौशल पहुँचायब ।
आज्ञा प्रभुसौं पावि, फेरि लंका पुरि आयब ॥
प्रलय करब लंकापुरी, हमरा के रोकत सुभट ।
जौं ई रुचि हो स्वामिनी, देल जाय आज्ञा प्रगट ॥
शरसौं शोषि समुद्र सेतु, शर निकरक करता ।
सानुज से प्रभु आवि, रावणक प्राणे हरता ॥
सुग्रीवक सभ सैन्य, आवि लंका कैं लूटै ।
सुयश लोक मे होयत, अचल लंकागड़ टूटै ॥
हम मारुत सुत प्राण कौं, कोनहुँ यत्न राखब एतय ।
कुशलक्षेम सौं जाउ अहँ, श्रीरघुनन्दन छथि जतय ॥

दोवय छन्द

कयल प्रणाम अनेक वार कपि, पर्व्वत पर चढ़ि गेला ।
योजन वीश प्रमाण उच्चगिरि, समभूमिक सम भेला ॥
पर्व्वत वायु वेग सौ महितल, दवि गेला तत्काले ।
सागर तरथि घोर धुनि करइत, धर्म्मक सोर पताले ॥

चौपाइ

अंगदादि कयलनि अनुमान * अबइत छथि हर्षित हनुमान
शब्द एहन करता के आन * श्रवणसुखद वर अमृत समान
एतहु सकल कपि वालिकिशोर * हर्षक शब्द कयल नहिं थोर
गिरिपर पहुँचि गेला हनुमान * मृतक देह जनु पलटल प्राण
कार्य्यसिद्धि होइछ अनुमान * हर्षक सुख मुख शोभा आन

शस्त्रक क्षत कत देखिय अग * भेल समर जनि लगइछ रंग
महावीर कह सुनु प्रिय सर्व * प्रभु प्रताप किछु हमर न गर्व
देखि जनकजा विपिन उजारि * रक्षक जन कैं रण मे मारि
कि करब ततय पड़ल बड़ मारि * राम प्रताप कतहु नहिं हारि
दशकन्धर सौं वादविवाद * बचलहुँ श्री रघुनाथ प्रसाद
अयलहुँ बहुत सुभट कैं मारि * रावण पालित लङ्का जारि
रामकपीशक तट हम जयब * एखनहिं ततहि स्वस्थ हम हयब
वानर वृन्द मिलल भरिअङ्क * जेहन परशमणि पावथि रंक
पूछ चूमि गुणगण सभ वाच * हरषि हरषि हरिगण भल नाँच

सारस्वती छन्द

राम कहू पुन राम कहू, मारुत नन्दन धन्य अँहूं।
आब चलू छथि नाथ जहाँ, की सुखलाभ अनन्त वहाँ ॥

सो०—चलल वीर समुदाय, महावीर अगुआय चल।
प्रस्रवणाचल जाय, कविपति मधुवन प्राप्त सभ ॥

दोबय छन्द

वानर सकल कहल अंगद कौं, अँहँ छी भूपक बालक।
आज्ञा देलजाय मधुवन फल, खायब अपनैं पालक ॥
जनितहिं छी सभजन छी भुखले फल मधु यहन न पायब।
खाय पीब सन्तुष्ट चित्तसौं, प्रभुक निकट मे जायब ॥

चौपाइ

अंगद कहल सुखित फल खाउ * किछु नहिँ ककरो डरे डेराउ

कपि फल खाथि करथि मधुपान * रक्षक हटल पटल नहिँ मान
दधिमुख अनुशासन काँ पाय * देल रक्षक सभकैं लठिआय
अतिवल वानर भूखल घूरि * सभ रक्षक काँ देलनि चूरि
दधिमुख मुख भयगेल मलान * कुपित न वजला से मतिमान
सभ रक्षक कैं सङ्ग लगाय * कपिपति काँ कहि देल देखाय
तारातनय हठी हनुमान * जेहन आगि कैं पवन दिवान
मधुवन फल सभ खयलय जाथि * किछु नहि अपनैक त्रास डराथि
हम नहि करव विपिन रखवारि * किछु वजितौं तँ खइतँहुँ मारि
मधुवन फल राखल छल ढेर * लूटि भेल ककरहुँ नहिँ टेर
युवराजक हनुमान प्रधान * विपिन विनाशक कि कहव ज्ञान
हम छी कपि भूपालक माम * नहिँ घुरि जायव गञ्जन ठाम
सत्य कहै छी सुनु कपिनाथ * मर्य्यादा रह अपनहिँ हाथ
मधुवन फल मधु कयलक नाश * भूतक घर सन्ततिक निवास
सुनल वचन कहलनि जे माम * कपिपति मन नहिँ कोपक ठाम
हर्षक नोर भरल दुइ आंखि * अयला अयला उठला भाखि
सीता देखि आयल हनुमान * हमरा मन से निश्चय ज्ञान
से सुनि पुछलनि अपनहिँ राम * मारि भेल अछि की कोन ठाम
की कहयित छथि कपिपति माम * लेल कि जनकनन्दिनी नाम
कहलनि गेल जे दक्षिण देश * आयल सभजन रहित कलेश
कार्य्यसिद्धि कयलनि हनुमान * मधुवन फल के चाखत आन
दधिमुख काँ कहलनि अँह जाउ * सभ जनकाँ सत्वर लय आउ
बहुत शीघ्र से वन मे जाय * अँगदादि काँ कहल बुझाय

रामचन्द्र लक्ष्मण कपिराज * बड़ सन्तुष्ट भेल छथि आज
शीघ्र बजौलनि करू प्रयाण * भाग्य ककर तुल अँहँक समान
सुनितहिँ चलल सकल जन तुष्ट * प्रभुक समक्ष मुदितमन पुष्ट
अङ्गद आदि सहित हनुमान * प्रणत कहल हरिभक्त प्रधान
मारुतनन्दन जोड़ल हाथ * कृपाजलधि जय जय रघुनाथ
वैदेही हम देखल आँखि * कुशल प्रभुक विधिवत सभ भाखि

दोवय छन्द :

मलिनवसन एकवेणी अतिदुख, निराहार दुबराइलि ।
राम राम रट सकरुण धुनि कय, शुद्ध समाधि समाइलि ॥
अहह- अशोकवाटिकाभ्यन्तर, वृक्ष शिंशुपाछाया ।
लङ्कापुरी राक्षसी घेड़लि, छथि प्रभु अपनेक माया ॥

चौपाइ

कि करब यत्न फुरल नहिँ आन * कयल तखन रघुपति गुणगान
जैँ विधि प्रभु लेलनि अवतार * हरण हेतु पृथिविक खलभार
धनुषभङ्ग परिणय जे रीति * सकल सुनाओल मंगलगीति
अयला प्रभु जे विधि वनवास * सकल कथा से कयल प्रकाश
आश्रमशून्य जानि लंकेश * देवी हरि अनलक एहि देश
कथा सुनथि वैदेही कान * मनमन करथि बहुत अनुमान
मैत्री जैँ विधि कयल कपीश * अपनाओल प्रभु अपना दीश
अनुजनारिरत बालि विचारि * तनिकाँ रघुपति सत्वर मारि
से सुग्रीव विदित कपिराज * सम्प्रति प्रभु छथि तनिक समाज

अति साहसधर वीर, अविरल भक्तिक भवन अँहँ ।
पिता अहाँक समीर, जगत्प्राणसुत उचित थिक ॥

घनाक्षरी

नाव अरि लाव नहिं उतरक दाव नहिं,
एक बुद्धि आब नहिं सागर अपार मे ।
वीर अरि छोट नहिं संग एक गोट नहिं,
लंका लघुकोट नहिं विदित संसार मे ॥
दनुज अबल नहिं पुरी गम्य थल नहिँ,
प्रदेश अमल नहिँ युद्धक विचार मे ।
अँहाँक समान महि वीर हनूमान नहिँ,
सर्व्वस्वक दान नहिँ तूल उपकार मे ॥१॥

इतिश्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे चतुर्थोऽध्यायः
सुन्द काण्डः समाप्तः ॥५॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्द्राझा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

लङ्काकाण्ड

* मैथिली रामायण *

लङ्काकाण्ड

श्लोक अनुष्टुप्

मुकुन्दम्माधवम्वन्दे समुद्रे सेतुकर्त्तारम् ।
शयानन्दर्भशय्यायां दशग्रीवस्य हन्तारम् ॥
उमेशं सर्व्वदं वन्दे महाकालं गुणातीतम् ।
गणैः काकोदरैः प्रेतैः पिशाचाद्यैश्च निर्भीतम् ॥

चौपाइ

लङ्का चरित कहल हनुमान * सुनि प्रसन्न मन श्रीभगवान
दोसर एहन करत के आन * दुष्कर कर्म्म कयल हनुमान
शतयोजन जलनिधि विस्तार * खग समान उड़ि गेलहुँ पार
बड़ प्रताप लङ्का मे कयल * रावण आबि पकड़ि नहिं धयल
सभजन रक्षक मारुतपूत * दोसर एहन हयत के दूत
मन मे होइछ समुद्रक ध्यान * कोन गति उतरब थिर नहिं प्रान
कोन परि देखब सीआ जाय * रिपुकाँ मारब समर चढ़ाय
सुनि सुग्रीव प्रभुक मुख उक्ति * कहलनि साध्य हमर अछि युक्ति
जलनिधि नक्रझषाकुल दरब * लंका गर्व्व सर्व्व हम हरब
जिवइत नहिँ छाड़ब दशभाल * हे रघुपति हम अरिगण काल

चिन्ता जनु करु श्रीरघुनाथ * विजय मानिलिय अपनहिँ हाथ
वानर भालु बहुत रण शूर * तनिकाँ लंका अछि कत दूर
तरब समुद्र तकर मति करिय * रावण मृतक एहन मन धरिय
धरब धनुष सम्मुख के हयत * जौं सम्मुख दुख यमघर जयत
प्रभु समर्थ हमरा विश्वास * श्री रघुनन्दन विश्व निवास
आगि पानि मे जाय समाय * वानर रहत न रण पछुआय

सो०—मन हर्षित रघुवीर, जलधि, तरब से विधि करब।
कर रह धनुष सुतीर, हनूमान साहित्य रह ॥
कहु लंकाक सरूप, मारुतनन्दन केहन से।
रावण भारी भूप, तत प्रवेश दुस्साध्य विधि ॥
हाथ जोड़ि हनुमान, कहल जहन लंकापुरी।
सानुकूल भगवान, मारब रावण सहित बल ॥

चौपाइ

गिरित्रिकूट पर लंका केहनि * दोसर अमरपुरी हो जेहनि
सकल कनकमय दृढप्राकार * मणिमय खम्भ सकल घर द्वार
परिखा शोभित निर्म्मल पानि * सुधा मधुरताधिक पड़ जानि
उपवन वापी बहुत तड़ाग * पुर शोभा अतिसुन्दर लाग
कय हजार शोभित गजवाह * पश्चिम द्वार न रिपु निर्वाह
बहुत पदाति अश्व असवार * कय अर्ब्बुद जन गणय न पार
पूर्व्व द्वार मे तेहने सर्व्व * चूटो सकर न तेहन पर्व्व
बहुत रथी रह दक्षिण द्वार * मध्य कक्ष अतिशय विस्तार

अगणित महामत्त गजराज * विविध यान रथि तनिक समाज
बहुत शतघ्नी बड़ बड़ अस्त्र * सभकाँ परिहन लोहक बस्त्र
केवल प्रभुक प्रताप सहाय * चतुर्थांश बल मारल जाय
लंका जारल विपिन उजारि * अक्षकुमार आदिकाँ मारि
लघु वानरक हमर ई काज * परमेश्वर अपनै महराज
प्रभु कुदृष्टि मात्रहि जरि जयत * के अछि तेहन समर थिर हयत
सत्वर कयल जाय प्रस्थान * अरिजन दहन राम भगवान

सो० - तखन कहल भगवान, सुनु कपीश सेना निकर।
तत्क्षण करु प्रस्थान, उत्तम विजय मुहूर्त अछि॥

षट्पद

हमहुँ चलब एहि काल, काल दशभालहिँ मारब।
मारब बड़ बड़ दनुज, भार भूमीक उतारब॥
तारब हम मुनिलोक, विदेहतनूजा आनब।
नव नव चरित पवित्र, अमरगण गाओत मानब॥
दक्षिणाक्ष अधभाग मे, स्फुरण होइ अछि बड़ सगुन
चलु चलु यूथप सज्जसौं, नहिँ कर्त्तव्य विचार पुन॥

विजया छन्द

इत मर्क्कटाधीश कय अर्व्व अक्षौहिणी,
क्षोणि संक्षोभ सौं काँप।
तँह दिग्गजोद्दण्ड महि शुण्डसम्पातकर,
चण्डरव दाँत महि कष्ट सौं थाप॥

गुरु पन्नगाधीशफण फाट मन आँटभय,
कूर्म्मगणराट सह पीठ सन्ताप ।
वर विजय प्रस्थान भगवान श्रीराम प्रभु,
कयल लंकापुरी हाथ शरचाप ॥

भुजंगप्रयात

चलू सर्व्वयूथेश लंकेश मारू, चतुर्दिक्षु सेनाक रक्षा सम्भारू ।
लड़ाका बड़ावीर दैत्येश भारी, महावज्रनाधार सर्व्वत्रचारी ॥
हनूमान कन्धस्थ श्रीराम भेला, तथा अङ्गदस्कन्ध सौमित्रिगेला ।
विदाभेल सेना युगान्ताघनाली, सुपीतारुणश्यामलावानराली ॥
कहै वीर पक्षी जकाँ जाइ लंका, करी जाय शीघ्रे पुरी कैँ सतंका ।
दशग्रीव की आबि कैँ युद्धकर्त्ता, कहू कीश कीनाशकैँ आबि धर्त्ता ।

रोला छन्द

गज गवाक्ष ओ गबय मैन्द, द्विविदादि चलल नल ।
नील सुषेण ओ जाम्बवान, सेनाधिप भल भल ॥
मर्क्कट कर किलकार, अर्क अच्छादित धूरा ।
श्री रघुवीर प्रताप, कीश रणकोविद पूरा ॥
सो०— सैन्य मध्य श्रीराम, शोभित कपिपति सहित तहँ ।
कतहु न हो विश्राम, अतिशय रण उत्साह मन ॥

चौपैया छन्द

लांघल सह्याचल, मलय सकल दल, फल मधु करइत भक्षण ।

तरुवर बड़ भारी, लेलउखारी, वानर समर विचक्षण ॥
नाँगड़ि महि पटकय, तरु तरु लटकय, भूधर पर चढ़ि फानय ।
वानरमय धरणी, चल नभ सरणी, मन किछु त्रास न मानय ॥

कुण्डलिय।

किलकि किलकि कौतुक करय, कपिकुल अतिवाचाल ।
रघुनन्दन आगाँ कहय, के थिक खल दशभाल ॥
के थिक खल दशभाल, व्याल पर हम छी खगपति ।
सत्वर सन्तरु उदधि, पार हम करब दनुज गति ॥
दनुज मत्तमातङ्ग, उपर मर्कट मृगपति मिल ।
वानर अनल समान, दनुज कुल कानन थिक किल ॥

सो० -- प्रलय घटा आटोप, अटकलि सेना सिन्धु तट ।
वानर मन बड़ कोप, की विलम्ब जल निधि तरू ॥
कहल राम भगवान, की प्रयास सागर तरब ।
नहिं देखी जल यान, थिक विचार कर्त्तव्य की ॥
कपिपति आज्ञा पावि, सन्निवेश सेना रहलि ।
की भेल सत्वर आवि, अति अगाध बाधा कयल ॥
कर प्रभु विविध विलाप, हा जानकि सति प्रेयसी ।
सभ मन हो सन्ताप, प्रजा तथा राजा यथा ॥

इति श्री मैथिक चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

चौपाइ

रावण मन मन कर अनुमान * लंका डाहि गेल हनुमान
बड़ आश्चर्य कहू की आन * अक्षकुमारक लेलक प्राण
सभा कयल निज लोक हकारि * रावण वचन देथि के टारि
तखन सभ्य सौं रावण कहल * गुप्त न हमर कतहु कृति रहल
की कर्त्तव्य भेल बड़ घोल * बजबहि पड़य गरा पड़ ढोल
हम राजा छी केवल नाम * सभकाँ सुख धन सम्पति धाम
एक मत रहू कहू जे नीक * समर कार्य्य कर्त्तव्ये थीक
नर बानर सौं मानव हारि * एहिसौं बाढ़ि दोसर की गारि
सामक समय रहल नहि आब * भावी अगाँ आगाँ धाब
कहु कहु निजमति जे भल रीति * श्रवणकरक भल जनकाँ नीति
राक्षस वहुत कहल कल जोड़ि * देल जाय चिन्ता चित्त छोड़ि
सुरपति विजयी सुत घननाद * अहकाँ जय मध कोन विवाद
पुष्पक लेल कुवेर क छीन * की सम्पति नहि अपन अधीन
वरुण वेचारे मानल हारि * आज्ञा केओ सकथि नहि टारि
मय भय सौं देल कन्या आनि * भययुत की अपनैं मनहानि
वानर आबि कयल उतपात * रण वीरत्व देखु रहु कात
नरवानर सौँ पृथ्वी हीन * कयदेव लागत थोड़े दीन
आज्ञा प्रभु सौं पाओठ जैह * कार्य्य सिद्धि कय आनत सैह

दो०—बुद्धि विहीन कुमन्त्रणा, कुम्भकर्ण सुनि कान।
कहल दशानन सौं उचित, नयकोविद निज ज्ञान ॥

रूपमाला छन्दः

चित्तदय दशकण्ठ प्रभु सुनु, कयल अँहँ नहि नीक।
कर्म्म सीता – हरण - रूपक, आत्म नाशक थीक॥
रामचन्द्र अनन्त ईश्वर, काल शासन वाण।
धनुष सौं छुटि जखन लागत बचत अँहँक कि प्राण॥
लेल अछि अवतार लक्ष्मी, राक्षसान्तक काज।
काल काली राम सीता, प्राप्त अँहँक समाज॥
कयल यद्यपि बहुत अनुचित, स्वस्थ मन रहु भूप।
कहब करब सुमन्त्र जेहन, भक्ति भाव अनूप॥

रोला छन्दः

सुनि सकोप कह मेघनाद की नीति विचारब।
प्रभु आज्ञा काँ पाबि राम लक्ष्मण काँ मारब॥
सुग्रीवादिक सकल प्रबल मर्कट संहारब।
मेघनाद हम पुत्र पिता आज्ञा नहिं टारब॥

घनाक्षरी

कहल विभीषण विचार सार वार वार।
करु न विरोध बन्धु राम भगवान सौं॥
दशमाथ नगर अनाथ जकाँ जारिगेल।
कतगोट अपमान भेल हनूमान सौं॥
एक गोट छोट भाय कहल कयल जाय।
खलक कहल न सुनल जाय कान सौं॥

वाली बलशालीक कुचालि पावि आबि ।
पुर दिव्य गति देल मारि उर एक वान सौँ ॥

अनुष्टुप् देश

धरित्रीपुत्रिका देया, त्वया नीतात्र लङ्कायाम् ।
हरेर्म्माया जगन्माता, हनूमत्प्राप्ततङ्कायाम् ॥
त्वया सा जानकी देया, न हेया सम्मतिर्व्वन्धोः ।
आजेया वानरी सेना, समायाता तटे सिन्धोः ॥
महेशः किङ्करो यस्य, विभोः श्रीरामचन्द्रस्य ।
प्रयासस्त्वल्लये कस्स्या, दयार्द्रञ्चेन्मनो न स्यात् ॥

चौपाइ

काल विवश रावण हतज्ञान * धर्म्मकथा नहि धारण कान
उलटे भाइक ऊपर कोप * असमय धर्म्म ज्ञान हो लोप
औषधि सन्निपाति नहि खाय * अनट सनट रटि यमघर जाय
क्रोध दशानन पुन बजलाह * सुनि भ्राता घर कय चललाह
थिक कुल दूषण सोदर भाय * अनुचित कयल जे कहल बजाय
बड़ कातर जिव थर थर काप * जनु अन्हार घर सापहि साप
अरि उत्कर्ष हमर लग बाज * धिक घोरि पिउलक सभटा लाज
हमरे लालित पालित पुष्ट * बुझल बिभीषण मानस दुष्ट
हमर नगर सौं हो खल कात * प्राण हरव मारव हम लात
छल भल दया सहोदर जानि * कुक्कुर न्याय चढ़ल अछि छानि
सुनल विभोषण मन बड़ आनि * लंका त्यागी चलल नभ फानि

मन्त्री चारि चतुर जन सङ्ग * बड़का भाइक बिगड़ल रङ्ग
गगन गदाकर धर्म्म पुकार * सर्व्व विनाश बदल व्यवहार
काली काल लेल अवतार * हरण होयत अवनिक अतिभार
तनि प्रेरित अहँकाँ नहिं ज्ञान * निकट काल होइछ अनुमान
नर वानर कर दनुजक नाश * दशमुख त्यागू जीवन आश
व्यापक ब्रह्म सुनै छी जैह * बिधि प्रार्थित अवतरला सैह
विस्मित मन रावण बजलाह * सोदर सर्प्प सदन अधलाह
समय सन्धि नहि बैसल आब * मारु विभीषण नाम स्वभाव
कहल विभीषण भावी भङ्ग * जनि साहस खस आल पतङ्ग
अद्यावधि हठबल अभिमान * विसरल नहि होयत हनुमान
रहितहुँ सहि घर कहाहुँ नीति * पुन पुर नाचय नटा कुरीति

इति श्री मैथिलचन्द्रकविविरचिते मैथिलीरामायणे
लङ्काकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

हरिपद छन्द

नाम विभीषण जन कहइत छथि, दशमुख सोदर भाय ।
चरण शरण मे राखु दयानिधि, अयलहुँ विकल पड़ाय ॥
बहुत कहल हम नीते सभा मे, नहि मानल दशभाल ।
मेघनाद रावण सुत मन्त्री, रावणमत वाचाल ॥
विश्वजननि वैदेही देवी, रामचन्द्र भगवान ।
तनिक विरोध कुशल नहिं ककरहुँ, ककरो बचत न प्राण ॥
वचन हमर सुनितहिँ तहँ रावण, हाथ धयल तरुआरि ।
भयसौं झटिति तनिक तट त्यागल, सहि नहिँ सकलहुँ मारि ॥

मन्त्री हमर चारि जन सङ्गी, हिनकर उत्तम कर्म्म ।
विदित सकल विभु परमेश्वर काँ, सकल शुभाशुभ मर्म्म ॥

चौपाइ

के थिक के थिक भय गेल सोर * पकड़ पकड़ लंकापुर चोर
कह सुग्रीव राम सौँ जाय * हिनकर विश्वासे अन्याय
रावण काँ लघु सोदर भाय * शान्त वेष की कारण पाय
आयल छथि मन्त्री सङ्ग चारि * कपट करत अहँकाँ नारि
धरु धरु बाँधि कहय किछु आन * राक्षस गोलक बोल प्रमाण
हिनका सभजन मारि खसाउ * शुभ संग्रामक सगुन बनाउ
सुनु कपिवीर कहल हँसि राम * के हमरा जीतत संग्राम
उतपति पालन लय सामर्थ्य * हमरा ककरो भय से व्यर्थ
हम देल अभय लाउ अरिआति * बड़ सज्जन छथि राक्षस जाति
"हमछी अहँक शरण" कहि धयल * सकृत प्रपन्न अभयजन कयल
कहितथि रावण अपनहुँ आय * काल कवल सौँ लितहुँ बचाय
ई व्रत दृढ़तर हमरा मित्र * शतदोषी मन रहै पवित्र
सुनि सुग्रीव गूढ़तर भाव * प्रभु बचनक नहिँ उत्तर आव
बड़ आनन्द ततय पुन जाय * निकट विभीषण देल बजाय
कपिपति सङ्ग प्रभुक शुभत्रास * अयला अचलभक्ति निस्त्रास
नयन सजल साष्टांग प्रणाम * कयल विभीषण कहि निजनाम
धनुर्व्वाणधर शोभाधाम * देखल सानुज प्रभु घनश्याम
परमेश्वर करता प्रतिपाल * स्मित सुन्दर मुख नयन विशाल

पदाकुल

महाराज सीता मन रञ्जन, चण्ड चाप धर भक्त दयानिधि ॥
शान्त अनन्त राम परमेश्वर, सुग्रीवक प्रभुमित्र स्वयंविधि ॥
जगदुत्पत्ति पालन लयकर, तीनि लोक गुरुआदि सनातन ॥
स्वेच्छाचार चराचर संस्थित, बाहर भीतर भीतिरहित मन ॥
व्यापकव्याज विश्वमें भासित, देव जगन्मायासभ अनुमत ॥
अपनैंक मायासौँ जगमोहित, पुण्य पापवश सकल गतागत ॥
तावतसत्य विश्व भासित हो, राजत भ्रान्ति मुक्ति मेँ जेहन ॥
अपनैंक दया ज्ञान सौँ छूटय, प्रभुपद भक्त धन्य जे तेहन ॥

चौपाइ

अपनहिँ विधि हरि हर सुर सर्व * हरण करिय जग दुष्टक गर्व
अणुसौँ अणु थूलहुँ सौँ थूल * जननी जनक सकल जन मूल
सभसौँ रहित सहित मन काज * स्तुति हम कि करब होइछ लाज
सकल अगोचर विभु परमेश * हरण कयल प्रभु हमर कलेश
हम राक्षस सत्कर्म्म विहीन * अयलहुँ चरणशरण हम दीन
भासित माय। मानवरूप * रावणारि जय जय विभु भूप
जे छल सञ्चित हमरा पाप * से क्षय भेल सेवाक प्रताप
ज्ञानयोग प्रभु सौँ हो प्राप्त * लङ्का दुर्नय दशा समाप्त

हरिपद

कपट रहित स्तुति कयल विभीषण सुनि प्रभु हर्षित चित्त।
माँगू वर वरदानी हमछी जे अभीष्ट से वृत्त ॥

कहल विभीषण देव धन्य हम भेल सकल सिधि काज ।
प्रभुपद कयल नयन भरि देखल सत्य मुक्त हम आज ॥

दोहय छन्द

कर्म्मक बन्ध विनाश हेतु हम, भक्तिज्ञान कोँ पावी ।
देलजाय परमार्थ ध्यान निज, अपनेक दास कहावी ॥
विषय सुखक वैराग्य वनल रह, अपनैँक पद थिर भक्ति ।
अपनैँ सौँ प्रभु किछु दुर्लभ नहिँ, परमेश्वर वरशक्ति ॥
विमल विराग हमर जन योगी, शान्त हृदय मे वासा ।
सीता सहित हमर अछि निश्चय, करव ध्याान प्रत्याशा ॥

चौपाइ

दर्शन हमर लाम फल एक * सम्प्रति अहँक राज्य अभिषेक
लङ्कापति वनि भोगू राज * यावत गगन सूर्य्य द्विजराज
सुनु कपीश जलघट भरिलाउ * हिनकाँ लंकानृपति बनाउ
घट भरि आयल सागर पानि * भेल अभिषेक लय शुभ जानि
देखि देखि जन जोड़ल हाथ * प्रणत आर्त्तिहर जय रघुनाथ
अरि रावणक सहोदर भाय * करुणाकर लेलनि अपनाय
मिलि कपीश कह लंकानाथ * सानुकूल प्रभु श्रीरघुनाथ
रावण वध मेँ होउ सहाय * किंकर कोटि में मुख्य कहाय
कहल विभीषण सुनु कपिनाथ * सभ गति मति रघुनन्दन हाथ
किंकर कर्म्म कुशल हम करव * अपनेँ सबहिक सह सञ्चरब
रावण दूत पठाओल चार * पर नर वानर बुझि व्यवहार

रुसि गेला अछि हमरा भाय * लंका किदहुँ देता उलटाय
शुक नामक चर गगन उचार * सुनु सुग्रीव समय अनुसार
राक्षसेन्द्र कहलनि सम्वाद * नहिं किछु कपिपति सँग विवाद
भ्राता सदृश वंश बड़ गोट * कर्म्म उठाओल अछि की छोट
वनचर राजा बड़ गोट नाम * आयल छी छी की एहि ठाम
राजकुमारक हृत भेलि नारि * अहँक दोष नहिँ कयल विचार
घुरि सेना लय सदनहिँ जाउ * स्वेच्छाचार अमृत फल खाउ
वानर जीतय लंका हाय * तौं अकाल ध्रुव उदधि सुखाय
वनचर राजा ई नहिँ ज्ञान * वञ्चक वचन गमायब प्राण
जतय अमरपति मानथि हारि * ततय करत नर वानर मारि
वानर सुनल उड़ल कय गोट * शुककाँ पटकि कयल लोटपोट
रामचन्द्र काँ कहथि सुनाय * त्राहि दूत नहिँ मारल जाय
वानर हटल जाय महराज * प्राण लेबय चाहै अछि आज
अपनैंक देखयित ई बड़ शोच * दाढ़ी मोछ कठिन कपि नोच
रामचन्द्र हँसि देल छोड़ाय * शुक लंकामुख चलल पड़ाय
पुन आकाश जाय संभाष * कपिपति रहल कहल अभिलाष
लंकेश्वर सौं कि कहब जाय * कहल जाय से कथा सुनाय
कह सुग्रीव कहबगय सैह * बालिक गति भेलनि अछि जैह
राक्षस नगर निःद्य व्यवहार * आबि करब हम अरि संहार
रामांगना हरल खल चोर * जयबह कतय अन्तदिन तोर
आज्ञा देल तखन रघुनाथ * बांध धरू हिनका दुनु हाथ
रावण दूत नाम शार्दूल * छल देखयित राक्षस प्रतिकूल

कपि मे कपि बनि गेल मिझड़ाय * चिन्हल भेल तौं गेल पड़ाय
रावण सौं कहलक से जाय * अनइत छी नहिँ दूत छोड़ाय
भाग्यहिँ बचि अयलौं हुँ हम आज * प्राण के अर्पय काल समाज
अति चिन्तातुर नृप लंकेश * अन्तःपुर मेँ कयल प्रवेश

रूपमाला

देखल वारिधि तखन रघुवर कोप लोचन लाल ।
देखु लक्ष्मण दुष्ट वारिधि कयल गर्व्व विशाल ॥
हमर दर्शन हेतु ई नहिँ अवैछथि एक वेरि ।
हमर की करताह वानर मनुज ई मन टेरि ॥

जलहरण छन्द

अथ जलनिधि तट कहु निज निज मत कोन गति जलनिधि बिषम तरू
कमलनयन कुशशयन बहुत दिन अनशन व्रत प्रभु कयल वरू
लछुमन कहल कुपित भय सुनु सुनु निज कर शर वर धनुष धरू
जड़ जलनिधि नहिँ कहल करथि हट हिनक सकल जलहरण करू

मिथिला संगीतानुसारेण केदार छन्दः

कहल प्रभु जलनिधि महाजड़ कयल अति अपमान ।
खनल हमरे पूर्व्व पुरुष, अहित हमरहि मान ॥
तरत बल शोषण करब भय, बाण अनल समान ।
प्रीति भय बिनु कतहु प्रायः, सुनल अछि नहिँ कान ॥
कालकाल कराल शासन, धयल कर शर चाप ।
शैल कानन सहित वसुधा, वलय भय भर काप ॥

एक योजन कूल त्यागल, जलधि मन सन्ताप।
वारिचर गण विकल तर मन करथि विकल विलाप।

चौपाइ

डरसौं सागर थर थर काप * देखल रामक प्रबल प्रताप
दिव्यरूप धय मणिलय हाथ * गेला जतय राम रघुनाथ
पदपंकज पर मणि देल राखि * त्राहि त्राहि पुन उठला भाखि
हम बड़ जढ़ खल निकट निवास * एत दिन हम छल छी निस्त्रास
समुचित हमरा होमहिँ बूझ * परमेश्वर जनिकाँ नहिँ सूझ
नाश करू की राखू नाथ * अयलहुँ शरण करण प्रभु हाथ
पुन नहिँ एहन करब हम दोष * परमेश्वर मन परिहरु रोष
सागर विनय सुनल प्रभु कान * मन प्रसन्न भेला भगवान
अभय देल शरणागत जानि * जलधि तोहर नहिँ होयत हानि
हम जे चाप चढ़ाओल बाण * तकर कहू की गति हो आन
उत्तर देश नाम गिरि कुल्य * पापी बसइछ बहुत अतुल्य
ततहि तीर प्रभु फेकल जाय * जैँ आभीर जरय समुदाय
बाण निपात ततय भेल जाय * जारि धूरि तूणीर समाय
पुन सागर कहलनि सुनु राम * सहज उपाय सङ्ग एहि ठाम
बहुत परिश्रम हो की हेतु * नल भल करता प्रस्तर सेतु
मर्य्यादा प्रभु राखू आज * अनायास मे होइछ काज
कय प्रणाम गेल सागर पैशि * तखन विचार एतय भेल वैशि
कपिपति लक्ष्मणयुत श्रीराम * नल बजवाय लेल तहि ठाम

सुनु नल शत योजन वन सेतु * अगम जलधि लंका जय हेतु
प्रभु भल कहल कहल नल वीर * चल दल संगी प्रवल समीर
कत अर्व्बुद वानर वलवान * लावथि गिरिवर तोड़ि पखान
नल काँ सभ कल पढ़ले पाठ * ढेर भेल पाथर ओ काठ
अप्रधान के ततय प्रधान * राम काज मे सकल समान
वर प्रसाद नल लेलन्हि काँधि * शतयोजनक बांध लेब बाँधि

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

सवैया छन्द

बाँधल भेल बाँध वारिधि मैं, दशवदनक विजयक मनकाज।
शिव रामेश्वर तत संस्थापन, कयल सविधि प्रभु श्रीरघुराज ॥
रामेश्वरक करथि जे दर्शन, सेतुवन्ध काँ करथि प्रणाम।
ब्रह्मघात आदिक पातक सौँ, छूटथि से कहलनि श्रीराम ॥
वाराणसी जाय गंगाजल, लय रामेश्वर कर अभिषेक।
सेतुबन्ध सागर कर मज्जन, ब्रह्महोथि सम्प्राप्त विवेक ॥
महिमा हिनक अनन्त कहब कत, सकल मनोरथ दायक रुद्र।
शंकरध्यान निरन्तर जे कर, कि करत तनिका पातक क्षुद्र ॥

षट्पद छन्द

एक दिन मेँ लेल सेतु बाँधि, चौदह योजन धरि।
योजन वीश प्रमाण, दोसर दिन बाँधल नल हरि ॥
एकइस योजन सेतु, दिवस तेसर से कयलनि।

वाइस योजन सेतु, चारि वासर निर्म्मयलनि ॥
योजन तैस प्रमाण पुन, पाँचम दिन बाँधल अचल ।
बाँधल बाँधल जलधि कँ, जय रघुनन्दन धुनि मचल ॥
थल सन नल कृत सेतु चढ़ल भल चलल सकल दल ।
दलमल मेदिनि डोल, कोल कच्छप अहि हलचल ॥
चल भेल बड़ बड़ अचल, प्रबल कपि मन घन कड़कल ।
कल कल कय कपि उड़ल व्योमरविवाजी भड़कल ॥
विकल लोक लंकापुरी तकाकुल डंका सुनल ।
नल बाँधल अछि उदधिकाँ बानर दल अबइछ चलल ॥

रूपमाला

पवननन्दन तथा अंगद कांध चढ़ि दुइ भाय ।
देखल लंका दुर्ग वेलाचल शिखर पर जाय ॥
ध्वज प्रसाद सुवर्ण तोरण स्वर्णमय प्राकार ।
किला परिखा ओ शतघ्नी बनल सभ हथिआर ॥१॥
भवन एक बिचित्र विस्तृत स्थित जतय दशभाल ।
दश किरीट अपूर्व्व चमकय दशो मौलि विशाल ॥
काल मेघ समान कान्तिक कज्जलादि समान ।
रत्नदण्ड सितातपत्र सँ लसित अति अभिमान ॥२॥
सचिव सह लंकेश करइत छला जतय विचार ।
राम देल छोड़ाय शुककाँ गेला निज दरवार ॥
पुछल रावण कहू शुक बुध की ततय वृतान्त ।
रंग अर्दित सन कहू की कहल सीताकान्त ॥३॥

चौपाइ

दशमुख वचन सुनल शुक कान * कहलनि ईश्वर राखल प्रान
गेलहुँ सागर उत्तर तीर * संस्थित जत सानुज रघुवीर
शोभित पुरुष मुख्यतम चारि * मान न कालहुँ सौं से हारि
सानुज राम नवल लंकेश * कपिनायक देखल ओहि देश
हम गगनस्थ कहल! सम्बाद * कपिउड़ि धयलक कय हरिनाद
कपि कृत कत कहु की उतपात * सहल बहुत हम मूका लात
बांधल छलहुँ मनहुँ बड़ शोच * दाँत काट केओ नखसौं नोच
हम देखक वल कयल विचार * वानर मात्र दनुज संहार
राम समाद कहल श्रीमान * हम अयलहुँ सुनि अपनहिं कान
जे बल सीता कयलह हरण * समर देखावह वीराचरण
आव विजय मे नहिं अछि देरि * भोरहि लंका हम लेब घेरि
हमरहु हृदय भेल अछि रोष * बाण एक तोहर बल शोष
अनकर कथा कहू की आज * अपनेंक निन्दा बजितहिँ लाज

चौवेल छन्द

कपिमेला वेलाचल ऊपर, तरुतोड़ै अछि लटकि लटकि ।
लोचन पथ लकाक लोक जौँ, तनिका मारय पटकि पटकि ॥
सुनु दशभाल काल दल जानू चल अबइत अछि झटकि झटकि ।
एकोजन राक्षस नहिँ तेहन, करत युद्ध रण अटकि अटकि ॥
सम्यक कयल उमेशाराधन, तथा चतुष्टय साधन ॥
तप प्रताप लंका गढ़ पाओल, सभ सौँ भेलहुँ महाधन ॥

जगदम्बा वन सौं हरि आनल, कुल मर्य्यादा बोरल ॥
मति विपरीति अनर्थ समय हो, पोखरिहि माहुर घोरल ॥

सवैया छन्द

अगणित विकट कटक मर्कटभट आयलनिकट विरचि बड़ व्यूह ।
शङ्का विरहित लङ्का गढ़ काँ लूटत करता के प्रत्यूह ॥
नहिँ प्रमाण प्रत्यक्ष मध्य किछु अपनहुँ आँखिसौँ देखल जाय ।
जे जे वीर प्रधान ततय छथि तनिकाँ दैछी एखन चिन्हाय ॥

षट्पद छन्द

गढ़ पर चाहथि कुदय, राम आज्ञा नहिं पाबथि ।
पर दल खण्डन शील "नील," कपि नाम कहाबथि ॥
शत सहस्र संग यूथपाल, अनलक बुझु बालक ।
सङ्गर सुभट अजेय, त्रास हिनका नहिँ कालक ॥
सुग्रीवक सेनाधिपति, अव्याहतगति सकल थल ।
लङ्कापति परिचय कहल, अचल उखाड़थि रण अचल॥१॥
विदित विश्वभरि छला, प्रबल अरिमर्दन बाली ।
तनिक पुत्र युवराज नाम, "अङ्गद" वलशाली ॥
कान्ति कमलकिञ्जल्क, पर्व्वताकार सुशोभित ।
धरणि पटकि लांगूल शत्रु कुल कर संक्षोभित ॥
सुनु लंकेश्वर हिनकँ हम, कहब कहाँ धरि बुद्धि बल ।
संग्रामक उत्साह मन, रघुपति सेवक मन बिमल ॥२॥
पवन पुत्र "हनुमान," ललकि लङ्कापुर जारल ।

अक्षय ज्ञात वल अक्ष, अक्षय दलकाँ संहारल।
जे अशोक वन जाय, स्वामिनी दर्शन कयलनि ॥
कयल सकल रघुराज काज, भल भल फल खयलनि ॥
सगर नगर घर घर जनिक, नाम सुनत कम्पित रहय।
स्वर्णशैल सङ्काश तन, रुद्रमूर्त्ति वल के कहय ॥३॥

रूपमाला

श्वेत राजत अवनिधररुचि, प्रवल बुद्धि विशाल।
कपिपतिक तट कर गतागत, चतुरतर सभ काल ॥
"रम्भ" नामक अतुल विक्रम, केसरी संकाश।
बार बार विलोकि लंका, करय चाहथि नाश ॥
"शरभ" नामक कोटि यूथप, थिकथि नायक वीर।
दृष्टि दय दशभाल देखल जाय, ई बड़ धीर ॥
देखि रहला पुरी लंका, दग्ध जनु करताह।
जखन युद्ध विरुद्ध, उग्रा रोकि के सकताह ॥

सो०—"पनस" महाबलवान, "मैन्द" "द्विविद" वानर तथा।
कपि हनुमान समान, आन आन संख्यारहित ॥

घनाक्षरी

वाणक प्रताप जलनिधि थर थर काँप।
एको जन आबि न चढ़ल दीर्घ तरणी ॥
वानर बहुत व्योम विहग समान।
उड़ रोकल न रहय कतहु कपि सरणी ॥

वीर दशकन्ध नहिं चलत प्रबन्ध किछु ।
निरबन्ध बुद्धि की वानरमय धरणी ॥
प्रवल जनिक दल विदित सकल थल ।
कलवल नलक समुद्र सेतु करणी ॥१॥

अनुष्टुप्

विधाता सर्व्वलोकानामयं, रामो धनुर्द्धारी ।
मनोवाचामदृश्योऽसौ, प्रभुस्सर्व्वत्र सञ्चारी ॥
रघोर्व्वंशे समुत्पन्न, स्समर्थो भाति संसारी ।
जनानां घोरपापानां, खलानां गर्वसंहारी ॥
कृतं कार्य्यं त्वया नेष्टं, छ नान्नोऽत्र वैदेही ।
शरण्य स्सेव्यतां सम्यक् भवत्वं तत्पदस्नेही ॥
हृताभ्र स्त्या जगन्माता, प्रशांत्या तां प्रयच्छास्मै ।
असून् संरक्ष तद्वाणै रनीती रोचते कस्मै ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

चौपाइ जयकरी इत्यपिनाम

शुक मुख वचन सुनल लंकेश * मूढ़ तोर जानल वृद्ध वेश
शुक गुरुजकँकी कहइछ ज्ञान * बाढ़ल मन मे बड़ अभिमान
रे पापिष्ट नगर काँ छाड़ * बसय न देब भाँड़ सम राड़
एखनहिँ प्राण तोर हम लेब * चर खर कैं मानव गुरु देब
किङ्कर जानि कयल प्रतिपाल * सिंहक शासक शुभ्र शृगाल

रे हम त्रिभुवन शासक आज * नीति पढ़ाबय मन नहिँ लाज
प्राण हरण करितहुँ से क्रोध * वचला पूर्ब्बक गुण अनुरोध
पुन जनु आबह राजद्वार * बिगड़ल बुद्धि बिलट व्यवहार
वानर नख दन्तक विष देह * औषध करह जाय निज गेह
जोड़ल हाथ कम्प बड़ अंग * चलल भवन भय मानक भंग
मनमे शुक कह महाप्रसाद * हेतु कि ककरहु कहब समाद
शुक ब्रह्मिष्ठ छला द्विज जाति * वानप्रस्थ विधि रत दिन राति
देव वृद्धि सुख हो अभिराम * यज्ञ करथि असुरक्षयकाम
वज्रदंष्ट्र एक राक्षस घोर * आयल आश्रम वनिकैं चोर
अयला ततय अगस्ति महान * शुक पाहुँनक कयल सन्मान
जखना कुम्भज गेला नहाय * बज्रदंष्ट्र तनि वेष वनाय
छाग मांस होइछ मन खाइ * कहलनि तृप्त निजाश्रम जाइ
शुक बनवाओल तेहने पाक * मुनि विलम्ब पूजा सन्ध्याक
से राक्षस पुन चूपहि चूप * आयल वनि शुकवधू स्वरूप
मानुष मांस परसि देल पात * अन्तर्हित अपनें भय कात
मानुष मांस अमेध्य विचार * घोर कोप मुनि मन सञ्चार
रे शुक राक्षस हो तों जाय * मानुष मांस तों दितैं खोआय
शुक मन शुष्क कहल मुनिँ जैह * छाग मांस भोजन विधि सैह
मुनि मुहुर्त भरि कयलनि ध्यान * जानल कर्म्म कयल क्यो आन
कहल अगस्ति तोहर नहिँ दोष * शाप अकारण मन घनरोष
रामक जखन होयत अवतार * दशवदनक वनबह तों चार
रामक दर्शन सैं छुट शाप * कर जनु शुक किछु मनमैं ताप

शुक ब्राह्मण राक्षस तन पाय * भोगल कर्म्म लिखल कत जाय
वैखानस संग कर तप वेश * राक्षसताक रहल नहिँ लेश

चौबेल छन्द

शुक निष्काशन कयल दशानन, तखन कहल भल माल्यवान
की निश्शङ्क चित्त लङ्कापति, कपि डङ्का सुनि पड़य कान
अपनहुँ आँखि प्रबल दल देखल, अपनें काँ के कहत आन
श्रीरघुवर परमेश समागम, नृपवर भय रहु सावधान
सीता देल जाय रघुवर कैं, काल दण्डकर तनिक बाण
शपथ खाय हम सत्य कहै छी, नहिं तौं वचत न अहँक प्राण
कोटिकोटि हनुमान अधिक बल, नख दन्तायुध चढ़ल शाण
प्रातः पुरी प्रवेश करत सभ शत शंकर नहिँ करत त्राण
यदवधि सीता हरि आनल अछि असगुन होइछ पुरी आबि
तकरो शान्ति सविधि होमक थिक काटल जाय अनिष्ट भावि
रामचन्द्र नारायण निश्चय तनिक चरण मे करु भक्ति
जननी वैदेही काँ मानू हरिमाया वर आदि शक्ति
सुनि दशभाल लाल लोचन कह यम कुवेर काँ हमर त्रास
वानरबल आश्रित दुइ भ्राता होयता राक्षस जनक ग्रास
जाह जाह घुरि एतय न आबह बहुत वृद्ध गत बुद्धिज्ञान
रामचन्द्र दिश मिलि आयल छह ततहि जाह निर्व्वाह मान

सवैया

गिरिवर उच्च शृंग पर रावण वैसल वर मन्त्री गण संग।

कथक गाव रसभाव सुखद स्वर विविध ताल लय बाज मृदङ्ग ॥
मन्दोदरी निकट पट भूषण शोभित छथि सुनइत वर गान ।
मदिरापानपात्र शोभित थल त्रास नाश अतिशय अभिमान ॥
रावण घन मुकुटाली चपला मन्दोदरी श्रवण ताटंक ।
रावण कॉं देखल रघुनन्दन भेल कोर मन भ्रकुटी वंक ॥
दश किरीट अवदात छत्र महि खसल चलल रघुवर कर तीर ।
की थिक की थिक दशमुख लज्जित कहल वहल नहिँ प्रबल समीर ।

सो० – शयन भवन चललाह, मुकुट छत्र खसने विघन ।
पुन कहि हँसि उठलाह, शिर कटने वढ़इछ विभव ॥

मिथिला संगीतानुसारेण जयकरी छन्दः

मन्दोदरि असगुन मन मानि, दैवक हतमति कॉं नित हानि ।
राम अनादर फल परिणाम, कुशल कतहु रह लङ्का गाम ॥
तखनहिँ सौं मन बढ आतङ्क, खसल अकारण श्रुति ताटङ्क ।
रावण कॉं कहलनि सति रीति, मर्य्यादा कत जतय अनीति ॥
हमरहु दुख देखी हित हानि, गेलहुँ वर्षा वाँधी पानि ।
राम विमुख सुत सिन्धु सुखाय, वधिर अन्ध कह जन समुदय ॥
अपमानित सादर निर्भीत, घर विरोध नाशक पथ थीक ।
अपने कॉं अछि कोप प्रचण्ड, नीति कहथि से पावथि दण्ड ॥

सवैया छन्द

कहइत नीति लात सौं मारल नेह न राखल सोदर भाय ।
गेला विभीषण विश्वकर्म्मसुत नल सौं राम समुद्र बन्धाय ॥

हनूमान वानर से आयल लङ्का मे गेल आगि लगाय।
प्राणनाथ निश्शंक बृथा छी बाढल जाइछ विपति सवाय॥

रावण

की करताह आबि लंका मै जनिकाँ वानर भालु सहाय।
प्रेयसि सुनु चिन्ता मन जनु करु कुम्भकर्णसन हमरा भाय॥
जगइत छथि एको नहिँ वचता सभ कपिदल कैं जैथिनि खाय।
जिबइत पकड़व दुनू भाइकाँ तखन तमाशा देखब जाय॥

मन्दोदरी

देखल तमाशा लंका जरइत अत्तयवेरि नहिँ भेलहुँ सहाय।
ओ परमेश्वर थिकथि निरंञ्जन माया मानुष देह वनाय॥
अनुज न तनुज न अपन सुतनु नहिँ सेना रक्षा करति कि हाय।
लौकिक उपलक्षणक भेल क्षण टिटही टेकल पर्व्वत जाय।

सो० – करइछ सभ कृति काल, कहल वहुत मन्दोन्दरी।
मानल नहिँ दशभाल चिन्तहिँ वितलि विभावरी॥

जयकरी छन्द

इत प्रातहि जागल रघुवीर। जयजयध्वनि कर कपि रणधीर।
आज्ञा देलजाय रघुनाथ। आनिय बांधि वैरि दशमाथ॥
सानुज राम विभीषण नाम। सह सुग्रीव सभा एकठाम।
भेल विचार करक की आज। अयलहुँ चढ़ि दशकण्ठ समाज॥
कहल प्रसन्न प्रथम श्रीराम। थिक कर्त्तव्य प्रथम विधि साम।

दूत एक रावण तट जाय । रावण कों कह नीति बुझाय ।
जौं मानथि से मनमे हारि । तौं की हेतु भयकर मारि ॥
सभ अनुमति सभ कह तट जाय । टहल करब प्रभु रहब सहाय ।
कपिकुल बहुत चित्त उत्साह । जायब हमहिँ नाथ कहताह ॥
ककरो मन नहिँ ततय मलान । प्रभु प्रताप विजयक अभिमान ॥

सो०—तखन कहल रघुराज लंका जयबा योग्य छथि ।
वालितनय युवराज, रिपु भञ्जद अङ्गद वली ॥
बद्धाञ्जलि युवराज, उत्साही सुनितहि कहल ।
स्वयंसिद्धि प्रभुकाज, टहल कहल कर्त्तव्य विधि ॥
पुन कहलनि रघुराज, परम चतुर युवराज अँह ।
जे भल जानब काज, सिद्धि करब अरि जीति रण ॥
कयल मुदित प्रस्थान कयल प्रदक्षिण रामपद ।
सानुकूल भगवान, तारासुत विस्तार बल ॥
देखल राक्षस लोक, पुन पुर अवइछ एक कपि ।
केओ रोक नहिँ टोक, चौंकि पड़ायल विकलमन ॥

मन्दाक्रान्ता छन्द

की रे की रे कह कि झटदै मूँह कीये सुखैलौ ।
वीरे वीरे बहुत जन छी त्रास की हेतु भेलौ ॥
हाँ हौ हाँ हौ विपति बड़ छौ काल लंका समैलौ ।
लंकाध्वसी कपिक सहसे दोसरो फेरि अयलौ ॥

जयकरी छन्द

लंका नगर कोलाहल ढेर । पुर दाहक कपि आयल फेर ॥
के कर मानस खायत भात । हृदय काँप जनु पीपरपात ॥
घर घर सभजनि कह हिय हारि । भल नहिँ भावि भयङ्कर मारि ॥
एकौ गोटय जनु बाहर जाह । अछि संप्राप्त समय अधलाह ॥
रावण काँ कह सभजन जाय । कृत सभ तनिके करथु उपाय ॥
प्रलय करत दौड़ल कपि सर्व्व । व्यर्थ करथि घर रावण गर्व्व ॥
की घर छथि रावण वहराथु । अपनहिँ राम शरणमेँ जाथु ॥
घर रहलैं न सिद्धि हो काज । झपटल बगड़ा उपर बाज ॥
करथु सन्धि जौं जन भल चाह । विग्रह सौं नहिँ अछि निर्वाह ॥
धर्म्ममूर्ति रावण छोट भाय । तनिकहु राम लेल अपनाय ॥
रावण निकट कहल जन जाय । रावण देखल आँखि उठाय ॥

शार्दूलविक्रीड़ित

लंका मे कपि एक आयल बली, निश्शंकता की कहू ।
की ओ फेरि अनर्थ जारत पुरी, से वृत बूझू अँहुँ ॥
निद्राहार बिहार शून्य नगरी, हा कष्ट की की सहू ।
आवैये कि सभा कहै किछु कथा लंकेश सज्जे रहू ॥

चौपाइ

स्मितमुख कहलनि रावण नीक * लय आनह कपि के ओ थीक
एक हयित दश दौड़ल धाय * अङ्गद काँ लय चलल वजाय
हरिणाधिप गजराज समाज * जेहन निशंक तेहन युवराज

कह से कह कत चलल लेआय * रावण अछि कत दैह देखाय
शशि रविकुल वर वनिता रत्न * छल हरि अनलक चोर प्रयत्न
कालानल सन रघुपति बाण * जे जर तागय शलभ समान
देखि सभासद सब भेल ठाढ़ * दशमुख हृदय कोप बड़ बाढ
देखल परस्पर से सभ रूप * सभा सकल जन कत छन चूप
रावण पुछलनि परिचय नाम * ककर दूत की अछि मन काम
देवशत्रु पुर मैं की काज * त्रासरहित कहु करु जनु व्याज

वसन्त तिलका

श्री रामचन्द्र परमेशक दूत जानू ।
लङ्का निशाचर समस्तक काल मानू ॥
वाली वली सकल जानल शौर्य्य सेटा ।
उद्दण्ड अङ्गद तनिक थिकौँह बेटा ॥

जयकरी छन्दः

एतय पठाओल अछि प्रभुराम * उचित प्रथम भूपति काँ साम
बिधि प्रपौत्र शिव द्विगुण सुभाल * अनुचितपथ चढ़लँहु एहि काल
जगदम्बा वन सौँ हरि आनि * मोह विवश नहिं जानल हानि
सीता काँ माता मन मानि * करू समर्पण रामक पानि
कपिदल आयल सागर पार * रिपुदल तूलराशि अङ्गार
पिती हमर छथि रामक सङ्ग * तनिक चरण मे प्रीति अभङ्ग
जानि बूझि मन जनु अनटाउ * रामचरण मे माँथ लगाउ
नव लङ्केश्वर अहँकाँ भाय * सुखसौँ छथि प्रभुदास कहाय

हम देखल प्रभुवाण प्रताप * वाण प्राण हृत हमरा बाप
काल न जीति सकथि संग्राम * जानू परमेश्वर छथि राम
वचन हमर हित धरब न कान * तौं भावी जानु अछि आन
हमर जनक काँ विश्व चिन्हार * के कर समर शूर व्यवहार
स्मितमुख रावण बजलाह आह * बड़ गुण शालि वालि मुइलाह
बानर मे नहिँ रहले शूर * छल छथि समर कला परि पूर
बिलटल घर तनिके तौं पूत * अयला बनल तपस्वी दूत
ओ अछि कतय एतय जे आय * लङ्का मे गेल आगि लगाय
मारल गेल न दूत विचार * नीति सौँ भरल हमर व्यवहार
यम कुवेर लड़ि लड़ि पछताथि * के नहिँ हमरा डरै नुकाथि
वनिता विरही गत उत्साह * मानुष असुख समुख लड़ताह
देखलनि लंका घुरि घर जाथु * चारू खूट माँगि कैं खाथु
हमरा जिवइत हमर कनिष्ठ * लङ्केश्वर बनलाह बलिष्ठ
ई अन्याय बालिकाँ भाय * रामक से छथि मुख्य सहाय
किष्किन्धा भेल वीर परोक्ष * सुग्रीवे छथि प्रवल महोक्ष
देखलन्हि लंका मन भेल त्रास * त्यागल सभजन जीवन आश
दूत वनल अङ्गद अयलाह * राजपुत्र वल पाओल थाह
मनमे बाढ़ल समुचित धन्धि * अभिलाषा की होयै सन्धि
बालिक तनय कतहु नहिं चूक * हँसि हँसि कहलनि फूजल ऊक
बानर मे करु काल प्रतीति * लज्जारहित सकथि जगजीति
घर समटल अछि अहँइक आज * प्रेत समान कर्म्म नहिँ लाज
लंका कपि आयल एक गोट * सुग्रीवक से अनुचर छोट

राक्षस जन सौं बांधल जानि * वनचर अनुचर गञ्जन मानि
शाखामृग वन रहल नुकाय * विनु आज्ञा कयलक अन्याय
निजजन गञ्जन समुचित पाय * देवतारिपुर अनल लगाय
छोड़ि देलक अछि सैन्य समाज * बहुत गलानि मानि मन आज
निजघर शूर समटु मन रोष * वलक थाह पाओल भरि पोष
शंकर किंकर कर पद ध्यान * रामक तुलना केकर आन
लंकेश्वर अँहँकाँ लघु भाय * सुपथ चलनि उत्तम पदजाय
लका उलटक तन सामर्थ्य * प्रलय करब ई यश बुझि व्यर्थ
सन्धिसमर विधि देखल नयन * महितल विकल करब अँहँ शयन

शार्दूलविक्रीड़ित

एक गोट समुद्र लांघि अयला, लङ्कापुरी डाहि कैं।
से की वानर देह जानल अँहाँ, गेला किला ढाहि कैं॥
जे अज्ञात कुबुद्धि युद्धभिड़ला, निष्प्राण से से तहाँ।
सीतान्वेषक दूत कर्म्म बुझले, छी छी अँहाँ ओ कहाँ॥

सवैया छन्द-रावण वचन

अजगव खण्डन जलनिधि बन्धन,
व्याध बनल छल मारल बालि।
छल सड़ले, ओ जड़ मातल मृग,
सुनरे बालिक पुत्र कुचालि॥
हमर वीश भुज सतत रहित रुज,
अनायास कैलास उठाव।

तों युवराज काज कर दूतक,
धिक् मन मे नहिं लज्जा आव ॥१॥

अङ्गद वचन

कांख दबाय लेल तोहरा जे,
सातो जलधिक तट तट जाय।
सन्ध्यार्चन जे कयल महाबल,
विद्यमान तनि सोदर भाय।
एकतीर मारल रघुनन्दन,
बालिक रहि न सकल तन प्रान।
सुन दशभाल गाल मारह की,
काल विवश नहिं तोहरा ज्ञान॥

रावण वचन

हमर पयर ज़ांतथि यमराज, मन्द मन्द रवि किरण पसार।
आठो लोकपाल भयकम्पित, बद्धाञ्जलि भय वचन उचार॥
देववधू पन्नगी आदि काँ, गर्भ स्रवित हो देखि तरुआरि।
के थिक राम कहाँ के लक्ष्मण, वचन रचन कर सभा विचारि॥

अङ्गद वचन

सुन दशकन्ध बन्ध मतिलोचन, अन्ध लेश नहिं भूपति ज्ञान।
रे हतप्राण त्राण के करतौ, मृग विशेष व्यर्थहि जनु फान॥
श्रीरघुवर - करमुक्त विषमशर, खसत समर सभटा तोर भाल।
बालवृद्ध मिलि गृद्धकाक कुल, क्रीड़ाकुल सञ्चरत शृगाल॥

रावण वचन

सो०—रे शाखामृग मूढ़, कि करब दूत अवध्य थिक ।
भूपनीति बड़ गूढ़, अङ्गभङ्ग अङ्गद करब ॥

अङ्गद वचन

सो०—सुयश कतय नहि सोर, रे रे राक्षस अधम तों ।
धिक धिक वनिता चोर, शूर्पनखा गति हम करब ॥

रावण वचन रोला छन्द

प्रतीहार रवि हमर, अमरपति मालाकारक ।
वरुण वायु गृह बाढ़, मार्जनी भृत्य अंगारक ॥
दिनकर धर करछत्र, पाककर्त्ता नित हुतवह ।
रक्षभक्ष्य की हमर, समर मे तुलना करबह ॥

षट्पद छन्द अङ्गद वचन

रे रे कुमति कठोर, मनुष गणना रघुनन्दन ।
नदी की गङ्गा होथि, वृक्ष की छथि हरिचन्दन ॥
की ऐरावत करटि, इन्द्र बाजी की छथि हय ।
स्त्री की रम्भा होथि, मूढ़मति सुन रे निर्भय ॥
की कृतयुग युग मे थिकथि, धन्वी मनसिज के गनत ।
जनि प्रताप त्रिभुवन प्रकट, हनूमान कपि के कहत ॥

रोला छन्द रावण बचन

कुल कलंक पदपुत्र, कतहु जनु देथि विधाता ।

वरु जन सहथु विषाद, रहथु बन्ध्या भय माता ॥
धिक अङ्गद युवराज, तपस्वी दूत कहावय ।
ज मारल छल वालि, तनिक जय सतत मनावय ॥

अङ्गद वचन

सो०—उचित कयल रघुनाथ, जे वनपति देल दिव्य गति ।
वचत की तोहर माँथ, परवनिता गण चोर खल ॥

षट्पद छन्द रावण अङ्गद वचन

बांधल किदँहुँ समुद्र, अमर अरि घर नहि जानल ।
कत हम त्रिभुवनजयी, कतय मर्कट हठ ठानल ॥
हँसि कह वालिकुमार, सत्य सकल्प राम धन ।
वरिसत कर नाराच, वचत तोहर नहिं हित जन ॥
एक विभीषण कुशल मति, लंकापति बनले रहत ।
छिन्न भिन्न रावण सकुल, शोणितमय सरिता बहत ॥

सवैया छन्द रावण वचन

बँधल बाँध जलधि मे वानर,
नहि आश्चर्य्य विदित व्यवहार ।
पर्व्वत सन कर उच्च मृत्तिका,
अतिलघुतर हो कीट दीवार ॥
लंकादग्ध कयल कपि चञ्चल,
से जानक थिक अनल स्वभाव ।

रामप्रताप एखन धरि नहिँ किछु,
हम देखल अछि होयत की आब ॥

शार्दूल विक्रीड़ित छन्द—अङ्गद बचन

गेली सूर्पनखा नटी कपटिनी गोदातटी धक्कटी ।
श्रीरामानुज तीक्ष्ण खड्ग लगलैँ ख्याता मही नक्कटी ॥
लै सेना खरदूषणादि लड़ला गेला कहाँ से कहू ।
सीतावल्लभ सौँ विरोध कयलैँ से ठाम जैबे अहूँ ॥

सवैया छन्द—रावण बचन

अपनहि हाथ माँथ दश काटल,
होम कयल नहिँ किछु मनत्रास ।
अति प्रसन्न गौरीश देलवर,
नव नव शिर भेल मन भेल हास ॥
बाँचल विधिक लेख निज भाल मे,
मरण मनुष्य हाथ सौं पाव ।
सकल लोक जित विशभुज हमरा,
विधि अतिबृद्ध ज्ञान नहि आव ॥

अङ्गद बचन

पतिहीना दीना अबला कत, करव निराकुल अनल प्रवेश ।
अथवा इन्द्रजाल विज्ञानी, काटय अङ्ग दुःख नहिँ लेश ॥
सुन रावण आब न मुख लज्जा, निजमुख निजगुण वर्णन कयलऽ ।
अक्षयकुमार मारि पुर जारल, तनि कपिकाँ किय बाँधि न धयलऽ ॥

दो०—कार्त्तवीर्य्य बलि बालि की, नहिँ त्रिभुवन सौं भिन्न ।
तनि प्रताप अनुभव अँहँक, मन होइछ नहि खिन्न ॥

रावण बचन

सो०—के थिक मानव राम, के लक्ष्मण हनुमान के ।
करत कठिन संग्राम, हम रावण सुरपतिजयी ॥

अङ्गद बचन

सो०—लक्ष्मण कृत धनुरेख, लाँघि न शकला शून्य मे ।
हनूमान बल देख, मान रहित लङ्का कयल ॥

रूपमाला

बालि सुत रघुनाथ चरणक, दास अङ्गद नाम ।
मारि तोहरा आज दशमुख, करब चौपट गाम ॥
जनकजा मन्दोदरी काँ, संग लेब लगाय ।
देब हम पहुँचाय प्रभुतट, विजयवाद्य बजाय ॥

षट्पद छन्द—रावण बचन

धर धर कपि बाचाल, कालवनि हिनका मारब ।
के अछि त्रिभुवन शूर, जतय हम रण मे हारब ॥
सकल सैन्य सन्नद्ध, मार मर्कट काँ धय धय ।
त्रास रहित चल लड़य, पराक्रम संगर कय कय ॥
धर तपसी दुइभायकाँ, मार विभीषण अनुज खल ।
रावण आज्ञा देल हम, वार्ता दय दे सकल थल ॥

अङ्गद बचन

थिर रह रे दशभाल काल हम तोहर अयलहुँ ।
जयबह कतय पड़ाय चोर काँ चीन्हल धयलहुँ ।।
पटकल महि भुजदण्ड चण्ड धुनि दश दिश व्यापल।
खसल दशानन मुकुट मही ओ महिवर काँपल ।।
चपल कोप युवराज तहँ वाज, जकाँ तहिपर टुटल ।
प्रभुतट फेकल मुकुट से, चारू जनु नृपगण लुटल ।।

दो०—उत कपिदल हलचल सकल, अरिपुरसौँ की चारि ।
अबइत अछि ग्रहवेग सौँ, रविमण्डल अनुकारि ।।

सो०—हनूमान उड़िधैल, रवि उज्वल मुकुटावली ।
सभक स्वस्थ मन कैल, उल्कापातक दिवसभ्रम ।।
हँसि कहलनि भगवान, अङ्गद प्रेषित तर्क्क हो ।
करत एहन के आन, राक्षसेन्द्र शिरमुकुट हर ।।

चौपाइ

बड़ कौतुक प्रभु मुकुट निहार * अङ्गद धन्यवाद उच्चार
उत दशकन्धर मौन विचार * देखि वालिसुत बल विस्तार
त्रस्त अस्तबल जेहन बटेर * वलि युवराज वाज बल हेर
जाइत छी कहलनि युवराज * अछि कर्तव्य आगु किछु काज
करता रघुनन्दन भगवान * रावण मुण्डावलि वलिदान
कह रावण मर्क्कट काँ घेर * करत अनर्थ को चलती बेर

कह अङ्गद हँसि वचन प्रमाण * अनल पटल जानथि हनुमान
अङ्गद धरणी रोपल चरण * रावण गण मन संशय हरण
महि सौं जे देत चरण उखारि * से विजयी हम मानब हारि
कय बल राक्षस सुभट उठाव * उठय न पद प्रभु राम प्रभाव
सभ कह मन मन अदभुत कीश * भेल विपक्ष बुझल जगदीश
रावण चरण धरय चललाह * अङ्गद देखि हँसि उठलाह
कयलह रघुनन्दन सौं वैर * ककर ककर नहिं धरवह पैर
रावण लज्जित वैशला घूरि * अंगद लेल प्रतिज्ञा पूरि
अंगद चलल उठल दरबार * रावण गेला बनितागार
मन्दोदरी कहथि सुनु नाह * लंकावास कठिन निर्व्वाह
यद्यपि अहाँ कयल बड़ दोष * श्री रघुनन्दन कौं नहि रोष
दूत पठाओल वालिकुमार * अहँक कयल नहिँ किछु अपकार
ठानल हठ नहिं मानल नीति * धर्म्म विरोध पाप सौं प्रीति
वानर एकसर नगरी जार * विधि जौं वाम वाम संसार
अङ्गद चरित देखल सभ नयन * सकल पराक्रम सम्प्रति शयन
कयल विसर्जन सचिव प्रधान * हितकर वचन धरय के कान

सवैया छन्दः

जनिक दूत वानर एक आयल, निर्भय सौं लंका पुरजारि ।
से हँसि गेल कयल की तनिकर, ककरा ककरा सौं करि मारि ॥
कालरात्रि सीता कौं आनल, ई की जानल प्राकृत नारि ।
काल विवश लंकेश्वर निश्चय, भावी विषय शकय के टारि ॥

रूपक दण्डक

सुनु प्राणेश सत्य मन मानू,
जिवितहिँ छथि से वाली, बलशाली॥
सकल सभा काँ अङ्गद बलचय,
अनुभव समर प्रणाली, बागाली॥
जनिक विलोचन बसथि अनुक्षण,
लहलहरसनावाली, कङ्काली।
लंकावास निरास भेल मन,
सुखसौँ वसथु शृगाली, काकाली॥

जयकरी छन्द

उत अङ्गद मन हर्ष अपार * पहुँचल कुशल प्रभुक दरबार
प्रभुक प्रदक्षिण कयल प्रणाम * अङ्गद राखल वालिक नाम
राम पुछल कहु कहु युवराज * लंका जाय कयल की काज
अङ्गद कहल दशानन गर्व्व * प्रभुक प्रताप हरल हम सर्व्व
सन्धिक प्रिय नहि खल दशभाल * पयः पान निर्विष नहि व्याल
अवइछ रावण सैन्य अपार * कयल जाय प्रभु समर विचार
प्रभु प्रधान काँ देल निदेश * प्रातहिँ युद्ध करत लंकेश
सावधान रहु कपि दल राति * मायामय थिक राक्षस जाति
सभ छल शयन प्रभुक वल पाय * जागल अङ्गदमात्र सहाय
नाम प्रभञ्जनि राक्षसि जाति * रावण प्रेरित आइलि राति
से पापिन काँ मुख्य विचार * सानुज रामक करब संहार

कल कौशल जौं सिद्ध उपाय * मूलक छेदैं वृक्ष सुखाय
देखलनि अङ्गद तकर स्वरूप * ग्रह दुर्दशा आइलि चुप चूप
ललकारल नहिँ गेल पड़ाय * डाकिनि काँ नहिँ रहल उपाय
फनला अंगद धयलनि झोंट * लतिऔलैं भेली लोटपोट
अतिचित्कार करय से लाग * शब्द सुनल कपि दल भेल जाग
धर धर पकड़ पकड़ भेल सोर * जाय पड़ाय न राक्षस चोर
क्यो भूधर क्यो वृक्ष उखाड़ * मार मार लङ्कापुर राड़
परिपूरित भेल कतय न शब्द * प्रलयकाल जनि गर्जय अब्द
दशवदनक मुँह गेल सुखाय * मुइलि प्रभञ्जनि गञ्जन खाय
कह मन रावण हमरे भाय * बाट घाट सभ देल देखाय
कपिदल मन किछु त्रास न पाव * पुर स्वाधीन जकँ चल आव
हमरा, बालि कैँ, बैरी भाय * पोसल पन्नग दूध पिआय
कपि चञ्चल बल की करताह * अनल शलभ सन सब जरताह
गञ्जित मुइलि प्रभञ्जनि जाय * उचित न शत्रुक बिजय उपाय
निज प्रधान काँ कहल सकोप * प्रथम करह बानर बल लोप
सुनितहिँ चलल पटह देल चोट * कातर जीव न एकोगोट
गोमुख भेरी वाज मृदंग * पणवानक गोमुख कर रंग
महिष ऊँट खर सिंह सवार * वाहन विविध प्रवह सञ्चार
शूल चाप तोमर तरुआरि * पाश यष्टि शक्तिक भेलभारि
लङ्का सकल द्वार सौ व्यूह * चलल बहुत उत्साहि समूह
एतय राम अनुशासन पाय * कपि दल चलल नीरण पछुआय
क्यो गिरि शृंग शिखर कर धयल * तरु उखाड़ि कैं आयुध कयल

दलसन्नद्ध सकल छल ठाढ़ * वीरोत्साह बहुत मन बाढ़
करब दशानन सुभट संहार * मन मन कपिदल करथि विचार
रोकल लङ्का चारुद्वारि * कपि दल प्रबल मत्तल बड़ मारि
कोटि कोटि यूथप एकवेरि * लङ्का नगर सगर लेल घेरि
खन उड़ गगन मही घुरी आव * गर्ज तर्ज्ज कपि चञ्चल स्वभाव
अतिबल राम जयति जय वीर * तथा महाबल लक्ष्मण धीर
राघवपालित जय कपिराज * सिद्ध मन्त्री रण वानर बाज

षट्पद छन्द

पवन तनय युवराज, कुमुद नल नील महाबल ।
शरभ केसरी द्विविद, तार वानर भट भल भल ॥
जाम्बवान दधिवक्त्र, मैन्द यूथप लङ्का काँ ।
रोकल सगरो नगर, फानि बाढ़ल लङ्का काँ ॥
तरुपर्व्वत नख दन्तसौं, राक्षस वल कयलनि विकल ।
युद्ध हेतु सभ द्वारसौं, वहरायल क्रोधी सकल ॥

चौपाइ

भिन्दिपाल पट्टिश तरुआरि * शूल हाथ राक्षस कर मारि
शोणित मांस पूर रण पङ्क * तदपि युगल दल वड़ निःशङ्क
काञ्चन निभ हय गजरथ हाँकि * राक्षस शूर कीश दल ताकि
करय युद्ध हो दशदिश शोर * मत्त महाभट राक्षस घोर
कुपित कपीन्द्र दनुज जय काज * राक्षस चटक प्रकट कपि बाज
देव अंश सम्भव सब कीश * विद्यमान रघुवर जगदीश

समर अमर कपि दनुज विनाश * अंकुर ब्रीहि टिड्डी कर नाश
जय हो ततय जतय रह धर्म्म * दनुज पराजय दशमुख कर्म्म
चतुर्थांश सैन्यक भेल नाश * विचलित राक्षस दल मन त्रास
मेघनाद भेल अन्तरध्यान * ब्रह्मदत्त वर मन अभिमान
गगन जाय अस्त्रक कर वृष्टि * नानाविधि अद्भुत रणसृष्टि
वानर सैन्यक चल नहि हाथ * विकल देखि दल श्रीरघुनाथ
क्षणभरि छला महाप्रभु चूप * क्रोध कयल धयलनि निजरूप
लक्ष्मण हमर अजय धनुर्देव * ब्रह्मास्त्रहिँ हम बदला लेब
तत्क्षण सभकाँ हम देब जारि * हमरा सैं के करता मारि
सुनि घननाद गेल पुरि गेह * मन मानल समरक सन्देह
वानर दल समर क्षत अङ्ग * ककरो छल नहिँ जीतक रङ्ग
रघुनन्दन कह सुनु हनुमान * एखन प्रयास करत के आन
क्षीर महोदधि सत्वर जाउ * द्रुहिणाचल औषधि लय आउ
अपन सकल दल विकल जिआउ * वीर सुयश त्रिभुवन मे पाउ
सुनि हनुमान पवन यव जाय * आनल ओ गिरि सकल उठाय
औषधि बल बाँचल सब कीश * पालक स्वयन्देव जगदीश
तेज सैं आनल नग हनुमान * राखल तताहि कहल भगवान
वानर दल कर भैरव नाद * छुटल समरश्रम मरण विषाद
मन विस्मित सुनि लङ्काधीश * कयलक कठिन काल बल कीश
विधि राघव अरि ध्रुव निर्म्माय * वर्त्तमान देल नगर पठाय
हटि नहिँ रहब करब संग्राम * दूरि करब नहिँ रावण नाम
मन्त्रिबन्धु यूथप जे शूर * करथु सकल जन आलस दूर

करथु युद्ध सभ मन उत्साह * हम नहि कयल ककर निर्वाह
हमरा कष्टसमय अछि आज * त्रासैं घर रहता किछु व्याज
अरिसम तनिका हम देब मारि * अपनहि हाथ धरब तरुआरि
त्रासैं चलल समर सभ शूर * रणपण्डित वलकला सुपूर
अतिवल चलल नाम अतिकाय * तथा प्रहस्त प्रधान कहाय
नाम महोदर ओ महानाद * लड़य चलल रावण अह्लाद
नाम निकुम्भ देव अरिनास * वानर संग कयल संग्राम
देवान्तक एकनाम कहाव * वीर हारान्तक नाम धराव
अगणित असुर कहब कतनाम * क्रुद्ध युद्धकर जय मन काम
वानर दल में गेल समाय * उद्यत युद्ध कहल नहि जाय
भिन्दीपाल भुशुण्डिक मारि * वाण परश्वध चल तरुआरि
नाना तरहक धय लय अस्त्र * पहिरि पहिरि रण लोहक वस्त्र
कपियूथपसङ्ग रण आघात * सहय तुरङ्ग तुरङ्गम लात
पर्व्वताग्र तरुवर नख दन्त * एहि बल कपि कर राक्षस अन्त
कत जनकाँ दृढ़ मुक्का मार * नखसैं तनिकर उदर विदार
कत राक्षस काँ मारल राम * कत काँ कपि देल निर्ज्जरधाम
कत राक्षस काँ अङ्गद मार * अगणित हति हनुमान प्रचार
कतजन काँ लक्ष्मण कर नाश * समर जितल यूथप निस्त्रास
समरजयी कपिराज प्रताप * ठाढ़ महाप्रभु कर शरचाप

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
लंकाकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

सो०—जखन सुनल विसकान, समर शयित अतिकाय गण।
दसमुख शोक मलान, कोप विवस हलचल पड़ल॥

चौपाई

मेघनाद लंका रखवार * रावण कयल लड़य सञ्चार
विकट सुभट राक्षस लेल संग * चढ़ल दिव्यरथ कोप अभंग
अस्त्र सत्र सभ लयलेल ताकि * प्रभु सन्मुख रथ चलला हाँकि
आशीविषसन मारल वाण * कतजन कपिक छयित सन प्राण
सुग्रीवादिक यूथ प्रधान * सभ रण शयन रहित भेल ज्ञान
कोप विभीषण देखलहिँ बाढ़ * गदापाणि निर्भय रणठाढ़
कलकौशल सारथि सौं माँगि * मय देल गमहिँ चलाओल साँगि
देखि विभीषण नाशिनि शक्ति * वध अयोग्य हमरा मे भक्ति
अभय देल रण मे रघुवीर * लक्ष्मण आगु धनुष लयतीर
लक्ष्मण हृदय लाग से साँगि * विषम तेहन शक पानि के माँगि
मायाशक्ति जते संसार * सभहिक लक्ष्मण परमाधार
शेष महाप्रभु से अवतार * सहथि सकल धरणिक जे भार
कि करत ततय शक्ति संघात * जनि फण धरणि सिरिस फुलपात
कर रण मानव लीलाभाव * रावण मन उत्साह बढ़ाव
लक्ष्मण कैं मूर्छित रण जानि * चलब उठाय यहन मन मानि
करसौं बलसौं जाय उठाव * जगदाधारक गरिम सुभाव
उठला नहिं कत कयल प्रयास * गर्व उठाओल छल कैलास
तेहन अनर्थ देखि हनुमान * दौड़ला प्रवल यहन पवमान
रावण काँ मारल तत जाय * एक मूका दृढ़ हृदय तकाय

लगइत अशनिपतन प्रति भसल * रोकि ठेहुन मुहभर सँ खसल
सभमुख सभलोचन सभकान * शोणित बहल पड़ल अज्ञान
दशमुख घुर्णित नयन अवाक * रथपर बैशल भयवश ताक

सो०-- भुज भरिलेल उठाय, हनूमान सौमित्रि काँ ।
देल ततय पहुँचाय, जगन्नाथ रघुनाथ तट ॥
रावण रथ पर जाय, बैसलि शक्ति अनन्त तजि ।
दशमुख संज्ञा पाय, धयल शरासन कोपवश ॥

रूपमाला छन्द

सम्हरि रथपर कर शरासन, चलल रावण क्रुद्ध ।
रामचन्द्रक निकट पहुँचल, करक निर्भय युद्ध ॥
हनूमान अमानवल, वरयान चढ़ि रघुवीर ।
कयल धनुटङ्कार जेहन, अशनिधुनि गम्भीर ॥
कहल प्रभु गम्भीर वचनहिँ, रे दशानन चोर ।
कतय जयवह एहि समरसौं, निकट अन्तक तोर ॥
छल जे राक्षस जनालय, तोहर अनुचर लोक ।
तेहन गति हम करब सम्प्रति, छुटत तोहर शोक ॥

चौपाइ

रामक वचन सुनल दशभाल * भ्रुकुटी कुटिल नयन सभ लाल
पवनतनय काँ शत्रु विचार * शर अनेक तनि काँ तनमार
शर व्रण व्यथा वृथा मनमान * केसरिनाद करथि हनुमान
देखि शरजर्ज्जर मारुति अङ्ग * कालरुद्र सम श्रीप्रभुरङ्ग

अश्वसहित रथध्वज रथवाह * धनुष शस्त्र सभतन सन्नाह
छत्रपताका सभ देल काटि * रघुवर शरक सहय के साटि
रावण हृदय अशनि शरमारि * भूधर उपर जेहन पाकारि
थर थर दशमुख रण मे काँप * करसौं ससरि ससरि खस चाप
रघुपति देखल रावण रङ्क * रविनिभ मुकुट शरैं कय भङ्ग
रे रे दशमुख खल कृशप्राण * एखन प्रहार करब नहिँ बाण
घुरि कैं लङ्का लज्जित जाह * प्रातहिँ अबिहह जनु अगुताह
देखिहह हमर समर बल प्रात * अहह रहह हनुमान सों कात
मुका तनिक लगतौ एकगोट * यमपुर जयबह कर्म्मक छोट
सुनि रावण लज्जित चलजाह * विकल अनन बल पाओल थाह
लक्ष्मण मूर्छित धरणी शयण * सकरुण देखल पङ्कज नयन
कतविलाप कय कय प्रभुकान * विकल सकल अङ्गद हनुमान
ततय विभीषण कहल उपाय * लङ्कादूत महाबल जाय
वैद्यसुषेण जनिक थिक नाम * तनिकालय आनथि एहिठाम
ओ औषधि कहता अनुकूल * लक्ष्मण काँ सञ्जीवन मूल
प्रभु आज्ञा मारुत सुत जाय * आनल तनिकाँ गमहिँ उठाय
कहल वैद्य औषधिक ठेकान * रातिहिँ भरि मे जौं एतआन
तौं बच लक्ष्मणवीरक प्राण * प्रात होयत होयत नहिं त्राण
के जायत लाओत एकराति * सह सह करइत राक्षस जाति

सो:—नल त्रिरात्र घुरि आब, मैन्द द्विविद दुइराति मे।
से सुग्रीव प्रभाव, एकराति मे नील धुर॥
चारि पहर मे आब, जाय द्रुहिणगिरि वालिसुत।

अड़रा लागल नाव, राम विकल सकरुण कहल ॥

चौपाइ

समर शूर रुद्रक अवतार * हनुमानक मुख राम निहार
महावीर द्रुहिणाचल जाउ * मृतावस्थ सौमित्रि जिआउ
कह हनुमान यथाज्ञा पाय * लायब पर्व्वत त्वरित उठाय
सञ्जीवन औषधि अछि हाथ * चिन्ता परिहरु श्रीरघुनाथ
जाइत अबइत हयत न देरि * आनब सञ्जीवन काँ फेरि
सकरुण हृदय कहल नहिँ जाय * कपिदल सकल विकल अकुलाय
रावण काँ बार्त्ता भेल कान * औषध काज चलल हनुमान
कालनेमि गृह आतुर जाय * चिन्तातुर रावण असहाय
वैसला अर्घ्यादिक सन्मान * से कयलनि जे उचित विधान
अतिआश्चर्य्य कथा ई लाग * राजागमन सुभवनक भाग
कालनेमि कह कहु बृत्तान्त * नृप भय की अयलहुँ एकान्त
की थिक से कहु करु जनु व्याज * आनन कमल मलिन भेल आज
रावण कहल वचन छल हीन * हमरहु सङ्कट काल अधीन
मय देल साँगि चलाओल आज * लक्ष्मण मूर्छित से भल काज
सञ्जीवन आनय हनुमान * अति जव कयल वीर प्रस्थान
कपट मुनिक पथ वेष बनाउ * मारुत नन्दन काँ अटकाउ
प्रातहिँ मरता लक्ष्मण नाम * विजय हमर होयत संग्राम
रावण वचन सुनल से कान * के रोकत चलइत हनुमान
कालनेमि कह आज्ञा करब * मारीचक जकँ तकइत मरब
हत भेल पुत्र पौत्र प्रियलोक * अपनैं काँ मन नहिँ हो शोक

समर असुर कुलवीर विनाश * अपनैंकाँ अछि जिबइक आश
कि करव सीता कि करव राज * डरसौं समुचित जनके वाज
मुनिगण सङ्ग वसू वनजाय * संयम नियम करू समुदाय
मायामय जानू संसार * सभ जनले अछि ज्ञानविचार
हम उपदेश कहैछी गूढ़ * काल विवश ज्ञानी हो मूढ़
ताकवगय की देश विदेश * लोचन पथ निजपुर परमेश
रामचन्द्र विष्णुक अवतार * लक्ष्मण शेष धरणिधर भार
सीता विष्णुक माया जानि * हठ परित्यागु हेतु की हानि
हृदय कमल प्रभुध्यान लगाउ * ई ससार जलधि तरि जाउ
भजु रघुनन्दन सीता सहित * वैरि भावनादिक सौं रहित
एखनहुँ धरि अछि विजयक आश * तूर भूर जनुलाग हुताश

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लङ्काकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

चौपाइ

ललकि उठल रावण खिसिआय * कालनेमि मुह गेल सुखाय
रामचन्द्र मे तोहरा प्रीति * के न कहत थिक बहुत अनीति
अभिप्राय हमरा किछु आन * ई शिखवय लगला अछि ज्ञान
करह करह गय कहल उपाय * नहितौं यमघर देबहु पठाय
कालनेमि मन कहि चललाह * उचित कहल लागल अधलाह
तुहिनाचल पर तपवन कयल * मुनिसम स्वाङ्ग सकल से धयल
योजनमित एक आश्रम नीक * बुझिपड़ जनु मुनिजनहिंक थीक

शिव शिव कहथि सुवेष विवेक * कालनेमि मुनि शिष्य अनेक
से आश्रम देखल हनुमान * लगला करय हृदय अनुमान
की भोथिआय गेल अछि पन्थ * कहता सभटा निकट महन्थ
वाट सोझ हुनका सौं जानि * जायव तखन पीवलेव पानि
आश्रम मध्य गेला हनुमान * ऐन्द्रयोग मुनिकर सविधान
देखल शिवपूजन बिधिवेश * मानल चित्त पुण्यमय देश
मारुतनन्दन कयल प्रणाम * हनूमान सभ जन कह नाम
रामकाज सौं छीर समुद्र * जाइतछी पालक छथि रुद्र
हमरा सहज त्रिकाल ज्ञान * भाग्यहिँ भेट भेल हनुमान
रामक दिव्य विलोचन गर्व्व * वचला लक्ष्मण वानर सर्व्व
छोट कमण्डलु वारि न पूर्ति * तृष्णा होइति अद्भुत मूर्त्ति
कतय जलाशय से दिय देखाय * सुखसौं पान करव जल जाय
मुनि आज्ञा सुनि भेल बटु आगु * मारुतसुत तनिपाछाँ लागु
आँखिमुनि अँहकय जलपान * सत्वर आउ निकट हनुमान
मन्त्र एक हम देव उपदेश * त्वरितहिं देखव औषधि वेश
गेला जलाशय लोचन मूनि * पिवयित पानि शब्द भेल सूनि
महती मकरी पयरे धयल * पवनक पुत्र पराक्रम कयल
तनिकर मुहदेल हाथैं फाड़ि * अन्तरिक्ष गेलि से तन छाड़ि

रूपमाला छन्दः

दिव्यरूप धरांगना से, रूपमालीनाम ।
कहल सभ हनुमान काँ, जे कपट छल तहिठाम ॥
हे कपीश्वर अहंक चरणक, परश छूटल शाप ।

सुनि न थिक ओ विकट राक्षस, कालनेमि सपाप ॥
ओकर जनु विश्वास करुमन, मारु तनि कँ जाय ।
जाउ द्रोणाचल त्वरित अँह, बाट विघ्न मेटाय ॥
ब्रह्म जनपद हम चलैछी, कयल पद सँयोग ।
एकर फल निष्पापिनी हम, छुटल शापक भोग ॥

चौपाइ

सुनल देखल कपिवर से चरित * रुष्ट फिरल आश्रम मे त्वरित
कालनेमि कह दहिना कान * लाउ निकट झटदय हनुमान
उचित दक्षिणा जे अहँ देब * हम सन्तुष्ट पुष्ट भय लेब
मुक्का एक मारल हनुमान * ग्रहण करू दक्षिणा विधान
प्रकट भेल खल मरइक काल * लड़ल भिड़ल कय मायाजाल
कतय कमण्डलु मायाजाल * कालनेमि कँ धयलक काल
गेल महाबल गिरिवर द्रोण * चिन्हल न पर सञ्जीवन कोन
गिरि समस्त कँ लेल उठाय * पवनकपुत्र पवन जँक जाय
उत रघुनन्दन सकरुण चित्त * करथि विलाप ई लोक निमित्त
लक्ष्मण कँ लेल हृदय लगाय * कियक न प्राणप्रथम विधि जाय
मसकपक्ष पवनक आघात * उड़ि बरु जाथि धराधर सात
पन्नगेश कँ भेकी खाय * चींटी उदर करीन्द्र समाय
मेषी देखि सिंह वन त्याग * सुधा अधिक मधु हो कटु साग
ई बरु होय कथा थिक अल्प * मिथ्या नहि रघुकुल सङ्कल्प
रहल मनोरथ ठामहिँ ठाम * अस्त भेल रघुवंशक नाम

लक्ष्मण सन नहिं भेटता भाय * बिधिहुक घर अतिशय अन्याय
रावण जिवइत रहवे कयल * कथिलय वाण धनुष कर धयल
चौदह वर्षक अछि अवसान * समय कयल विधि आनक आन
जायव की घर बनल सशोक * सुनि सुनि कि कहत ओतयक लोक
शिव शिव जीवन हमरो व्यर्थ * रमणी कारण मरण अनर्थ
बैदेही ई सुनतिहि कान * मरती विलपि होइछ अनुमान
माता तकयित हयती बाट * नोरक लेल धरणि धुर पाट
धिक धिक जीवन एहि संसार * कुलकलंक विगड़ल व्यवहार
दुष्ट देव काँ कि कहव आज * भलजन वश नहिँ तनिक समाज
उठु उठु सत्वर लक्ष्मण भाय * दिनमणि कुलक कलङ्क मेटाय
शिबशिव कलय गेला हनुमान * जनिकाँ अर्पल तन ओ प्राण
देखि पड़इछ सभटा प्रत्यक्ष * ककरो केओ नहिँ दैव विपक्ष
की राक्षस हनुमान सौ युद्ध * कयलक पथ मे हमर विरुद्ध
महावीर काँ कयलक आँट * राक्षस संघ की रोकल वाट
जौं जौं बीतलि रजनी जाथि * रामचन्द्र तौं तौं अकुलाथि
केओ सेनाधिप प्रश्न बिचार * चढ़ि तरु भूधर उपर निहार
औषधि सञ्जीवनक समीप * रविसम कान्ति अखण्डित दीप
नभमे सुनि पड़ धुनि बड़गोट * हर्षविषाद हृदय नहि छोट
रवि शशि विनु की गगन प्रकास* क्षण मन हर्ष क्षणहि मन त्रास

सो०—गिरि समेत हनुमान, प्रभु सन्निधि आयल मुदित ।
सुनु रघुपति भगवान, गिरि आनल औषधि सहित ।।

हर्ष कहल नहि जाय, करुणामे वीरागमन ।
प्रभु लेल हृदय लगाय, जगत प्राण नन्दन वली ॥

मत्तगजेन्द्र छन्द

वैद्य सुषेणक सम्मति सौं, रघुनन्दन दिव्य महोषधि लैकैं ।
लक्ष्मण वीरक प्राण वचाओल, जे अनुपान यथाविधि दैकैं ॥
सूतल जागल रीति जकाँ, उठि ठाढ़ तहाँ रण हर्षित भैकैं ।
गेल कहाँ रणसौं खल रावण, मारव आज धनुर्द्धर धैकैं ॥

जयकरी छन्द

ई कहयित लक्ष्मण लय अङ्क * लागल नहि रघुवंश कलंक
महावीर रुद्रक अवतार * कष्ट महोदधि कयलहुँ पार
देखल निरामय लक्ष्मण वीर * अहँक प्रसाद भेल मन थीर
कष्ट नष्ट कयलहुँ हनुमान * ई उपकार दक्षके आन

रूपक दण्डक छन्द

जय जय अतिवल रघुवर सानुज, कहि कपि कयल तयारी बड़ भारी ।
रणवाजा सभ वाजय लागल, गिरिचढ़ि देखथि मारी त्रिपुरारी ॥
चलल सकल दल लङ्कागढ़पर, तरुवर लेल उखारी गिरिधारी ।
कपिसुग्रीव विभीषण अनुमति, रोकल चारु द्वारी रिपुरारी ॥

जयकरी छन्द

रामक शरसौं जर्ज्जर काय * बैसल निज सिंहासन जाय
सिंहक त्रासित जनु गजराज * पराभूत फणि गरुड़ समाज

कहल दशानन जनसौं खेद * शरपीड़ित तन मन निर्व्वेद
मरण कहल विधि मानुष हाथ * सैह उपस्थित छथि रघुनाथ
अनरण्यक हमरा अछि शाप * से दिन निकट हृदय वड़ काप
कहइतछी अनरण्यक उक्ति * से दिन लगिचायल समयुक्ति
परमात्मा हमरा कुल आबि * लेता जन्म समय अछि भावि
तोहरा पुत्रादिक जे हयत * रामहाथ मृति परपुर जयत
कहि अनरण्य गेला परलोक * तकरे कारण उपगत शोक
रामक हाथ हमर अछि मरण * त्यागव हम नहि वीराचरण
सभजन मिलिकैं तहँ अहें जाउ * कुम्भकर्ण कां जाय जगाउ
कहवनि हमर दशा सभ गोट * वड़गोट काय कर्म्म की छोट
रावण कां प्राणान्तिक कष्ट * अहंकी शयन सुखी धिक भ्रष्ट
सभजन कयलनि बहुत उपाय * कुम्भकर्ण लग ढोल बजाय
बहुत उपाय करय लगलाह * कुम्भकर्ण तैं नहि जगलाह
हुनकर वनिता देल उपदेश * लय आनू गायिनि जनि वेश
उठता सुनिसुनि वनिता गान * जे कथनीय कहव से कान
एकदिश कानन एकदिश नाँच * भोग रहल लङ्का दिन पाँच
कुम्भकर्ण उठला निज सेज * लय पहुँचल राक्षसगण भेज
गिरिसम मासुक ढेरी कयल * तीव्रसुरा अगणित घट धयल
मदिरा मांस गेला पिवि खाय * कहल वजौतनि वड़का भाय
तनिक चरण पङ्कज करु भक्ति * यावत अछि एतवो तन शक्ति
भक्तिभाव सैं पायव ज्ञान * भक्ति मुक्तिदा वेदप्रमाण
सहज उपाय करब नहि भाय * दुर्म्मति धरव मरव रण जाय

नारायणक बहुत अवतार * कहयित कथा बहुत विस्तार
सभसँ श्रेष्ठ ज्ञानि अवतार * से आयल छथि लङ्काद्वार
नहि उपाय सम्प्रति किछु आन * रामक शरण करण कल्याण

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥

सो०—सुनल वचन लकेश, कुम्भकरण समुचित कहल ।
मानल हृदय कलेश, क्रोधातुर चहलनि उठय ॥
शिखइक नहिँ अछि ज्ञान, वजवाओल से काज करु ।
जाउ जौं मन किछु आन, करु सुपुति निद्रा विकल ॥

चौपाइ

कुम्भकर्ण सुनि रावण उक्ति * कालविवश काँ नीति न युक्ति
समुचित कहल कयल ओ कोप * पापक उपचय शर्म्मक लोप
महागोट पर्व्वत सन काय * चलला समर विषाद विहाय
रण महँ कयल तेहन से नाद * सातो जलधि रहित मर्य्याद
अति भयकारक कपिदल जान * कुम्भकर्ण थिक काल समान
झपटि झपटि वानर कैं खाथि * गिरि सपक्ष सन सत्वर जाथि
मुद्गर लय कर तेहन घुमाव * कालदण्ड गुणि के लग आव
बहुतक चूर चरण ओ हाथ * बहुत जनक भेटय की माँथ
जाय विभीषण कयल प्रणाम * गदापाणि कहलनि निज नाम
माय दया करु भय गेल भेट * रावण रहल न कहल समेट
बहुत कहल हम नीति बुझाय * अनुचित मानल बड़का भाय

कि कहब सहल बहुत अपमान * रहितहुँ निकट न वचयित प्राण
मारल लात हाथ तरुआरि * असमन्धिक जकँ धिक पढ़ गारि
रामशरण हम धयल विचारि * सचिव चारि युत कुशल निहारि
अमृत त्यागि विष तिष के खाय * चुम्बन करय व्यालमुख जाय
कुम्भकर्ण लघुभ्राता जानि * मिलि कहलनि की तोहर हानि
महाभागवत थल भल पाय * कुलमे कमल भेलँहु एक भाय
नारद सौं हमरा सभ ज्ञात * जाउ निकट सौं सम्प्रति कात
के थिक अपन बुझी नहिं आन * सुरा हरल जतवो छल ज्ञान
कहलनि कुम्भकर्ण जे भाय * कह सुग्रीव चरण लपटाय
कनयित कनयित भेला विदाय * कयल निवेदन प्रभुपद जाय
कुम्भकर्ण किछु श्रम नहिं लेथि * करपदसौं कपिदल पिसि देथि
मुक्का एक मारल हनुमान * खसला कटला गाछ समान
कुम्भकर्ण रण उठल सम्भारि * हनुमानक सङ्ग बजरल मारि
हनुमानक पर मुक्का चलाय * मूर्छित कय देल अवनि सुताय
नलनीलादि सहित कपिराज * पटकल छल सभ किछु नहिं वाज
मातल जेहन प्रबल मातङ्ग * कुम्भकर्ण से धयलनि रङ्ग

सवैया छन्द

कण्ठकूपमैं कपिपति जांतल, सभप्रधान संग्राम खसाय ।
कुम्भकर्ण घुरि लङ्का चलला, ककरो बुत नहिं बनय उपाय ॥
गमहि गमहि अतिसाहसि कपिपति, हुनकर काटल नासाकान ।
ऊड़ि अपन कटक चल अयला, कुम्भकर्ण काँ भेलनि ज्ञान ॥

बरवा छन्द

सूर्पनखा काँ समुचित, भेलथिनि भाय।
रूपभयङ्कर तनिकर, कहल न जाय॥

दोवय छन्द

लय त्रिशूल कर फिरल भयंकर, कालमूर्ति जनु आवै।
नासाश्वास पवन सौं कपिगण, योजन बहुत उड़ावे॥
एक जनक शक से नहिँ भेले, जे क्षण रण अटकावै।
प्रवल बेग चल प्रवह जेहन बह, कत कपि नभ लटकावै॥
नहिँ सुवाहु खरदूषण नहिँ हम, नहिँ कबन्ध वनचारी।
नहिँ हम शम्भु धनुष जे तोड़लह, तथा ताटका नारी॥
सूर्पनखा मारीच नीच नहिँ, जड़ जलनिधि नहिँ जानह।
रे रे राम बिश्वबलमर्दन. कालमूर्ति मन मानह॥

चौपाइ

वानर विकल देखल रघुनाथ * क्रुद्ध धनुष शर लेलनि हाथ
फेकलनि अस्त्र एकवायव्य * अस्त्रसहित काटल भुज सव्य
खसल हाथतर कपि जे पड़ल * रहिगेल ठामहिँ नहिँ संचरल
राक्षस लय कर शालविशाल * रघुवर पर दौड़ल तत्काल
इन्द्रअस्त्र प्रभु मारल ताहि * शालसहित कटिगेल तनि बांहि
भुजयुग रहित चलल खिसिआय * रावण काँ प्राणाधिक भाय
अर्द्धचन्द्र दुहसँ बुझि वयर * काटि देल प्रभु तनिकर पयर
छिन्नचरण महि खसला ढेर * औंघड़ायित दौड़ल से फेर

बड़बा मुह सन मुह बड़बाय * बिधुलग राहु ग्रसय जनु जाय
शिलाखण्ड प्रभु .शर पर लेथि * कुम्भकर्णमुह भरि भरि देथि
तदपि न मरय कयल सञ्चार * ओंघड़ायितहुँ कपिदल संहार
तखन ऐन्द्र धनु अशनि समान * राम धनुष पर कर सन्धान
फेकल कयल तनिक संहार * वासव बृत्र समर व्यवहार
कुम्भकर्ण शिर लङ्का द्वारि * तनिक पतन तन वारिधि वारि
धरतल जलचर जे पड़ि गेल * तनिकर मरण अकालहिँ भेल
देखल समर अमरगण गगन * कयलनि सुमन वृष्टि मन मगन
खगपन्नग मुनिगण गन्धर्व्व * अतिशय हृदय हर्ष भर सर्व्व
नारद मुनि अयला तहिठाम * स्तुतिकर धन्य धन्य प्रभुराम
विजय सदवसर बजबथि बीण * धरणीभार कयल प्रभु क्षीण
कुम्भकर्ण सन मारल शूर * सज्जन मुनिक मनोरथ पूर
के छथि जनिकाँ देल न कष्ट * सुखित आजु छथि दिग्गज अष्ट
अपनैक तकलैं हो ससार * मुनलय आँखि सृष्टिसहार
प्रकृति पुरुष साक्षी मे काल * व्यक्ताव्यक्त त्रिगुणमय जाल
सबहिक मूलभूत अहँ राम * वार वार तैं करी प्रणाम
स्मरण नाम कीर्त्तन गुण करथि * कथा कथन से संसृति तरथि
सभज्ञाता काँ हम की कहब * सुर मिलि नभसौं देखयित रहब
कृपा करु जाइत छी आज * सिद्धि कयल धरणी सुरकाज
चलल मनोगति विधिक समाज * सुरमण्डलि सुख गगन विराज
जय अतिबल रघुवर भगवान * भूमि गगन धुनि पूरित कान
जय जय शब्द करय कय वेर * वानर अरिगण काँ नहि टेर

कुम्भकर्णं काँ मारल राम * पव्वत सन शिर अछि एहि ठाम
शुनि से रावण भूमि लोटाय * कहि भ्राता गुण शोक समाय
छण छण मूर्छा ,छण चैतन्य * वरनथि विशद सहज सौजन्य
भेलहुँ आज उत्साह विहीन * मारल गेलहुँ काल अधीन
निहत पिती विह्वल लंकेश * शुनि मेघनाद पँहुँचि तहिदेश
परिहरु शोच पिता एहिठाम * हमरा आगां के थिक राम
अतिवल जिवितहिँ छी घननाद * अपनैंकाँ नहि उचित विषाद
स्वस्थचित्त सौं रहु महिपाल * हम श्रम करब हरब जञ्जाल
अपनैंक शत्रु समूह संहारि * तौं जानब हमरा शक्रारि
मेघनाद रण चलल सकोप * करब समर रघुवर वललोप
भोरहिँ वानर रोकल द्वारि * भेल परस्पर भारी मारि
मेघनाद अतिमाया धयल * रथचढ़ि गगन महारव कयल
रङ्ग एकर नहि लगइछ नीक * विकल सकल दल कह के थीक
होइछ अस्त्र जते संसार * नभसौँ वरिशय नानाकार
अविरल वारिद वरिसय नीर * तेन्ने वरष गगन सौँ तीर
समर राम संग करय प्रताप * शर तनं लाग-ससरि हो साप
वानर दल भय थर थर काप * सगर समर भरि सापहिँ साप
साप लपटि सभहिक तन जाय * रह अवकाश न केओ पड़ाय
तखन प्रकट भेल पढ़यित गारि * परिकल छल कयदिन कय मारि
एतगोट दर्प हमर पुत्र जार * अतिवल राक्षस काँ संहार
जाम्बवान कहलगि रे दुष्ट * जयवह कतय समर सन्तुष्ट
मेघनाद सुनि कय मन क्रोध * रह रे वृद्धवृद्ध दुर्व्बोध

बुढ़भनि छोड़ल साहस छोड़ * अपना बलकाँ केकह थोड़
देखि प्रताप तदपि नहिं ज्ञान * हमछी मेघनाद नहिँ आन
शूल चलाओल वच्चनैं झोँकि * जाम्ववान लेल हाथैँ लोकि
मारल शूल हृदय मे हांकि * मूर्छित खसला सकथि न ताकि
समरभूमि पद धय घिसिआय * लङ्का फेकि देल खिसिआय
हर्षविषाद नगर भरि भरल * रजनि जानि नहि जन संचरल

× × × × × ×

रूपक दण्डक छन्द

नागपाश सौं रण में बाँधल, सीता तोहर भर्त्ता, उद्धर्त्ता।
प्रायः एको व्यक्ति नहिं छूटल, जे सङ्कट काँ हर्त्ता, अरिमार्त्ता ॥
त्यागू मन सौं पति प्रत्याशा, पड़लहुँ शोककगर्त्ता, रुचिकर्त्ता।
सरमा कहल सत्य कहयित छी, हमहुँ भेलहु दुःखर्त्ता, शुनिवार्त्ता ॥

वसन्ततिलका छन्दः

(सीता)

हा राम लक्ष्मण कहू कव की करैछी।
माया भुजङ्गमक वन्धन सौं मरैछी ॥
हा स्पष्ट कष्ट हमरे सभ हेतु प्राप्त।
अम्भोजवन्धुकुल कीर्त्ति शशी समाप्त ॥

नाराचिका छन्द (तिरहुति)

पतिगति सुनिय जीवन थोर, फरकय वाम नयन मोर।
मुनिजन देखल कहल जव नहि वैधव्य लिखल तव ॥

समर अजय रघुनन्दन, करताह अखिल खण्डन।
यदपि वचन सुनि दुस्सह, मन नहि अपन तेहन कह ॥

जयकरी छन्दः

गरुड़ावाहन कयलनि राम * चलल विहंगपति नभ वलधाम
उड़यित उड़िगेल बहुत पहाड़ * गलित होय पन्नग कुल हाड़
अयला ततय जतय रघुराज * तनिभय सौं भेल निर्भय काज
खगपति खयलनि मायाव्याल * गरुड़क पूर भेल नहिँ गाल
पक्ष पवन स्वन प्रलय घटाक * अतिदुर्गति लंकाक अटाक
सभजन सुखित दुखित नहि एक * कयल विहगपति अमृतक सेक
गिरिवर तरु कपिदल लय जाय * मारथि राक्षसभट खिसिआय
सकल पड़ायल राक्षस वीर * समर एक नहिँ रहले थीर
नहिँ मुइला ओ वरक प्रसाद * मेघनाद मन बहुत बिषाद
रावण मुख देखि लज्जा आव * मनमन जाम्बवान गुन गाव
त्रिकुटाचल अन्तर गिरिजाय * मेघनाद अभिचारि नुकाय
अरुण वसन गल माला लाल * चन्दन सुमन विधान विशाल
अर्द्धचन्द्र कुण्डक निर्म्माण * आमिष शोणित ततलय आन
काठ वहेड़क कयल से ढेर * होम करय लगलाह सवेर
होमक धूम गगन घन रूप * अनुष्ठान कर चूपहिँ चूप
बुझल विभीषण से सभ कर्म्म * रघुनन्दन सौं कहलनि मर्म्म
प्रभु कहयित छी हम कल जोड़ि * आन लड़ाइ आइ दिय छोड़ि
होमारम्भ कयल घननाद * जकर धूम अम्बर आच्छाद

जौं सम्पन्न होयत मखकाज * अजय होयत सुरपति जित आज
लक्ष्मण चलथु सैन्य सभ सङ्ग * करथु प्रथम तनिकर मखभङ्ग
मारथु तनिकाँ लड़ि संग्राम * आज्ञा देलजाय प्रभु राम
रामकहल भल हमहीँ जयब * सुरपति अरि रण सम्मुख हयब
अनल अस्त्र तनिकाँ हम मारि * वनदव सम तनिकाँ देब जारि

सो०—कहल हाथ दुहु जोड़ि, सुनल विभीषण प्रभुवचन ।।
श्री लक्ष्मण काँ छोड़ि, मरत न रावण सुत समर ।।
बारह वर्ष विहीन, निद्राहार विहारसौं ।
कयल विरञ्चि अधीन, जे तनिकर मर इन्द्रजित ।।
निद्रादिक परित्याग, अवधि अयोध्या गमनसौं ।
लक्ष्मण विषय विराग, रघुनन्दन सेवा निरत ।।
मरता लक्ष्मण हाथ, मेघनाद लङ्केशसुत ।
सुनु सुनु प्रभु रघुनाथ, अपनेक आज्ञा पावि कैं ।।
धराभार हर्त्ता, अहाँ विश्व कर्त्ता ।

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लङ्काकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ।।८।।

जयकरी छन्द

कहल विभीषण समय विचार * प्रभु सर्व्वज्ञ कयल स्वीकार
लक्ष्मण काँ कहलनि अहँ जाउ * खलवधि समर अमर बनि आउ
हनुमदादि यूथप संग रहथि * सम्मुख तनिक प्रहार जे सहथि
जाम्बवान संग रहता बूढ * तनिकहि डरय डराइछ मूढ़

संग ,विभीषण मन्त्री लेथु * सकल देखाय वाट ओ देथु
पर्व्वत कतय विवर कोन ठाम * बुझल विभीषण काँ निजगाम।
कपिदल कति अर्व्बुद संग्राम * चलल संग कहि जय जय राम
सुनि लक्ष्मण रघुवरक निदेश * प्रभु प्रसाद कहलनि से वेश।
कयल रामकाँ जाय प्रणाम * सुरपति अरि मारब मनकाम
जौं मोर रघुवर किंकर नाम * तौं घननाद जितव संग्राम
आज समर शर अरिकाँ मारि * स्नान करब भोगावति वारि।
सहित विभीषण करशर चाप * चलल महावल विजय प्रताप

भुजङ्गप्रयातछन्द

विदा भेलि अछैछ लंकेश सेना, चतुर्दिक्ष देखू घटाटोप जेना ॥
करू यत्न सौमित्रि क्षत्री अहाँछी, सुरारीन्द्र संहार कर्ता जहाँछी ॥
सुरेशारि ई क्षेत्रमें वीर गुप्त, करैये महाहोम से होय लुप्त ।
दशग्रीव भ्राताक से सूनि वानी, कहैछी समोचीन ई लेलमानी ॥
धनुर्व्वाण संधानि सौमित्रि मारै, चटाचट्ट दैत्येन्द्र सेना कपारै ॥
हनुमान ऋक्षेश यूथेश पक्का, महाशैल ओो वृक्ष लैं मार धक्का ॥
तथा शत्रु सेना महाअस्त्र मारै, महायुद्ध संघट्ट केओ न हारै ॥
हनुमान छी कौशलाधीश दासे, महानन्दसौँ भावि विघ्ने विनाशे ॥
महावीर सद्वीरता मध्य पुरा, कते शत्रु सेना मिलाओल धूरा ॥
कहाँसौ चलैये महाधूम धारे, त्वरा जाय देखी करुसे विचारे ॥

नाराच छन्द

चलू चलू महागुहा कि होम ओो करैछ की।

लगैछ आबि दुष्टगन्धि आगि में धरैछ की ॥
तहाङ्गदादि जोर सोर मार आँखि कान में ।
लड़ाइ सौं पड़ाय इन्द्रजीत ठक्क ध्यान में ॥

चामर छन्द

छोड़ छोड़ ठक्क वक्कध्यान होम गाढ़ रे ।
चापबाण हाथ लै अनन्त द्वार ठाढ़ रे ॥
आज बीरताक बेरि मेघनाद तोर रे ।
बापकाँ बँधाय कैँ पड़ाय पाप चोर रे ॥

चौपाइ

मेघनाद गञ्जनसह ढेर * इन्द्रादिक काँ जे नहि टेर
सहि धिक्कार गारि ओ मारि * छोड़ल होम चलल शक्रारि
धर धर घर्कट मर्कट लोग * आयल पसु बिनु कौड़िक मोल
होम विघ्नकय वानर लोक * हँसि वहरायल एकहि झोँक
मेघनाद देखल वहराय * जयजयकार ध्वजा फहराय
देखल निजदल अर्दित रङ्ग * वानर भालुक कटक अभङ्ग
रथपर चढ़ल धनुषशर हाथ * कहल कतय आवथु रघुनाथ
क्षुद्र कीश थिर रह तोर भाग * वानर पर सर हमर न लाग
सुरपति वारण कुम्भ विदार * लज्जावश न करय सञ्चार
रे सौमित्रि हमर विष रोष * नहि देखल छौ की भरिपोष
मेघनाद थिक हमरे नाम * जयवह कतय विषम संग्राम
तहाँ विभीषण काँ देखि ठाढ़ * निष्ठुर वचन कोप मन बाढ़

उचितौ पितौ कहू कत आज * कुलघातक पातक नहिं लाज
लङ्का जन्म ततहि सभ कर्म्म * छाड़ि देल निज वंशक धर्म्म
लङ्केश्वर सन छोड़ल भाय * की छी आनक भृत्य कहाय
पुत्रक विषय विषम विद्रोह * केहन हृदय भेल नहिं मनमोह
अहाँ कयल निज वंश विनाश * राजा वनव एहन मन आस
करयित छलँहुँ अजय हम जाग * अहाँ देखाओल गत अनुराग
ई कहि लक्ष्मण देखल वीर * हनुमत्पृष्ठ चढ़ल रण धीर
रथ पर चढ़ल कुपित घननाद * उद्यत अस्त्र कहल दुर्व्वाद
वानर तोर रुधिर पय पान * करत हमर शर शर्प्पसमान
लक्ष्मण धनुष वाण कर सज्ज * वृथा तोर वल रे निर्लज्ज
लक्ष्मण वाण मर्म्म मे मार * भेल घननाद रहित सञ्चार
जागल एक मुहूर्त्त विताय * मन वैकल्य कहल की जाय
लक्ष्मण काँ देखल छथि ठाढ़ * कहि कटु कथा कोप मन बाढ़
समर विभव हम देवहु देखाय * शपथ थिकौ नहिं जाह पड़ाय
कहि लक्ष्मण काँ शर से सात * कयल प्रहार ससरि किछु कात
उग्रवाण हनुमानक काय * सात लगौलक. मर्म्म तकाय
द्विगुण विभीषण पर कय कोप * कत शर मारल जिव्र आरोप

घनाक्षरी छन्द

लक्ष्मण कहल ललकि मेघनाद तोर,
थोड़ अछि आयु की समर मे समट्टबै ।।
दशमुख वाल बड़ गोट अछि गाल तोर,

थोड़काल मध्य महाकाल गाल अट्ठवै ॥
हट्टवै न युद्धसौं विरुद्ध अस्त्र कट्टवै जौं,
चट्टवै महासुरा कतेक गप्प छट्टवैं ॥
ठट्ठवैं कुठाठ तों समर भूमि लट्टवै तौं,
वाण औ कृपाण सौं कांकड़िजकाँ फट्टवैं ॥

चौपाइ

मेघनाद शर कयल प्रहार * लक्ष्मण पर बड़ कोप हजार
भेल कवच विनु लक्ष्मण अङ्ग * लक्ष्मण कयल हुनक से रंग
युद्ध परस्पर क्यो नहिँ हार * तन शोणित वह निर्झरधार
लक्ष्मण तखन हनल शर पाँच * सारथि रथ न तुरग एक वाँच
धनुष आन से आनल हारि * लक्ष्मण काटल तिनि शर मारि
मेघनाद काँ रहल न चाप * शरसौं जर्ज्जर थरथर काप
बड़ साहस सौँ धनु पुन आनि * लक्ष्मणकाँ शर मारय तानि
रविसन्निभ शर लाख हजार * वानर भालु गोलमे मार

सो०— जय रघुनाथ उचार, ध्यान रामपदकमल मे ।
मेघनाद काँ मार, कहि कहि लक्ष्मण ऐन्द्रशर ॥
धर्म्मात्मा रघुवीर, सत्यसन्ध दशरथ तनय ।
रणमे एकहि तीर, तौं घननादक हो मरण ॥

चौपाइ

इन्द्रक शत्रु लड़ल भरिपोष * लगलनि लक्ष्मण शर से चोष
रोकि न शकला से उतपात * धड़सौँ शिर भय गेलनि कात

रविमण्डल रुचि कुण्डल कान * समर शयित से दैव प्रधान
कत कह जिवितँहिँ अछि घननाद * कतकह मरिगेल विविध विवाद
अमर सकल नभ कर गुणगान * जय रघुनाथ देव भगवान
स्तुति कर बहुत वृष्टि कर फूल * देखल सृष्टि इष्ट अनुकूल
दुन्दुभि शब्द भेल आकाश * इन्द्रादिक मन छुटि गेल त्रास
जिवितहि दशमुख सम उतपात * जनि सापक टूटल विषदांत
स्थिरा धरा निर्म्मल भेल गगन * जयजय शब्द करथि जन मगन
लक्ष्मण वीर जखन श्रमरहित * वालि तनय मारुतसुत सहित
शंखक धुनि धनुषक टंकार * लक्ष्मण कयल विजय व्यवहार
सुनि सुनि हर्षक नाद विशाल * मूर्छित उठल हटल श्रमजाल
अतिशय हर्षित कपिदल सर्व्व * मारल मेघनाद बड़ गर्व्व
जय जय लक्ष्मण जय रणधीर * कालहु जित शित अपनैँक तीर
हनुमदादि सेनाधिप सहित * तथा विभीषण दूषण रहित
रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम * कुशल सकल जीतल संग्राम
अपनैँ चरणक मुख्य प्रसाद * रणमे शयित अहित घननाद
लड़ल निरन्तर भरि भरि राति * अतिमायाबल राक्षस जाति
मारल खलकाँ लक्ष्मण वीर * हृदय लगाओल कहि रघुवीर
मेघनाद छल बड़ा लड़ाक * तनिकाँ मारल अहाँ तड़ाक
हिनकहि धरि छल अछि संग्राम * हिनि जितलय जीतल सभ ठाम
शर जर्ज्जर सभ सेना गात्र * जिति अयलहुँ अहाँ विगत त्रिरात्र
पुत्र शोक सौं दशमुख दीन * की कर पौरुष जलविनु मीन
रावण मन मानल सुत मरण * अतिशय आकुल अन्तष्करण

झट झट अट्ट शिखर चढ़ि ताक * चढ़ल विकल चित चिन्ता चाक

घनाक्षरी छन्द

जयजयकार धुनि अमर उचार कर,
सुनि पड़ कान हनुमान हर्ष हाक रे।
ध्वज फहराय बहराय कैँ शिखर चढ़ि,
यन्त्रमेँ लगाय दृष्टि दूरही सौं ताक रे॥
आज मेघनाद क समाद न शुनल शुभ,
जैह सूर्पनखा क काटल कान नाक रे।
सैह राम भाय हाय कैलक अन्याय जनु,
अनुमान होइछ देलक शिर डाक रे॥

जयकरी छन्द

पक्ष हीन जनु पड़ल पहाड़ * रावण महाविटप पतझाड़
दुष्ट विभीषण खूनल मूल * सोदर भाय हाय प्रतिकूल
विधि भेल वाम इष्ट भेल ठक्क * काल पुरुष नहिं ककरो शक्क
जोर नोर वह बीशहुँ आँखि * खग भेल लोथ कतरलय पाँखि
कि कहव मन्दोदरी विषाद * जिवयित मरण शरण घननाद
निर्भय भेल देवगण आज * ऋषि मुनिजन मन बनि गेल काज
धिक धिक हमरहु शत्रु कलंक * पड़ल गजेन्द्र विषम थल पंक
तापस से पुन दैत्य संहार * जिवयित रावण कपि सञ्चार
धिक धिक मेघनाद बल तोर * उठि की कुम्भकर्ण भेल जोर

मत्तगजेन्द्र छन्द

वास सदा मणिमन्दिर मे तहँ खाट मनोहर सन्मणि पावा ।
गेलि विलासकला सकला उत धान धरी मुह होइछ लावा ॥
कोटि विलाप करै वनिता कहि भेलहु आज उपाय अभावा ।
की लिखि देल ललाटक पट्टमे बूझि न से बुढ़वा विधि वावा ॥

चकोर छन्द

लै कहु खड्ग दशानन दौड़ल रामप्रिया हम मारब आज ।
मन्त्रि सुपार्श्व बुझाब विपत्ति मे हे प्रभु ई नहि भूपति काज ॥
वीर अहाँ रणधीर महाशय तुल्य अहाँक कहाँ महराज ।
ई सुनि देखि कहू ककरा नहि स्त्रीवध उत्सव हो मन लाज ॥

सो० — सभजन मिलि तत जाय, मारब लक्ष्मण राम काँ ।
अँह पौलस्त्य कहाय, स्त्रीवध अनुचित सर्व्वथा ॥
लज्जित भवन प्रवेश, कयल दशानन विकल मन ।
पुछल सकल दनुजेश, प्राप्त सभा मे आबि पुन ॥

चौपाइ

मानव बानर दानव मार * आनव बल हम कोन अपार
शलभ नाम मन्त्री बल वनल * चलल समर रघुवर शर अनल
जत राक्षस आवथि संग्राम * सभकाँ लोटपोट कर राम
अपनहु बहुत दशानन लड़ल * रघुवर शर जर्ज्जर भय पड़ल
हृदय मध्य वेधित एक बाण * लङ्का अयला मूर्छित प्राण

दो०— लङ्का सती सुलोचना, पति घननाद समात ।
लक्ष्मण शर प्रेरित सुभुज, तनि आँङन सम्भ्रात ॥

चौपाइ

दासी एक देखल से नयन * स्वामिनि सँ कहलनि दुख अयन
आँङन मध्य गगन सौँ वाहि * खसल वाणयुत भेलहु बताहि
स्वामिनि चलु चलु देखू आज * आपत की मर्य्यादा लाज
पन्नगेश तनया तत गेलि * भुजकाँ देखि विकल मन भेलि
फरकै छल अछि दक्षिण अङ्ग * परिणत फल की लगइछ रग
करु करुणा अरुणायतनयन * भुज जितविश्व समरमहि शयन
लवणोदधि हो अमृत समान * कनकाचल त्यागथि स्वस्थान
सुरगुरु मूक मूक वाचाल * झपटि सिंहकाँ मार शृगाल
अदभुत नहि विस्तर संसार * वानर नर सुरवरजित मार
पतिभुज तन्त्रा करु परित्याग * हयव सती हम पूरण भाग
जौँ हम सत्य सती मन साँच * लिखि प्रमाण कहु सबजन वाँच

सो०—भुज देल हाथ पसारि, देखल सती सुलोचना ।
सुमती चित्त विचारि, खड़ी धराओल हाथ मे ॥

चौपाइ

मणिमय आँगन लिखलनि हाथ * परमेश्वर जानू रघुनाथ
धराभारधर पन्नग जैह * जानक थिक लक्ष्मणकाँ सैह
तनिकहि हाथ हमर भेल मरण * सुखमय अभयस्वर्ग भेल शरण
निद्राहार विहार विराग * मनष्पथहुँ नहिँ दूषणलाग

सति शुभमति चिन्ता नहि करिय * संग हमर सुरपुर सञ्चरिय
राम समक्ष माँथ अछि धयल * लय आनू लिखि सूचित कयल
निरुपद्रव रघुनाथ समीप * श्वशुर विभीषण छथि कुल दीप
की सुख राज्यभोग अवसान * उत्तम गति देलनि भगवान
सुरपति जित गृहिणी निजगेह * तन धन जन मन सौं तजि नेह
सकल अनित्य विश्व मन मानि * चललि दशानन तट गुरु जानि
मणिमययान पतिक भुजधयल * अपनहुँ चढ़लि शोक नहि कयल
अमरेश्वर जित अबला संग * चलल पदाति महीपति रङ्ग
दासी सकल विकल भय कान * आज अभाग्य देल भगवान
वैतालिक आगाँ एक जाय * विकल दशानन कहल बुझाय

सो०—सती पुतोहु अहांक, आइलि छथि कहतीह किछु।
हुनि शिर पड़ि गेल डाक, मेघनाद शिर समर अछि॥
देखल आँखि उघारि, लय आनू तट पालकी।
विशलोचन वह वारि, कहल विकल दशकण्ठ तह॥
पतिभुज देल उघारि, सती धरणि मूर्छित खसलि।
पुनि उठि समय विचारि, श्वसुर चरण लपटाय कह॥

वियोगि मालव छन्द

से पहु हमर गेला रे रे परलोक।
हमरहि हृदय असह शोक॥
जरव न पहुसङ्ग रे रे यावत।
विरह दहन दुख तावत॥२॥

सकल भुवनराज रे रे समसुख।
जखन देखब इन्द्रजित मुख ॥३॥
आब हमर मन रे रे निरभय।
सुमति युगुति सति जीवदय ॥४॥

त्रिभङ्गी छन्द

पतिसङ्ग हम जायब, अनल समायब,
घुरि नहि आयब, पुन धरणी।
सुनु गुरु दशकन्धर, दनुजपुरन्दर,
सुन्दर पातिव्रत सरणी।
पतिशिर दिय आनी, अपने ज्ञानी,
शोक न मानी विधिकरणी।
अयलहुँ यहि आशा, हत जगदाशा,
गत पशु पाशा सुत-घरणी॥

सो०– सुनि सुतवधू विलाप, रावण बहुत भरोस दय।
कहल हृदय सन्ताप, सुमति विलम्ब दिनैक करु॥

चौपाइ

उपगत विपति हयत की कानि * मारब शत्रु भेल मन आनि
रामादिक शिर प्रथमहि काटि * देवि देव दिवपति बलि बाँटि
पतिशिर समर सहज अँह लेब * अरिशिर वामचरण अँह देब
सुनि दशकन्धर वचन कठोर * क्षण चुप रहलि नयन भर नोर
पुन कहलनि गुरु आगाँ ठाढि * सभसौं आशाकाँ अछि बाढ़ि

जौं कदाच अरिकाँ लेब जीति * करब राज्य अरिरहित सुनिति
अपनैं काँ भेटत जन सर्व्व * एखनहु धरि मन मे अछि गर्व्व
श्वशुर समाज मुख्य नृप द्वार * रहल न आज लाज व्यवहार
यावत गगन भानु रह चन्द * तावत सुयस रहत स्वछन्द
छलछथि दशमुख काँ एक पूत * जीतल अमर समर पुरहूत
हमरहु नहि मन मे किछु शोक * हर्षित अमर रहथु निज लोक
पहु विनु जीवन सुख की राज * बरु भल रौरवनरक समाज
चलब आब गुरु अनुमति पाय * विधिक रेख के शकत भेटाय
सुनलनि वचन पुतोहुक कान * कि करथु दशमुख विधि वलवान
आशु शाशुघर कनयित जाय * कहल सकल तनिपद लपटाय
कहलनि श्वशुरक वचन विचार * दैव ज्ञान हर अस्त्र न मार
हम कटु कहल न बड़ गुरु जानि * कालाधीन गुणल नहि हानि
मन्दोदरी कहल वृत्तान्त * नारद जे कहलनि एकान्त
समर विमुख दशमुख नहि हयत * सकुल सदल कालक घर जयत
सभसौं हुनका अछि अरिभाव * दशकन्धर नहि बचता आब
लङ्का लूटत वानर आबि * मुनि वृत्तान्त गेला कहि भावि
एतय विभीषण नृपति कहाय * करता भोग वस्तु समुदाय
परमात्मा परमेश्वर राम * ज्ञाते छथि लक्ष्मण गुणधाम
हनूमान रुद्रक अवतार * मुख्य सकल दल रहित विकार
ततय विभीषण श्वशुर प्रधान * समदर्शी लग सकल समान
जाउ जाउ थिक मुख्य विचार * ओतय न लेश असत व्यवहार
उपलक्षण गति समुचित पूर * सती आगु स्वर्गो कत दूर

रूपमाला छन्द

चललि पतिभुज पालकी धय, रामचन्द्र समाज।
कहल दल वनिता सवारी, अबै अछि की आज॥
जनु दशानन हारि मानल, मेघनादक नाश।
जनकजा पठवाय देलनि, मानि रघुवर त्रास॥
चिन्हल दासी भृत्यजन कॉ, तट विभीषण जाय।
उतरि शीघ्र सुलोचना गुरुचरण, गेलि लपटाय॥
कहल अपनेक कयल सं नहि, कयल अति अपमान।
तकर फलपरिणत उचित अछि, भेल आनक आन॥

सो०—से कर्त्तव्य उपाय, पहु शिर लय जरि जाइ हम।
देल जाय मङवाय, आज्ञा वैदेहीपतिक॥
कहल विभीषण जाय, श्रीरघुनन्दन सौं ततय।
भाय हमर अन्याय, कयल पड़ल साध्वीक शिर॥

रूपमाला छन्द

मेघनादक थिकथि गृहिणी, देव सुनु रघुनाथ।
सती नाम सुलोचना लिखि, देल स्वामी हाथ॥
शिर एतहि अछि मेघनादक, मुख्य अयबा काज।
स्वामि मिलि पावक समाइति, शरण आइलि आज॥

दण्डक छन्द

जय महेश्वर चापखण्डन, जनकनगरीकृतसुमण्डन,

पालिताखिल भक्त सज्जन, दलितदुर्जन हे।
सत्यसन्ध मनोजसुन्दर, जनकजननी सत्यधृतिकर,
महाराज महीपुरन्दर, प्राप्तनिर्ज्जन हे ॥
जय धनुर्द्धर दनुजनाशन, सदाशासितपाकशासन,
कृतविहङ्गमनायकाशन, पन्नगासन हे।
जयमहोदधिसेतु कारक, दशवदनकुलविपुलमारक,
विहितमारुततनय चारक नुतविषाशन हे ॥

जयरघुराज

मनमति वचनक पहुँच जतय नहि,
निर्गुण ब्रह्म देखल से आज ॥१॥
हम राक्षसी इन्द्रजित गृहिणी,
विषय विलास सतत काज।
योगिनि वनि अयलहुँ शरणागत,
करिय प्रणाम रहित लाज ॥२॥
प्रभु जगदिष्ट इष्ट सम्पादक,
तुच्छ सकल पुर सम्राज।
अन्तर्य्यामी रघुनन्दन अँह,
व्यर्थ वैखरी के वाज ॥३॥
अपनैँ कयल दनुज कुल भेदन,
प्रभु समर्थ वड़ रण शूर।
हम राजन्य – वीज रवि भेदव,
करब मनोरथ पूर ॥४॥

देल जाय मंगवाय पतिक शिर,
आज न हो प्रभु संग्राम।
जय रघुनन्दन दुर्गति खण्डन,
भवजलनिधि तारण नाम ॥५॥

चौपाइ

सुनि सुलोचना साध्वी उक्ति * रघुवर कहलनि वचन सुयुक्ति
करु जनु सुभमति चित्तविषाद * मन हो तौं जीवथि घननाद
निर्विषाद अपना घर जाउ * युवती सती वियोग न पाउ
हाथ जोड़ि कर दण्ड प्रणाम * कह सुलोचना सुनु गुणधाम
एक गुहामे दुइ मृगराज * समुचित नहि निर्व्वाहक काज
पिती नृपति देखता शक्रारि * एक कोष मे दूइ तरुआरि
जेहि लय योग ज्ञान वैराग्य * सुलभ प्राप्त से हमर सुभाग्य
प्रभुपद देखि छुटल भवराग * मन नहिँ कतहु विषय सुख लाग
गगन कहक थिक गगनाकार * जलधि जलधि उपमाक विचार
राम दशानन सम संग्राम * राम दशानन उपमा ठाम
सुरपति अरि हमरा प्राणेश * कोन वस्तु नहिँ तनिका देश
निर्गुण ब्रह्म सगुण तन धयल * भूप रूप बड़ माया कयल
जे जे निहत भेल संग्राम * से से पाओल उत्तम धाम
धन्य धन्य थिक अपनेक कोप * पाप पुञ्ज कर क्षणमे लोप
कीर्त्ति शरीर अचल युग चारि * बनल काज की देव बिगारि
प्रभु रुचि जानि आनिदेल मुण्ड * देखयित कौतुक वानर झुण्ड

जेहन परशमणि पावथि रङ्क * पति शिर लेल हरषि भरि अङ्क
आँचर सौँ मुह धूरापोछ * भ्रमरालीनिभ दाढ़ी मोछ
जीतल समर अमर अमरेश * आज हमर भेल योगिनि भेश
रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम * जेहि मे सकल विश्व विश्राम
रामाकार सकल थल भास * छुटल राग संसार प्रयास
चलयिक समय हसल से मुण्ड * हलचल माचल वानर झुण्ड
वाहु लिखल लक्ष्मण गुणपूर * हँसिहि कयल जन संशय दूर
हँसल मुण्ड भुजलिपि भेल टीकि * पतिसह गामिनि धन्या थीकि
चललि प्रदक्षिण, प्रभुकाँ कयल * शिर भुज पुन पालकि पर धयल
बड़ बड़ वाजन चलल निशान * आर्त्तनाद सौँ पूरित कान
सङ्गर बहुत निशाचर लोक * प्रभु आज्ञा सौँ रोक न टोक
सिन्धुक सङ्गम थल भल जाय * चिता बहुत विस्तार बनाय
श्रीखण्डादिक लागल ढेर * वनिता पुरुष सकल दिश घेर
घृत घट बहुत चिता मे ढारि * धय भुज शिर नागेश दुलारि
आहिताग्नि दयदेलनि ताहि * मर्य्यादा कुल युगल निवाहि
पतिसह सती परमगति गेलि * द्वेषराग सौँ रहिता भेलि
सभ वृत्तान्त देखल लङ्केश * मन्दोदरी सहित तहि देश
अयला कि करथु मन बड़ शोक * संसारक निन्दा कर लोक
एहि संसारक ई व्यवहार * उतपति थिति होइछ संहार
सभजन छुरि लङ्का गढ़ प्राप्त * जयप्रत्याशा भेल समाप्त
अतिशय विकल दशानन कान * कर उपदेश आनकाँ ज्ञान
एहि संसारक भङ्गुर भोग * प्रपा देश संयोग वियोग

ककरो विभव रहल नहिँ थीर * जेहन कमलदल चञ्चल नीर
वर्त्तमान कतकत कत जाय * कालपुरुष सभसुख धय खाय

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥९॥

चौपाइ

रावण मन मन मानल हारि * महि नहिं रहल शूर शक्रारि
मारुतसुत बल हृदय विचारि * जनिक मुष्टि शत-अशनि प्रहारि
शुक्रक निकट गेला अति दीन * बद्धाञ्जलि राजसरस हीन
शुक्र पुछल कहु नृप लङ्केश * कोन हेतु अयलहुँ एहिदेश
शरजर्ज्जर अतिकृशतरकाय * कियक रहल अछि वदन सुखाय
कयल प्रणाम वितत शतवार * कहल दशानन शोक अपार
वचन एखन अछि ई कहबाक * नहिँ अछि राक्षसकुल रहबाक
लड़यित लड़यित भेलहुँ आंट * एको तरह नहिँ वाँचक वाट
मृत समान अयलहुँ एहिठाम * असुरशमनसन जनमल राम
विद्यमान अपनैं, जहिठाम * असुर हारि होइछ संग्राम
कहलनि शुक्र ग्रहण करु मन्त्र * सिद्ध हयत तौँ होयब स्वतन्त्र
निकट न आओत कालक दूत * कि करत समर अमर पुरहूत
गुप्त करुगय होमक कुण्ड * देखव बुझय न वानर झुण्ड
होमकुण्ड आगिक उठ धाह * तेहि सौँ उतपति रथ रथबाह
नाना अस्त्र शस्त्र बहराय * तखन चलब रण ध्वज फहराय
अजर अमर रहुगय सभकाल * करुगय दीक्षाविधि प्रतिपाल

विघ्न मध्य नहिँ होमय पाव * शत्रु तकैत रहै अछि दाव
बलि सन राजा वञ्चित कयल * स्वयं विष्णु वामन तन धयल
बलिहित करइत गेल एक आँखि * मन्त्रशक्ति की होयत राखि
मीनादिक तन धयलनि जैह * स्वय विष्णु रघुनन्दन सैह
मन्त्र लेल होमक विधिराय * मुदित दशानन लङ्का जाय
अपन भवन अन्तर दशभाल * गुफा बनाओल जेहन पताल
लङ्का द्वार कपाट लगाय * होमक द्रब्य सकल मङवाय
होम करय लगला लंकेश * मौन दृढ़ाशन संय्यम वेश
देखल विभीषण अम्बर धूम * राजभवन सौं अविरल घूम
हे रघुनन्दन देखिय धूम * रविशशि ग्रह मण्डल काँ चूम
सविधि होम पूरणता पाय * रावण सत्य अमर भयजाय
कयल जाय प्रभु शीघ्र उपाय * सिद्ध दशानन कर अन्याय

सो०—सुनु अङ्गद हनुमान, जाउ सकल दल कहल प्रभु ।
करब विघ्न मतिमान, होम दशानन करै अछि ॥

रूपमाला

दशकोटि वानर गेल लङ्का, लाँघि सभ प्राकार ।
जाय रावण भवन रक्षक, सभक कयल संहार ॥
वाजि गजकाँ पटकि मारल, घोर तर चीत्कार ।
तत बिभीषणवधू सरमा, कयल सूचित द्वार ॥

चौपाइ

पाथर पिहित गुहा दृढ़द्वार * अङ्गद जोर लातसौं मार

चूर चूर सभ कयल कपाट * कयल प्रवेश विदित भेल वाट
अङ्गद कहल सकल दल आउ * करू कोलाहल ध्यान छोड़ाउ
रावण ध्यानलीन नहिँ वाक * दृढ़ आसन से अनत न ताक
पकड़ि पकड़ि सेवककाँ मार * फेकल वस्तु होम सम्भार
उपसाधक काँ कुण्डहिँ झोँक * सक के महावीरगण रोक
स्रुव लेल खैँचि न दशमुख जान * स्रुवक मारि मारल हनुमान
मारि बहुत रावण सहिलेथि * ध्यानदृष्टि नहिँ बाहर देथि
अन्तःपुर गेला युवराज * आनल मन्दोदरी समाज
घिसिआबथि तनिकाँ धय झोँट * करथि उपद्रव कपि कयगोट
फाड़ल वसन जेहन हो जाल * तदपि न ध्यान छोड़ दशभाल
कानथि मन्दोदरी विषाद * हा सुत कतय गेलहुँ घननाद
अहँ विनु एतगोट गञ्जन भोग * जीवित की नहिँ विधि संयोग
सुनु प्राणेश्वर विपति समाज * एखनहुँ धरि अहँकाँ नहि लाज
उठु उठु समर करूगय जाय * की बैसलछी घर घुरिआय
शुक्रक एतय लाग नहि मन्त्र * परमेश्वर रघुनाथ, स्वतन्त्र
मरण नीक वरु निस्सङ्कोच * वानर धय धय आँचर नोच
की बैसल छी आश विचारि * हा हत भाग्या भेलहुँ उघारि

सो०—सहि न सकल दशमाथ, मन्दोदरि विकला वचन।
खड्ग लेल विशहाथ, कपिगण काँ मारय चलल॥

चौपाइ

सहि तरुआरि बालिसुत अङ्ग * हँसि सभ चलल होम कय भङ्ग

कयल कटक रामक तट गमन * होमक धूमधार [ ] कय शमन
देखल प्राणप्रिया लंकेश * लगला करय ज्ञान उपदेश
रावण भवन भालुकपि आब * ई सभ जानब काल स्वभाव
यम जेहि नगर पयर नहिँ देथि * कुशलक्षेम सीमहिँ बुझि लेथि
जिबयित की नहिँ देखी आँखि * की लय करब प्राण धन राखि
प्राणप्रिया अब परिहरु शोक * सकल विनाशि दृश्य अछि लोक
जत हम हम तत दुःख अपार * जत निर्म्मम तत दुःख उधार
सम्प्रति हम चललहुँ संग्राम * आइ कि बचता लक्ष्मण राम
जौं कदाच विधि हो विपरीति * तौं हमरामे राखब प्रीति
हमर चिता मे करब प्रवेश * सीता मारि लेब एहि देश
मन्दोदरी कहल सुनु नाथ * सभगति अछि रघुनन्दन हाथ
वनचर चारि एक अति खर्व्व * हरण करय दुर्ज्जनगण गर्व्व
तीनि राम मे दोसर राम * अवतरला अयला एहिठाम
राजस तामस रस दिय तोड़ि * राज्य विभीषण काँ दिय छोड़ि
निर्ज्जनवन बसु मुनिक समाज * सानुकूल रहता रघुराज
तनिक चरण मे ध्यान लगाउ * माया सीता तत पहुँचाउ
कयल बहुतयुग राज्यक भोग * परिणत से प्राणान्तिक रोग
कयल ककर नहिँ अँह अपराध * वनिता हरिणि हरल वनि व्याध
विषय मनोरथ पुञ्ज हटाउ * अथवा रण मे माँथ कटाउ
रावण कहल शोक विस्तार * हम मानल मिथ्या संसार
जाय करब जौं बन मे बास * दुर्ज्जन करत बहुत उपहास
शाधन योग्य न रहल शरीर * की हम की मारथु रघुवीर

जानि जानकी आनल गेह * मरण रामकर निस्सन्देह
अपनहिँ पौरुष हम हठ ठानि * समर मरब की होयत हानि
ककरो रहल न मन मे रोच * रण लछिमरव कोन संकोच
हमर राज्य जौं पाओत आन * हमहू होयब स्वयं भगवान
जायब तनिकहि अङ्ग समाय * जनु कटुधूम जलद बनिजाय

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

चौपाइ छन्द

एहि चिन्ता मे भय गेल भोर * वानर भालु द्वार कर शोर
रे दशकण्ठ लण्ठ बहराह * राम शरानल शलभ समाह
चारुद्वार नगर घर घेर * रावण काँ तृणवत नहिँ टेर
रावण सुनल कपिक किलकार * कहल प्रवल रथ कर तैयार
रथमे चक्र एगारह पाँच * बहुत भयावह वदन पिशाच
खरअनेक रथ जोतल जोड़ * सैन्य प्रधान चलल नहिँ थोड़
अस्त्र शस्त्र सभ तहिपर धयल * दशकन्धर रणयात्रा कयल
दुहुदल छल संघट्ट अमान * राति दिवस किछु हो नहिँ भान
नभ मे भय गेल धूलिवितान * बड़गोट शब्द बधिर भेल कान
रावण जेहन प्रलयजीमूत * ओ नहिँ कपि सामान्यक बूत
कपिदल काँ रणमे ललकार * झपटि झपटि अन्तक जकँमार
पड़ल ततय हनुमानक दृष्टि * रावण हृदय हनल एक मुष्टि
ठेहुनाभर रथपर खसलाह * मूर्च्छित कय मारुति हँसलाह

क्षण मूर्छा रावण सौं दूर * कहलनि पवनतनय तों शूर
धिक धिक हमरा कह हनुमान * एखलहुँ धरि अछि तोहरा प्राण
करह प्रथम तों मुष्टि प्रहार * हमरा हृदय जते वलसार
महुँ तखन एक मूका हनव * दशकन्धर निजवल कों जनव
पवनक तनय कहल प्रण जेहन * कयल दशानन झटदय तेहन
क्षणभरि अनमन सन हनुमान * रावण मुष्टि सहत के आन
पवनतनय दृढ़ मुष्टि उठाय * चलला रावण चलल पड़ाय
हनूमान अङ्गद नल नील * बड़बड़ राक्षस मारणशील
अग्निवर्ण रावण क प्रधान * तनिक प्राण लेलनि हनुमान
सर्प्परोम कों अङ्गद मार * खड्गरोम कों नल संहार
बृश्चिक रोम लड़ल घड़ि चारि * तनिकहु समर नील लैल मारि
सिहनिनाद कयल कपिधीर * गेला जतय छला रघुवीर

चञ्चला

भालु ओो प्रचण्ड कीश जाय जाय झट्ट झट्ट।
राक्षसेन्द्र वीर कों पछाड़ि मार पट्ट पट्ट॥
शैलखण्ड वृक्ष हाथ सौं उखाड़ चट्ट चट्ट।
राक्षसेन्द्र सैन्य झुण्ड मुण्ड फोड़ फट्ट फट्ट॥
लाग अस्त्र मध्य अस्त्र आबि आबि चट्ट चट्ट।
रावणोग्रवीर पेट कुम्भ फूट भट्ट भट्ट॥
नाचि नाचि योगनीक बृन्द भाष हट्ट हट्ट।
राक्षसावलीक मुण्ड जाय खाय कट्ट कट्ट॥
रामचन्द्र तीरविद्ध मौलिपात छट्ट छट्ट।

योगनीक बृन्द रक्त ओघ घोँट घट्ट घट्ट ॥
खाय की श्रृगाल मासु नोचि नोचि गट्ट गट्ट ।
वस्ति अस्थि दन्त घोर जोर तोड़ मट्ट मट्ट ॥
जोर सौं कबन्ध नाँच वीरभूमि कोटि कोटि ।
भैरवी भमाय हँस्स भूमिमध्य लोटि लोटि ॥
नाँचथि प्रसन्न गीत गावि गावि छोटि छोटि ।
हर्ष सौँ कपाल ताल देथि महा मोटि मोटि ॥

अनुष्टुप् देश

महाकालो विशालाक्षो मुदा गृह्णाति मुण्डालीं ।
हसन्ती युद्धभूमौ तम्पिवन्ती शोणितं काली ॥
वहन्मुण्डालिभारन्ते महोक्षो विह्वलत्येष: ।
कथन्नाद्यापि सन्तृप्तो भवान्व्यग्रश्च ते शेषः ॥

चौपाइ

लाखहि लाख सवार विहीन * घोड़ दौड़ पिठ कसले जीन
मुइले चढ़ल पीट असवार * कय चीत्कार भ्रमित दन्तार
घोड़ा बहुतक डाँड़े टूट * लादल अस्त्र पड़ायल ऊँट
शोणित धार चललि बढ़िआय * गेलि दीर्घिका सिन्धु समाय
भेलि तेहनि सूतहु नहिँ थाह * बहुत समुद्रक पहुँचल ग्राह
तनिका भेटल भक्ष्य कबन्ध * खाय खाय सभ भेल निर्धन्ध
समरभूमि कतयोगिनी नाँच * खाथि मासु निधुरायल काँच
अगनित गृद्ध चिल्ह ओ काक * कंक श्रृगालक बनि गेल ताक

भासल घड़पर वायस वास * मांसाशी खग पूरित आस
लङ्का वनिता गण जे कान * करुणा गिरि झरनाक समान
भैरव मुण्डमाल लय आब * महाकाल गल मे पहिराब
वृद्धगृद्ध रण महि मे भाष * आइ पुरल आमिष अभिलाष
आहि आहि हा हा धुनि कान * लङ्काधिप पुर पड़ल मलान
लंकेश्वर से पढ़लनि पाठ * सगर नगर भेल राड़क ठाठ
राक्षस वृन्द वधूटी कान * आज कयल विधि घर शमशान
मान्य विभीषण छथि कोन ठाम * जे राखल राक्षसकुल नाम
लय लय तीक्ष्ण हाथ तरुआरि * प्रिय हीना कैं से देथु मारि
धिक पतिविनु जीवन संसार * अपनो प्राण लगै अछि भार
पति रण मरण देखल सभ आँखि * की सुख जीव देह मे राखि
आनु हलाहल सभ जनि खाउ * गर पाथरदय सिन्धु समाउ
कतय कयल नहि राक्षस लूटि * हा स्वाधीन नगर गेल छूटि
त्यागथि विकला गहना अङ्ग * विधि विपरीत मनोरथ भङ्ग
मणिमाला व्याली समतूल * लगइछ आव दैव प्रतिकूल
केओ कह युवति चित्त कर थीर * सभ संकट हर्ता रघुवीर
तनिकाँ सौं होयत नहि हानि * करुणामय तनिकाँ लिय मानि
दाँतय ओठ काट दशभाल * विकट कोप विशलोचन लाल
रामचन्द्र दिशि रथ चढ़ि धाव * अशनि जेहन शर कोटि चलाव
अविरल जलधर सम शर धार * शरक निकर दशकन्धर मार
राम निकट जे बीर प्रधान * सभजन आनन कयल मलान
कनक अलंकृत पावक जेहन * रघुवर वाण चलाओल तेहन

सो० - देखि समर अमरेश, मातलि सारथि कौँ कहल ।
रथपर अछि लंकेश, रघुनन्दन रथरहित छथि ॥
रथ लङ्का लयजाउ, अस्त्र सकल तेहिपर धरु ।
हमर सन्देश शुनाउ, रथचढ़ि मारू शत्रुकेँ ॥
रथ पहुँचल तेहिठाम, हाथ जोड़ि मातलि कहल ।
चढ़लजाय प्रभुराम, अमरेश्वर साहित्य रथ ॥
अस्त्र शस्त्र सभधयल, कवच अभेद्य अछेद्य विधि ।
प्रभु सुनि सम्मति कयल, नमस्कार कय रथचढ़ल ॥

चौपाइ

महायुद्ध वरणय के पार * शेष सहस्र मुख कहइत हार
रावण अग्नि अस्त्र लय फेक * अग्नि अस्त्र सौं प्रभु सभ टेक
देव अस्त्र दशभाल चलाव * दैव अस्त्र वल राम फिराव
पन्नग अस्त्र चलाओल फेर * सापहि साप समर भेल ढेर
दिश ओ विदिश विकल दल कयल * गरुड़ अस्त्र रघुनन्दन धयल
पन्नगास्त्र जौँ जौँ फुफुआथि * गरुड़ अस्त्र गटगट गिड़ि जाथि
रावण माया करथि अपार * श्री रघुनन्दन कर संहार
देखि इन्द्रक रथ सारथि निकट * रावण क्रुद्ध भेल मन विकट
इन्द्रादिक कृत सभ उत्पात * दइ प्रपञ्च अपनैं रह कात
इन्द्रक घोड़ा कौँ शर मार * मातलि सारथि शत्रु विचार
पड़य न सारथि घोड़ा दृष्टि * कयल दशानन सायक वृष्टि
सुरगण नभ कर हाहाकार * विगड़ल देखि समर व्यवहार
सहित विभीषण वानर वीर * विकल मर्म्म मे वेधित तीर

घोर युद्ध कर रावण एक * विशभुज धनुष धयल शर फेक
रामचन्द्र मन बाढ़ल कोप * करय चाह दशवदनक लोप
ऐन्द्र धनुष सायक लय हाथ * कालानल सन श्रीरघुनाथ
सुरगण सिद्ध तथा गन्धर्व्व * देखथि युद्ध गगन सौं सर्व्व

मिथिला संगीतानुसारेण भैरव छन्दः

रामचन्द्र हाथ सौँ सायक छूट सन्न सन्न।
राक्षसेन्द्र देह सौँ सोणित वह फन्न फन्न ॥
देवी नाच मगन नूपुर वाज झन्न झन्न।
देवताक बृन्द कहै रामचन्द्र धन्न धन्न ॥
वार वार मेदिनी समस्त ऊठ काँपि काँपि।
अन्धकार चन्द्र सूर्य्य चक्र लेथि झाँपि झाँपि ॥
तारका निपात उतपात बाढ़ अर्व्व खर्व्व।
राहु उपराग दृष्ट चन्द्र सूर्य्य विना पर्व्व ॥
गृद्ध बृद्ध आवि दशभाल भाल बृन्द नोच।
आज छूटिगेल की जटायु धर्म्मशील शोच ॥
मौलि दशमौलि मही आबि खस्स धम्म् धम्म।
योगिनीक जूथ लूट ताल मल हम्म हम्म ॥
रावण न मरय सकल माथ काटलहुँ।
संग्राम अवनि मुण्ड भुण्ड कोटि पाटलहुँ ॥
चिन्तित बहुत चित्त भेल रघुनाथ काँ।
बृद्धि भेल देखि देखि रावणक माँथ काँ ॥
महाकाल सहित समर शोभ कालिका।

बहुत प्रसन्नतरा देवि मुण्ड मालिका ॥
हाथ जोड़ि चण्डिकाक कयल देव बन्दना ।
जय जय जगदीश्वरी महेशि दक्षनन्दना ॥
सृष्टि उतपत्ति प्रतिपाल लय कारिणी ।
अम्बिका थिकहु अहाँ सर्व्वलोक तारिणी ॥
तारिणी हमर चित्त चिन्ता जाल आज अछि ।
मर दशभाल से उपाय मुख्य काज अछि ॥
अट्टहास हसलि तखन मुण्डमालिका ।
विजय पायव रघुनाथ कहै कालिका ॥
कयल कृतार्थ अहाँ मर्त्य अवतार सौं ।
योगिनी प्रसन्न मुखी भेलि रक्तधार सौं ॥
हमर क्षुधाक शान्ति भेल नहि कतहू ।
भेलहूँ प्रसन्नि हम महाकाल वतहू ॥
देखि लेब रावणक मृत्यु गोट नयन सौं ।
तखना नाचती योगिनीक बृन्द चयन सौं ॥
रावण मरत कोना पूछू तनि भाय काँ ।
कहताह रावणक मरण उपाय काँ ॥
देव ने विलम्ब करू मारू दशमाँथ काँ ।
कहू की अभीष्ट देनिहार सर्व्व नाथ काँ ॥

दो०—निकटहि छला विभीषण, पुछलनि श्रीरघुनाथ ।
रावण मरण उपाय कहू, सम्प्रति हमरा हाथ ॥

चौपाइ

सुनल विभीषण रघुवर उक्ति * रावण मरणक कहलनि युक्ति
ब्रह्मदत्त वर छथि दशभाल * निकट न आबय तनिकर काल
नाभिप्रदेश कुण्डलाकार * सुधासरोवर प्राणाधार
अनल अस्त्र सौं शोषल जाय * रावण मरणक सहज उपाय
अनल अस्त्र रघुवर देल छोड़ि * रावण नाभिकुण्ड देल फोड़ि
दुइ भुज एक शेष कय माथ * काटल भुज शिर श्रीरघुनाथ
घोर शक्ति दशकण्ठ उठाय * मारल मरथु विभीषण भाय
शक्तिक शक्ति हरल प्रभु बाट * कनकाञ्चित सित शरसौं काट
रावण अतिशय भेला मलान * एकशिर दुइभुज तदपि न ज्ञान
रघुनायक पर शायक फेक * रघुनन्दन शर मार अनेक
तुमुल युद्ध सुर हर्ष विषाद * सकल समुद्र रहित मर्याद
मातलि देलनि स्मरण कराय * दशमुख माथ न काटल जाय
कयल जाय ब्रह्मास्त्र प्रयोग * दशकन्धर नहि जीतय जोग
रावण मरणसमय अछि आज * कहथि रहथि नित देव समाज
ताकि मर्म्ममैँ हनिऔनि वाण * चट पट उड़ दशवदनक प्राण
इन्द्रक सारथि कहलनि जैह * रघुनन्दन सुनि कयलनि सैह
धयलनि हाथ दीप्त शर तेहन * कर फुफुकार फणीश्वर जेहन
जनिक पार्श्व मे मारुत वनल * तनि फलमे रवि राजित अनल
देह गगनमय जनिकाँ सर्ब्ब * लोकपाल दश तनिका पर्ब्ब
गुरुता मन्दर मेरु समान * यहन अस्त्र लेलनि भगवान
सर्ब्बलोक भय नाशन नाम * अभिमन्त्रित कयलनि श्रीराम

वेद उक्त विधिसौं लेल चाप * कयलनि रघुवर प्रबल प्रताप

षट्पद छन्द

क्रुद्ध कहल रघुनाथ, दशानन खलकाँ मारव ।
निर्भय कय सभलोक, भार धरणीक उतारव ॥
कयल धनुष सन्नद्ध, बाण अरिमर्म्म विघाती ।
बज्रकल्प उद्धर्ष, धधक दशकन्धर छाती ॥
लागल जाय कृतांत जक, हृदय वेधि प्रशान्त कय ।
धसि धरणीतल रामशर, आवि वसल तूणीरभय ॥

कलहंसछन्दोभेदे माली छन्दः श्रीछन्दश्च

रावणक हाथ सौं ससरि खस चाप ।
घूमिकैँ खसल भूमि भूमिभार पाप ॥
भेलहुँ अनाथ नाथ बिना दशभाल ।
छलहुँ कि सिंह आब भेलहुँ श्रृगाल ॥
करत के रावण सदृश प्रतिपाल ।
सूर्य्यवंश मध्य राम जनमल काल ॥
विशगोट बाहु दशगोट छल भाल ।
तनिकहुँ आबिकैँ ग्रहण कयल काल ॥
प्राणसौं रहित भय गेला दशमाथ ।
नाचि नाचि कीश कहे जय रघुनाथ ॥

चौपाइ

रावण मरण विदित सभठाम * मन अतिहर्ष विजय संग्राम

पूरल आश देवग्न आज * रघुनन्दन कयलनि सभकाज
त्रिदश दुन्दुभि वाजय लाग * नाच अप्सरा गावि सुराग
रघुनन्दन पर फूलक बृष्टि * कयदेल आज अपूर्ब्व सृष्टि
स्तुतिकर मुनिजन सिद्ध समस्त * धन्यकयल रावण वल अस्त
रावण देह जोति बहराय * रघुनन्दन मे गेल समाय
से देखइत सभ देव छलाह * धन्य दशानन सुर बजलाह
हमरा सभकाँ सात्विक कर्म्म * सपनहुं नहि पर तरुणी नर्म्म
बहुत कर्म्म राबण कृत छोट * तामसरूप भूप बड़ गोट
विष्णु द्रोह तापस काँ मार * हरि हरि आनय आनक दार
दैवी गति किछु कहल न जाय * मुक्तिलाभ गनिका की न्याय
नारद पहुंचलाह तहिठाम * कहलनि नाम बजाओल राम
बुझलनि अमरक हृदय विषाद * नारद कहल बहुत अह्लाद
रावण मरण सुनल प्रभु हाथ * कोपहु कल्पवृक्ष रघुनाथ

रूपमाला

मारि रावण विश्वकण्टक, धनुष वाभा हाथ।
तथा धयलें दक्ष कर शर, भ्रमण कर रघुनाथ॥
शोण लोचनकोण रिपुशर, भिन्न श्याम शरीर।
कोटि सूर्य्य प्रकाश रक्षा, करथु से रघुवीर॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे एकादशोऽध्यायः ॥११॥

चौपाइ

देखि विभीषण ओ हनुमान * अङ्गद लक्ष्मण कीश प्रधान
जाम्बवान आदिक रणधीर * सभकाँ तुष्ट कहल रघुवीर
अँह सभहिक बाहुक बल पाबि * मारल रावण लङ्का आबि
यावत रवि शशि नभ रहताह * यशोगान मुनिजन करताह
ई चरितक जे कीर्तन करत * भववारिधि विनु श्रम से तरत
रावण मृतक पड़ल रणभूमि * गृद्ध काक विघसित घुमिघूमि
दुस्सह मन्दोदरिक विषाद * मुरछि मुरछि कर कुररीनाद
पतिगुण कहि कहि करथि विलाप * पापप्रताप असह सन्ताप
भेलहुँ अभागिनि पहुँबिनु आज * धिक् विधवा जीवन की काज
तुम्बुरु प्रभृतिक शुन जे गान * काक नोच्च से प्रियतम कान
यम जे लोचन ओहि जाथि * हा से गृद्ध नोचिकय खाथि
शिवकाँ मांथ चढ़ाबथि काटि * सञ्जीवन साधन भेल माँटि
अहह नाथ नित नित अन्याय * एक दिन माँथा अवश विशाय
परमेश्वर सौं भारी द्वेष * दण्डक गेलहु दण्डी भेष
सीता हरि आनल जेहि काल * तेहिखन मानल नहि दशभाल
शोक विभीषण हृदय समाय * शीतज्वर जनु देल दलकाय
कुल प्रधान हा बड़का भाय * काल प्रपञ्च वृथा नहि जाय
अपनैक कि कहब गुण ओ दोष * के कर वारण कालक रोष
बिधवावनिता बृन्द विलाप * सुनि सभ पर सञ्चर सन्ताप

दो०—सुनु लक्ष्मण रघुनाथ कह, सत्वर अहँ तहँ जाय ।
विकल विभीषण शोक सौं, सद्यः करू उपाय ॥

लाउ विभीषण काँ एतय, तत्वज्ञान सुनाउ ।
की राजा मन विकल अँह, वनिता बृन्द सुनाउ ।।

चौपाइ

लक्ष्मन कहल सुखद उपदेश * कनलैं की भेटता लङ्केश
देहादिक सौं आत्मा आन * विश्व अनित्य मानि करु ज्ञान
देखू रावण देह समीप * भवन अँधार मिझायल दीप
सगुण ब्रह्म रामहि काँ जानि * सेवा करू कतहु नहि हानि
प्रभु कहइत छथि से सुनु कान * भ्राता रावण छथि नहि आन
दाहादिक परलौकिक काज * करुगय सभटा अपनहि आज
कर्नायित वनितागण करु चूप * लङ्काराज्यक भेलहुँ भूप
सभजन घुरिकै लङ्का जाथु * पानि पिबथुगय अन्नो खाथु
लक्ष्मण कहल कथा सुनि कान * गेला जतय राम भगवान
कहल विभीषण सुनु भगवान * रावण पतित छला सभजान
तनिकर दाह करब नहि जाय * विदित छला अततायि कहाय

सो० - वैर मरण पर्य्यन्त, कहल राम उत्तर तकर ।
भेल प्रयोजन अन्त, करु रावण संस्कार विधि ।।
तखन विभीषण कयल, लङ्कापति संस्कार तहँ ।
काष्ठ घृतादिक धयल, चिता धधक प्रलयाग्नि सन ।।
कयलनि तखन स्नान, देल तिलाञ्जलि हाथ कुश ।
वनिता गणकाँ ज्ञान, कहल विभीषण हित वचन ।।
क्रन्दन की रहु चूप, सगर नगर घर बनल अछि ।

हमहि भेल छी भूप, सुखसौं रहबे पूर्ब्ववत् ॥
दशमुख - घरणी जाय, बद्धाञ्जलि प्रभुसौं कहल
हो की हमर उपाय, दुर्म्मति पतिसुतरहित छी

अहिर छन्द वीरहुति

छलछथि पति दशमाथ हे माधव, तनिविनु विकलि अनाथ
ओ अरिभाव बढ़ाय हे माधव, प्रभुतन गेलाह समाय ॥
हम पापिनि सहि ताप हे माधव, परिणत भेल फल पाव ।
हम घननादक माय हे माधव, जलनिधि शोक समाय ॥
प्रभुक चरण भरि नयन हे माधव, देखल मुक्तिक अयन ॥
जय रघुनन्दन वीर हे माधव, नूतन जलद शरीर ।
भ्राता युगल उदार हे माधव, करब हमर उद्धार ॥

मिथिला सङ्गीतानुसारेण कलहंस छन्दः श्रीमालव छन्दश्च

देवर अहाँक एत छथि महराजे । सुख सभ अनुभव तनिक समाजे
दशमुख पाणि करण अछि नीके । पुर परिजन सभ अँहइक थीके
देवर वदान्य सह करु सहवासे । मन न राखब किछु बिपतिक त्रासे
सुनि प्रभु वचन सकल दुख हीना । लङ्का भूति मानल से अपन अधीना

सो०—सभकाँ नगर पठाय, प्राप्त विभीषण प्रभु निकट ।
पङ्कजनयन उठाय, देखल भक्त प्रधान काँ ॥
रामक दण्डप्रणाम, बहुत विनय मातलि कयल ।
चलला सुरपति धाम, प्रभु आज्ञा सौँ हर्षयुत ॥

जयकरी छन्द

करु अभिषेक विभीषण माथ * लक्ष्मणकाँ कहलनि रघुनाथ
पूर्व्व कयल हम लङ्कानाथ * सुख शासन न विभीषण हाथ
विधिपूर्व्वक ब्राह्मण सभ आव * हाटक घटसँ जलधि जल लाव
पुरजन वानर सैन्य अनेक * कयल विभीषण नृप अभिषेक
प्रभुक प्रणाम विभीषण करथि * रत्न अमूल्य चरण पर धरथि
देखि विभीषण प्रभु कृतकृत्य * बड़गोट राज्य पावि गेल भृत्य
मिलि सुग्रीव सङ्ग रघुनाथ * भेल विजय यश अहँइक हाथ
मारल रावण लङ्कराज * देल विभीषण काँ भल काज
विजयलाभ भेल अहँक प्रसाद * राखल उचित मित्र मर्य्याद
लङ्का मारुतसुत अहँ जाउ * सीता काँ वृत्तान्त सुनाउ
रावण मरण प्रथम कहि देव * समाचार तनिकर बुझि लेव
सुनि प्रभु वचन गेला हनुमान * दनुजा जन मन कर अनुमान
प्रथमहिँ लङ्का अयला जैह * मन अवइछ लगइछ रङ्ग सैह
जनकनन्दिनी देखल जाय * दिन दिन गेलि बहुत दुवराय
रामचन्द्र पदमे दृढ़ ध्यान * चिन्हल न आयल छथि हनुमान
हाथ जोड़ि तहँ कयल प्रणाम * दूर ठाढ़ भय कहलनि नाम
स्वामिनि रावण काँ रघुवीर * मारल समर अमर मन थीर
भेल विभीषण नव लंकेश * जय जय करथि अमर अमरेशगे
प्रभु आज्ञासौँ हर्ष समाद * अयलहुँ कहय न रहय विषाद
रावण दशा कि अछि कहवाक * धरपर सञ्चर गृद्ध ओ काक
गेला विभीषण आज्ञा पाय * अन्तक्रिया कयलनि बुझि भाय

जत छल लङ्का रावण वंश * सभहिक भेल समर विध्वंश
श्री रघुवर प्रभुवर जे दास * से सभ कुशल समर निस्त्रास
वैदेही मन सुनि बड़ हर्ष * तन पुलकित लोचन जल वर्ष
रघुवर प्रिय सेवक हनुमान * वचन अँहाँक सुधाक समान
प्रियवचनक तुल की बसु देव * सकल लोक उत्तम यश लेव
सुनु वैदेहि कहल हनुमान * देवि अनुग्रह सम की आन
रावण काँ मारल रघुवीर * मन छल कलुषित से सुख थीर
हनुमानक सुनि वचन उदार * सीता उत्तर कहल विचार
करुणा सदन समीर कुमार * कहब समाद प्रभुक दरबार
आशा देथि दुखी दुख हरण * देखी श्री रघुनन्दन चरण
चलल अनिल सुत कयल प्रणाम * पँहुँचलाह रघुवर जेहि ठाम
सीता दशा कहल सभ कहल * गदगद कण्ठ नयनजल वहल
जेहि कारण सागर मे सेतु * दशकन्धर मारल जे हेतु
तनि सीता मन छूटय शोक * देखल जाय मँगाय सुलोक
रघुनन्दन माया के जान * मनमे कयल तखन प्रभु ध्यान
सीता अनलगता वहराथु * माया सीता छाया जाथु

सो०— मित्र नवललंकेश, कहल रघूत्तम हर्षयुत ।
लय आनू एहि देश, सीता भीता छथि बृथा ॥

चौपाइ

स्नान वस्त्र सुन्दर नवरङ्ग * सकलाभरण विभूषित अङ्ग
शिविका पर लय आनू आज * प्राणेश्वरि काँ हमर समाज

गेला विभीषण संग हनुमान * करवाओल तनिकाँ सुस्नान
वड़ि वड़ि बृद्धा काँ मङ्गवाय * तेल सुगन्धि देल लगवाय
सभसौं उत्तम छल नव कोष * वस्त्र पहिरलनि से निर्दोष
जनि पहिराओल गहना सर्ब्ब * वस्तु अमूल्य कि खर्ब्ब निखर्ब्ब
शिविका चढ़लि कहार उठाय * चललि राजपथ सङ्ग सहाय
संग पदाति न किछु पछुआथि * हट हट करयित आगाँ जाथि
देखय दौड़ल वानर ठट्ठ * धक्का खड्गिक सह निरहट्ठ
नहिँ हट पथसौँ कपि जे झठ * बेँतक मारि सहथि पटपट्ट
वानरबृन्द कयल चीत्कार * राक्षसगण वानर काँ मार
राम समीप गेला सभगोट * मन विषाद किछु लागल चोट
देखि सवारी अवइत एक * अनुव्रजन कर लोक अनेक
कहल विभीषण काँ रँह राम * वैदेही आवथु एहिठाम
उतरि सवारीपर सौँ लेथु * निजपद दर्शन जनकाँ देथु
रघुनन्दन आज्ञा देल जेहन * जनकनन्दिनी कयलनि तेहन
राम असह्य कथा किछु कहल * सर्व्वसहा तनया सभ सहल
सीता काँ मनमे भेल ग्लानि * लक्ष्मण काँ कहलनि सुनि कानि
करु करु देवर ज्वलित हुताश * करब सकल मन संशय नाश
प्रभु अनुमति बुझि जोड़ल अनल * देखइत लोक शोक सौँ कनल
राम निकट सब भेला ठाढ़ * धह धह धाह आगि मे बाढ़
पतिक प्रदक्षिण कय कय वेरि * वेरि वेरि चरणाम्बुज हेरि
वैदेही सभशक्तिक शक्ति * रामचरण मे अविरल भक्ति
विकल लोक ओ राक्षसदार * कि होयत कि होयत वचन प्रचार

सकल देवता भूसुर चरण * कयल प्रणाम कष्ट सभ हरण
सीता निर्भीता निजचित्त * साहसकर आमर्ष निमित्त
करयुग जोड़ल अनल समीप * विधुदिनकरकुल कीर्ति प्रदीप
जौं रघुवर मे सत्य सिनेह * तौं रह अनल वनल ई देह
जौं पति तेजि मन अनत न जाय * तौं रह अनल वनल ई काय
जाग्रत स्वप्नदशा मे आन * पुरुषक भेल न मनमे ध्यान
सत्य स्वकीया जौं हम नारि * पतिपदव्रत मनगर्ब्ब विचारि
ज्वलित अनल मे पड़वे जाय * व्रत अन्यथा देह जरिजाय
साक्षी पावक रक्षा करब * संशय सकल लोकगत हरब
कयल प्रदक्षिण अग्नि प्रवेश * जय जय शब्द भेल नभ वेश
सीता अनल राशि मे ठाढ़ि * सीता कान्ति कोटिगुण बाढ़ि
सकलसिद्ध कह बारम्बार * एहन विशुद्ध आन के दार
लक्ष्मी सीता करु जनु त्याग * सकललोक कौं अनुचित लाग
अनल कहल बनि दिव्य स्वरूप * सुनु जगदीश्वर मायाभूप
छल छथि सीता सोपलि जतय * प्रकट भेलि छथि देखू ततय

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

चौपाइ

ऐरावत पर चढ़ि सुरराज * समीचीन श्री शचीसमाज
सहस्राक्ष अयला तहिठाम * सुरगणसहित गबैत गुणग्राम
यम ओ वरुण कुवेर समेत * अयला रघुनन्दन रणखेत

बृषभ चढ़ल अयला बृषकेतु * करब रघूत्तम स्तुति तैँ हेतु
रजताचल सन झलकय देह * चण्डी संग अखण्ड सिनेह
त्रिनयन शोभित श्रीमुख पांच * रघुपति चरित सतत से वाँच
गङ्गा पिंग जटा भल रङ्ग * भूत प्रेत गण बहुबिधि सङ्ग
ब्रह्मा अयला हंस सवार * सङ्ग शारदा सङ्ग गणादार
वीणा पुस्तक अक्षसुमाल * अयली जतय राम महिपाल
मुनि ऋषि पितर सिद्ध गन्धर्व्व * उरगादिक मिलि अयला सर्व्व
बद्धाञ्जलि अभिनव सभभाष * प्रभु पूरण जन मन अभिलाष
सकललोक कर्त्ता भगवान * साक्षी सकल देह विज्ञान
रावण सभक हरल धन धाम * तकरा अपने मारल राम
मेलँहु अकण्टक सुखसौँ रहब * निज निज सदन सुयश जय कहब
ब्रह्मास्तुति कयलनि अगुआय * आज कयल प्रभु समुचित न्याय

अनुष्टुप् देश

स्तुवे कादम्बिनीश्यामं धनुष्मन्तम्मुदा रामम् ।
युगान्ते सर्व्वलोकानामशोकानांहि विश्रामम् ॥
खले मन्दोदरीकान्ते महच्चित्रं रणे शान्ते ।
हृताशेषावनीभारं रमादारं महोदारम् ॥२॥
मुनीनां दुःखशान्त्यर्थं मुदा सम्प्राप्तकान्तारम् ।
सुमित्रानन्दनम्वन्दे रणे शक्रारिहन्तारम् ॥३॥

सवैया छन्द

वाक अगोचर चित्त अगोचर, के कह केहन कान्ति कहाँ की ।

सूक्ष्म सैँ सूक्ष्म विशाल विशाल सौं ईश्वरछी विभुछी जे जहाँछी ॥
सृष्टिक हेतु अनादि अनामय, ध्यान सौं ध्येयस्वरूप तहाँछी ।
विष्णु अहीँ छी विरञ्चि अहीँ छी, महेश अहीँ छी कहाँ नै अहाँछी ॥ १॥
ज्ञान समाधि समग्र महातप, ध्येयसरूप जहाँछी तह छी
नाम विरञ्चि कहै छथि लोक से, गोचर ब्रह्म सुदेव कहाँछी ॥
व्योम समीर तथानल ओ जल, देखल जाइछ सर्व्वसहा छी ।
श्रीरघुनन्दन दुष्ट निकन्दन, सद्गुण ब्रह्म अनन्त अहाँछी ॥

चौपाइ

पावक प्रगट भेल तेहिकाल * दिव्यरूप अति दीप्त विशाल
वैदेही आरोपित अङ्क * क्षीरोदधि जनु रमा निशङ्क
अरुणवसन विमलारुण कान्ति * दिव्य विभूषण सुन्दरि शान्ति
सकलदेव जय जय धुनि करथि * गगन अवनि स्वेछा सञ्चरथि
पावक कहल राम भगवान * करयित यशोराशि गुणगान
सीता कौं सोंपल वन राम * लेल जाय प्रभु से एहिठाम
प्रमुदित राम कमलकर धयल * वाम अङ्ग मे स्थापित कयल
से सीता देखथि अमरेश * कह जयजय सीता प्राणेश
सहस्राक्ष फल पाओल आज * सीतासहित देखल रघुराज
हम अमरेश्वर छल ई गर्व्व * से अभिमान रहित भेल सर्व्व
श्रीप्रभुचरणक हम लघुदास * रावणादि कृत छूटल त्रास
रामचन्द्र नूतनघन रङ्ग * जनक सुता सौदामिनि सङ्ग
जहि लय योग ज्ञान तप करथि * गुहावास घनवन सञ्चरथि

जाहिलय शङ्कर करथि समाधि * तनिकाँ देखल छूटल आधि
केओ कह कर्म्म काल केओ प्रकृति * केओ कह पुरुष सिद्ध मुनि प्रभृति
कहयित सुनयित अन्त न पाव * केओ कह सृष्टिक सहज स्वभाव
कर्त्ता कर्म्मादिक जत भाव * देखि प्रभु चरण पुरल अभिलाष
रहल न एको मन वैषम्य * सभहिक अपने केवल गम्य

दण्डक

जय सदोद्यत धराधारे, हृतधरित्री विपुलभारे,
जगन्मातर्गुणागारे, महोदारे हे।
जनकमहि-महनीयवन्ये, शिवविरंचिप्रभृतिमान्ये,
रमागौरीजनवदान्ये, यशोहारे हे ॥
सदानाहतजलजवासे, पापतूलमहाहुताशे,
पूरिताखिलसुरजनाशे, निराकारे हे।
रामघनचपले सुकामिनि, जय चराचरवरस्वमिनि,
रूपजितकन्दर्प्पभामिनि, शक्तिसारे हे ॥१॥

चौपाइ

राम कहल सुनु सुनु सुरराज * एकगोट अपने सौँ अछि काज
वानर रणमे मुइल बहूत * से सजीव करू प्रिय पुरहूत
से सुनि तेहन कयल अमरेश * अमृतवृष्टि सौँ रामनिदेश
ग्गसि जीव से लाखहि लाख * जय रघुनन्दन आनन्द भाष

सो०—सुनु करुणानिधि राम, हाथजोड़ि शङ्कर कहल।
हम आयव ओहिठाम, अतिउत्सव अभिषेक मे ॥

जयकरी छन्द

दशरथ नृप देखयित छथि ठाढ़ * आँहँ मे प्रेम जनिक नित गाढ़
दशरथ काँ लगला प्रभु गोड़ * लक्ष्मण सीता हर्ष न थोड़
दशरथ कहलनि पूरल आश * संशय आदि सर्व्व भेल नाश
दशरथ गेला पावि सम्मान * राग द्वेष गत पाओल ज्ञान
तखन विभीषण जोड़ल हाथ * एक विज्ञप्ति हमर रघुनाथ
घर थिक अपन चलल प्रभु जाय * दिनेक रहव शक के अटकाय
स्नान अलंकृत मङ्गल वेष * सभकाँ मन प्रभु छविकाँ देख
घर भेल अपन आँहँक सब भक्त * रघुवर कहलनि समय अशक्त
अतिसुकुमार भरत की हयत * अवधि एकोदिन जौं विति जयत
वल्कल वसन जटाधर माथ * हमरा विनु शत्रुघ्न अनाथ
तकइत हयता हमरे वाट * अनतय न वनब छन सम्राट
करब स्नान की तनि विनु आज * जायब सत्वर तनिक समाज
सुग्रीवादिक हो सत्कार * हम मानव अपने उपकार
सुनल विभीषण रघुवर उक्ति * अति प्रसन्न मन मानल युक्ति
कनकाम्बर वरस्त वजार * निज निज रुचि पाहुन व्यवहार
यूथप गणक कयल सत्कार * मुदित विभीषण परमोदार
मणिमय वानर सादर चाट * स्वाद न पाव पटक झट वाट
कनकाम्बर नख दसनैँ चीर * हँसथि विनोद देखि रघुवीर
पुष्पकरथ रवितेज विराज * लयल विभीषण रामक काज
तहिरथ चढ़ला राम नरेश * अछि गन्तव्य शीघ्र निजदेश
सीता लक्ष्मण रथ चढ़लाह * मनउदास कपिगण पड़लाह

सभकाँ राम वचन कहि वेश * भालुकीश काँ देल निदेश
वानर भालु यथारुचि जाथु * स्वेछा वन उत्तम फल खाथु
कपि पति अङ्गद नव लंकेश * सभकाँ कहलनि चलइव देश
मित्रकाज अपने सभ कयल * ऋण उपकार सर्व्वदा भयल
आज्ञा दी तौं चली सबेर * भेटघाट होयत कय वेर
किष्किन्धा लय सैन्य अपार * कपिपति जाउ सिद्ध उपकार
भक्त विभीषण करगय राज * लङ्कापुर मे सहित समाज
वड़ अगुताई कथा अछि ढेर * चलव अयोध्या होइछ अवेर
सुनि सुनि सभजन जोड़ल हाथ * मानल जाय देव रघुराज
देखितहुँ रामचन्द्र अभिषेक * रहल लालसा मनमे एक
कौशल्या का करव प्रणाम * घुरि घुरि सभ जन अयवे गाम
प्रभु कह कथा देव नहिँ काटि * केओ न हमर भरत सौँ घाटि
चलु चलु पुष्पक होउ सवार * अतिशय कठिन प्रेम व्यवहार
लङ्केश्वर कपिवर हनुमान * वानर रथ पर चढ़ल प्रधान
राजराजरथ अतिशय राज * चढ़ल सकल दल हलचल काज
आज्ञा देलनि विश्व निवास * हंसयुक्त रथ उड़ल अकाश
रघुनन्दन वर छवि काँ पाव * शोभा जेहन विरञ्चिक आव
दिनकर विम्ब सुछवि काँ भयल * धनपति रथ नभपथ गति कयल

सो०—जय जय श्यामशरीर, जय जय पङ्कजनयन प्रभु ।
जय सानुज रघुवीर, जय सीतापति अमर कह ॥
इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लङ्काकाण्डे त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

जयकरी छन्दः

क्रम क्रम सकल देखावथि ठाम * रथपर सौं सीता काँ राम
गिरित्रिकूट लंका रण भूमि * काक गृद्ध मड़राइछ घूमि
राक्षस वानर काँ एत मारि * मुइला एतहि दशानन हारि
कुम्भकर्ण घननादक मुण्ड * बहुतक एतहि खसल छल मुण्ड
ई बांधल भेल सागर सेतु * वानर निकर उतरवा हेतु
परमपवित्र पाप सभ हरथि * सेतुवन्ध दर्शन जे करथि
हम रामेश्वर स्थापन कयल * शरण विभीषण एहि थल धयल
दर्शन कयल जानकी जाय * जय शिव रटथि सैन्य समुदाय
किष्किन्धा ई कपिपति ग्राम * कहि किछुकाल धयल विश्राम
तारादिक सुग्रीवक दार * चढ़ली पुन रथ उड़ल उदार
सीताप्रिय कारण व्यवहार * करथि रघूत्तम विश्वाधार
मुइला बालि वली एहिठाम * ऋष्यमूक गिरि हिनकर नाम
पञ्चवटी अयलहुँ से ठाम * राक्षस सङ्ग जतय संग्राम
भेला जे जे समर समक्ष * मारल गेला से से दक्ष
मुनि सुतीक्ष्ण मुनि तथा अगस्त्य * आश्रम दुनू परम प्रशस्त
तपसगण पड़इत छथि दृष्टि * धन्य धन्य थिक हिनकर सृष्टि
चित्रकूट गिरि होइछ प्रकाश * बारहवर्ष जतय छल वास
होउ प्रसन्न शरण हम धयल * भरत बहुत हठ एतहि कयल
भरद्वाज आश्रम ई थीक * यमुनातट मेँ लगइछ नीक
ई थीकि गङ्गा करू प्रणाम * परम पवित्रा कहलनि राम
सरयू निकट अयोध्या धाम * थिक कर्त्तव्य नगर विश्राम

सो०—भरद्वाज मुनिधाम, अटकाओल कौवेर रथ ।
अभिनत कयल प्रणाम, मुनि हर्षित पुछलनि कुशल ॥
पूर्ण चतुर्दश वर्ष, तिथि भल आइलि पञ्चमी ।
मन मे बाढ़ल हर्ष, वार्त्ता पुर पहिलहिँ उचित ॥
जिवइत छथि सभमाय, भरद्वाज मुनि सुनल अछि ।
कुशल क्षेम दुहु भाय, पुरी सुभीक्षा अछि कहू ॥
अतिप्रसन्न सभ लोक, भरद्वाज हसयित कहल ।
अपनेक केवल शोक, आबि गेलहुँ देखबे करब ॥
कन्दमूल फल खाथि, माथ जटा वलकल वसन ।
अनतय कतहु न जाथि, भरत खरौँ सेवा करथि ॥

चौपाइ

तप प्रताप अपनेक पद ध्यान ॥ रामचन्द्र हमरा सभ ज्ञान
जे जे चरित कयल प्रभु जाय ॥ आज्ञा पायब देव सुनाय
नहि अछि आदि मध्य नहि अन्त ॥ परब्रह्म छी देव अनन्त
अपनैँक नाभि कमल उत्पन्न ॥ ब्रह्मा करथि सृष्टि सम्पन्न
निर्गुण ब्रह्म सगुण अवतार ॥ हरण करैछी पृथवी भार
करु पवित्र प्रभु हमरो गेह ॥ सेवक विषय विशेष सनेह
अङ्गीकार कयल भगवान ॥ अति आतिथ्य सुभोज्य विधान
भेटय तीर्थ तहाँ तहाँ जाथि ॥ तीर्थ कृत्य विधि तहाँ नहाथि

बरवा—कहलनि श्रीरघुनन्दन, सुनु हनुमान ।
अयलहुँ से वार्त्ता पड़, भरतक कान ॥

प्रझ्फटिति छन्द

पुर झटिति पवनसुत अहाँ जाउ * सभ कुशलक्षेम जनकाँ सुनाउ
गुह शृङ्गवेरपुर हमर मित्र * तनिकहु कहिदेवक सभ चरित्र
छथि नन्दिग्राम मे भरत भाय * आगमन कुशल तनिकाँ सुनाय
पुन हमर निकट अँहँ शीघ्र आउ * कहु किछु विलम्ब नहि अहाँ लगाउ
मानुष तन धयल हतूमान * चलला उड़िनभ जनु गरूत्मान
से शृङ्गवेरपुर प्रथम जाय * अयला रघुनन्दन से सुनाय
चौदह वर्षोत्तर अँहँक मित्र * सभटा कहि देलनि तनि चरित्र
अतिशय मनहर्षित गुह निषाद * छुटि गेल सकल संशय विषाद

चौपाइ

कहि हनुमान चलल उड़ि गगन * रामतीर्थं सरयू देखि मगन
सरयू लाँघि गेला तहिठाम * भरत रहला जहाँ नन्दिग्राम
रामचरण पंकज अनुराग * डेढ़ कोश निजपुर सौं लाग
अतिकृश देखल भरत शरीर * नहिँ सुखाय पल नयनक नीर
जटामुकुट वलकल भल चीर * दीन मीन संक्षीण सुनीर
कन्दमूल फल भक्ष्य विधान * रामचन्द्र पद केवल ध्यान
पुर प्रधान काँ शोक अभङ्ग * वसन पहिरने गेरुआ रंग
चौदहवर्ष जानि अवसान * पल पल हर्ष विषाद समान
धर्म्ममूर्त्ति जनु देखल ठाढ़ * हर्ष हनूमानक मन बाढ़
कहलनि विनत हाथ दुनु जोड़ि * चिन्ता भरत अँहाँ दिअ छोड़ि
त्यागु त्यागु निज हृदय महाधि * राम वियोगजशोक समाधि

गाछ सुखायल लता समूल * भेल सपल्लव नव फल फूल
नाच मयूर पुरस्वर गाव * षड़ज सुमूर्तिमान बनिआब
कोकिलकुल कल करइछ गान * स्वरपञ्चम सुनि पड़इछ कान
केकयिनन्दन करु अनुमान * अयला रामचन्द्र भगवान
राजराज रथपर रघुराज * राजा बनल अबैछथि आज
रावण कँ मारल संग्राम * कर्म्म अमानुष कयलनि राम
क्रम क्रम चरित कहल सभ गोट * नहिँ कर्त्तव्य भरत मन छोट
सीता लक्ष्मण चित्त प्रसन्न * प्रभु संग मित्र सुगुण सम्पन्न
हर्षक कथा सुनाओल कान * करु उद्योग मिलन सन्मान

आर्य्या दोहा जाज तिरहुति

पवन तनय मुखवाणी, सुनल भरत हित कान
सकलकला कल्याणी, ब्रह्मानन्द समान ॥१॥
फरकैछल अति दहिना, भुज ओ दहिना आँखि।
सत्य वचन प्रभु तहिना, मरइत लेलनि राखि ॥२॥

मिथिलासाङ्गीतानुसारेण कोड़ार छन्दः

अयला भ्राता नरेश।
केकयो कुमंत्रणा सौँ बनि मुनिवेश ॥१॥
विष्णु की विरञ्चि अहाँ की स्वयं महेश।
मानव की कारुणिक लयलँहुँ सन्देश ॥२॥
हर्षकथा बराबरि वित्त नै विशेष।
रघुनाथ सम्य अहाँ लोभक न लेश ॥३॥

आउ मिलि पाउ सुख कहू की निदेश।
धन्य धन्य आज हम छूटल कलेश ॥४॥

दो०— गाम देव शयगोट हम, शयहजार देव गाय।
मुग्धा षोड़श कन्यका, मर्रायत लेल जिआय ॥

चौपाइ

भरत एक मन करु जनु शोक * कुशल क्षेम अबइत छथि लोक
जनिक हेतु चिन्ता बिस्तारि * अयला से रण रावण मारि
अपनैक कुशल बुझक छल काज * आगु पठाओल श्रीरघुराज
दारुण शोक करू परित्याग * जागल भरत इष्टजन भाग
देखब भाय मनोरथ पूर्त * किछु बिलम्ब नहि एक मुहूर्त
लक्ष्मण सङ्ग राम कृत कार्य्य * आबि गेला अछि कुशल सभार्य
हरषनोर सौं गेला नहाय * रघुनन्दन सन अयला भाय
खसिपड़ला महि हर्ष अपार * अति आनन्द कि तन सम्भार
मारुतसुत कौं हृदय लगाब * उजड़ल नगर वसाओल आब
बहुतवर्ष शोचहिँ गेल बीति * वार्ता आइ प्राति भल रीति
जौं जिव रह तौं सहजस्वभाव * शयवर्षहु पर आनन्द आब
कहु वानर रघुवर सत्सङ्ग * कोनगत बाढ़ल प्रीति अभङ्ग
क्रम क्रम सकल चरित हनुमान * कहल मगन मन शेष समान
भरत कहल शत्रुघ्न बजाय * अयला अरि जिति बड़का भाय
देवी देव जते छथि गाम * तनिक समर्च्चन हो तेहि ठाम
वन्दी मागध प्रभृति जे लोक * आबथि शीघ्र रोक नहिँ टोक
गणिकागण कौं शीघ्र बजाव * मङ्गलदायिनी गाइनि आब

गीत तिरहुति

भरत निकट मे एक जन, बड़ परसन।
कहलनि शुभ सन्देश, आव प्रभु यहिखन ॥१॥
जनिक वियोग सकल जन, अति अनमन।
देखव जनकदुलारि, राम ओ लछुमन ॥२॥
हर्ष नोर दृग बहायित, ई कहयित
बीतल चौदहवर्ष, विषम दुख सहवित ॥३॥
गीत सुन्दरी गावथि हरि आवथि।
रामचन्द्र घनश्याम चातकी पावथि ॥४॥

जयकरी छन्द

हाथी घोड़ा रथ पंथ लागु * रानिक चलल सवारी आगु
चलल सकल पुरजन अगुआय * देखव राम इ नयन जुड़ाय
ब्राह्मण बृद्ध कहथि सभलोक * आज छुटत मानस यत शोक
मुक्तारत्नमयोज्वल गाम * तोरण विविध पताका धाम
घर बाहर छथि तेहन बनाव * बासवमानस विस्मय आव
बृन्द बृन्द चलली पुर नारि * रम्भा रतिक गर्व्व देल टारि
शय हजार घोड़ा रथसङ्ग * एक अयुत तत मदं मातङ्ग
कनक अलंकृत रथपर राज * स्वागत रामचन्द्र महाराज
शिविका चढ़ल चढ़ल सभमाय * बाल तरुण कि रह पछुआय
रामक खरौँ भरत धय माँथ * हाथ जोड़ कह भेटता नाथ
पयरहि चलल संग लघुभाय * गगन निहारथि दृष्टि उठाय

सो० - आव कि अछि कहवाक, भुज उठाय हनुमान कह।
सभ जन ऊपर ताक, रथ अबइछ जनु चन्द्ररवि ॥
सीता लक्ष्मण राम, ओ सुग्रीव कपीश छथि।
भक्त विभीषण नाम, मन्त्री मान्य अनेक जन ॥

मिथिलासंगीतानुसारेण कामोद छन्दः

भन वड़हरष वरष दृगवारि। सीता राम लक्ष्मण वदन निहारि
गेला वनवास ओ वरष दशचारि। अयला अवधि दिन रावणकें मारि
आनन्द सुधावगाह सर्वनरनारि। मनोरथद्रुम कुसुमित सभ डारि
त्रिदश आनन्दमग्न नररूप धारि। मर्त्य देवलोकक टूटल जनु डारि

जयकरी छन्द

देखि कयल जन हर्षक सोर * अयला राम सुदिन भेल भोर
लक्ष्मण सीता रथ पर राज * भल भल हित जन तनिक समाज
वृद्धबाल वनितागण भाष * देखल राम पुरल अभिलाष
उतरि वाजि गजरथ असवार * रामचन्द्र दिश गगन निहार
भरत ऊर्द्ध मुख जोड़ल हाथ * सानुज सजन देखल रघुनाथ
स्यन्दनस्थ रघुनन्दन केहन * गिरिसुमेरूपर दिनकर जेहन
वन्दन करथि भरत अनुराग * वद्धाञ्जलि दृग पल नहिँ लाग
रथलय चलु एहि महि निजठाम * अयलहुँ गाम कहल प्रभुराम
भरत कयल वन्दन कय वेरि * पुष्पक महिपर रघुवर हेरि
भरत उठाय अङ्क आरोप * चिर वियोग दुःखक भेल लोप
लक्ष्मण सौँ मिलि मिलि कैँ भरत * कहथि धन्य प्रभु सेवा निरत

वैदेहीक उचारल नाम * चरणसरोरुह करथि प्रणाम
भरतक भक्ति दशा सभ देख * धर्म्मदेहधारी मन लेख
हनूमान जन देथि चिन्हाय * सानुज भरत मिलथि तत जाय
कपिपति जाम्बवान युवराज * मैन्द द्विविद ओ ऋषभ समाज
मुदित विभीषण सौँ मिललाह * क्रम क्रम जे जन मुख्य छलाह

रूपमाला

नल गवाक्ष सुषेण आदिक गन्धमादन नाम ।
शरभ पनश मनुष्य तन सभ वनल छल तहि ठाम ॥
सकल जनसौँ भरत मिलला कुशल पुछलनि सर्व ।
सकल जन मिलि कर प्रशंसा भ्रातृ भक्ति अखर्व्व ॥
कहल मिलि सुग्रीव कैँ प्रभु अँहाँ मुख्य सहाय ।
राम रण दशवदन जीतल अँहाँ पाँचम भाय ॥
तखन पुन शत्रुघ्न रामक चरण कयल प्रणाम ।
लक्ष्मणक सीताक वन्दन कयल से तहि ठाम ॥

चौपाइ

शोक विकल जननी काँ जानि * राम प्रणाम कयल सम्मानि
केकयि तथा सुमित्रा माय * लगला गोड़ सभहिकाँ न्याय
तखनुक कहल कि जाइछ रीति * हरषै कनयित गबयित गीत
भरत खरौँ से रघुवर चरण * पहिराओल सभ सङ्कटहरण
आइ सुफल भेल जीबन मोर * अयश मेटायल सञ्चित घोर
सञ्चित द्रव्य सैन्य बल कोश * दशगुण अछि प्रभुचरण भरोश

लेल जाय निज राज्यक भार * किङ्कर हम कि करब उपकार
सुनि कपिवर लोचन वह वारि * अकपट भरतक विनय विचारि
उतरलाह रथपर सौँ राम * कहलनि अयलहुँ अपना गाम
पुष्पकरथ अँहँ धनपति धाम * जाउ कुशल सौं रहु तहिठाम
दो०—गुरु वसिष्ठ पदकमल मे, रघुवर कयल प्रणाम।
गुरु आज्ञा आसन निकट, कयल राम विश्राम॥

कवित्त

रामचन्द्र जननि पसारि आँखि देखु अँहाँ,
जानकीसहित राम लछन किशोर कैं॥
भूमि नाचै सुन्दरी गगन किन्नरी ई नाचै,
वाट वाट भाट सुकवित्त पढै शोर कैं॥
राग नाचै रागिनी भवानीपति नाचि कहै,
भलकैल मारल जे दशकण्ठ चोर कैं॥
जननी प्रणाम राम कयथि जानकीयुत,
कौसल्या हरषि लेल मुखचुमि कोर कैं॥

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे लंकाकाण्डे चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

चौपाइ

कैकयितनय विनय सम्पन्न * किछु नहिँ मानस छला प्रसन्न
भरत कहल सुनु बड़का भाय * अपनें नृपति दुखो वन जाय
चौदह वर्ष छलहुँ वनवास * अयलहुँ अवधि पुरअोल आस

जे कृति कयलनि कैकयि माय * से प्रभु नहिँ मन पाड़ल जाय
प्रभु आज्ञा मानल सभ गोट * सेवक थिकहुँ भाय हम छोट
राज्य भार करु अपन अधीन * रविकुल शुद्धरीति प्राचीन
ई कहि चरण पड़ल लपटाय * देलजाय प्रभु आधि घटाय
केकयि कहल सकल उपहास * हरल हमहिँ प्रभु राज्यविलास
कहल नीक नहिँ विश्वक लोक * चौदह वरष सहल मन शोक
भेल से भेल गेल दिन वीति * एखनहुँ राखक थिक कुलरीति
हमहुँ अशक्य अहाँका माय * देल कुमतिवश विपिन पठाय
आज्ञा हमर वचन लिय मानि * रीति सनातन करु जनु हानि
कहल वशिष्ठ कहैछथि न्याय * भरतक कथा कयल प्रभु जाय
राम कयल राज्यक स्वीकार * भेल सकल थल जय जयकार
परमात्मा की करता राज * सभटा होइछ माया व्याज
समय जानि लक्ष्मण लघु भाय * नापित निपुण देल बजवाय
तनिकर कृत्य भेल सम्पन्न * सकल लोक मन होथि प्रसन्न
अभिषेकक आयल सम्भार * रघुवर हेतु बृत्त सभ द्वार
प्रथमहिँ कयलन्हि भरत स्नान * लक्ष्मण तखन स्नान विधान
सविधि स्नान कयल कपिराज * तथा विभीषण सभ्य समाज
भरतक जटा केश फुटकाव * चित्र माल्य अनुलेप लगाव
वसन महोत्तम पहिरल भरत * छवि तुलना त्रिभुवन के करत
भरत कराओल प्रभु प्रति कर्म * मन मे मानल सेवक धर्म्म
रुचि शुचिमययुत शोभाधाम * दिव्य अलंकृति धृत प्रभु राम

कवित्त

कौशल्या कुशलमति हरषि शृङ्गार कर,
अपनहिँ कर सौं पुतोहु विधुवदना ।
वदन निहार ओ उचार शिवगौरी गीत,
हृदय लगाय बारबार शोभासदना ॥
सकल सासुक सीता करथि प्रणाम आशु,
आशिष ओ देथि कहि कहि चन्द्रवदना ।
जनकक कन्यका कनीनिका मे राखै जोग,
अयोध्या मिथिलालोक आधिकनिकन्दना ॥१॥

सो०—सभ रानी सीताक, कय शिंगार आनन्द कह ।
शिरोरत्न वनिताक, त्रिभुवन मे सीता अँहाँ ॥

दोवय छन्द

आगत छली जते उत्सवमे, वानर लोकक दारा ।
सभक शिंगार कयल कौशल्या, धृतशोभा - विस्तारा ॥
कहलनि धर्म्मपुतोहु थिकहुँ अँहाँ, हमरो प्राणाधारा ।
लक्ष्मण रामचन्द्र हित युवती, लोचनतारा तारा ॥

जयकरी छन्द

आज्ञा शत्रुघ्नक सुनि कान * रथ सुमन्त रवि रुचि सुचि आन
तेहिपर चढ़ला राम नरेश * देखतहिं सभजन विगत कलेश
कपिपति अङ्गद ओ हनुमान * तथा विभीषण वरमतिमान

कयलनि स्नान अलंकृत अङ्ग * गज वाजी चढ़ि चल प्रभुसङ्ग
कपिपति वनिता काँ अति मान * सीतासंग चललि चढ़ि यान
जेहन हरित हय रथ त्रिदशेश * चलल महत्पुर प्रभु रुचिबेश
रत्नदण्डकर सारथि भरत * छविमय के समता जग करत
शत्रुघ्नक कर छत्र सुधवल * पंखा लक्ष्मण कर लस नवल
एक चामर शत्रुघ्नक हाथ * दोसर करधर असुरक नाथ
सिद्धसंघ कर जय जय कार * मधुर मनोहर वचन उचार
वानर सुन्दर मनुज स्वरूप * गजवर चढ़ल चढ़ल जनु भूप
वाजन नाना तरहक बाज * रामचन्द्र पाओल निजराज
पुरवासी जन सकल निहार * दुर्व्वादलश्यामल सुकुमार
रत्नकिरीटालंकृत अङ्ग * शोणकमलदल लोचन रङ्ग
पीताम्बर वर मुक्ताहार * भाग्य अपन मन प्रजा विचार
सुग्रीवादिक कपि प्रधान * सभ सौँ सेवित श्रीभगवान
कस्तूरी चन्दन घनसार * कल्पमहीरुह सुमनक हार
उच्च अटापर चढ़ि वरनारि * एकटक रघुवर रूप निहारि
निज गृहकाज देल परित्यागि * शान्त कयल मनआधिक आगि
हँसि हँसि करथि प्रसूनक वृष्टि * गेल पुरी सौँ शोकक सृष्टि
इषतहँसितमुख राम निहार * प्रजाचित्त छूटल दुखभार

रूपमाला

अमरपति-पुर तुल्य शोभा, लसित दशरथ धाम।
सकललोक कृतार्थ करयित, पहुँचला श्रीराम॥
देवतासवि मातृलोकक, कयल चरण प्रणाम।

प्रभु चुमाओन विविध उत्सव, भेल विधि तेहिठाम ॥
भरतकाँ रघुनाथ कहलनि, हमर जे छल धाम ।
सर्व्वसम्पतियुक्त समुचित, वास हो ओहि ठाम ॥
मित्र कपिपति ओ विभीषण, राक्षसेन्द्रक नीक ।
सुखनिवास कपिप्रधानक, आज देवक थीक ॥

सो०—सभक देल सुखवास, भरत जेहन आज्ञा प्रभुक ।
भेल चित्त निश्वास, दिन जाइत जानथि न से ॥
थिक विचार इत एक, भरत कहल कपिनाथ सौं ।
करव प्रभुक अभिषेक, आवय सातसमुद्रजल ॥

कवित्त

कहल कनक घट सातहु समुद्र जल,
आनुगथ झटदय कपीन्द्र प्रधानकाँ ।
अङ्गद सुषेण सुनि बहुत हर्षित चित्त,
प्रभुक निमित्तवेग मारुतसमानकाँ ॥
आनल सकलजन जल सातो समुद्रक,
दूर पथकत जाम्बवान हनुमान काँ ।
आयल सकल तीर्थ जल से कहल जाय,
मन्त्रिसङ्ग शत्रुघ्न वसिष्ठ वरज्ञानकाँ ॥

सबैया चकोर छन्द

रत्न सिंहासन शुद्ध मनोहर, संस्थित जानकि संयुत राम ।
उत्सव मध्य त्रिलोकिक लोक, प्रधान प्रधान छला तहिठाम ॥

रावण गर्व्व विनाशन सर्व्व. स्वरूप सँ निर्ज्जित—कोटिक काम।
स्वस्ति समस्त प्रशस्त विलक्षण, गाव विरञ्चि मनोहर साम॥

कवित्त

गौतम जाबालि ओ वसिष्ठ बाल्मीकि वृद्ध,
ब्राह्मण बहूत वेद बिद्या निधान सौँ।
ऋत्विज अनेक ओ कुमारो तथा मन्त्रिगण,
औषधि समस्त रस देव सम्मान सौँ॥
लोकप सगण मन मगन समस्त लोक,
पाओल अभीष्टफल राम भगवान सौँ।
तुलसी गन्ध पुष्प जल कोमल कुशाग्र हस्त,
राम अभिषेक भेल वेदक विधानसौँ॥

चौपाइ

ततशत्रुघ्न छत्र कर धयल * श्वेतरङ्ग प्रभुसेवा कयल
चामर धयल धवल तँह हाथ * वानरेन्द्र ओ राक्षस नाथ
स्तुति कर सकल देव तहिठाम * जय जय वैदेहीपति राम
जगत्प्राण देल हेमक माल * इन्द्रक अनुमति कान्ति विशाल
सर्व रत्न मणि कञ्चन हार * इन्द्र देल भक्तिक व्यवहार
स्तुति कर पुन पुन सुरगन्धर्व्व * नाचथि किन्नर अप्सर सर्व
देव दुन्दुभी गगन बजाव * पुष्प बृष्टि नभसौँ भल आब
नव दुर्व्वादल सुन्दर श्याम * पङ्कजलोचन श्रीयुत राम
कोटि प्रभाकर छवियुत अङ्ग * नव किरीट छवि विजित अनङ्ग

पीताम्बर धर दिव्याभरण * सकल लोक आनन्दित करण
सीता शोभित बामा भाग * श्री देवी कॉं अति श्री लाग
अतिशय शोभा धृत कर कमल * सर्व्वाभरण विभूषित बनल
उमा सहित सम्प्राप्त महेश * स्तुति कर अति आनन्दित देश

घनाक्षरी छन्द

नमो नमो रामाय सशक्तिकाय निर्गुणाय,
नीलोत्पलसुप्रभातिकोमलाय विष्णवे ।
मीनकमठादिरूपधारिणे धरित्रीधृजे,
देव महिकण्टकसमस्तखल - जिष्णवे ॥
किरीट हाराङ्गदविभूषणविभूषिताय,
सिंहासनस्थाय रामचन्द्र भूप वेधसे ।
लीलारूपधारकाय सर्व विश्वकारकाय,
सकलमहसामपि देवपूर्णतेजसे ॥

सो०—स्तुति करयित अमरेश; बद्धाञ्जलि प्रभुसौं कहल ।
जय जय राम नरेश, वेश कयल सुरकार्य्य प्रभु ॥
रावण विधिवर पावि, देवताक सुख हरल छल ।
मारल खलकाँ आवि, पाओल प्रभुक प्रसादसँ ॥

चौपाइ

सकल देव कह निजकर जोड़ि * सङ्कट बन्ध देल प्रभु तोड़ि
रावण कृत कि नियत छल त्रास * गमहिँ गमहिँ सहि अतिशय त्रास
रावण हरिलेल यज्ञक भाग * ब्रह्म - दत्त - वरसोँ के लाग

रावण कॉं मारल प्रभु जाय * सर्वसहायक भेलहुँ सहाय
पितरलोक कहलनि कल जोड़ि * शरण न आन चरण ई छोड़ि
रावण वध सौं सुख बड़ गोट * खायत पिण्ड प्रमोद सँ मोट
रावण मख सभ हरि लय जाय * भाग गयादिक अपनहिँ खाय
यज्ञ न रहल सहल बड़ कष्ट * रावण मुइल भेल दुख नष्ट
गबइत गीति प्रीति सौं सर्व्व * कहल रामसौँ गण गन्धर्व्व
सहल बहुत दशकन्ध अनीति * प्रभु गुणगान छुटल सब भीति
तनि गुण गाबि बचाओल प्राण * आज कयल सब सङ्कट त्राण
प्रात महोरग किन्नर लोक * स्तुति कर कह हम भेलहुँ अशोक
वसु मुनि गुह्यक पक्षी सकल * सहित प्रजापति दल छथि विकल
बड़ गोट उत्सव देखब नयन * दुःखैं रहित सकल मन चयन
पृथक पृथक स्तुति सभ जन कयल * रामचरण पङ्कज मन धयल
लक्ष्मण सीता संयुत राम * विधि अभिषिक्त विराज सुधाम
ब्रह्मादिक निज पद प्रस्थान * कयल कयल प्रभु बड़ सम्मान

दण्डक छन्द

नव घन रंग हे।
राम भूपति शुभ सिंहासन, अवनिगत जनु पाकशासन,
कान्ति कोटि दिनेश भासन, कृत दशानन भङ्ग।
जानकी लक्ष्मण मरुत्सुत, मुनिनिवह हरिगणसँ संयुत,
रामचन्द्र समीप बसि नित, भजन भाव प्रसङ्ग॥
गगन संकुल त्रिदश वाजन, पुष्प वर्षण कर मुदित मन,
करथि प्रभु गुण गान परसन, विपुल पुलक सुअङ्ग।

राम प्रभुगुण धाम स्मित मुख, सदा दायक भक्त जन मुख
कयल अर्दित दनुज गण दुख, कान्ति विजित अनङ्ग ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लंकाकाण्डे पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

चौपाई

रामक भेल जखन अभिषेक * महाराज कौँ नीति विवेक
सकल लोक कौँ अति सुख प्राप्त * सकल शस्य सौँ धरणी व्याप्त
भल भल सुफल महीरुह लाग * राम नृपति प्रकृतिक बड़ भाग
जे छल सुमन गन्ध सौँ रहित * भेल अपूर्व सुगन्धिक सहित
घोड़ादान हजार हजार * धेनुदान कर परमोदार
शत शत वृषभ बिप्र कौँ देथि * आशिष शिष्टलोक सौँ लेथि
तीशकोटि पाओल भल दान * वर सुवर्ण ब्राह्मण गुणवान
वस्त्राभरण रत्न वसु आन * नित नित ब्राह्मण जन कौँ दान
सूर्य्यकान्ति सम रत्न उदार * देल सुग्रीव गरामेँ हार
अङ्गद कौँ अङ्गद देल राम * लगला करय सुयश सभठाम
चन्द्रकोटि मणि रत्न सुहार * बैदेही कौँ देल उदार
पहिरि हार निज कर मे धयल * दृष्टि पवन नन्दन दिश धयल
प्रभुमुख वारहिँ वार निहार * हारदान मे केहन विचार

दो०—जतय तुष्ट मन अहँक अछि दिय तनि जन कौँ हार।
वैदेही कौँ कहल प्रभु, हमरो सैह विचार ॥

चौपाइ

वर अभिलषित माँगु हनुमान * कहलनि रघुनन्दन भगवान
त्रिभुवन सुरदुर्लभ वरदान * देव अँहाँक समान न आन
कहि नहिँ हो हनुमानक हर्ष * गद गद कण्ठ नयन जल वर्ष
यावत अपनेक रह जग नाम * तावत हमहुँ रही वहि ठाम
रहय निरन्तर नामस्मरण * प्रभुक चरण वश अन्तष्करण
ई वर छाड़ि न माँगव आन * छलसौं रहित कहल हनुमान
राम तथास्तु कहल तहि ठाम * जीवन मुक्त अँहाँ गुणधाम
कल्पान्तहु हमरे सायुज्य * सतत सुखी रहु तन नैरुज्य
वैदेही देलनि वरदान * जतय ततय वसु गय हनुमान
ततहि मनोभिलषित फल पयव * आशिष हमर न चिन्तित हयव

सो०— धरणी धय निज माँथ, कयल प्रणाम समीर सुत ।
वैदेही रघुनाथ, सानुकूल रहु की कहब ॥

किरीट छन्द

वृक्षक पत्र जकाँ रघुनायक, जाय कहूँ अपनैक कहाबय ।
वानरछी वनमें वसिकैं, झरना जलपान ततै फल खायब ॥
जीवन मुक्त निरन्तर ध्यान, विदेह सुता प्रभुगान सुनायव ॥
जाइतछी हिमवान में हे प्रभु, ई सुख पुञ्ज कतै हम पायब ॥

चौपाइ

हाथ जोड़ि कहि कयल विदाय * गुह निषाद कँ हृदय लगाय
घर थिक अपन निरन्तर आउ * मित्र अपन पुर सम्प्रति जाउ

चिन्ता हमर चित्त मे धरब * विपुल भोग सुख सुखसौं करब
मित्र हमर सारूप्ये पयब * अन्त समय नहिँ दुर्गति जयब
दिव्याभरण राज्य कय देश * देल मित्र काँ राम नरेश
नयन सजल मिसि मिसि चललाह * राम वियोग न किछु बजलाह
सुग्रीवादिक सकल प्रधान * सभ जन पाओल वर सन्मान
वानर निकरक कय सन्मान * वसनाभरण अमूल्य अमान
सन्मानित सभ भेल विदाय * गद गद कण्ठ नयन जल जाय
सभजन अपन अपन गेल गेह * अचल रहल रामक पद नेह
किष्किन्धा कपिपति सहदार * चलल सैन्य यह भरिया भार
लङ्का गेला निज जन सहित * भक्त विभीषण कण्टक रहित
रघुवर कयल बहुत सत्कार * जे पवित्र मित्रक व्यवहार
लक्ष्मण काँ बलसौं युवराज * कयल रघूत्तम सहित समाज
कर्म्माध्यक्ष तदपि नहिँ बन्ध * परमात्मा मनसौं निर्द्वन्ध
स्वात्मानन्दहिँ प्रभु सन्तुष्ट * जन उपदेश करथि मनतुष्ट
हय—मेधादिक यज्ञ अनेक * कयल यथाविधि विमल विवेक
विपुल दक्षिणा जन सन्तुष्ट * त्रिभुवन जनमन रहल न रुष्ट
प्राप्त ततय नहिँ विधवायोग * नहिँ सर्पादिक भय नहिँ रोग
तस्करादि नास्तिक नहिँ लोक * प्राप्त न ककरहु पुत्रक शोक
रामार्चा रत प्रजा समस्त * वस्तु प्रशस्त सतत सभ सस्त
सकज प्रजाकैँ धर्म्महिँ प्रीति * बड़ मन धृति नहिँ ईतिक भीति
बरष वलाहक समय सुबेरि * व्रीहि व्रीहि मय महि मे ढेरि
वर्णाश्रम गुणयुत जन सर्व्व * ककरो नहिँ मन अंकुर गर्व्व

प्रजा पुत्र सम कर प्रतिपाल * रामचन्द्र उत्तम महिपाल
दशसहस्र वर्षावधि राज * कयल राम बसि अवनि समाज
चिरतर जीवन तन आरोग्य * धन धान्यादिक उत्तम भोग्य
अतिपुण्यद श्रीरघुवर चरित * पाठक श्रोता काँ नहिँ दुरित
श्रीरामक अभिषेक चरित्र * श्रवण पठन धनकरण पवित्र
पढ़थि रामायण सुनथि समग्र * प्राप्ति सुपुत्र न मन हो व्यग्र
समर शूर रण निकट न आव * रामचरित काँ सहज स्वभाव
वन्ध्या रामायण मन लाव * रजस्वला उत्तम सुत पाव
रामायण जे पढ़थि विचारि * सुलभ तनिक करगत फलचारि
रोग न रहय पाप क्षय जाय * ग्रह विघ्नादिक दूर पड़ाय
श्रद्धायुक्त जे पढ़ ई पुराण * ईश्वर तनिकाँ देथिनि ज्ञान
करथि उमेश तनिक प्रतिपाल * निकट न आवै तनिका काल

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
लङ्काकाण्डे षोड़शोऽध्यायः ॥१६॥
लङ्काकाण्डः समाप्तः ॥६॥
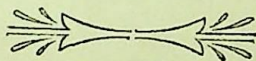
श्री सीतारामाभ्यां नमः

मैथिल कवि चन्दाझा कृत

मैथिली रामायण

(मिथिलाभाषा रामायण)

उत्तरकाण्ड

* मैथिली रामायण *

।। उत्तरकाण्ड ।।

दोवय छन्द

जय रघुवंश तिलक कौशल्या, नन्दन दशरथ बालक।
दशमुख नाशक पङ्कज लोचन, जय मुनिजन प्रतिपालक ।।

चौपाइ

एक समय गिरिराज कुमारि * शिवकाँ पूछल समय विचारि
रावणादि काँ मारल राम * राजा भेला अयोध्या धाम
भूतल रहला ओ कति वर्ष * श्री सीता सहवास सहर्ष
से कयलनि महि मण्डल त्याग * तृप्ति न कथा सुधा सम लाग
शिव कहलनि सुनु प्रिया महेशि * कथा पुछल अछि अपनैं बैसि
राम अकण्टक महि सुरराज * मुनिगण अयला आशिष काज

दोवय छन्द

विश्वामित्र कण्व दुर्व्वासा, सित भृगु शिष्य अनेक।
अत्रि अङ्गिरा वामदेव सभ, निर्मल सकल विवेक ।।
मुनि मण्डली शिष्य सौं परिवृत, अयला तथा अगस्त्य।
द्वारपाल काँ कहलनि सभ मुनि, कोमल वचन प्रशस्त्य ।।

जयकरी छन्द

प्रतीहार बुझि सभमुनि नाम * कहवनि आयल छथि एहिठाम
नृपकाँ आशिष देवक काज * आगत छी मुनि मण्डलि आज
द्वारपाल से बुद्धि विशाल * गेला जतय राम महिपाल
बद्धाञ्जलि ओ कयल प्रणाम * मुनि आगमन कहल तहिठाम
मुनि अगस्ति छथि वहुत चिन्हार * आशिष देता वृत्त छथि द्वार
द्वारपाल काँ कहलनि राम * आदर सौं आनू एहि ठाम
नानारत्न विभूषित धाम * पूजित मुनि गेला तहिठाम
मुनि अभिमुख प्रभु जोड़ल हाथ * पूजा सविधि कयल रघुनाथ
अर्घादिक उत्तर गोदान * पृथक पृथक मुनिजन सन्मान
सभकाँ कयलनि राम प्रणाम * दिव्यासन देलनि तहिठाम
सभकाँ कुशल पुछल रघुवीर * दिनमणि वंश शिरोमणि धीर
सभ मुनि कहल कुशल सभठाम * रावणादि मारल सग्राम
नहिँ आश्चर्य्य धनुष धय हाथ * सकल लोकजित श्री रघुनाथ
अति अद्भुत घननादक मरण * तनिक विजय रण साहस करण
सुनि मुनि वचन कहल श्रीराम * मेघनाद छल की वल धाम
कुम्भकर्ण रावण अति वीर * कालहु काँ मन जतय न थीर
काँपथि थर थर निकट न जाथि * देखयित तनिकाँ गमहि पड़ाथि
मेघनाद तनिकहुँ सौं शूर * कहल जाइ अछि नहिँ किछु फूर

दो०—कहलनि तखन अगस्ति मुनि, सुनु ईश्वर रघुनाथ ।
जन्म कर्म्म वरदान विधि, जे पाओल दशमाथ ॥

चौपाइ

तुनिपुलस्त्य विधि – तनय महान * मेरु निकट तप कर विद्वान
तृणबिन्दुक आश्रम मे जाय * कृतयुग में एक धर्म्म सहाय
सुर गन्धर्व्व कन्यका आब * अति रमणीयक आश्रम पाव
गाबय नाचय वाद्य बजाव * हँसय बहुत नहिं एक लजाय
बड़ि निरहटि सटि मुनिलग जाय * अतिशय उनमति युवता पाय
मुनि मन वाढ़ल अतिशय कोप * करति तपोविधि जनु ई लोप
हमर दृष्टिपथ औति नारि * गर्भवती हयतीह कुमारि
वड़ दुख प्रथा कथा जे सून * केओ हुनि मुनि लग आव न पून
तृणविन्दुक कन्या अज्ञात * मुनि दृग गोचर भेली प्रात
भेलि गर्भिणी मन सन्ताप * गेलि तहाँ तहाँ छलथिनि बाप
से राजर्षि बुझल वृत्तान्त * ज्ञान नयन सौँ मुनिक नितान्त
कन्या लय तृणविन्दु उदार * मुनि पुलस्त्य काँ कयल सदार
मुनिसेवा में लागलि रहथि * करथि टहल से मुनि जे कहथि
सेवातुष्ट देल वरदान * कन्या काँ से मुनि भगवान
उभयवंश वर्द्धन इक तनय * हयतौ सदाचार सद्विनय
विश्रुत लोक विश्रवा नाम * तनिकाँ पुत्र भेला गुणधाम
पिता तुल्य तप ब्रह्मज्ञान * ख्यात महामुनि तपोनिधान
देखल शीलादिक समुदाय * भरद्वाज तनि कयल जमाय
तहि कन्या में तनय धनेश * जनिकाँ अतिप्रिय मित्र महेश
विदित विरञ्चिक वहुत दुलार * पिता तुल्य तप कयल अपार
तनिकाँ विधि देलनि वरदान * वित्त अखण्डित वर विज्ञान

सो०—वर विरञ्चि सौँ पावि, ब्रह्मदत्त पुष्पक चढ़ल।
विश्रवाक लग आवि, कहल तपस्याफल सकल॥

चौपाइ

ब्रह्मादेल अखण्डित वित्त * वासस्थान न हमर निमित्त
हिंसा शून्य रही जत जाय * देल जाय सुखवास देखाय
अछि सुत थल भल अहँइक योग * लङ्का वसू करू धन भोग
विश्व कर्म्म निर्म्मित ओ वास * परक कदापि परत नहिँ त्रास
कहइत छी लङ्का बृत्तान्त * भेल सुरासुर समर नितान्त
विष्णुक त्रासित असुर पड़ाय * रहल रसातल जाय नुकाय
सागरमध्यपुरी मेँ वास * कयल धनद सुखमय निस्तार
छला वहुत दिन ततहि धनेश * दिन दिन उज्वल भेल सुदेश
राक्षस एक सुमाली नाम * अयला एक समय तहिठाम
युवती कन्या तनिकाँ सङ्ग * जनु तनु प्रथम निवास अनङ्ग
श्रीदेबी सम तनिकर रूप * चिन्तातुर राक्षस चुप चूप
पुष्पक चढ़ल धनेश निहारि * राक्षस अपना चित्त विचारि
कन्या काँ राक्षस से कहल * तोहरा समय कहय किछु रहल
कन्या कहल कहू से तात * करब न वचनक प्रत्याख्यात
ब्रह्म कुलोद्भव वर करु वरण * तनय हयत सभ सङ्कट हरण
धनदक सदृश रूप सम्पन्न * करुगय पुत्रि पुत्र उत्पन्न
विश्रवाक से आश्रम जाय * ठाढ़ि भेलि चिर समय लजाय
धरणी लिखथि चरणसौं ठाढ़ि * चिन्ता एकाकिनि मन बाढ़ि
अए के अँह मुनि पुछल की काज * करजोड़ि कहल रहल नहिँ ब्याज

ध्यानहिँ विदित होयत बृत्तान्त * आइलि छी एकसरि एकान्त
मुनि कहलनि कयलह उत्पात * पुत्रार्थिनि मानस हो ज्ञात
अयिलिह आश्रम दारुण काल * दारुण दुइसुत लाभ विशाल
कहल केकयी अति अन्याय * लोह सुवर्ण परशमणि पाय
अपनहु सौं जौं एहने हयत * मर्यादा धर्मक उठि जयत
मुनि पुन कहलनि सभहिक छोट * महा भागवत से सुत गोट
करथि केकसी निज निर्व्वाह * वितल कतो दिन चलल प्रवाह
रावण लेल प्रथम अवतार * बीस वाहु दशगोट कपार
धरणी कम्प बहुत उतपात * कुम्भकर्ण दोसर सुत जात
पर्व्वत सन तन कहल न जाय * देखतहिँ के नहिँ लौक डराय
सूर्पनखा भेली उतपन्नि * जेहने भाय तेहनि अनमन्नि
लेल विभीषण वर अवतार * अति सुन्दर सुन्दर ब्यवहार
कर्म्मपरायण नियताहार * स्वाध्यायी से परमोदार
जनभयकर रावण तन बाढ़ * कुम्भकर्ण पर्व्वतसन ठाढ़
सञ्चर ऋषिगण काँ धयखाथि * कुम्भकर्ण नहिँ कतहु अघाथि
कहल राम काँ गत बृतान्त * कि कहब अपने लक्ष्मीकान्त
साक्षी सर्व्व हृदय मे वास * नित्योदित निर्म्मल निस्त्रास
प्रभु सर्व्वज्ञ कहल किछु आबि * अपनेक दयादृष्टि कैँ पाबि

सो०-- अति प्रसन्न मन राम, कुम्भज मुनि सौं से कहल।
अपनहुँ छी निष्काम, हमर कृपा निर्भय सदा ॥

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिली रामायणे
उत्तरकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

जयकरी छन्द

अथ एक समय तहाँ वित्तेश * राजित पिता वास जहिदेश
पुष्पक चढ़ल भानु सम राज * राज राज सम्राज विराज
तनिकर विभव देखल सतमाय * नाम केकसी अवसर पाय
रावण काँ से देल देखाय * कतय अहाँ कहाँ धनपति भाय
करुगय सुत अँह तेहन उपाय * होउ हुनक सन कर्म्म बढ़ाय
सुनि रावण मन बाढ़ल कोप * कयल प्रतिज्ञा मन आरोप
तनिसन होयब हमकी बाढ़ि * करब तपस्या साहस गाढ़ि
माता मन नहिँ चिन्ता करब * मनस्ताप सभटा हम हरब
रावण सानुज बनि मुनिवर्ण * फल सिध्यर्थ गेला गोकर्ण
तपदुष्कर मे दृढ़मन धयल * निज निज नियम तिनू जन धयल
दशहजार गत भयगेल वर्ष * कुम्भकर्ण तप कयल सहर्ष
कयल विभीषण तप बड़ गाढ़ * एक चरणभर रहला ठाढ़
वर्षवीति गेल पाँच हजार * सत्य धर्म्मरत सद्व्यवहार
दिव्यसहस्रवर्ष हठ ठानि * कर तप रावण अन्न न पानि
एक सहस्र पूर्ण हो बर्ष * होमकरथि शिर अनल सहर्ष
नव सहस्र वत्सर गत काल * नव शिर होम करथि दशभाल
काटय लगला निजकर माथ * दौड़ि द्रुहिण तनिकर धर हाथ
वर माँगू रावण हम बृत्त * तपदुष्कर सौं होउ निवृत्त
होइ अमर वर समरहु मारि * देवासुर सौं कहल विचारि
नागसुवर्ण आदि जे यक्ष * समर न हारब हुनक समक्ष
मानव तृणसम हेतु कि लड़त * चिउटी गजक तल पड़त

कहल तथास्तु कयल ततकाल * वत्स सुमुनि अहँछी दशभाल
जयगोट कयल होम शिर आगि * सभटा नव नव जायत लागि
अक्षय हयत जाउ मुख वास * अँहकाँ सभक मिटायत त्रास
गेला विभीषण भक्त समाज * कहल विरञ्चि माँगु वर आज
विनत विभीषण जोड़ल हाथ * धर्म्महिँ बुद्धि रहय नित हाथ
कहल विरञ्चि तथास्तु उदार * रावण 'अनुजक सत्याचार
विधि सन्तुष्ट अमरता देल * सज्जन वचन सत्य सुनि लेल
कुम्भकर्ण तट गेला जखन * सुरपति काँ वार्त्ता भेल तखन
थर थर सकल देव गण काँप * कुम्भकर्ण बुझि उग्र प्रताप
जौं विधि हिनकाँ देल वरदान * एक मुनिक नहिँ वाचत प्रान
जयता सभकाँ सत्वर खाय * चलु चलु जतय शारदा माय
विधि करइत छथि बड़ अन्याय * देवि शारदा होउ सहाय
कुम्भकर्ण काँ कण्ठ समाउ * हमरा सभहिक प्राण वचाउ

सो० —कहल विधाता आबि, कुम्भकर्ण वर माँगु अँहँ।
मन वाँछित फल पाबि, जाउ छोड़ि घर कठिन तप ॥
कण्ठ शारदा वास, कुम्भकर्ण माँगल तखन।
सभ सुर मन हो त्रास, की मँगताह विरञ्चि सौँ ॥

जयकरी छन्द

निद्रा मे वीतय षटमास * एक दिन भोजन विषय विलास
विधि देलनि वर से तहिठाम * इष्ट देव जपि देवी नाम
गेलि सरस्वति मुख बहराय * कुम्भकर्ण लगला पछताय

सुनल सुमाली विधि वरदान * पलटल हमर भाग्य भगवान
प्रहस्तादि काँ सङ्ग लगाय * भयसौँ रहित चलल बहराय
मिलि मिलि रावण परिचय कहल * वत्स बहुत दिन दुख हम सहल
आजपुरल अछि मन अभिलाष * हरषैँ कनयित गदगद भाष
लङ्कहिँ छलछी गेलँहुँ पड़ाय * अँहँक मायकाँ एतहि नड़ाय
हम दुख सहव अँहँक सन नाँति * रत्ता करु राखू निज जाति
क्रम क्रम सकल चरित्र से कहल * बड़ सम्पत्ति छल किछुनहिँ रहल
हमरा सबहिँ रसातल रहब * अनेक विभव पाबि दुख सहब
धनदक ओतय समाद पठाउ * अथवा वलसौँ हुनि उपटाउ
राजाकाँ सम्बन्ध कि भाय * राजा दैवक दोसर न्याय

रूपमाला छन्द

कहल दशमुख कथा सुनि, सुनि थिकथि धनपति भाय ।
ज्येष्ठ गुरुतर बड़ तपस्वी, करव नहिँ अन्याय ॥
हुनक सनके भाय हमरा, देखु आँख पसारि ।
अछि वनल घर विस्वभरि, अरि कर समर के मारि ॥

चौपाइ

तखन प्रहस्त कहल तहिठाम * सुनु प्रभु रावण अँहँ गुणधाम
सुनल शूरकाँ नहिँ सौभ्रात्र * अतिशय कठिन धर्म्मथिक चात्र
सुरराच्स थिक कश्यप तनय * तनिकाँ एक घड़ी नहिँ वनय
अर्थी काँ किछु अर्थे सूझ * शूर सहोदर काँ नहिँ बूझ
कहइतछी नहिँ वचन अशुद्ध * देव असुर काँ हेतु कि युद्ध

रावण वचन गेला पतिआय * मानल मन कहइत अछि न्याय
रावण कोप नयन बड़ लाल * कहलनि करब असुर प्रतिपाल
ई वृत्तान्त कहल नहिँ माय * ज्ञातभेल हम करव उपाय
गिरि त्रिकूट पर रावण जाय * देलनि दूत प्रहस्त पठाय
कहव धनाधिप निकट समाद * हमरा हुनका कोन विवाद
हमरा मातामहक निवास * त्यागथु लङ्का जौँ मन त्रास
कहलनि धनपति आवथु वेश * कतहु वसवगय बड़ गोट देश
स्वस्ति स्वस्ति रावण लङ्केश * आवथु पुरमे करथु प्रवेश
धनपति छोड़ल लङ्कागाम * रावण आवि गेला तेहिठाम
दशमुख कयलनि लङ्का वास * मन्त्री सहित रहित मन त्रास
पुछलनि धनद पिता काँ जाय * लङ्का सौं अयलहुँ वहराय
छोड़िदेल रावण काँ धाम * कयल न एक वचन संग्राम
जाउ कहाँ से भेट निदेश * कहल पिता जत देव महेश
आज्ञा सुनि गेला कैलास * कयल तपस्या कतदिन वास
तुष्ट महेश देल वरदान * अलका तनिकाँ वासस्थान
शिवपालित भेला दिकपाल * मित्र महेशक भाग्य विशाल

सो०—सकल लोकसन्ताप, कर रावण निजगण सहित।
दिन दिन बाढ़ प्रताप, निस्संशय मन नहिँ मरण ॥

चौपाइ

सूर्पनखा काँ भेल विवाह * कालखञ्ज सौँ बड़ उत्साह
विद्युज्जिह्व तनिक छल नाम * मायाविनि बड़ लङ्कागाम

मयदेल रावण कन्यादान * मन्दोदरी नाम सविधान
देलनि अमोघ शक्ति करजाय * दितिसुत रावण जानि जमाय
वैरोचन दौहित्री आनि * कुम्भकर्ण काँ देल सन्मानि
बृत्रज्वाला कन्या नाम * लोक विदित छल अछि सभठाम
धर्म्मराज शैलूष महान * तनिकाँ कन्या देल भगवान
सरमा नाम विभीषण दार * सकल सुलक्षण शोभागार

सो०—पुत्रभेल वलवान, मनहर्षित मन्दोदरी।
गर्ज्जल मेघसमान, मेघनाद तैँ नाम छल ॥

चौपाइ

कुम्भकर्ण कह बड़का भाय * निद्रासौँ ताकल नहिँ जाय
रावण देल गुहा बनवाय * कुम्भकर्ण सुख सुतला जाय
रावण भ्रमण करय लगलाह * सभटा करथि कर्म्म अधलाह
मुनिसज्जनकाँ मारथि जाय * रावण करथि बहुत अन्याय
धनपति सुनल दशानन कर्म्म * शिवशिव रावण करथि अधर्म्म
कहा पठाओल दूत देआय * करु जनु रावण अहँ अन्याय
सुनि रावण धनपति दिश टूटि * लेलजीति कत सम्पति लूटि
पुष्पक रथक कयल से हरण * खल उपदेश करब थिक मरण
यम ओ वरुणपुरी निर्भीति * रावण लेलनि सभकैँ जीति
स्वर्ग्ग लोक रावण गेलाह * मघवा युद्धोद्यत भेलाह
सकल देव सुरपति संग्राम * रावण काँ वाँधल तेहिठाम
से सुनि मेघनाद तत जाय * देलपिताक वाँध कटवाय

गञ्जन वन्धन वापक हेरि * देवराज काँ बाँधल फेरि
सुरपति वान्धल सङ्ग लगाय * पिता सहित हर्षित पुरजाय
ब्रह्मा अयला बुझि अन्याय * सुरपति काँ देल बाँध फोलाय
वरदय ब्रह्मा अपना धाम * गेला जखना हे प्रभु राम
रावण वहुत लोक काँ जीति * रण साहस से कयल अनीति
भुज उठाय लेल गिरि कैलाश * सकललोक काँ बाढ़ल त्रास
नन्दीश्वर तत देलथिनि शाप * रावण तोहरा वाढ़ल पाप
हयतौ नरवानर कर मरण * काज न अयतौ दुष्टाचरण
अतिउन्मत्त गेला एककाल * हैहयपट्टन गर्व्व विशाल
रावण काँ से बाँधल ततय * बहु अन्याय फलित हो कतय
तत पुलस्त्य मुनि तहि थल जाय * कहि सुनिकैँ देल बाँध कटाय
बालिक ओतय कयल बल लाख * ओ धय राखल अपना काँख
चारु समुद्र समुद्र घुमाय * षन्मासावधि देल अटकाय
वड़ दुख काटल धयले धयल * बहरयला मिलि मैत्री कयल
मारल रावण काँ प्रभु राम * रावणि काँ लक्ष्मण संग्राम
कुम्भकर्ण गिरि सन्निभ जीति * राखल विश्व चिरन्तन रीति
अपनै नारायण भगवान * विभु विश्वम्भर सर्व्व निदान
नाभिकमल ब्रह्मा उत्पन्न * मुख सौँ अग्नि वचन सम्पन्न
वाहुयुगलसौँ सभजन पाल * नयनेँ रविशशि भेला विशाल
दिशाविदिश कर्णहिसौँ जात * घ्राणसौँ प्राणवायु विख्यात
तथा अश्विनी युगल कुमार * जघादिक सौँ लोक प्रचार
भेल उदर सौँ सागर चारि * स्तनसौँ वरुण तथा पाकारि

बालखिल्य गणभेद उत्पन्न * उर्द्धरेत सद्गुण सम्पन्न
भेल मेढ़ सौं यम उत्पत्ति * गुदसौँ मरणक सर्व्व विपत्ति
अँहँक कोप रुद्रक अवतार * अस्थि सौं पर्व्वत अतिविस्तार
कच सौँ जलद राम सौँ सर्व्व * औषधि भेल अनन्त निखर्व्व
नखसंजात स्वरादिक भेल * अपनै विश्वरूपता लेल
स्थावर जङ्गम जत संसार * सभ अपनहिँ बाहर व्यवहार

दो०—अपनैक बल पिव अमृत सुर, सकल यज्ञ मे जाय ।
भासमान रवि चन्द्रमा, अपनेक भा काँ पाय ॥
सर्व्वग नित्य अनन्तप्रभु, ज्ञानबिलोचन दृष्ट ।
नहिँ देखथि अज्ञानदृग, रविकाँ लोचनमृष्ट ॥
देखयित छथि निजदेहमे योगीजन परमेश ॥
भक्तिभावना ज्ञानबल, सकल वस्तु सभ देश ॥

सो०—क्षमब सकल अपराध, प्रभुक अनुग्रहवान हम ।
विरहित मायाबाध, अपनेक सेवानिरतरहि ॥
बारम्बार प्रणाम, कयल सकल मुनि मिलिततय ।
कयल वचन विश्राम, रामक छवि देखथि सतत ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

चौपाइ

कहु सानुज बालिक उतपत्ति * जनिका छल अति बल सम्पत्ति
रावण तनि तट तृणक समान * वालिक सदृश शूर के आन

रामप्रश्न मुनि सुनल अगस्त्य * चरित कहय लगलाह प्रशस्त्य
कनक सुमेरु शिखर बड़ गोट * शतयोजन मणिमय मधुकोट
योगारूढ़ शारदानाथ * आनन्दाश्रु बहल लेल हाथ
सेकर धयलनि धयलनि ध्यान * त्यागकयल पुन चरित के जान
तहि सौं जनमल मल कपिराज * कहल विधाता बसह समाज
किछुदिन बितलय हयतौ नीक * सुखित रहइ किछु दिन निर्भीक
यहिगत गत भेल बहुतो वर्ष * ऋक्षाधिप रह सतत सहर्ष
भ्रमयित गिरिवर फल मूलार्थ * विधि निवास मे सकल पदार्थ
वापी एक पड़ल तनि दृष्टि * मणिमय ततजल अमृतक सृष्टि
करय ततय गेला जलपान * दृष्टि पड़ल प्रतिविम्ब समान
भ्रम अन्तर अछि के ई आन * कुदि पड़ला जल कपि अज्ञान
बहरयला पुन जल सौँ फानि * स्त्री बनला पुरुषत्वक हानि
अति विस्मय मन होइनि लाज * कि कहब ककरा रहित समाज
पूजि चतुर्मुख काँ अमरेश * दूइ पहर दिन चलला देश

सो०—देखल से नरनारि, काम विवश सुरपति ततय।
नहिँ सकलाह सम्भारि, वीज पतन हुनि बाल पर ॥
जन्म लेल एक बाल, बालहिँ सौं संज्ञा तनिक।
बाल भेल तत्काल, स्वर्णमाल दयहार चलल ॥
रविहुक तेहने हाल, वीज तनिक ग्रीवा खसल।
जनमल बालविशाल, ग्रीवा सोँ सुग्रीव तैँ ॥
देलनि तनि रक्षार्थ, हनूमान काँ भानु तत।
वन फलादि भक्ष्यार्थ, बहुत दोष रवि नभ चलल ॥

चौपाइ

युगल पुत्र लेल सङ्ग लगाय * सुति रहला कहुँ से अलसाय
भेल प्रात जौं निद्रा भङ्ग * पुन वनि गेला पूर्व्वक रङ्ग
युगल वाल सङ्ग बहुफल मूल * प्राप्त ततय जत विधि अनुकूल
देल विधाता बड़ आश्वास * कीशराज काँ भेल विश्वास
विधि एक अमर दूत वजवाय * कहलनि किष्किन्धा में जाय
कपिपति होथि तहाँ महाराज * सत्वर करु गय ई गोट काज
सकल द्वीप जे बानर लोक * हिनक नियति वशवर्त्ति विशोक
रामक जखन हयत अवतार * असुर विनाश हरण महिभार
तनिकर सभ कपि करव सहाय * देवदूत देल कथा बुझाय
विधिसौँ जेहन बुझल ओ दूत * कपिपति ततक कयल पुरहूत
तेहि दिन सौं किष्किन्धावास * बालि प्रभृति छल छथि निस्त्रास
विधि प्रार्थित अपने परमेश * भूमिभार टारल अकलेश
ब्रह्म अखण्डानन्द स्वरूप * कोन पराक्रम नरवर भूप
तदपि भक्तजन वर्णन करथि * गुणगण गावि दुःख सौँ तरथि
जे कीर्त्तन कर कपिपति जनन * कथा तनिक हो पातक हनन
अथ हम कथा कहैछी आन * श्रीरघुनन्दन सुनु दय कान
रावण कयलनि सीता हरण * प्रकट तकर भल दुर्गति मरण
सनत्कुमार प्रजापति तनय * कृतयुग रावण कयलनि विनय
कयल प्रणाम जोड़ि विश हाथ * प्रभु सर्व्वज्ञ कहल हो नाथ
जनिकर जनन मरण नहिँ एक * भर्त्ता विश्वक मरण विवेक
जनिकर बलसौँ सुर समुदाय * शत्रु जितै छथि अमर वहाय

यजन करै छथि द्विजगण कऊर * योगी ध्यान करैछथि जऊर
ई सभ सशय सनत्कुमार * कहल जाय प्रभु परमोदार
सो०—सुनि पुन सनत्कुमार, योगिदृष्ट सौँ मौन क्षण।
प्रश्नोत्तर उच्चार, समुचित कयल दशास्यहित॥
सुनु सुनु सुत लङ्केश; अव्यय नारायण थिकथि।
जतय न दुःख कलेश, विश्वम्भर तनि जन्म नहिँ॥
तनि बलसौँ सग्राम, अमर जितै छथि योगि पुन।
ध्यान निरन्तर नाम, करथि जपथि संसृति तरथि॥
पुन पुछलनि दशभाल, दैत्यादिक जे विष्णुसौँ।
निहत समर वश काल, जाइत छथि कहु कोन गति॥
असुर मरथि सुर हाथ, से जाइत छथि स्वर्ग पद।
सुनु रावण दशमाथ रहित पुण्यसौँ महि पतन॥
विष्णुक हाथ विनाश, जनिकर से हरिगत पहुँच।
जेहन शुद्धाकाश, निर्म्मल मन नहिँ वासना

चौपाइ

रावण सुनल मुनिक मुख वचन * मन मन करय लगल भल रचन
समर करब हम विष्णुक सङ्ग * रावण मन सङ्कल्प अभङ्ग
मुनि जानल रावण मन वृत्ति * कहलनि भल थल चित्त प्रवृत्ति
सिद्ध अभीष्ट विगत किछु काल * चिन्ता कए जनु मन दश भाल
तनिक स्वरूप कहैछी आज * स्थावर जङ्गम सभ सम्राज
एकवस्तु नहिँ हुनिसौँ हीन * अन्तर अन्दर सभ मे लीन
नद ओ नदी जलधि जत नीर * पर्व्वत पृथिवी गगन शरीर

ओ सावित्री ओ ओङ्कार * ओ पुन सत्य समस्ताधार
कच्छप शेष धरणिधर जतेक * अनल आदि जत ओप्रभुएक
जे जे पड़इछ अँहँकाँ दृष्टि * से सभटा थिक से प्रभुसृष्टि
ओ प्रभु सकल चराचर व्याप्त * हुनकहि मे पुन अन्त समाप्त
नीलोत्पलदल सुन्दरश्याम * चपला वर्णाम्बर अभिराम
जम्बूनद रुचि श्रीतनवाम * प्रेमपरस्पर प्रभुगुणधाम
हिनका देखि शकथि नहिँ आन * ओ प्रभु अपनहिँ अपन समान
हुनकर भक्त ततहि रत प्राण * ततहि निरन्तर मन सज्ञान
मननादिक सौँ निर्म्मल नयन * तनिका हृदय करथि प्रभुशयन
जौँ अछि हुनकर दर्शन काज * सीता मे हयता रघुराज
दशरथसुत बनि आज्ञा पाबि * मायालीला करता आबि
निज माया काँ सीता सङ्ग * दण्डक वन मुनिजन दुखभङ्ग
अनुज सहित वनवन सञ्चरत * कहुकत नरवर लीला करत
अँहुँ हुनि प्रभु मे भक्ति बढ़ाउ * सभ जनितहिँ छी कतै पढ़ाउ

सो०—कहलनि सनत्कुमार, रावण कयल विचार मन ।
करव बिरोध, प्रकार, मरव समर कय वीरता ॥
रावण हर्षित चित्त, युद्धार्थी सभलोक फिर ।
सीताहरण निमित्त, अपनैक हाथैँ मरणहो ॥

दो०—पढ़थि सुनाबथि सुनथिजे, ई चरित्र सभयोग्य ।
सुखअनन्त आयुष्य बढ़, बढ़ अनन्त आरोग्य ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौपाइ छन्द ।

एकसमय उन्मद लङ्केश * युद्धार्थी सञ्चर कतदेश
नारद मुनिसौँ दरशन पाबि * पुछलनि तनिकाँ तटमे आबि
हमर समान कतय बलवान * जत हम करब घोर संग्राम
मुनि कहलनि अछि स्वेतद्वीप * पुष्पक रथपथ सकल समीप
विष्णुभक्त वा तत्कर मरण * श्वेतद्वीप तनिक हो शरण
एहेन सृष्टि नहिँ दोसर ठाम * जाय सकी तौँ हो संग्राम
सुनितहिँ रावण कयलनि गमन * हुनकर अनय करय के समन
पुष्पक चल नहिँ द्वीप समीप * उतरि चलल तत असुर अधीप
वनिता बृद्धा तनिका धयल * पकड़ि घुमाओल दुर्गति कयल
के तोँ थिका एतय की काज * कहर पठाओल कह नहिँ लाज
दशकन्धर उत्तर नहिँ बाज * महामनोदुख तनिक समाज
बड़ अनुचित अयलहुँ एहिठाम * पाओल साहस फल परिणाम
जखना पाओल किछु अवकाश * गमहिँ पड़यला बड़ मन त्रास
धिक अमरत्व कि गञ्जन ग्रस्त * दशमुख दुखचिन्ता सौँ व्यस्त
विष्णुक हाथ मरण से करब * नहिँ पुनि अमर समर सञ्चरब
तकरे हेतु दशानन जानि * सीता हरण कयल हठ ठानि
मातृबुद्धि ओ मनमे मानि * हुनिकर मरब असुरता हानि
त्रिकालज्ञ प्रभु साक्षी राम * अन्त सकल विश्वक विश्राम
स्तुति अगस्त्य मुनि बहुविध कयल * राम सुपूजित निजपथ धयल
सीतासङ्ग विषय अनुरक्त * भाषित बाहर चित्त विरक्त
अनाशक्त प्रभु कर गृह काज * परमेश्वर लीला नरव्याज

रामचन्द्र काँ देलनि फेर * पुष्पक रथ पठाय कुवेर
पुष्पक रावण हरलनि जैह * तनिकाँ जीति छीन लेल सैह
यावत पृथिवी स्थित प्रभु रहत * तावत पुष्पक अहँकाँ वहत
पुष्पक काँ कहलनि रघुराज * अपनैक जखन होयत गयकाज
स्मरण करब तखना हम अयब * अन्तर्हित रहु बड़ सुख पयब

सो०--कार्य्य अमानुषराम, करथि नृपति सन्नीति युत ।
नहिँ अनीति कहि ठाम, वसुधा शस्यमयी सतत ॥
रथ चढ़ि चढ़ि सभ देश, जाथि करथि सभलोक सुख ।
ककरहु हो न कलेश, हनुमदादि सेवक सतत ॥

चौपाइ

एक समय द्विज तनयक मरण * ब्राह्मण कलुषित अन्तष्करण
धर्म्मक पालक श्री रघुनाथ * सकल वस्तु अछि अपनैक हाथ
हम निष्पाप कहल अछि आय * राजा विषय पड़ल अन्याय
पुत्र जिवथि तैँ होउ सहाय * विकल कहैछी करु उपाय
लक्ष्मण रामक आज्ञा पाय * शूद्र एक वन देखल जाय
विप्रक सन करइत आचरण * लक्ष्मण कर तनिकर भेल मरण
ब्राह्मण बालक उठि वैसलाह * द्विज से धन्यो,कहय लगलाह
शिवस्थापना कोटिक कयल * लोकाचारक सत्पथ धयल
एक समय क्रीड़ा आराम * सीता सङ्ग बनल घनश्याम
कहल जानकी प्रभु किछु कहब * कतदिन महिमण्डल मे रहब
देव देवगण कह कर जोड़ि * चलु वैकुण्ठ मर्त्यसुख छोड़ि

वन मुनिपत्नी काँ वसु देव * तनिकाँ सौं हम आशिष लेब
होइछमन वनदेखी जाय * अबितहुँ गङ्गा तीर्थ नहाय
जे रूचि हो से करु प्रभु काज * कयल बहुत दिन पृथवी राज
अयलहुँ जे मन कय सङ्कल्प * तकरो समय रहल अछि अल्प
सीता वचन सुनल प्रभु कान * की कर्त्तव्य धयल प्रभु ध्यान

सो०—कहइतछी एकान्त, करब लोक अपवाद छल।
जनइतछी बृत्तान्त, त्यागब अहँ काँ देव वत॥
जनमत युगल कुमार, गर्भवती अहँसौं वनहिँ।
होयत चरित उदार, शपथ करब अहँ आबि पुन॥
भूमिक बिवर समाय, जायब अँह वैकुण्ठ पुन।
किछु दिन हमहुँ गमाय, जानकि तत अयबे करब॥

पादाकुल दोहा तिरहुति

हास्यप्रोढ़ कथा पण्डित काँ, पुछलनि जखना राम।
कथा प्रसङ्ग पुछल की कहइछ, ग्रामलोक सभठाम॥
माता सभकाँ वा सीता काँ, जे छथि हमरा भाय।
लोक कहैअछि कीसे कहु कहु, हमर शपथ अहँ खाय॥
विजय नाम एक हास्य सभासद, कइलनि सुनु रघुनाथ।
शपथ खाय हम सत्य कहैछी, करइतछी नहिँ लाथ॥
सीताकाँ वनसौं दशकन्धर, हरि लयगेल निजधाम।
से पुन पटरानी छलि सम्प्रति, केहन हृदय छथि राम॥
धोबिनि रूसि गेलि छलि घरसौं, धोबि कहल खिसिआय।

जेहने नृपति प्रजागति तेहनि, राजा कर से न्याय ॥
जन सभ चूप भूप रघुनन्दन, कहलनि सभकाँ जाय ।
नयन सजल लक्ष्मणकाँ केवल, कहल रहस्य मँगाय ॥
लोकमध्य अपवाद सुनलअछि, सीताकृत विस्तार ।
सीता त्याग करब हम सम्प्रति, हमरा चित्त विचार ॥
प्रातहिँ सीता रथचढ़ाय अहँ, लक्ष्मण सत्वर जाउ ।
मुनिवाल्मीकिक आश्रम वन मेँ, चित्रकूट पहुँचाय ॥
जौं अन्यथा करी तौं हमरा, मारी अहँ तरुआरि ।
हा ! बिधिकृत हमरा छुटइत छथि, सीता साध्वी नारि ॥

सो०— रथलय प्रातहिँ जाय, लक्ष्मण सहित सुमन्त्र तहँ ।
प्रभु अनुशासन पाय, वैदेही काँ कहल से ॥

मणिगण छन्द

चढु चढु रघुवरघरनि सुरथ मेँ । कहब सकल हम चलयित पथमेँ
हठ रथ चढ़लि प्रभुक रुचि मनलै । अनमनि सनि चललिहि विनु जनलै
सुरसरि उतरि जइति मुनि वनमे । तखन प्रकट किछु लछमन कनलैं
बुझथि न प्रभु रुचिवर छविसदना । पुछल तखन लछमन विधुवदना

प्लवङ्गम छन्द

देवर जनु करू खेद नयन जलधार की ।
श्री रघुवर पदकमल प्रेम विस्तार की ॥
सत्वर घुरि घर चलब देखि मुनिकामिनी ।
सुन्दर नव घनश्याम थिकहुँ सौदामिनी ॥

जौँ जनितौँ हम एहन साथसङ्ग आनितौं।
नारि सहित मुनिलोक सकल सन्मानितौं॥
जौँ कानव एहिठाम कहव अहँ भायकैं।
ओत सभ मिलि सभ्यमेँ रहव लजायकैँ॥

हँसीछन्द तिरहुतिदेश

हा वैदेही हा वैदेही, वचन कठिन मुखसँ न किछुआवै।
सीता साध्वीं धीरा हँसी, अँहक सुकृत सुरनर मुनिगावै॥
ओ राजा अज्ञाके टारै, विधिक लिखल छलजन न घटावै।
जे चाहै से से निर्व्वा है, सुरपुरवश अथ नरक पठावै॥

अभिराम अहीर छन्द

हा ! न हमर किछु दोष 'जानकि' परिहरु मानसरीष।
शपथ देल रघुनाथ 'जानकि' किछु न कयल हम लाथ॥
की अपराध विचारि 'जानकि' त्यागल गुणमति नारि।
कत मन करब कठोर 'जानकि' नयन सतत वह नीर॥
हमरे गुरु अपराध 'जानकि' आनल वन वह्नि व्याध।
चललहुँ हम कय त्याग 'जानकि' जाउ जतय मन लाग॥

चञ्चरी छन्द

की करू कत जाउ हाय उपाय सूझ न नारिकैं।
नाथ भास्करवंशपङ्कजभानु देलनि टारिकैँ॥
भेल की अपराध से कह लोक के वन आविकैँ।
आढ्यकी जनरङ्क की दुखभोग देह इ पाविकैँ॥

अमृतमति छन्द

कहलनि जायक वनमेँ, रघुवर की गुनि मनमेँ ।
झुकि झुकि ताकथि धरणी, बड़ दुखसिन्धु न तरणी ॥
हममन भेलहुँ विकला, गति थिक विश्वक चपला ।
कहब न दूषण अनका, सकल शुभाशुभ जनकाँ ॥

विष्णुपद छन्द

माय अवनि विष्णुरमणि, बश तरणि शून्यतरणि ।
हाय मरव कष्टतरव, शुष्कवदनि साध्वि रमणि ॥
आश मनक नाश त्तणक, घोर वनक भीतिजनक ।
नेत्रकमल मेघसजल, माँथधुनथि चन्द्रमनथि ॥

तिरहुति ललितविपरीत हरिपद छन्द

रघुवर बड़ महराजे, कयल उचित नहिँ सम्प्रतिकाजे ।
हुनकर रमणि कहाये, दुखित वसव हम घनवन जाये ॥
हमकि कहव दुखभारे, विधिक लिखल जन के टारे ।
समय न छुटल समाजे, एखनहुँ धरि मन उपगतलाजे ॥
गर्भभरालस अङ्गे, नहिँ परिचारिणि जनि एक सङ्गे ।
मरितौं गरल हम खाये, होएत बड़गोट कुल अन्याये ॥
आब वचत नहिँ प्राणे, रघुवर हृदय कि भेल पषाणे ।
यहन करत के आने, हितजन वचन न धयलनि काने ॥
कतदिन काटव कानी, कयल कुटिल जन वड़ मनहानी ।
भूपति होथि नमित्रे, सुनितहिँ छलहुँ से देखल चरित्रे ॥

तिरहुति पादाकुल दोहा छन्द

करुणागार उदार प्राणपति, वनदेल दोषलगाय रे।
देवर दोष विधिक हमकी कहु, जनिघर धर्म्म न न्याय रे॥
हमरहि हेतु दशानन मारल, कपिगण सङ्ग लगाय रे।
तखन पतिव्रत हमर देखल सभ, अनलमे गेलहुँ समाय रे॥
नैहर जौं मिथिला चलि जायब, कहत बापकी माय रे।
पुरुष-परशमणिकर हम सोपल, अइली कि नाम हँसाय रे॥
सिरिससुमन वरु होय अशनिसन तेहन, अशनि भय जाय रे।
से बरुहोय होथि नहिँ अकरुण, अँहँकाँ बड़का भाय रे॥
कि कहब कहय योगि नहिँ रहलहुँ, भेलहुँ सबहिँ काँ भार रे।
कतहुँ रहब जानकि जन कहते, श्री रघुनन्दनदार रे॥

बियोगिनी मालब छन्द

रघुवरदेल विपिन वास, ओ हुनिहास नारिमरब हम बनत्रास।
एकसरि नारिकतय जाउ, विषखाउ विधिनिर्दय कत गोहराउ॥
रघुवर मन की निर्दय, देल एतकय हमरहि भागकि दुखचय।
बिधिहुक विधि ओ रघुराज, किछु के वाज प्रभु छथि कयलनिभल काज॥

दोवय छन्द

लक्ष्मण सीता काँ पुन कहलनि, अपनै बाँ की कहवे।
सर्व्वसहा जननी छथि अपनैक, कठिन कष्ट सभ सहवे॥
ई आश्रम बाल्मीकिमुनिक थिक, गेलिजाय तव माता।
दोष न हमर प्रणाम करैछी, साक्षी सकल विधाता॥

वरवा छन्द

लक्ष्मण कहि घर चललाह, घुरिनहिँ ताक ।
पहुँचलाह रघुवरतट, नहिँ मुख वाक ॥

रूपक चौपाइ

जननि धरणिसनि, रघुवर सन पति,
तिरहुत जनम सकल जन कह सति ।
हयत यहन गति, छलहुँ कि जनइत,
जनम वितत विधि, कनयित कनयित ॥

चौपाइ

आश्रम निकट एक जनि नारि * एहेन के होइति भुवन दशचारि
विकला कनयित छथि एहिठाम * के थिकि के पुछ परिचय नाम
शिष्य कहल मुनि कयलनि ध्यान * हुनकाँ सतत त्रिकालक ज्ञान
मुनि वाल्मीकि कहल लय आउ * पूजा हुनकर सविधि कराउ
थिकथि जानकी रघुवरदार * जे हरलनि अछि अवनी भार
मुनिपत्नी सह कयल निवास * नयन सजल मुख आव न हास
वड़ आदर सभ कर नित आबि * किछु गुरु कार्य्य एतय अछिभावि
मानसध्यान करथि मुनि जैह * बाहर सीता देखति सैह
देखि देखि सीता ब्यवहार * मुनि पत्नी काँ प्रीति अपार
कनयित देखथिनि करथिनि चूप * जनमत तनय होयत से भूप
सोहर सुनव तनय मुख हेरि * जन्म सुफल होयत से फेरि
की घनखन हग चुप कर बूढ़ि * सुता विदेहक होइछि मूढ़ि

सो०—त्यागि देल सभ भोग, आदिदेव सीता रहित।
सतउज्ञान की योग, अतिविरक्त मुनिव्रतनिरत॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

सो०—नहिँ अछि ककरो काज, राजकाज मन्त्री करथु।
अहँ रहु हमर समाज, लक्ष्मण काँ रघुनाथ कह॥

तिरहुति वियोगि मालव छन्द

कथक कथक नहिँ तट आव, जलज जलज मन वनदाव।
कनक कनक सन मदकर, नयन नयन धनि मनपर॥
करक करक कय वैसलहुँ, मनम मनम दुख पैसलहुँ।
थिकथि थिकथि सती जेहनि, कहक कहक की ओ तेहनि॥

गतप्रत्यागतवन्धोऽयम्

दोवय छन्द

अविकल भोग करु प्रारब्धक, करम लिखल परमान रे।
के बुझ कोनछुन देहसौं जायत, चेतन अपन परान रे॥
कालहिँ विनश अमर अमरावति, नभ ग्रहगण रविचान रे।
जाय सुमेरु प्रलय प्रलयानल, जल विनु उदधि महान रे॥
विनशय धरणि कतय धरणीधर, विभु परिशेष न आन रे।
क्षणिक देह में नेह निरर्थक, दुख कारण अभिमान रे॥
परमेश्वर मायारस विलसित, नर पामर की जान रे।
रामचन्द्र कह बृथा चिन्तना, करु ईश्वर गुण गान रे॥

दोवय योगिया छन्द

ममता कौं परित्यागू ।
नहितौं दुर्गति आगू ॥

यावत मलिन वासना रहती, तावत सुख नहिँ पयवे ।
शुद्ध वासना युक्त जखन मन, तखन अभय पद जयवे ॥
रजो रेत संयोग गर्भ में इन्द्रजाल की भारी ।
सकला वयव सहित चैतन्यक, बाहर बड़ व्यवहारी ॥
भव सन्ताप हरण परमेश्वर, व्यापक तन मे वासा ।
अपना मे अपनहिँ अपनायव, जायत्र गति निस्त्रासा ॥
राज्यदार सुत आदि देल हठ, किछु संयोग न रहते ।
छिति आदिक संघात विलयमे, मृतक लोक जित कहते ॥
जनिकर जनम मरण नहिं होइछ, निर्गुन ब्रह्म क हैछी ।
छथि अपरोक्ष मनन करु निश्चय, जौं भवमोक्ष चहैछी ॥
तिल मे तेल दुग्ध मे घृतसन, भूत भूत विज्ञाने ।
मनसौं मथन करू सुख पायब, विदित उपाय न आने ॥

सो०—लक्ष्मण जोड़ल हाथ, देव देव करुणा भवन ।
क्षमाशील रघुनाथ, आत्मज्ञान विवेक कहु ॥
तखन देवरघुराज, कहल सकल छल रहित तत ।
लक्ष्मण मन सभ काज, बनल विवेकी रहथि नित ॥

रूपमाला छन्द

मिहिर सन गत तिमिर रघुवर, सतत शून्य निवास ।

वन्यदोषाभीत करवर, तट असीत विलास ॥
सरस सारस सन सलक्ष्मण, राज श्रीद्विजराज।
चिरवन प्रियवास वनचर, ससित सतत समाज ॥

चौपाई

मुनिगण बहुत विकल एक समय * लवणासुरसैं अनुखन सभय
यमुनातीर मुनिक आवास * मुनिवृत्तिहु मे बाढ़ल त्रास
भार्गव च्यवन चलल अगुआय * मुनि असंख्य लेल संग लगाय
राघव दर्शन कार्य्य प्रधान * रघुनन्दन कयलनि सन्मान
बड़ स्वागत पुछलनि की काज * सभ मुनिजन आयलछी आज
ब्राह्मण हमर सतत छथि देव * हुनकर टहल करब यश लेव
सभ मुनि कृपाकयल अछि आइ * आज्ञापाबि टहल मे जाइ
हम छी ब्राह्मण सभहिँक भृत्य * करवे करब कहब जे कृत्य
सुनि मुनि वचन कहय लगलाह * लवणासुरक कर्म्म अधलाह
कृतयुग मध्य दैत्य मधुनाम * सुर द्विजगणक भक्त सभठाम
तनिकाँ देलनि शम्भु त्रिशूल * होयता भस्म अनलवत तूल
रावणअनुजा भार्य्या तनिक * कुम्भीनसी नाम छल जनिक
तनिसैं लवणासुर उत्पन्न * मुनिहिंसक यज्ञादिक वन्न
अयलँहुं शरण अशक्त पडाय * प्रभु रघुनन्दन होउ सहाय
ई सभ कष्ट हरत के आन * अयलँहुँ शरण ताकि भगवान

दो०—कहलनि सत्य-प्रतिज्ञ पभु, मरत दुष्ट निर्भीक।
नहि भय नहि भय सकल मुनि, लवणासुर की थीक ॥

जयकरी छन्द

मुनिजनकाँ प्रभु कयल विदाय * तखन कहल प्रभु सुनु सभ भाय
के मारत गय असुर प्रचण्ड * के धर समर तीर कोदण्ड

दो०—भरत राम महिपाल सौं, प्रणत सुवचन उचार।
हम मारब खल लवणकाँ, प्रभु आज्ञा अनुसार ॥

रूपमाला छन्द

कहल तत शत्रुघ्न करयुग जोड़ि कैं यहिठाम।
नाथ लक्ष्मण कयल बहुबेर असुर सौं संग्राम ॥
भरत नन्दीग्राम में कृश नियम संयमवान।
हमहिँ लवणासुरक हन्ता होयब हे भगवान ॥

चौपाइ

सुनि शत्रुघ्नक वचन गम्भीर * समुचित कहल देव रघुवीर
तनिकाँ लेल अङ्क आरोपि * देल दिव्य शर रघुवर सोपि
कहलनि यहिसौं शत्रु विनाश * करु शत्रुघ्न लाभ मन आश
लक्ष्मण सौं सम्भार अनेक * मंगबाओल कयलनि अभिषेक
राजा भेलँहु अँहा मथुराक * सकलमनोहर धर्म्मधुराक
लवणासुरक विनाश उपाय * जखना घरसौं कानन जाय
नाना जन्तु पकड़िकैँ खाय * के नहि तकरा डरय डराय
तखनहिँ हुनकर रोकब द्वारि * धनुषवाणधर लेब निवारि
शङ्कर देल शूल घर धयल * लवणासुर हिंसालय अयल
जेहन रघुत्तम कहल उपाय * से शत्रुघ्न कयल विधि जाय

आश्रोत क्रुद्ध लड़त तनि मारि * मुनिजन मनक कष्ट देव टारि
ओ वन सुन्दर मधुवन नाम * ततहि करव अँहँ सुन्दर धाम
जायत घोड़ा पाँचहजार * तकर अर्द्ध रथ सहित सवार
षटशत वारण वर सम्पत्ति * आश्रोत तीनि अयुत तत पत्ति
भ्राता काँ लेल हृदय लगाय * आशिष दय प्रभु कयल विदाय
जेहन रीति कहलछल राम * तेहने कयल जाय संग्राम
मधुसुत काँ मारल संग्राम * मथुरा जनपद कयलनि धाम
सीताकाँ जनमल सुत यमल * विधुमुख लोचनसौं जितकमल
मुनि वनितागण सोहर गाव * हर्षक नोर नयन भरि आब
तनिकर नामकरण मुनि कयल * कुश लव नाम क्रमहिँ सौं धयल
सीता बालक युगल विनीत * भेला मुनिजनसौं उपनीत
क्रम क्रम विद्या पढ़लनि ढेरि * हो अभ्यास सुनथि एकवेरि
सीता तनय रूपगुण अयन * विधिसौँ कयलनि वेदाध्ययन
सकल रमायण देल पढ़ाय * मुनि वाल्मीकि सुप्रीति बढ़ाय
स्वर सम्पन्न सुयुगल कुमार * तन्त्रीलययुत गाब उदार
वन चलयित मुनिजन जे सून * अतिआश्चर्य्य मनहिमन गून
वैदेही सुत युगल समान * त्रिभुवन कतहु सुनल नहिँ गान
मुनिजन सुनथि सहित अनुराग * समय समय गावथि से राग

सो०—प्रथमहिँ भैरव राग, मालकोश हिण्डोल पुन।
श्रवण मनोहर लाग, दीपक श्री ओ मेघ षट ॥

पादाकुल दोहा

सुस्वर सरस सराग मधुरतर, सालङ्कार प्रमाण।
स्वरपदछन्द सुताल सुलययुत, युगल कुमर कर गान॥

चौपाइ

स ऋ ग म प ध नी ई श्वर सात * स्वर प्रस्तार वदन अवदात
उच्च निषाद तथा गान्धार * नीच ऋषभ धैवत उच्चार
स्वरितस्वर हो यहि सौँ आन * कुशलब शिव सुगीतिकाँ जान
षड्जस्वर रट मत्तमयूर * चातक रटय ऋषभस्वर पूर
अजा उचार करय गान्धार * मध्यम स्वर काँ क्रौँञ्च उचार
कोकिल पञ्चमस्वर कर गान * धैवत मण्डुक वचन समान
स्वर निषाद गर्जित गजराज * राग कुशीलव कण्ठ समाज
हास्य शृङ्गार गीति शुभ वेरि * पञ्चम मध्यम स्वर काँ टेरि
वीर रौद्र अद्भुत प्रस्ताव * षड्ज ऋषभ स्वर काँ से गाव
गीति करुणरस रीति विषाद * स्वर गान्धार प्रचार निषाद
गीत विभत्स भयानक जखन * धैवत स्वर उच्चारक तखन
एकइशगोट मूर्छना नाम * वाइश श्रुति सम्मति तेहिठाम
अथवा श्रुति कह चौदह गोटि * चौदह गोटि मूर्छना कोटि
रामायण कर कुशलव गान * हरिण हजार सुनथि दय कान
नहिँ वालक न राग अवसान * कुशलव कुशल सकल मतजान
अथ एक समय राम महिपाल * अश्वमेधमख करथि विशाल
विधि आरम्भ करय लगलाह * सकल निमन्त्रित मुनि चललाह

कनकमयी सीता निर्म्माय * यज्ञ कयल जन देखय जाय
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यक जाति * मन घन उत्सव चल दिन राति
मुनि वाल्मीकि कयल प्रस्थान * कुशलव शिष्य सङ्ग भगवान
ऋषिवाटक लग जखन गेलाह * सुमुनि समाधिविरत भेलाह
कुशपुष्कलनि गुरुकाँ ततजाय * ज्ञात सकल गुरु सेवा पाय
देही काँ संसृतिसौँ वन्ध * अथवा मुक्ति युक्ति निर्द्वन्ध
कहलजाय गुरु हमरा आज * सेवक शिष्य अनन्य समाज
मुनिवाल्मीकि कहय लगलाह * दिव्यसमाधि सुखी जगलाह
थिकथि चिदात्मा सतत अदेह * देह दृष्ट ई तनिकर गेह
मन्त्री थिकथि तनिक अभिमान * अपनहिँ तनिकाँ कयल प्रधान
तनतादात्म्य चलल विस्तार * दृढ़ सङ्कल्प निगड़ व्यवहार
पुत्रदार गृह आदि जतेक * सभमे ममता बढ़ल अनेक
कय सङ्कल्प करथि पुन शोच * संसृति नाना तरहक रोच
उत्तम मध्यम अधम शरीर * सत्वरजस्तम सभमे फीर
तमोवृद्धि पर गुण हो ह्रास * कृमिकीटादिक होथि प्रकाश
सत्व रूप सङ्कल्प प्रधान * सतत परायण धर्म्मज्ञान
बड़साम्राज्य अदूर सुमोक्ष * विद्यमान सुख हो अपरोक्ष
रजोरूप सङ्कल्प प्रभाव * सद्व्यवहार विशुद्ध स्वभाव
पुत्रदार धनसम्पति पाव * रजोगुणैक नृपति वनिआव
त्रिविध त्याग सङ्कल्प विहीन * मनसौं मनन न होयव दीन
वर्ष सहस्र बहुत तप करब * सुख दुख चक्र सतत सञ्चरब
रहथि पाँच मन ज्ञान समेत * मति न विचेष्टा चलथि निकेत

कहथि परमगति श्रुतिसिद्धान्त * तनिके नाम कहथि बुध शान्त
जखन छुटल सङ्कल्पक जाल * जीव ब्रह्मता लह तत्काल
कुशलव कुशल रहव सभठाम * वृत्त सुषुप्त चित्त विश्राम

इति श्री मैथिलचन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

जयकरी छन्द

काज न करब एक अगुताय * ई देल मुनि वाल्मीकि शिखाय
रामचन्द्र बड़ गोट महराज * आयल छी अँहँ तनिक समाज
सुनता जखन अँहाँ मुह गीति * बाढ़त तनिकाँ अँह मे प्रीति
अनतय गायब पड़तनि कान * होयता वड़ प्रसन्न भगवान
सुनता सभामध्य मँगबाय * गायब गीत चरित समुदाय
ओ सन्तुष्ट देता धनढेरि * ग्रहण न अँहाँ करब तहिवेरि
बाहर बाहर कुशलव गान * रामचन्द्र काँ पड़लनि कान
मनदय सुनल तनिक प्रभुगान * त्यागल मन प्रवृत्ति सुख आन
पाठ अपूर्व जाति भल छन्द * गेय समन्वित कर आनन्द
प्रभुमन भेल सुनव हम गान * करब सदसदशामे सन्मान
अब प्रभु काँ कर्म्मान्तर काज * सभा बजाओल राजसमाज
मुनि पण्डित पटुतर प्राचीन * पौराणिक संशय सौं हीन
सकल शास्त्र वेताजन अयल * निजजन सहित सभाप्रभु कयल
कुशलव गायन काँ अनवाय * स्वागत सहित विहित जे न्याय
कुशलव छथि देखल तहिठाम * अनिमिष लोचन भेला राम
सभापरस्पर सभजन वाज * गायन तुल्य रूप महराज

वल्कलि जटिल न रहितथि वाल * तौं समतूल राम महिपाल
राघव सौँ नहिँ बुझि पड़ आन * कथा करथि सभ कानहिँ कान

सो०—कुशलव कयलनि गान, मधुर मधुरतर शुद्धस्वर ।
सुनगन्धर्व जे कान, साधु साधु कह सभ्य सभ ॥
यहन सुनल नहि साम, सकल सभामन हरण धुनि ।
कहल भरत काँ राम, देवक हिनका अयुतधन ॥

चौपाइ

जखन सुवर्ण देवय लगलाह * कुशलव तखनहि कहि चललाह
हम वनवसी कन्दफल खाइ * धनसंग्रह सपनहुँ नहि जाइ
ई कहि मुनिसन्निधि संप्राप्त * रामचन्द्र मन विस्मयव्याप्त
बुझलनि वैदेहीक कुमार * पुरुष आनके यहन उदार
कहलनि प्रभु शत्रुघ्न बुझाय * हिनकाँ सभकाँ लाउ वजाय
जनिकर जनिक कहैछी नाम * सत्वर आवथु सभ यहिठाम

सवैया छन्द

मारुतपुत्र सुषेण विभीषण, अङ्गद वाल्मीकि वजवाउ ।
सीता सहित रहित दुर्जन सौँ, वैदेही सौँ शपथ कराउ ॥
रामक उक्ति कहल सभ जनकाँ, कहलनि मुनि पुन सुनिकैं नीक ।
प्रातहि शपथ करति महितनया, न्यायनृपति काँ उचिते थीक ॥

पादाकुल दोहा

नारी सभकाँ परमदेवपति, गतिनहिँ तनिका आन ।
मुनि रघुवर सम्वाद सकल जन, सुनलनि कानहिँ कान ॥

चौपाइ छन्द

कहलनि रघुबर काँ मुनिराज * करती सीता शपथ जे आज
सकल शुभाशुभ जानथु लोक * देखथु आवि रोक नहिँ टोक
मिथ्या जन अपवाद लगाव * पापकरुचि जनु मन निधि पाब
ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्यक जाति * देखय आयल शूद्र जमाँति
अयला ततय महर्षि अनेक * वानर बृन्द सुभक्ति बिवेक
मुनिवाल्मीकि शीघ्र अयलाह * वैदेही काँ सङ्ग लयलाह
चललि अधोमुखि मुनि चल आगु * गदगद कण्ठ सती भय त्यागु
लक्ष्मीसनि अयली मखताहि * साधुवाद वाढ़ल धुनि जाहि
सीताकाँ वाल्मीकि सहाय * सतीशिरोमणि समुचित न्याय
कहलनि मुनि वाल्मीकि विचारि * सतीशिरोमणि सीता नारि
त्यागल पर अपवादक भीति * अहह रघूत्तम कयल अनीति
हमरा आश्रम छलनि निवास * पतिव्रत रत मन छलि निस्त्रास
ई कुशलव छथि अँहँक किशोर * सुनथि रघूत्तम वह दृग नोर
यमलजात एकतरहक गात * जेहने अपनै हिँनकर तात
वरुणक हमछी दशमकुमार * शपथ करैछी वारम्वार
तपफल हमरा आब न काज * जौँ दुष्टा सीता महराज
सुनि मुनि वचन कहल पुनि राम * दृढ़प्रतीति हमरहु एहिठाम
अपनेक वचन सुनल हम कान * एहिसौँ प्रत्यय अछि की आन
पूर्व्वहुँ सीता लङ्का देश * जनित प्रतीति अनल परवेश
साधुवाद सुरगण मुखसून * निज वर आनू सीता पून
क्षमाकरव मुनि नृपतादोष * त्यागल सतीशिरोमणि रोष

थिकथि कुशीलव हमरे तनय * कयल बहुत हम साहस अनय
ब्रह्मा इन्द्र देवगण सकल * देखथि रामचरित्र निर्व्विकल
प्रजासकल मन नवसुख सृष्टि * त्यागलराम आज दुर्द्दष्टि

सारवती छन्द

आइलि जानकि देवसभा, श्रीमति चम्पक हेमनिभा।
आनय वारिज श्रीवदना, प्राञ्जलि भाष जगत्सदना ॥

मिथिलासङ्गीतानुसारिमाली छन्दः

सुनु सुनु सकल सदस्य सत्यकरणी।
शपथ करैछी आज रघुवर घरणी ॥
मनसहुँ आनक चिन्तना नहिँ कयलँहुँ।
रघुवरप्रति आश सर्व्वशोकहरणी ॥
सत्यपतिव्रत जौँ तनयदुहु प्रभुहिक।
हमरा विवर देती माता देवी धरणी ॥
खलउपहास-तम-शमन-उदित भेल।
सज्जनमानसकञ्ज - वोध सत्यतरणी ॥

सवैया छन्द

फणिपति फणपर सिंहासनवर, तेहिऊपर भूदेवि विराज।
धरणी विवर उपर जन देखल, बड़ अद्भुत मन मानल काज ॥
पुत्रि पुत्रि कहि कहि सीताकाँ आे लेल अङ्क, अपन आरोपि।
गेलि पताल सहित फणिपतिसौँ विवर मृत्तिका सौँ दयतोपि ॥

चौपाइ

कयल अमरगण सुमनकबृष्टि * उठिगेल महिसौँ सीतासृष्टि
सती शिरोमणि एहनि के आन * धन्या कहि कहि कर जन ध्यान
सीता गुणगण सबजन गाब * रघुनन्दन मन चिन्ता आब
प्रभुक स्त्रवित लोचन मुख ताकि * बाँचथि राम संभँहिँ मन चाँकि
मारुतसुत स्वामिनि कहि कान * सभसौँ हो एत विधि बलवान
रामचन्द्र मूर्छित खसलाह * शोकसमुद्र विवश भसलाह
रघुवर निकट बिकल जन आब * कनइत प्रभु प्रभु कहथि जगाब
क्षणमे भयगेल आनक आन * जगलाह अनमन मन भगवान
करुणकलाप अश्वक्रतु छन्न * विहित यज्ञविधि भयगेल वन्न
ऋषि ब्राह्मणगण बहुत बुझाब * नहिँ प्रभु उचित शोकप्रस्ताव
विद्यमान छथि युगल कुमार * कनइत छथि करु नयन उघार
नहिँ उन्मीलित होयत आँखि * विश्व सबनगिरि शक के राखि
प्रभु पुन सजल उघारल आँखि * हा वैदेही सति सवि भाखि
क्षमाँ कयल अहँकत अपराध * अनुचित वचन कहल नहिँ आध
अहँक वियोग सहब नहिँ आब * मुख सुख कानन शोक जदाव
सहा न सहल अवज्ञा आज * देखल कर्म्म होइछ मन लाज
छल अधीन मे दिव्य विभूति * ततहु चलल खल जन छल जूति
बन्धुक वचन धयल नहिँ कान * राजा घर मे दैव प्रधान
जे छल मखविधि शेष सुकाज * कयलपूर रघुवर महराज
ऋत्विक मुनिकाँ कयल विदाय * धनरत्नादि तुष्ट समुदाय

तिरहुति गीत

कत हम गुण कहब हुनक 'हा पुनपुन' भयगेल हमर विषय सुन
खलक वचन सुनि वन देल 'की मनभेल' रमणि परशमणि कतगेल
एत छुति जौँ हमजनितँहुँ 'कीमनितँहुँ' अरजि अरजि दुख कनितँहुँ
लगइत छल गृह गृहसन 'विधिपरसन' दुर्लभ पुन हुनि दरशन
गुणवति रमणि बिसरलनि 'दुखपड़लनि' उचित धरणि धनि हरलनि
आब कि हम सुख पायब 'कतजायब' चिन्तित जनम गमायब
करब न हम नृपतिक सुख 'बड़मनदुख' कत विधु कत जानकि मुख
धरणी गर्भ चलकवेरि 'ई मुखहेरि' कयल प्रणाम बहुत वेरि
सुखित सतत ओ रहतीहि 'दुखकहतीहि' सर्वसहासनि सहतीहि
हमहिँ वियोग विकलमन 'नहि सुखक्षन विफल बुझल मन जन घन
रहितँहुँ सुखित मिलित कोक 'कीसुरलोक' विधिक लिखल के केजन रोक

दोवय छन्द

पामर सङ्ग बसि बसि हँसिहँसि हमकयल उचित नहिँ कर्म्म रे।
बैदेहीसनि वनिता त्यागल, नहिँ चति गुनल अधर्म्म रे॥
बड़ अपराध कयल हम हुनकर, नहिँ हो महिसौँ माँगि रे।
बैदेहीक वियोग जन्मभरि, रहल हृदय मे साँगि रे॥
हा कव तेहन बदन हम देखब, कतय हुँनकसन आँखि रे।
कतय सुनव ओ मधुर वचन हम, धिक धिक जीवन राखि रे॥
कतगोट चमा चमा तनयाकाँ, धयल मनहुँ नहिँ कोप रे।
आब आब सद्भाव चित्तसे भेल मनोरथ लोप रे॥

चौपाइ

कयलनि यज्ञक्रियाक समाप्त * सीता शोक हृदय दुख व्याप्त
चलला विमन अपनपुर राम * कुशलव सङ्ग लेल तेहिठाम
सुख निवास मे सुख नहि आब * चिन्तित सतत विकल पछताव
अयला राम धाम गत राम * कयलनि तनय सहित विसराम
पौषक शरसम रघुवरसङ्ग * तन भय कर थर थर गतपङ्ग
रहथि रहस्य विषय परित्याग * ब्रह्मज्ञान ध्यान मन लाग
कौसल्या गेली तहिठाम * नारायण बुझि कयल प्रणाम
प्रभु परमेश्वर कहू कतेक * अपने पुत्र पुण्य अतिरेक
आयल समय आयु अवसान * कहल जाय भवनाशन ज्ञान
सुनि दयालु कहलनि सुनुमाय * पूर्व्व तीनपथ देल सुनाय
कर्म्मज्ञान पुन भक्ति सुयोग * तेसर सुलभ शमन भव रोग
हिंसा दम्भादिक उद्देश * भेददृष्टि छथि सेवक वेश
से तामस जन हमर कहाव * गुणकृत हुँनकर उचित स्वभाव
चाहथि फलभोगक अभिलाष * धनयश काम सतत मनराख
प्रतिमादिक मे पूजन करथि * राजस भक्त नाम अनुसरथि
परमेश्वर मे अर्पित कर्म्म * कर्म्मक्षयहो पावी शर्म्म
करथि भेदमति थिक कर्त्तव्य * सात्विक भक्तनाम धर्त्तव्य
एहिसौँ योग देबि की आन * भक्ति पथक छथि योग प्रधान
गुणातीत भय हमरहि पाव * सतत कामनाहीन स्वभाव
कर्म्मयोग थिक परमप्रशस्त * हिंसा दोषादिक हो अस्त

हरिपद छन्द

हम अनन्तगुण आलय मे जनि, मनोवृत्ति दृढ़ जाय।
गणगण सुनि सुनि जनि सुरसरिजल, सागरमध्य समाय॥
निर्गुण भक्ति योग लक्षण से, भक्ति अहेतु विचरथी।
सालोक्यादिक मुक्तिहुँकाँ जे, देलहुँ ग्रहण न करथी॥
दर्शनहमर कथनगुण पूजन मति नन्दन जन भक्त।
सकलभूतमे हमर भावना, सङ्ग असक्त विरक्त॥
सभहिक मानदीन अनुकम्पा, मैत्रीसँ सभ अपनै।
सँय्यम नियम शील सन्तोषित, सन्मर्य्यादा थपनै॥
श्रवण करथि वेदान्त सुवाक्यक, कीर्त्तन हमरा नामक।
ऋजुतासँ सतसङ्ग निरन्तर, त्याग अहम्मति गामक॥
हमरा धर्मक अनुरत गुणगण, श्रवण करथि नितकान।
जेहन वायुवश गन्ध निजाश्रय, नासायुगमे आन॥
शकल भूतमें रहथिं व्यवस्थित, आतमा केवल जान।
योगाभ्यास नित्यनिर्म्मल हो, अनुभव दृढ़विज्ञान॥
एहिसँ आन सकल पूजादिक, बाहर बाहर जानव।
क्रियाजनित कतभेद द्रव्यसँ, हमरे तोषण मानव॥
तावत प्रतिमादिक पूजा मे स्थिति कल्याण निमित्त।
यावत सकल एक अतमा मे, भासित हो नहि चित्त॥
जनिकाँ भेदबुद्धि होइछ मन, मरणक तनिकहि त्रास।
हमरा एकबुद्धिसँ देखू, पूरत सभमन आश॥
ईश्वर जीव भेद नहि मानव, भक्तिज्ञान शुभयोग।

दुइयोगहुमे एक ग्रहण करु, पायव नहिँ दुखभोग ।।
सकल हृदिस्थित जननी हमरहि, पुत्रभाव करुमनमे ।
कौशल्या कुशलासति कयलनि, पड़लि न भव वन्धनमे ।।

सो०—सुनि सुनि तिनुजनिमाय, पाय दिव्य उपदेश काँ ।
तनतजि तनवर पाय, जाय स्वर्ग दशरथ मिललि ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उतरकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

चौपाइ

अथ एक समय युधाजित नाम * आबि अयोध्या भरतक माम
रघुनन्दन आज्ञाकाँ पाय * निजपुर लयगेल भरत लेआय
महती सेन। समर अभीति * गन्धर्वक नायक जन जीति
नाम पुष्करावति जे धाम * पुष्कर भेला नृप तहिठाम
तक्षशिलापुरमे पुन तक्ष * सुतदुहु नरवर भरत समक्ष
भरत कयल सत्युग अभिषेक * बड़धन धन्य पूर सविवेक
अपने आबि अयोध्या भरत * रामचन्द्र सेवामे निरत
पुन लक्ष्मण काँ कहलनि राम * पश्चिमदेश करू संग्राम
महामल्ल दुर्जन जिति लेब * तनिक राज सुत दुनुकाँ देब
अङ्गद चित्रकेतु जनि !नाम * उचित निवास देब दुइठाम
कय अभिषेक शीघ्र पुनि आउ * हमरा छोड़ि अनत जनु जाउ
जेहन रघूत्तम आज्ञा वचन * सत्वर लक्ष्मण कयल से रचन
रघुनन्दन पदसेवा निरत * वन्धु यहन दोसर के करत

अथ एक समय राम महिपाल * पुर तापस वनि पहुँचल काल
लक्ष्मण द्वारपाल तहिठाम * मुनि पुछलनि कत छथि नृपराम
हमर आगमन ततय सुनाउ * प्रभु रुचि पाबि ततय लयजाउ
सुनि लक्ष्मण गेला तहिठाम * छलछथि देव देव जत राम
दर्शनेच्छु तापस एक द्वार * आयल छथि हो जेहन विचार
हुँनि मुनि काँ सादर लय आउ * वत्स ततय सत्वर अँहँ जाउ
तेज पुञ्ज मुनि बनल विविक्त * अनलराशि उपमा घृतसिक्त

दो०—दीप्यमान निज तेजसौं, ओ देखल रघुवीर ॥
मधुर मधुर कहलनि ततय, आशिष वचन गभीर ।

चौपाइ

बड़ स्वागत पूजन विधि सकल * रामचन्द्र पूछल निर्विकल
रघुवर दिव्यासन आसीन * मुनिकाँ पुछल वचन छलहीन
अपने अयलहुँ एतय यदर्थ * बुझि उद्यम हम करू तदर्थ
ओ कहलनि सुनु रघुवर भूप * कानहिँ कहब एकान्ते चूप
सुनथि न जन पुन देख न नयन * सुनल वचन रह मानस शयन
जौँ जन तेहि अन्तर हठ अयत * अपनैक हाथ मरण तनि हयत
यहन प्रतिज्ञा करु प्रतिपाल * तखन कहब अभिमत महिपाल
लक्ष्मण काँ कहलनि रघुनाथ * द्वार सज्जरहु असिलय हाथ
एकोव्यक्ति नहिँ आबय पाव * सम्प्रति पत्रादिक नहिँ लाव
हठसौँ जे करता सञ्चरण * हमरहि करसौँ तनिकर मरण
तखन कहब प्रभु अछि एकान्त * कहल जाय मुनि की बृत्तान्त

रघुवर सौँ कहलनि सदभाव * चलल जाय निज धामहिँ आब
कालपुरुष हम तापस रूप * अयलँहु विधिक पठाओल भूप
रणदुर्ज्जन दशमौलिक मरण * धरणी भार कयल प्रभु हरण
निजमर्य्यादा राखल जाय * विधिक कहल हम देल सुनाय
रघुनन्दन कयलनि स्वीकार * यदपि सकल छल निज व्यवहार

सो०—दुर्व्वासा तहिकाल, कालक प्रेरित प्राप्त तहँ ।
के बुझ कोपविशाल, लक्ष्मण काँ कहलनि यहन ॥

चौपाइ

लक्ष्मण तत्वर नृपतट जाउ * रामचन्द्र सौँ भेट कराउ
से पुन उत्तर देल सुनाय * क्षणभरि क्षमा कयल मुनिजाय
रामचन्द्र सौँ कहु की काज * से सम्पन्न करब हम आज
राजा कार्य्यान्तर आरुढ़ * के बुझ नृपतिक आशय गूढ़
क्यो सम्प्रति नहिँ करय प्रवेश * श्रीरघुनन्दन नियम निदेश
नृप आज्ञाक 'करब नहि 'भङ्ग * के हो हठ सौँ अनल पतङ्ग
से सुनि मुनि काँ बाढ़ल कोप * काल न करय ककर मतिलोप
हमर अवज्ञा नृपतिक द्वार * मुनिजन काँ थिक अधिक अंभार
जौँ नहि कहल करब ई काज * कतय महीपति कत ई राज
परिजन सहित भस्म कय देव * नृपतिक द्वार अनादर लेब
सुनि मन लक्ष्मण कयल विचार * बड़ सङ्कष्ट पड़ल व्यवहार
जौँ जायब छूटत ई लोक * कालक दण्ड ककरा बुतरोक
नहि जायब तौँ निकट अनर्थ * कालक निकट यतन हो व्यर्थ

एक हमर जौँ होयत नाश * रघुनन्दन रहता निस्त्रास
प्रजालोक आनन्दित रहत * अपयश पाप हमर नहि कहत
यहन विचार राम नृप वास * कयल प्रवेश कहल निस्त्रास
सावधान प्रभु परमादार * आयल छथि दुर्व्वासा द्वार
कालविसर्ज्जन मुनिक प्रणाम * सुनतहिँ जाय कयल प्रभुराम
कि करब टहल कहल मुनिजाय * मुनि सत्कार गृहीकाँ न्याय

दो०—कहल उपासल छलहुँ हम, सुनु नृप वर्ष हजार।
सिद्ध अन्न भोजन करब, मानस सुख्य विचार॥

चौपाइ

कहयित कथा पाक सम्पन्न * भोजन कयल अमृतसन अन्न
मुनिसन्तुष्ट गेला निजधाम * स्मरण कयल आज्ञा से राम
चिन्तादुःख कहल की जाय * हाहत हाहत लक्ष्मण भाय
स्नेहप्रतिज्ञा दुखमन व्याप * विह्वल विकल रहथि चुपचाप
से देखि लक्ष्मण जोड़ल हाथ * चिन्ता तेजल जाय रघुनाथ
कालकगति के रोकय पार * तत्वविचार वृथा संसार
प्रभुक निदेश वृथा भयजाय * घोरनकर हमरा तन पाय
हमरा विषय नाथ जौँ प्रीती * पालन कयल जाय नृप नीति
हमर विचार उचित यहिठाम * पालन कयल जाय नहिँ साम
करु निश्शङ्क हमर परित्याग * नीतिनृपति काँ दोष न लाग
लक्ष्मण वचन सुनल रघुवीर * चिन्तातुर मानस नहिँ थीर
सभमन्त्री काँ लेल बजाय * गुरु वशिष्ठ काँ पूछल न्याय

कालयतीक व्यवस्था सार * दुर्व्वासाक ततय सञ्चार
अपन प्रतिज्ञा कथा समग्र * लद्दमण प्रीति नीति मन व्यग्र
सुनि प्रभु वचन सचिव गुरु सकल * कहल विचारक वचन अविकल
कयल धराक भार सभ हरण * जायत अपनधाम ई चरण
धर्म्म प्रतिज्ञा राखल जाय * लद्दमण त्याग सकल मन न्याय
सुनलनि अर्थ धर्म्मयुत सार * रामचन्द्र मन ठीक विचार
लद्दमणकाँ कहलनि प्रभु सैह * करुगय धर्म्म व्यवस्था जैह
परित्याग वध एक समान * सज्जन काँ कह धर्म्म प्रधान

दो०—सुनि लद्दमण रघुनाथ पद, कयलनि विनत प्रणाम।
दुःख शोक सौँ भरल से, गेला सत्वर धाम॥

सो०—से सरयूतट जाय, कयल आचमन शुद्ध मन।
दृढ़ आसन समक य, नवद्वार संयमित कय॥
मस्तक पवन चढ़ाय, ध्यान निरन्तर ध्येयपद।
देखि देव समुदाय, सुमन वृष्टिकय स्तुति करथि॥
लद्दमण काँ निजधाम, सचीकान्त लय जायतहँ।
विष्णुवंश अभिराम, जानि करथि पूजा तनिक॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे अष्टमोऽध्यायः॥८॥

चौपाइ

सुनु गिरिनन्दनि कहल महेश * पालल रघुवर अपन निदेश
लद्दमण हेतु पड़य नहिँ चयन * जनु निर्झर झर पङ्कजनयन

गुरुमन्त्री कैँ कहलनि राम * होथु भरत भूपति एहिठाम
बन्धु वियोग सहल नहिँ जाय * आज मिलव हम लक्ष्मण भाय
सुनितहिँ प्रजा विकल खस केहन * छिन्नमूल सौँ तरुवर जेहन
मूर्छित खसल भरत उठिभाख * राज्यभार के माँथा राख
हम नहिँ करव राज्य सुख भोग * जन्म अनेकहु छुटनहि रोग
अपनेक चरण शरण मे रहव * स्वर्ग मर्त्य मे दुःख न सहव
कुशलव कुमरक करु अभिषेक * कलकोशल उत्तर सुविवेक
सुनल प्रजाजन मन अति भीति * कहल वशिष्ठ राम सौँ नीति
विकल प्रजाजन देखक थीक * सेवक सवहिक हो जे नीक
सुनल वशिष्ठ कहल भगवान * राम कयल सभजन सन्मान
कनइत सभजन जोड़ल हाथ * आशापूर करू रघुनाथ
जाइक इच्छा अछि जे ठाम * जायव सङ्गहिँ सभ से धाम
पुत्रदार जन एक न त्यागि * नीतिधर्म्म पदयुग अनुरागि
चलव सङ्ग कहलनि प्रभु वेश * जाइक इच्छा अछि जे देश
कुशलव कुमरक कय अभिषेक * विदा कयल प्रभु दिव्य विवेक
देलनि दिव्यरथ आठ हजार * वन्दि हजार विरुद उच्चार
साठिहजार सैन्य रणधीर * एकएक कौँ देल रघुवीर
वहुतवित्त युत जन संग जाय * कयल प्रणाम चलल दुनुभाय

दो०— वहुतदूत शत्रुघ्न कैँ, चलल बजावय काज।
जायकहल वृत्तान्त से, जे रघुवीर समाज॥

चौपाइ

कालपुरुष आगमनक भीति * अत्रिपुत्र अथला जे रीति

रामप्रतिज्ञा बन्धु वियोग * कुशीलवक अभिषेक प्रयोग
प्रजासहित कहु की हम आन * करता राम महाप्रस्थान
सुनि शत्रुघ्न व्यथित मन त्रास * धैर्य धयल नहिँ दुःख प्रकाश
पुत्र दुहूक कयल अभिषेक * मथुरा विदेशनगर एकएक
तनय सुबाहु प्रजा सुख हेतु * यूपकेतु पालक श्रुतिसेतु
गेला अयोध्या अपने शूर * रामचन्द्र देखि आशापूर
देखल रघुवर दिनकर कान्त * मुनिजन परिवृत सुन्दर शान्त
कयल प्रणाम कहल करजोड़ि * चलब नाथ नहिँ हमरा छोड़ि
बालक दुइजन काँ दय राज * सावधान हम अयलहुँ आज
राम बूझि भाइक दृढ़भाव * कहल सज्ज रहु दुपहर आब
दिन दुपहर भलदिन प्रस्थान * सभ सौँ कालपुरुष बलवान
बानर भालु देव अवतार * समरसहायक बल विस्तार
सुनि अयला सुग्रीवक सङ्ग * रामचन्द्र पद प्रीति अभङ्ग
पहुँचलाह शत्वर हनुमान * प्रभु आज्ञाकर वीर प्रधान
भक्त विभीषण पहुँचि सबेरि * एक हरिजन क्षण कयल न देरि
सभकाँ संग चलइक मन थीर * जानल करुणाकर रघुवीर
तहँ सुग्रीब कहल करजोड़ि * रहब न हम प्रभु मैत्री तोड़ि
अङ्गद काँ राजा हम कयल * अपनेक सङ्ग अचलमतिधयल
कहल विभीषण काँ रघुनाथ * सुखित रहब करइत गुणगाथ
राक्षसराज्य करुगय जाय * याबत धरा प्रजा सुखपाय
हमर शपथ थिक करु स्वीकार * हठ उत्तरक त्यागु व्यवहार
सुनु सुनु मारुतसुत हनुमान * रहु चिरजीव कहब की आन

आज्ञा हमर यहन लिअ मानि * एक तरह नहिँ होयत हानि
जाम्बवान द्वापर पर्यन्त * रहुगय अकथ कतो वृत्तान्त
सभजन काँ कहलनि पुनराम * चलु चलु सभजन हमरा धाम
प्रातहि कमल नयन भगवान * गुरुवशिष्ठ काँ कहल विधान
अग्निहोत्र चलु हमरहि सङ्ग * तुष्ट वशिष्ठ कयल से रङ्ग
रघुवर पीताम्बर कुशहस्त * महाप्रयाणक बुद्धि प्रशस्त
चलला छोड़ि नगर ओ धाम * कोटिकलाकर छविजित राम
कञ्जकरा कमला चलु सङ्ग * सुखमा सुषमा सिन्धु तरङ्ग
अत्रशस्त्र सँग चलु धनुतीर * आगुभेल भल धयल शरीर
धयल शरीर वेद सभ गोट * चलल महामुनि महिमा गोट
श्रुतिमाता प्रणवक सँगभेलि * व्याहृति मिलि रघुवर मिलिगेलि
पुत्रदार परिवृत चल सङ्ग * प्रजालोक मनप्रीति अभङ्ग
अन्तः पुर अनुचर सहनारि * चलल भरत शत्रुघ्न विचारि
चलला राम चलल सुरलोक * बालवृद्ध ककरा के रोक
चारूवर्ण शरण भल पाव * शान्त तपस्वी जनं अगुआव
चल सुग्रीव सदल सद्भाव * श्रीअनन्त रघुवर गुणगाव
सभ आनन्द मगन उत्साह * विषय मनोरथ अस्त प्रवाह
स्थावरजङ्गम रहल न एक * सभ विरक्त बनि शुद्ध विवेक
शून्य अयोध्या जनसौं तखन * पुरसौं चलल महाप्रभु जखन
सरयूनदी देखल रघुवीर * अति प्रसन्न मन धर्म्म शरीर
अयला तखय विरञ्चि महान * सकलदेव ऋषिसिद्ध सुमान
गगन विराजय कोटि विमान * अतिथि काज रविकोटि समान

अतिशय सुरभि पवनवह वेश * सुमन वृष्टि संकुल से देश
विद्याधर किन्नर गण गाव * नानायन्त्र मृदङ्ग बजाव
परशकयल सरयू जल राम * पयरहि सर्व्वशक्ति गुणधाम
विधि तहिठाम जोड़ि दुहुहाथ * कहल समत्त ठाढ़ रघुनाथ
अपने परब्रह्म परमेश * सदानन्द विभु विष्णु रमेश
जनता पालक जगन्निवास * कहब तथापि थिकँहुँ हम दाश
भ्राता सहित मिलल जत जाय * आदि देह निज इच्छा पाय
अथवा निज रुचि उत्तम देह * करिय प्रवेश भक्तपर नेह
देव देव वर पुरुष पुराण * चरण प्रणाम कोटि कल्याण
विनत विरञ्चि वचन बुझि राम * देव सकल देखइत घनश्याम
महा प्रकाश सुलक्षण सहित * भेला चतुर्भुज चिन्ता रहित
लक्ष्मण शेषनाग तन सैह * धयल धरा धर छल छथि जैह
शङ्ख चक्र शोभा विस्तारि * भरथ भेलाह तथा लवणारि
सीताराम . रमेश्वर राम * तन प्राचीन सुछवि गुणधाम
वलाराति गण विष्णु विलोक * परमेश्वर गति जन के रोक

गीतिका छन्द

आनन्द लोचन नीर निर्झर, निरख निर्जर रुप सें।
जनयत्त देव समत्त लक्षण, युक्त सुन्दर भूप से ॥
मुनि पितर प्रभृति प्रशंस गुण गण, तितल आनन्द नोर सौँ।
तन पुलक निचय उचार जय जन, देखु लोचन कोर सौँ ॥

सो०—देखल द्रुहिण समाज, कहल दयामय समय शुभ ।

सेवक जन सभ आज, जयता हमरे सङ्ग सुख ॥
जत वानर जत भालु, जत राक्षस सेवक सुखद ।
कहलनि दीन दयाल, हमर धाम सङ्गहि चलथि ॥

रूपमाला

कहल विधि सु विष्णु गुणनिधि, बुझल शाशन नीक ।
नाम जपि भवसिन्धु तर नर, इ तौं समुचित थीक ॥
वन्द्य वानर बृम्द वर गुण, भालु भाग्य उदार ।
भक्ति महिमा देख सुर गण, केहन करूणागार ॥

दो०—अज्ञानहुँ जे करय नर, राम नाम उच्चार ।
अन्त पाय गति उत्तमा, घुरि न आव संसार ॥

सो०—परशथि सरयू नीर हृष्ट पुष्ट नहि कष्टमन ।
पावथि प्रथम शरीर, जय जय धुनि कपि कोटि कर ॥

चौपाइ

दिनकर देह विमल कपिराज * देखथि सुचरित देवसमाज
सरयूजल नर करि असनान * दिव्यरुप बनि चढ़ल विमान
स्वर्ग चलल भल कीट पतंग * विष्णुक नगर अमरसन रङ्ग
देखय तमासा अयला जैह * तनिकर गतिभेल उत्तम सैह
उत्तर रामचरित गिरिजेश * श्री गिरिजा सौं कहलनि वेश
एहिविधि प्रभु पहुँचल निजलोक * अवनी सज्जन कयल विशोक
पढ़थि सुनथि जे चरित उदार * उत्तम गति पावथि संसार

की कर यमकिङ्कर खर रोष * हरगिरिजा रघुवर सन्तोष
रामायण पढ़ एको चरण * पातक चय निश्चय हो हरण
अतिप्रसन्न रह उमा महेश * एतय श्रोतय नहि रहय कलेश
आदिकाव्य रामायण थीक * पढ़थि सुनथि जन रह निर्भीक
विष्णुसदन पावथि से अन्त * श्रद्धासहित पढ़थि जे सन्त

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि विरचिते मैथिलीरामायणे
उत्तरकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥९॥

उत्तरकाण्ड समाप्तः ॥७॥

समाप्तमिदं मैथिलीरामायणम् ।

प्रीतिकरी छन्द

कहब गय ककरा करत के कठिन दुःखक अन्त ।
कतय करुणासिन्धु गेलहुँ प्राप्त कलि बलवन्त ॥
राम रटि रटि रहि न हो छन रमस रागक बाढ़ ।
त्राहिं त्राहि रमेश रघुवर काटु सङ्कट गाढ़ ॥
हमर सन संसार मे के आन पातकि लोक ।
काम क्रोध प्रचण्ड हिंसा रहय नहिँ छन रोक ॥
त्राहि त्राहि मुकुन्द माधव दीनबन्धु दयाल ।
भक्ति विनु भकुआय रहलहुँ कठिन ई कलिकाल ॥
कतेक दिन धन कतेक दिन|जन कतेक दिन तन जोर ।
कतेक दिन सञ्चरब ई संसार – कानन घोर ॥
चेत नै चित चेतनेँ चित चपलता नहिँ त्याग ।
राम रटि नहिँ दिवस काटल रामपद-अनुराग ॥
कतय जायत रमण - रमणी कतय रतिसुखरङ्ग ।
कतय सेवक सेव्य सेवा कठिन कर्म्मतरङ्ग ॥
जे दिन जीवन जे दिन चेतन जे दिन मुहमेँ बोल ।
राम रट रसना निरन्तर हृदय–वारिज खोल ॥
क्षमब सब अपराध जानकि जानि निर्म्मति लोक ॥
विषयमे लपटाय रहलहुँ भेलहुँ भल वनवोक ॥
त्राहि त्राहि त्रिलोक–जननी हम कुमति आरूढ़ ।
भक्ति भाव न आब मन मे देह दिनदिन बूढ़ ॥
देखि आशा दोष दुस्सह तदपि हो नहिँ ज्ञान ।

बहुत आंखि पसारि देखल खल न हमर समान ॥
त्राहि त्राहि रमेश किङ्कर वीरवर हनुमान ।
करव तेहन कृपा कृपाकर हमर कर कल्याण ॥
समयपर परजन्य ; वरिसय' मही शस्यसुपूर ।
प्रजा पुत्र समान मानथु भूमिपालक शूर ॥
धर्म्मनीतिक बृद्धि दिनदिन सन्धि भरि संसार ।
रामचन्द्र चरित्र शुभमय रहय जन विस्तार ॥

हरिपद छन्द

वसुनभ वसु वसुधा मितशाके आश्विन शिति सम्प्राप्त ।
तिथि शिवमित सित ई रामायण निर्म्मित कयल समाप्त ॥
पूर्णमनोरथ श्रीलक्ष्मीश्वर सिंह देव मिथिलेश ।
अनुकम्पित नित सुचित चन्द्रकवि पूरल परम निदेश ॥